

डॉ मित्रनाथ झा (१९५६-)

पिता स्वनामधन्य मिथिला चित्रकार स्व. लक्ष्मीनाथ झा प्रसिद्ध खोखा बाबू, ग्राम-सरिसब, पोस्ट सरिसब-पाही, भाया- मनीगाछी, जिला-मधुबनी (भारत), सम्प्रति मिथिला शोध संस्थान, दरिभङ्गामे पाण्डुलिपि विभागाध्यक्ष ओ एम.ए. (संस्कृत) कक्षाक शिक्षार्थीकेँ एम.ए. पाठ्यक्रमक सभ पत्रक अध्यापन। लेखन, उच्चस्तरीय शोध ओ समाज-सेवामे रुचि। संस्कृत, मैथिली, हिन्दी, अंग्रेजी, भोजपुरी ओ उर्दू भाषामे गद्य-पद्य लेखन। राष्ट्रीय ओ अन्तर्राष्ट्रीय स्तरपर सुप्रतिष्ठित अनेकानेक पत्र-पत्रिका, अभिनन्दन-ग्रन्थ ओ स्मृति-ग्रन्थादिमे अनेक रचना प्रकाशित। राष्ट्रीय ओ अन्तर्राष्ट्रीय स्तरपर आयोजित अनेक सेमिनार, कॉनफेरेन्स, वर्कशॉप आदिमे सक्रिय सहभागिता।–**सम्पादक**

विदेह-वैभव

विद्या-वैभव केर गरिमासँ सर्वथा पुक्त जे सिद्ध भूमि।

अन्तर कदापि नहि जे कएलक अप्पन वा आनक थातीमे॥

देलक सदिखन जे पूर्ण ज्ञान निश्छलता ओ कर्मठतासँ।

मद्धिम कखनहुँ नहि पड़य देल, दय तेल ज्ञान केर बातीमे॥

हवि ज्ञानक अप्पन सतत बाँटि, हो बुद्धिक कोनो अनुष्ठान।

शिक्षाक भनहि हो कोनो विधा, वर्जित नहि हिनकर पातीमे।

अक्षुण्ण राखि निज-मर्यादा, अन्यहु क्षेत्रक कएलक विकास।

मिथिला केर तापस ज्ञान-भानुसँ, के-के नहि लेलक प्रकाश॥

मतवैभिन्यक अप्पन महिमा, के नहि जनैछ ई दिव्यभूमि।

तमसँ आच्छादित मार्ग कोनो, त्वरिते पाओल ज्ञानक प्रकाश॥

रहि मध्य मार्ग केर अनुगामी, कामी नहि कोनहु तुच्छ फलक।

कएलक प्रयास विध्वंसक बड़, पर कए न सकल किञ्चित् विनाश॥

होता कोनहु हो, यजमानक ज्ञानक मानक हो ध्यान सदा।

मिथिला केर पावन धरतीपर, गुञ्जित हो ज्ञानक गान सदा॥

भग्न चिन्तन

चिन्ताक तप्त दावानलमे हम की रचनात्मक कार्य करू।

हियमे तँ अबैछ लहरि भावक, पर धार कोना ई पार करू॥

त्रिभुवन केर प्रायः कोनो वस्तु, मानव-चिन्तनसँ दूर नञि।

की भावनाक ई दिव्य महल, होएत हमरासँ पूर नञि॥

लेखनी हमर ई बाजि रहल, की हमरा अपनहि भरि रखबैँ।

मानस पट से धिक्कारि रहल, की समय एतबहि भरि रखबैँ॥

खाली हाथेँ जाएत सभ क्यो, ई नीक जेकाँ हम जनैत छी।

लेखनीक आइ दुर्दशा देखि, एकान्त मौन भए कनैत छी॥

कारण जनैत छी नहि जाएत भूतलसँ संग एक्कोटा कण।

पर मित्र भाग्यसारणी हमर नहि देलक एहन कोनो यक्षण॥

जेहि अनुपमेय क्षणमे अप्पन भावना अतीतकेँ दोहराबी।

भग्ना वीणा केर रुग्ण तारपर दू आखर हमहूँ गाबी।

मुखीलाल चौधरी

सुखीपुर –१, सिरहा

हाल : बुटवल बहुमुखी क्यापस बुटवल

दिनाङ्ढ २०६५ जेठ १४ गते मंगलदिन जनकपुरधाममें लोकार्पण भेल ''समझौता नेपाल''क दोसर प्रस्तुति गीति एल्वम ''भोर'' क गीतके संगही समझौता नेपालक निर्देशक नरेन्द्रकुमार मिश्रजीक साक्षात्कार दिनाङ्ढ २०६५ जेठ १८ गते शनिदिन कान्तिपुर एफ़एम़के सर्वाधिक लोकप्रिय कार्यक्रम ''हेलौ मिथिलामें'' सुनबाक मौका भेटल। संघीय गणतान्त्रिक नेपालक भोरमे समझौता नेपालद्वारा प्रस्तुत कएल गेल गीति एल्बम भोरके लेल समझौता नेपालक निर्देशन नरेन्द्रकुमार मिश्रजीके हार्दिक बधाई एवं शुभकामना। आगामी दिनमें समझौता नेपाल मार्फत गीति यात्राकेँ निरन्तरततासँ गीत या संगीतक माध्यमसँ मिथिलावासी आ मधेशी संगहि सम्पूर्ण आदिबासी थारु में जागरण लावय में सफल होवय आओर मिथिलावासी, मधेशी, आदिवासी थारु सगहि सम्पूर्ण देशवासीमें सदाशयता, सदभावना, सहिष्णुता आ स्नेहमें प्रगाढता बढावमें सफलता प्राप्त होएए, एकरा लेल साधुवाद।

गीतकार सभहक गीत उत्कृष्ट अछि, कोनो गीत वीस नहि सभटा एक्कैस। एकसँ बढी कय एक। गीतकार सभहक गीतके सम्वन्धमें छोटमें अलग अलग किछु कहय चाहैत अछि

रुपा झाजीक गीत शिक्षा प्रति जागरुकता आ चेतबाक सन्देश द�रहल अछि। ज्ञान प्रकाश अछि आओर अज्ञान अन्धकार। अन्धकारसँ वचवाक लेल ज्ञान प्राप्त केनाइ आवश्यक अछि। ''केहनो भारी आफत आवौ, ज्ञानेसँ खदेड'' पाती कोनो समस्या किएक नहि विकराल होएए ज्ञान आ वुद्धि सँ समाधान करल जा सकैत अछि।

पूनम ठाकुरजीक गीत सब सन्तान समान होइछ, बेटा–बेटीमे भेदभाव नहि होयबाक आ करबाह चाही सन्देश दरहल अछि। ''मुदा हो केहनो अबण्ड बेटा, कहता कुलक लाल छी '' सिर्फ एक पातिस आजुक समाजमें बेटा–बेटी प्रति केहन अवधारणा अछि, बतारहल छथि।

मिथिलाके माटि बड पावन छै। संस्कार आ अचार विचार महान छै। आओर ओएह माटिक सपूत साहिल अनवरजी छथि। जहि माटिमें साहिल अनवरजी जकाँ मनुक्ख छथि ओही माटिमे सम्प्रदायिकताक काँट उगिए नहि सकैछ। उगत त मात्र सदभावना, सदाशयता, माया–ममता, स्नेहक गाछ। जेकर गमकसँ सभकेओ आनन्दित रहत आ होएत।

''जतय हिन्नुओ राखि ताजिया,
मान दिएए इसलामके
छठि परमेसरीक कवुलाकय
मुल्लोजी मानथि रामके''

सँ इ नहि लागि रहल अछि ? कि मिथिलाके पावन माटिमें सहिष्णुताक सरिता आ बसन्तक शीतल बसात बहिरहल अछि। धन्य छी हम जे हमर जनम मिथिलाक माटिमें भेल अछि।

धीरेन्द्र प्रेमर्षिजीक गीत सकारात्मकतासँ भरल अछि। समस्या किएक नहि बडका होबय आ कोनो तरहके होय निरास नहि होयवाक चाही आओर सदिखन धैर्य–धारणकय सकारात्मक सोच राखिकय आगाँ बढवाक चाही। संगहि जाहि तरहसँ माँ बाप अपन सन्तानक लेल सदिखन सकारात्मक दृष्टिकोण राखैत छथि, वएह तरहसँ संतानक कर्तव्य होइछ जे ओ सभ अपन वुढ माँ बाप प्रति वहिनाइते दृष्टिकोण अपनावैत। गीतके शुरुके जे चार पाँति

''सँझुका सुरूजक लाल किरिनिया,
नहि रातिक इ निशानी छै
छिटने छल जे भोर पिरितिया,
तकरे मधुर कहानी छै''।

सकारात्मकताक द्योतक अछि। एकर संगहि

''सोना गढीके इएह फल पौलक,
अपने बनि गेल तामसन
वाह बुढवा तैओ वाजैए, हमर बेटा रामसन'' इ पातिसँ मा बापके अपन सन्तानक प्रति प्रगाढ माया ममताक बोध करारहल अछि।

नरेन्द्रकुमार मिश्राजीक गीत इ बतारहल अछि कि संसारमे प्रेम, स्नेह, माया ममता अछि तँ संसार एतेक सुन्दर अछि। यदि प्रेम, स्नेह, माया ममता हटा देल जाय त संसार निरस भजाएत आ निरस लाग लागत। तँ हेतु एक दोसरक प्रति प्रेम, स्नेहक आदन प्रादान होनाइ आवश्यक अछि।

आदान-प्रदान भनाए

''आँखि देखय त सदिखन सुन्दर सृजन
ठोर अलगय त निकलय मधुरगर बचन''

पाती सँ प्रेम आ स्नेह वर्षा भरहल अछि, लागि रहल अछि।

वरिष्ट साहित्यकार, कवि, गीतकार द्वय ड्ा राजेन्द्र विमल जी आ चन्द्रशेखर शेखर जीके गीत अपने अपनमे उत्कृष्ट आ विशिष्ट अछि। हिनका सभक गीत सम्बन्धमे विशेष किछु नहि कहिके हिनका सभक गीतक किछु पाती उधृत कयरहल छी, सबटा बखान कए देत।

ड्ा राजेन्द्री विमल जीक पाँतिक

''जगमग ई सृष्टि करए, तखने दिवाली छि
प्रेम चेतना जागि पडए, तखने दिवाली छि
रामशक्ति आगुमे, रावण ने टीकि सकत
रावण जखने डरए, तखने दिवाली छि''

अपने अपनमे विशिष्टता समाहित केने अछि।

ओही तरहे चन्द्रशेखर ॅशेखर जीक गीतक निम्न पांती अपने अपनमे विशिष्ट अछि

''साँस हरेक आश भर, फतहक विश्वासकर

बिहुँसाले रे अधर, मुक्त हो नैराश्य डर

रोक सब विनाशके, ठोक इतिहासकेँ

दग्धल निशाँसकेँ, लागल देसाँसकेँ''

हमर यानी मुखीलाल चौधरीक गीतके सम्बन्धमे चर्चा नहि करब त कृतघ्नता होएत। हमरद्वारा रचित गीत भोरक संगीतकार धीरेन्द्र प्रेमर्षिद्वारा परिमार्जित आ सम्पादित कएल गेल अछि। तें एतेक निक रुपमे अपने सभहक आगाँ प्रस्तुत भेल अछि। हमर गीतके इएह रुपमे लाबऍमे धीरेन्द्र प्रेमर्षिजीक उदार या गहन भुमिका छैन्ह। एकर लेल प्रेमर्षिजीके हम मुखीलाल चौधरी हार्दिक धन्यवाद ज्ञापन करए चाहैत छी।

सभटा गीतके संगीत कर्णप्रिय लगैत अछि। सुनैत छी त मोन होइत अछि फेर फेर सुनी। कतबो सुनलाक वादो मोन नहि अगहाइत अछि। एतेक निक संगीतक लेल धीरेन्द्र प्रेमर्षिजीके हार्दिक बधाई आओर आगामी दिन सभमे एहोसँ निक संगीत दय सकैत, एकर लेल शुभकामना आ साधुबाद।

सभ गीतकार, संगीतकार, गायक गायिका इत्यादिक संयोजन कय बड सुन्दर आ हृदयस्पर्शी गीति एल्बम ''भोर'' जाहि तरहसँ हमरा सभहक आगाँ परोसने छथि, एकर लेल भोरक संयोजक रुपा झा जीके हार्दिक बधाई। अन्तमे सभ गीतकार, संगीतकार, गायक गायिका, संयोजक आ समझौता नेपालक निर्देशकके हादिक वधाई।

एन. अरुणा

जन्म निजामाबाद लग एकटा गाममे १९४९ ई.मे। तेलुगुमे पाँचटा कविता संग्रह प्रकाशित।
जयलक्ष्मी पोपुरी, निजाम कॉलेज, ओस्मानिया विश्वविद्यालयमे अध्यापन।

जयलक्ष्मी पोपुरी -तेलुगुसँ अंग्रेजी अनुवाद
गजेन्द्र ठाकुर-अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद।

ई सेहो अछि प्रवास

अहाँ नहि छी मानैत

मोटा-मोटी ईहो छी प्रवास

एकर गुण

षडयन्त्र जेकाँ

मूल जन्मकालेसँ

''तैयो अछि तँ बेटीये'' अछि ने ई?

कोनो पुरुषक हाथमे तँ जएबाके छैक ने एक दिन

प्रवास

मात्र अमेरिके टा प्रवासक नहिक नहि

नारी सेहो अछि एकटा ई।

अहाँ एकर अवहेलना कए सकैत छी सुविधासँ।

तैयो कतेक कठिन

छोड़ब जिनगी भरिक लेल अपन जन्मस्थान

पाएब एकटा अनचिन्हारक आँगुर?

अहाँ घुरि सकैत छी कखनो काल

मुदा बनि मात्र पाहुन।

जखने हम पएर राखब

कतेक काल धरि अहाँ रहब पुछब हमर लोककेँ।

''जाऽ धरि हम चाही''

इच्छा अछि कहबाक

मुदा श्रृंखला ससरल हमर इच्छापर बहुत पहिनहि।

प्रवास नहि अछि हर्खक वस्तु।

छोड़ि ई मात्र जे समय बितने

बढ़ैत अछि ई बनैत अछि अभ्यास।

नागेन्द्र झा

नवरत्न हाता, पूर्णियाँ

स्व. पञ्जीकार मोदानन्द झासँ सुनल परुए महेन्द्रो मूलक पूर्णियाँ जिलाक शिवनगर ग्रामवासी छलाह। ई पञ्जी प्रबन्धक नीक ज्ञाता छलाह। महाराज दरभङ्गाक चलाओल धौत परीक्षोत्तीर्ण छलाह।

ई लेख पञ्जीकारक विषयक थिक। अतः पञ्जी शब्दक अर्थ की से बूझब आवश्यक। पञ्ज शब्द आएल अछि संस्कृतमे तथा भाषोमे पञ्च शब्दक प्रयोग ५ संख्याक अर्थमे भेटैछ। तैं पञ्ज शब्द ५ संख्यासँ सम्बद्ध अछि। भाषामे हाथक पाँचो आङ्गुर तथा ताशक ५ कैं पञ्जा कहल जाइछ।

पञ्जीमे ५ संख्याक कि प्रयोजन? उत्तर- हमरा लोकनि अर्थात् मैथिल ब्राह्मण ''पञ्चदेवोपासक'' छी। कोनो तरहक शुभ कार्यमे पूजा पञ्चदेवतैक पूजासँ आरम्भ होइछ। तहिना धर्मशास्त्रक अनुसारे कहल गेल अछि जे ''मातृतः पञ्चमीं त्यक्त्वा पितृतः सप्तमीं भजेत्''। अर्थात् प्रकृति (माय)सँ पाँचम स्थान स्थिति कन्याक सङ्ग विवाह नहि करी। ई निषेध कयल गेल।

विवाह सृष्टि प्रयोजनार्थे होइछ आ सृष्टिमे प्रकृतिक प्रयोजन तैं मायसँ पाँचम स्थान स्थित कन्यासँ विवाह निषिद्ध भेल तथा एहि निषेधक कारणसँ सम्भव थिक जे एकर नाम ''पञ्जी'' राखल गेल हो अथवा कन्यादानमे वरक दू पक्ष, कन्याक दू पक्षक अर्थात् दुनू मिलाकैं चारि पक्षक निःश्शेष व्याख्या जाहि पुस्तकमे लिखल जाय आओर पञ्जीकार ओकरा स्वीकार करथि अर्थात् हस्ताक्षर करथि ओऽ भेल पञ्जी।

संस्कृतमे पञ्जी (पञ्जिका) शब्दक अर्थ थिक जे पूर्णतः पदक व्याख्या जाहिमे लिखल गेल हो। अर्थात् ओऽ रजिस्टरो भऽ सकैछ, पुस्तकोक रूपमे भऽ सकैछ, हैन्डनोटोक रूपमे भऽ सकैछ। सरकारी रजिस्ट्री ऑफिसमे रजिस्टर रहैछ। हाटपर मवेशीक बिक्री भेलापर बिक्रीनामा लिखल जाइछ। एकर निदान ''याज्ञवल्क्य'' साक्ष्य प्रकरणमे स्पष्ट कयने छथि जे बेचनिहार, खरीददार आ साक्षी सभक पूर्ण पता रहै जैसँ भविष्यमे कोनो तरहक विवाद नहि उठै।

ई अभिलेख (रेकर्ड) वस्तु विक्रयोमे तथा दानमे सेहो राखल जाय। ई तँ कन्यादान प्रकरणमे वर-कन्या दुनूक वंशक पूर्ण सपिण्डक अभिलेख जाहिमे लिखल जाय से भेल पञ्जी आ ओहि पञ्जीमे जे वर-कन्या सपिण्डक अभ्यनाट नहि छथि से लिखनिहार पञ्जीकार कहवैत छथि।

एहि स्थितिमे ईहो ज्ञात होबक चाही जे पञ्जी प्रथा कहियासँ चलल, कियैक चलल?

ई प्रथा हरिसिंह देवक समयसँ प्रचलित भेल अछि। कियैक आरम्भ भेल से कथा स्व. पञ्जीकारे मुहसँ सुनल अछि, जे निम्न थिक।

पञ्जी प्रबन्धक आरम्भक बीज- एक ब्राह्मणी रहथि। ओऽ जाहि गाममे रहथि ओऽ ब्राह्मण बहुल गाम छल। लोक कि पुरुष वा कि स्त्री बिनु पूजा-पाठ केने भोजन नहि करथि। ओहि गामक एक पोखरिपर एक शिवमन्दिर छल। उक्त ब्राह्मणीक नियम छल जे जाऽ धरि उक्त शिव-मन्दिरक महादेवक पूजा नहि करी ताऽ धरि जलग्रहण नहि करी। ई शिव पूजार्थ मन्दिर गेली ओहि समय एक चाण्डाल सेहो पूजार्थ गेल रहए। हिनका देखि हिनकासँ दुराचरणक आग्रह कएलक। ई परम पतिव्रता छलीह। ओकरा दुत्कारैत कहलनि जे ई मन्दिर थिकैक तू केहेन पापी छैं, जो भाग नहि तँ तोहर भला नहि हेतौ। ई कहिते छलीह की शिवलिङ्गसँ एक सर्प फुफकार करैत अवैत ई चाण्डाल भागल।

संयोगवश बाहरसँ एक ब्राह्मणी, ओहि दुनूक वार्तालाप सुनिते छलीह। गामपर आवि मिथ्या प्रचार ओहि चाण्डालक संग कऽ देलनि। गामक लोक हिनका बजाय कहलनि जे अहाँकँ प्रायश्चित करए पड़त। एहि लेल कि अहाँ चण्डालक सङ्गम कएल। ई कहि उठलीह जे के ई कहलक, हमरा तँ ओकरासँ स्पर्शो नहि भेल अछि। मुदा लोककैं विश्वास नहि भेल। प्रायश्चित लिखल गेल (यदीयं चाण्डालगामिनी तदा अग्निस्तापं करोतु) ई लिखि हुनक दहिन हाथपर एक पिपरक पात राखि आ तैपर लह-लहानि आगि राखल गेल। ई पाकि गेलीह। तखन हिनका ग्राम

निष्कासनक दण्ड देल गेल। कनैत-खिजैत लखिमा ठकुराइन नामक पण्डिताकेँ सब बात कहलनि। श्रीमती ठकुराइन प्रायश्चित्त लिखनिहार पण्डितकेँ बजाय कहल जे प्रायश्चित्त गलत लिखल गेल। हम प्रायश्चित्त लिखब। तखन ठकुराइन लिखल जे "यदीयं पतिभिन्न चाण्डाल गामिनी तदा अग्निस्तापं करोतु"। ई वाक्य पूर्ववत् दहिन हाथक पिपरक पातपर राखल गेल तँ ई नहि पकलीह। तखन ई वार्ता महाराज हरिसिंहदेवक ओतय गेल।

तखन उक्त महाराज पण्डित मण्डलीकेँ आमन्त्रित कऽ पुछलनि जे उक्त स्त्रीक पति चण्डाल कोना? तखन विद्वतमण्डली उक्त स्त्रीक पतिक विवाहक शास्त्रानुकूल विचारि देखलनि तँ हुनक विवाह अनधिकृत कन्यासँ भेल तैँ हिनकर पति चण्डाल भेलाह। एकर बाद महाराजक आदेशसँ मैथिल ब्राह्मण लोकनिक विवाह पञ्जी बनल।

मैथिल ब्राह्मणमे १६ गोत्रक ब्राह्मण छथि। एकर बाद गाँव-गाँवमे उक्त गोत्रान्तर्गत जे जे लोक छलाह तनिका-तनिका गामक नाम देल गेल एवं मूल कहौलक। पञ्जी मूलक अनुसार बनल, गोत्रक अनुसार नहि। एक गोत्रमे अनेक मूल अछि। गोत्रक नामपर पञ्जी बनैत तँ गामक पता नहि लगैत।

हमर मतसँ पञ्जी-प्रबंध धर्मशास्त्रक अंग थिक। तैं एकर लिखनिहार, अभिलेख (रेकर्ड) रखनिहार एवं एक पढ़निहार व्यक्ति पञ्जीकार (रजिस्ट्रार वा धर्मशास्त्री) थिकाह। कलियुगानुकूल पूर्व समय जेकाँ पञ्जीकारक परामर्श बिनु लेनहुँ विवाहक निर्णय कऽ कन्यादान कऽ लैत छथि जे परम अनुचित थिक।

जे पञ्जीकार हमरा लोकनिक लोकान्तर प्राप्त पूर्व पुरुषक अभिलेख (रेकर्ड) राखि आ वैह विद्या पढ़ि अपन जीवनयापन करैत छथि हुनक आर्थिक स्रोत एक मात्र ईएह जे हमरा लोकनिक सन्तान (वर वा कन्याक) जखन समय आओत तखन हुनक परामर्श शुल्क दऽ ग्रहण करी। से वर्षमे कतेक होइछ। यदि ईएह रास्ता रहत तँ ई विद्या लुप्त भऽ जायत।

एहि पञ्जीक मूल्य सरकारोक न्यायालयमे कम नहि छैक जेकर निम्नांकित एक उदाहरण देखू-

उदाहरण- एक राजपरिवार वंशविहीन भऽ लुप्त भऽ गेल। हुनक सब सम्पत्तिमे सँ किछु सम्पत्ति महाराज दरभंगाकेँ भेल आ किछु सम्पत्ति बनैलीक राजामृत राजपरिवारक उत्तराधिकारीसँ कीनि लेल।

एकर बाद महाराज दरभंगा न्यायालय जाय बनैली राज्यपर ई कहि जे ओऽ (वनैली राज्य) अनधिकृत किनने छथि। मोकदमा बहुतो दिन चलल। दुनू पक्षसँ दिग्गज वकील लोकनि छलाह। उत्तराधिकारक हेतु दुनू पक्षकेँ ई पञ्जी-प्रबन्ध मान्य भेल। जाहिमे बनैली राज्यक पञ्जीकारक रूपमे उक्त पञ्जीकार जनिक विषयमे ई लेख लिखल जाऽ रहल अछि, हिनक पूज्य स्व.पिता तथा ई, दुनू गोटें मोकदमाक बहसक लेल नियुक्त भऽ पञ्जी-प्रबन्ध पुस्तकक अभिलेख न्यायालयक जजकेँ देखओलनि। एकर बाद बनैली राज्य "डिग्री" पओलक त्तथा ई दुनू पिता-पुत्रक मान्य सम्मान कयलक।

एहिसँ सिद्ध भेल जे उक्त पञ्जीकारक पञ्जी सुरक्षित रहि पञ्जीकारक योग्यतोकेँ सिद्ध कएलक।

हिनक निर्लोभताक वर्णन सेहो देखू:-

एक राजदरबारमे कन्यादान उपस्थित छल। ताहिमे परामर्श (सिद्धान्त)क हेतु अनेक पञ्जीकार बजाओल गेल रहथि ताहिमे ईहो रहथि। राजदरबारक बात रहैक। राजाकेँ अपन कन्याक हेतु ई वर पसिन्द रहथिन। ई पञ्जीकार अन्य पञ्जीकारसँ वार्तालापमे कहलथिन जे औ पञ्जीकारजी! ऐ वरक अधिकार तँ नहि होइत छैक। ओऽ उत्तर देलथिन जे अहाँ बताह भेलहुँ हैं। राजाक बात थिकैक। राजाकेँ काज पसिन्द छनि। एहिमे अरङ्गा नहि लगबियौक। नीक पारश्रमिक भेटत। ई मोने-मोन विचारलन्हि जे ऐ पापक भागी (रुपैय्याक लोभमे पड़ि) हम कियैक होउ। किछु कालक बाद बाह्यभूमि (पैखाना) जेबाक बहाना बनाय ओतयसँ भागि अयलाह।

हिनक नैष्ठिकता सेहो तेहने छल। सब दिन स्नानोत्तर सन्ध्या, तर्पण, गायत्री जप, शालिग्रामक पूजा बिनु कएने विष्णु भगवानक चरणोदक तथा तुलसीपात बिनु खएने! अन्न-जल नहि करैत छलाह।

एकर अतिरिक्त कार्तिक मास जखन अबैक तखन भरि मास धात्रीयैक गाछतर हविष्यान्न भोजन करथि। ऐ सँ हुनक पूर्ण नैष्ठिकताक पता चलैत अछि।

नरेश मोहन झा

तुलसिया, किशनगंज

विद्वद्वरेण्य पञ्जीकार मोदानन्द झा

वर्ष १९५४-५५क वार्ता थीक। गृष्मावकाश छल। गामहिं छलहुँ। एक दिन वेरू प्रहर मे दरवज्जहिपर छलहुँ। एक व्यक्ति, अत्यन्त गौरवर्ण, मध्यम ऊँचाई, देदीप्यमान ललाट, प्रशस्त काया, चलबाक कारणँ ललौंछ मुखमण्डल, पैघ-पैघ आँखि, उपस्थित भेलाह। देखितहिं बुझबामे आएल जे कोनो महापुरुष अएलाह अछि। हमर पिता पं. लीलमोहन झा सेहो दलानेपर छलाह। ओऽ परम आह्लादित भए उठि कऽ ठाढ़ भेलाह। झटकि कऽ अरियाति अनलखिन्ह। हमरा सभ जतेक नवयुवक रही- सभकँ कहलन्हि- प्रणाम करहुन्ह। हमरो लोकनि उल्लसित एवं अनुशासित भए प्रणाम कएलियन्हि। बाल्टीमे जल, जलचौकी ओऽ अढ़िया आनल गेल। हुनकासँ पए धोएबाक आग्रह कएल गेलन्हि। हमर पिता जे परोपट्टाक श्रेष्ठ समादृत व्यक्ति छलाह- स्वयं लोटामे जल लए हुनकर पएर धोअय लगलखिन्ह। पुनः अंगपोछासँ पएर पोछि पलंगपर बिछाओल साफ सुन्दर विछाओनपर बैसेलखिन्ह। आ हुनक पएर धोयल जलसँ समस्त घर-आङनमे छिड़काव भेल। एहि बीच सरवत आएल- पान आएल। घरक सभ सदस्यमे एक अद्भुत उल्लास-जेना कोनो इष्टदेव आबि गेल होथि। ओहि बैसारमे तँ बहुत काल धरि कुशलादिक वार्ता होइत रहल। संध्याकाल धरि तँ हमर दरवज्जापर गाम भरिक ब्राह्मणक समूहक समूह उपस्थित होमऽ लागल। ओहि मध्य हमर पिता परिचय करौलन्हि। कहलन्हि- ई थिकाह पंजीकार प्रवर श्री मोदानन्द झा जी लब्ध धौत, शिवनगर, पूर्णियाँ निवासी। हमरा लोकनिक वंश रक्षक। हिनकहिं प्रतापे हमरा लोकनि अपन कुल ओऽ जातिक रक्षा कऽ पबैत छी। हिनक पिता पञ्जीशास्त्र मूर्धन्य पञ्जीकार भिखिया झा बड़ पैघ विद्वान् ओऽ सदाचार पालक। ओहि योग्य पिताक यशस्वी पुत्र छथि पञ्जीकार प्रवर मोदानन्द बाबू। नाम सुनितहिं अकचकयलहुँ। हम पूर्णियाँ कॉलेजक जखन छात्र रही तँ समस्त कुटुम्ब वर्ग बिष्णुपुर गामक मित्रवर्ग जे नवरतन पूर्णियाँमे रहैत छलाह तनिकासँ हिनक नाम बड़ श्रद्धापूर्वक उच्चरित होएत सुनने छलहुँ। अहि साक्षात्कार भेल सन्ता बुझि पड़ल जे जे किछु हिनकर मादे सुनने छलहुँ से बड़ कम छल। निश्चय ई व्यक्ति परम आदरणीय छथि। सांध्यकालीन बैसारमे गामक सभ श्रेष्ठ व्यक्ति अपन-अपन वंशक नवजन्मोत्पत्तिक विवरण लिखबैत गेलखिन्ह। पञ्जीकारजी तत्परतापूर्वक सभक परिचय बड़ मनोयोगसँ लिखैत रहलाह। तखन हमरा बुझाएल जे कोना कऽ हमरा लोकनिक वंश परिचय पछिला हजार वर्षसँ साङ्गो-पाङ्ग उपलब्ध रहल अछि। हमर गाम पञ्जीकार गामसँ १०० कि.मी.सँ अधिके पूर्वमे अवस्थित अछि। यातायातक कोनो सम्यक व्यवस्था पूर्वमे नहि रहल होएतैक। नाना प्रकारक असुविधाक सामना करैत एतैक भू-भागमे पसरल मैथिल ब्राह्मणक यावतो परिचय संग्रहित करब, सुरक्षित राखब आ बेर पड़लापर उपस्थित करब अत्यन्त दुःसाध्य कार्य। यात्रा ओ परिस्थिति जन्य कष्टक थोड़ेको अनुभव नहिं कऽ कँ अपन कर्तव्येक प्रधानता दैत निःस्वार्थ भावसँ धर्मशास्त्रक रक्षामे तत्पर एहि इतिहासक संरक्षण सन पुनीत कार्य करैत रहब हिनकहि सन व्यक्तिसँ संभव। प्रातः काल पूज्य पितासँ एकान्तमे पुछलियन्हि जे एतेक कष्ट उठा कऽ परिचय संग्रह करबाक प्रयोजन की? बुझौलन्हि जे अपना लोकनि जे सनातन धर्मावलम्बी से सभटा कार्य मनु, याज्ञवल्क्य, शतपथ, शंख इत्यादि महान् ऋषि लोकनिक देल व्यवस्थापर चलैत छी। मनु विवाहक सन्दर्भमे कहने छथि जे कोनो कन्या ओ वरक विवाह स्वजन, सगोत्र, सपिण्ड ओ समान प्रवरमे नहि हो। एहि हेतु आवश्यक अछि जे सपिण्ड्य निवृत्तिक ज्ञान हो। ताहि हेतु पुरुषाक विवाहादिक विवरण सम्पूर्णतः उपलब्ध हो। एहि धर्मक रक्षा तँ विन पञ्जीकारहिं सम्भव नहि। अन्यथा वर्णसंकरक प्रधानता होएत ओ जातीय रक्षा नहिं होएत। पञ्जीकारक नहिं रहने वंशक इतिहासक ज्ञान नष्ट भए जाएत।

विश्वास जमि गेल। हुनका प्रति मनमे जे आस्था छल से चतुर्गुण भऽ गेल। तकर बाद जखन कखनो ओऽ अएलाह हम ओहि देवत्व भावँ हुनक सम्मान कएल। ओहो पितृवत स्नेह देलन्हि। ओऽ अपन व्यक्तित्वक धनी छलाह। सदाचार पालनमे तत्पर। जखन कखनो हुनकर गामपर जएबाक अवसर भेटल- गमौलहुँ नहि। कतेको बेर हुनकर गाम शिवनगर गेल छी। हुनक ओऽ साफ परिछिन्न दलान। रमनगर फुलवाड़ी। पञ्जीकारजीक दैनिक चर्या कलम ओऽ खुरपीक संग सम्पन्न होइत छलन्हि। कर्मिष्ठ पुरुषः।



नवेन्दु कुमार झा

समाचार वाचक सह अनुवादक (मैथिली), प्रादेशिक समाचार एकांश, आकाशवाणी, पटना

कोसी क्षेत्रमे आएल भीषण बाढ़िसँ ई क्षेत्र तबाह भऽ गेल अछि। वर्तमान परिदृश्य महान कथाकार फणीश्वर नाथ रेणुक ''परती परिकथा'' दिस लोक ध्यान खींचि रहल अछि। कोसीक मारि सहैत कतेको लाखक आबादीकेँ ओहि दिन राहत भेटल छल जखन कि बिहारक शोक कहल जाएवाला नदी कोसीपर तटबंधक निर्माण भेल छल। आशा जागल जे ई क्षेत्र आब सोना उगलत। ई भेबो कएल। मुदा १८ अगस्त २००८ केँ पूरा परिदृश्य बदलि गेल। सरकारक लापरवाही चाहे ओ केन्द्र सरकारक हो कि राज्य सरकारक ई क्षेत्र एक बेर फेरसँ बालूक ढेर बनि गेल। जे नदी एहि क्षेत्रकेँ बसौलक ओहि नदीक कारण एक बेर फेर क्षेत्र विरान भऽ गेल। विकास दौरसँ ई क्षेत्र चलि गेल पचास वर्ष पाछाँ।

एशिया क्षेत्रमे सभसँ उपजाऊ मानल जाएबला एहि क्षेत्रमे एखन बाँचल अछि तँ ओऽ छथि अपन घर-घरारी छोड़ि शरणार्थी बनल बाढ़ि पीड़ित आ पसरि रहल बिमारी आ बाँचल अछि जिनगी कटबाक आशा। मलेरिया सन महामारीक लेल बदनाम एहि क्षेत्रमे किछु वर्षसँ जे हरियरी देखाइत छल ताहिपर पानि पसरि गेल। गहूम, मकई आ धानक लहराइत खेत देखबाक चिन्तामे लागल अछि लोक। खेतीपर निर्भर एहि क्षेत्रक अर्थव्यवस्थापर जे घाव भेल अछि से कतेक दिनमे भरत से निश्चित नहि बुझि पड़ैत अछि।

ओना तँ एहि क्षेत्रक एकटा पैघ आबादी एखनो प्रवासी छल मुदा जे एखन छलाह तिनको ई बाढ़ि प्रवासी बनबापर विवश कएलक अछि। खेतीक बाद जाहिसँ एहि ठामक अर्थव्यवस्था चलैत छल ओ अछि मनीआर्डर। मनीआर्डरक भरोसे लोक कहुना जिनगी कटैत छल। आब ओकरो अपन जिनगी पहाड़ लागि रहल अछि। राहत शिविर आ सुरक्षित स्थानपर शरण लेने एकटा पैघ आबादीकेँ अपन भविष्य प्रवसी बनबामे बुझि पड़ैत अछि। ओऽ आब बिचारि लेने अछि जे घर गृहस्थीकेँ पटरीपर आनब बिनु प्रवासी बनने संभव नहि अछि। कोसी क्षेत्रक कतेको रेलवे-स्टेशनपर लगातार बढ़ि रहल भीड़ एकर प्रमाण अछि। कतेको माय-बाप-भाइ-बहिन अपन-अपन परिजनकेँ घर-घरारीक चिन्ता नहि करबाक आशा देआ प्रदेशक लेल बिदा कऽ रहल छथि। किएक तँ जिनगी कटबाक एकमात्र रास्ता ओकरा मनीआर्डर बुझि पड़ैत अछि। एहि ठाम तँ सभ किछु उजड़ि गेल अछि। आब एकमात्र आशा प्रवासी बनि रहल परिजनक मनीआर्डर मात्र अछि जाहिसँ फेरसँ घर गृहस्थीकेँ पटरीपर आनल जाऽ सकैत अछि। ओकरा एहि बातक कोनो चिन्ता नहि अछि जे देशक कतेको भागमे बिहारी सभक विरुद्ध गतिविधि चलाओल जा रहल अछि। ओऽ तँ आब ई मानि लेलक अछि जे एहि ठाम एखन कोन जिन्दा छी जे प्रदेशमे कोनो अनहोनी घटनाक शिकार भऽ जाएब। ई एहि बातक प्रमाण अछि जे पेट आगिक सोझाँ प्रदेशमे होमए वाला कोनो तरहक अनहोनीक कोनो मोल नहि अछि। अपन आँखिसँ कोसीक धारमे बहैत अपन लोक, आर-परोस आ परिचितक लहाससँ एहि क्षेत्रक लोक हृदय पाथर भऽ गेल अछि। बाँचल जिनगी कटबाक लेल मृत्युक सामना करएसँ आब कोनो घबराहटि ओकरा नहि छै।

कोसीक तटबन्ध टुटलाक बाद आब सरकारी स्तरपर जाँच, कार्वाई आ आयोगक गठन आदि खानापूर्ति भऽ रहल अछि आ होएत एहिसँ ओकरा कोनो माने मतलब नहि रहि गेल छै। आब चिन्ता छै तँ बस अपन घर-घरारी बसेबाक आ अपन परिवारक भविष्य रक्षा करबाक। बाढ़ि पीड़ितक लहासपर राजनीति, राहत आ बचाव काजक नामपर सरकारी खजाना लुटाएत, वोटक लेल गोलबन्दी होएत मुदा अगिला साल फेर कोसीक तांडव नहि होएत आ राजनेता, अधिकारी आ सरकार अपन जिम्मेदारी निर्वाह करताह एकर कोनो गारंटी नहि अछि।

अस्तित्वक लेल संघर्ष करैत पटनाक विद्यापति स्मृति पर्व

मिथिलांचलक सांस्कृतिक धरोहर महाकवि विद्यापतिक जयन्तीक प्रतीक्षा मिथिलावासी वर्ष भरि करैत छथि। कार्तिक धवल त्रयोदशीकेँ प्रति वर्ष मनाओल जाएवला एहि वार्षिक उत्सवमे

पूरा मनोयोगक संग मिथिलावासी शामिल होइत छथि। एहि क्रममे राजधानी पटनामे आयोजित होमएवाला विद्यापति स्मृति पर्वक प्रतीक्षा सेहो राजधानीक मिथिलावासीकेँ रहैत अछि। मुदा एहि वर्ष एहि आयोजनपर जेना ग्रहण लागि गेल अछि। बढ़ैत संसाधनक बावजूद आयोजक एहि सांस्कृतिक उत्सवक स्वरूप वर्ष-दर-वर्ष छोट कएने जा रहल छथि। ई आयोजन आब इतिहास बनबाक द्वारपर ठाढ़ अछि। पछिला चौबन वर्षसँ प्रति वर्ष आयोजित होमएवाला त्रिदिवसीय कार्यक्रम एहि वर्ष एक दिवसीय होएबाक संवाद अछि। पटनाक हार्डिंग पार्कसँ सचिवालय मैदान आ मिलर हाई स्कूल मैदान होइत ई आयोजन जखन भारत स्काउट मैदान धरि आएल ता धरि ई उम्मीद छल जे ई समारोह अपन पुरान गौरवकेँ फेरसँ प्राप्त करत मुदा जखन एहि समारोहक स्थान परिवर्तित कऽ कापरेटिव फेडरेशन परिसर आबि गेल तऽ स्पष्ट भऽ गेल जे आब आयोजक मात्र खानापूर्ति करबाक लेल एकर आयोजन करैत छथि। आ एहि बेरक सूचनापर गौर करी तऽ स्पष्ट होइत अछि जे आब एहि समारोहक आयोजन मात्र औपचारिकता रहि गेल अछि। कोसी क्षेत्रमे आएल बाढ़ि आयोजक सभकेँ एकटा बहाना बनि गेल अछि आ एहि बहाने एहि समारोहक गौरवपूर्ण इतिहासकेँ समाप्त करबापर लागल छथि।

बाढ़ि मिथिलांचलक नियति अछि। शायदे कोनो वर्ष होएत जखन कि एहि प्राकृतिक आपदाक सामना नहि होइत अछि मुदा एहि बेर कोसीमे आएल बाढ़िसँ आयोजक संस्था चेतना समितिक कर्ता धर्ताकेँ अपन गाम-घर दहाएल तँ हुनक दर्द जागि उठल आ कार्यक्रमक समय-सीमा घटा देलनि। दरभंगा, मधुबनी, मुजफ्फरपुर, सीतामढ़ी आदि मिथिलांचलक कतेको क्षेत्र सभ साल बाढ़िक मारि झेलैत अछि मुदा बिना रुकावट सभ साल तीन दिवसीय विद्यापति स्मृति पर्वक आयोजन होइत रहल अछि। ओहि क्षेत्र सभक चिन्ता समितिकेँ शायद नहि रहैत छल। ज्यो बाढ़िक समस्याक प्रति एतेक गंभीर छलाह तँ पूर्वमे कतेको बेर आएल बाढ़िक बाद एहि आयोजनकेँ छोट कएल जा सकैत छल से आइ धरि नहि भेल। ज्यो अहू बेर आयोजक एहि समस्याक प्रति गंभीर रहितथि तँ एहि समारोहक माध्यमसँ राजधानीक मिथिलावासीक सहयोग बाढ़ि पीड़ितक मदति लेल लऽ सकैत छलाह। एहन रचनात्मक डेग संस्था उठाएत से संस्थाक कर्ता-धर्ताक आदति नहि रहलनि अछि। एहिसँ समितिकेँ सामूहिक श्रेय भेटैत से तऽ संस्थाक महानुभाव लोकनिकेँ कतहु मंजूर नहि छलनि। ओ तँ व्यक्तिगत श्रेय लेबापर विश्वास करैत छथि।

दरअसल चेतना समितिक जुझारू पदाधिकारी सभमे आब काज करबाक चेतना नहि बचल अछि। नहि तँ ओ एहिपर जरूर चिन्तन करितथि जे एहि समारोहमे प्रतिवर्ष दर्शकक संख्या किए कम भऽ रहल अछि। जखन संस्थाक स्तरसँ दर्शककेँ जोड़बाक कोनो प्रयास नहि भऽ रहल अछि तँ एहिमे दर्शक दिससँ प्रयास होएबाक बात सोचब निरर्थक अछि। ओना आयोजक कतेको वर्षसँ एहि समारोहकेँ विराम देबाक प्रयासमे छथि। कखनो चुनावक बहाना बना तँ कखनो कानून व्यवस्थाक बहाने एहि कार्यक्रमक स्वरूपकेँ छोट क देलनि। एहि वर्ष तँ कोसीक विभीषिका तँ मानू हुनक सभक मनोनुकूल वातावरण दऽ देलक। प्रारम्भमे त्रिदिवसीय आयोजनक तैयारीक बाद एकाएक एकरा एक दिवसीय करब मात्र औपचारिकता लागि रहल अछि जाहिसँ कि जे किछु मैथिली प्रेमी छथि अगिला वर्शसँ अपनहि एहि कार्यक्रमसँ कटि जाथि आ दर्शकक अनुपस्थितिक बहाना बना कार्यक्रमकेँ बंद कऽ देल जाए। ई विडम्बना कहल जा सकैत अछि जे पटनामे शुरू भेल विद्यापति स्मृति पर्वक देखा-देखी प्रदेश आ देशक आन क्षेत्रमे वर्ष दर वर्ष पूरा उत्साहक संग आयोजित भऽ रहल अछि आ एहि ठामक आयोजनक अस्तित्वपर संकट आबि गेल अछि। वास्तवमे चेतना समिति आब किछु फोटोजेनिक चेहरा सभक अखाड़ा बनि गेल अछि जे एकर कार्यालय विद्यापति भवनकेँ अपन दलान बुझि अपनहिमे कुश्ती करैत रहैत छथि। कोसीक विभीषिकाक दर्द मठाधीश लोकनिक संग-संग सभ मिथिलावासीकेँ अछि। कोसीक बाढ़ि पीड़ितक दर्द एहि आयोजन माध्यमसँ सभ मिथिलावासीकेँ जोड़ि सामूहिक रूपेँ बाटल जा सकैत छल। ज्यो से नहि तऽ बाढ़ि पीड़ितक मदति लेल प्रदेश आ देशक कतेको क्षेत्रमे सामाजिक-सांस्कृतिक कार्यक्रमक कएल गेल आयोजन व्यर्थ छल।

मिथिलाक कतेको महान विभूति सभक प्रयासँ शुरू भेल राजधानीक ई सांस्कृतिक उत्सव पूरा देशमे एकटा महत्वपूर्ण स्थान रखैत अछि। एहि आयोजनकेँ इतिहास बनेबाक प्रयास करब चिन्ताक विषय अछि। पहिने कार्यक्रमक स्थान छोट करब आ आब एकर समय सीमा घटएलासँ राजधानीक मिथिलावासी मर्माहत छथि। एकरे परिणाम अछि जे छोटे स्तरपर सही राजधानीसँ सटल दानापुर आ राजीवनगरमे किछु वर्षसँ आयोजित भऽ रहल विद्यापति पर्व आब लोकप्रिय भऽ रहल अछि। आब राजधानीक मिथिलावासी चेतना समितिक बदला एहि दुनू स्थानपर होमएवाला आयोजनक प्रतीक्षा करैत छथि। शायद अहूसँ चेतना समिति सचेत होएत आ विद्यापति स्मृति पर्वक अपन पुरान गौरवकेँ पुनर्स्थापित करबाक प्रयास करत।



नीलिमा

भानस भात

मखानक खीर

सामग्री- दूध-१ १/२ किलो, चिन्नी-१०० ग्राम, मखान कुटल- १०० ग्राम, इलाइची पाउडर- स्वाद अनुसार, काजू-१० टा, किशमिश-२०टा

विधि-मखानक पाउडर (कनी दरदरा)क पहिने १/२ किलो ठंढ़ा दूधमे घोरि लिअ, शेष दूध कें खौला लिअ। आब गर्म दूधमे ई घोड़ल मखानक मिश्रण मिला दियौक आर करौछसँ लगातार चलबैत रहियौक जाहिसँ मिश्रण पेनीमे बैसय नहि। जखन खौलय लागय तँ ओहिमे चिन्नी, काजू, किशमिश सभ दऽ कय अन्तिममे इलाइची पाउडर खसाऽ कऽ मिलाऽ कऽ उताड़ि लिअ। मखानक खीर तैयार अछि।

नोट:- मखानकेँ सुखलो भुजि कऽ कुटि सकैत छी वा घीमे सेहो भूजि कए कूटि कऽ पाउडर बना सकैत छी।

मेथीक परोठा

सामग्री:-आटा-२५० ग्राम, बेसन-१०० ग्राम, रिफाइन-२५० ग्राम, मेंथी साग-५०० ग्राम, हरिअर मेरचाइ-४टा, आदी- १ इन्चक टुकड़ा, धनी-पात आ नोन-अंदाजसँ।

विधि- मेंथीकेँ साफ कऽ कए धोऽ लिअ। मेंहीसँ काटि कए लोहियामे कनी तेल दऽ कय मेंथी पात खसा दियौक। कनी भाप लागि जाय तँ ओहिमे काटल हरियर मेरचाइ, आदी घसल, धनी-पात काटि कय आ नून मिला कय एहि मिश्रणकेँ बेसन फेँटल आँटामे मिला दियौक। आँटाकेँ कनेक कड़ा कऽ सानि लिअ। पराठा बेल कए तवापर कम आँचपर रिफाइन लगा कए सेकि लिअ। खास्ता मेथीक पराठा तैयार भऽ गेल।

नोट:- अहाँ काँच मेंथी पात कऽ मेंही काटि कऽ, पियाजु सभ मिला कऽ सेहो आँटा सानि सकैत छी।

मुगलई कोबी

सामग्री:-कोबीक टुकड़ा-१/२ किलो, पियाजु महीन काटल-१कप टमाटर, कद्दूकस कएल-१ कप, हरियर मेरचाइ-आदीक पेस्ट-१ चम्मच, नून स्वादानुसार, लाल मिरचाइक पाउडर-१/२ चम्मच, धनियाँ पाउडर-१ चम्मच, हरदि- १ चम्मच, गर्म मसल्ला-१/२ चम्मच, अमचूर-१/२ चम्मच, जीर-१/२ चम्मच, मलाई-१/२ चम्मच, टोमेटो सॉस- १ चम्मच, रिफाइन तेल-२ चम्मच।

विधि:- कोबीक टुकड़ा धोऽ कऽ चालनिमे आधा घंटाक लेल राखि दियौक, जाहिसँ एकर पानि निकलि जाय। फेर लोहियामे तेल गर्म कऽ कोबीकेँ हल्का गुलाबी फ्राइ कऽ लिअ आर एकटा पेपरपर निकालि लिअ, जाहिसँ तेल निकलि जाय। एक पैनमे तेल ढारू। ओहिमे जीर दऽ कए पियाज आ आदीक पेस्ट दऽ कय भुजि दियौक। आब सभ टा मसल्ला दऽ कय कनी देरमे आर भुजियौक। मलाएकेँ मैश कऽ दऽ दियौक, सॉसकेँ सेहो दऽ दियौक आर नीकसँ मिला दियौक। आब एहिमे कोबीक टुकड़ा दऽ कय चम्मचसँ मिला दियौक। फेर एक बाउलमे ओकरा निकालि कऽ ऊपरसँ गरम मसल्ला आर धनियाँ (धनी) पात सजा दियौक आर पड़सि लिअ।

केसर पुलाव

सामग्री:- २ कप बासमती चावल, १ कप मटरक दाना, १ टुकड़ा दालचीनी, १ बड़ी इलायची, ४ टा लौंग, ४ कप पानि, २ टेबुल स्पून घी, १/२ केसर, २ टीस्पून गरम पानि, एकटा पियाजु लम्बा-लम्बा काटल, १ टी स्पून जीर, २ टी स्पून नून।

विधि:-केसरक गरम पानिमे फुलइ लेल दऽ दियौक। चाउरकेँ नीकसँ धोऽ कए फुलइ लेल दऽ दियौक। कुकरमे घी गरम कऽ कए ओहिमे प्याज दऽ कए ब्राउन होय धरि फ्राइ कऽ कए प्लेटमे निकालि लिअ। आब एहि गरम घीमे दालचीनी, जीर, इलाइची, लौंग आर नून दऽ दियौक। मटरकेँ दऽ कए कनी चलाऊ आर चाउरकेँ पानिसँ निकालि अहीमे दऽ दियौक। ऊपरसँ पियाजु आ केसर सेहो दऽ दियौक। ४ कप पानि दऽ कय एक सीटी आबए तक पकाऊ। गरम-गरम केसर पुलाव, रायता वा कोनो रसगर तरकारी संग खाऊ।

मूरक परोठा

सामग्री:-आँटा-२५० ग्राम, बेसन-१०० ग्राम, मूर-२५० ग्राम, रिफाइन तेल-१०० ग्राम, जमाइन-मंगरैल-अंदाजसँ। आदी-१ इन्च टुकड़ा, धनी-पात-दू डाँट, हरियर मेरचाइ ४ टा, नून- अंदाजसँ।

विधि:- मूरकेँ धोऽ कऽ कद्दूकस कऽ लिअ। लोहियामे कनी तेल दऽ दियौक। गर्म भेलापर ओहिमे मूर आ सभ मसल्ला खसा दियौक आ ढ़क्कनसँ झाँपि दियौक। कनी भाप आबि जाएत, ओकरा निकालि कऽ ठंढ़ा हेबय दियौक। आब एहि मिश्रणमे नून मिला कय बेसन मिलल आँटामे मिला कऽ सानि लिअ। गोल-गोल पातर-पातर बेल कऽ ताबापर दुनू दिस रिफाइन लगा कए सेकि लिअ। मूरक परोठा तैयार भऽ गेल।

मूरक परोठा बनेबाक एकटा आर विधि अछि, अहाँ मूलीक कद्दूकस कऽ कए ओहिमे सभ मसल्ला मिला लिअ। आब ओकड़ा गाड़ि कए एक दिस राखि लिअ। आब आँटाक गोलीमे थोड़े मूलीक मिश्रण लऽ कऽ नून मिला कऽ भरि लिअ आ बेल कऽ ताबापर रिफाइन दऽ कऽ सेकि लिअ।

नोट:-एहि तरहेँ काँच अनरनेबा आ बन्धा कोबीक परोठा सेहो बना सकैत छी।



निमिष झा

समाचार प्रमुख, हेडलाइंस एण्ड म्यूजिक एफ.एम., 97.2, ललितपुर, नेपाल

विद्यापति

कोनो साहित्यमे किछ साहित्यकारसभ एहन होइत छथि जिनकर जन्म कोनो घटनाक रूपमे होइत अछि आ ओहि घटनासँ सम्बन्धित सम्पूर्ण साहित्य प्रभावित भऽ जाइत अछि। ओहन साहित्यकारक साहित्यिक व्यक्तित्व ओहि साहित्यक सर्वाङ्गीण विकासमे वरदानसिद्ध होइत अछि। ओहन साहित्यिक महापुरुष पूर्ववर्ती साहित्यिक परम्परा आदिक सम्यक अनुशीलन पश्चात अपन मान्यता एवम साहित्यिक योजना निर्दिष्ट करैत छथि। अपन कार्यसभक माध्यमसँ युगान्तकारी आ प्रभावशाली रेखा निर्माण कऽ अमरत्व प्राप्त करैत छथि।

मैथिली साहित्यक इतिहासमे विद्यापति एकटा एहने अतुलनीय प्रतिभाक नाम अछि। सम्पूर्ण मैथिली साहित्य हुनकासँ प्रभावित अछि। हुनकर प्रभाव रेखाकेँ क्षीण करबाक साहित्यिक क्षमता भेल व्यक्ति मैथिली साहित्यक इतिहासमे अखन धरि किओ नहि अछि। विद्यापति मैथिली साहित्यक सर्वश्रेष्ठ कवि छथि। हुनकेमे मैथिली साहित्यक सम्पूर्ण गौरव आधारित अछि ।

इतिहासकार दुर्गानाथ झा 'श्रीश'क शब्दमे विद्यापति आधुनिक भारतीय भाषाक प्रथम कवि छथि। ओ संस्कृत साहित्यक अभेद्य किलाकेँ दृढ़तापूर्वक तोड़ि भाषामे काव्य रचना करबाक साहस कयलनि। हुनकरे आदर्शसँ अनुप्रेरित भऽ शङ्करदेव, चण्डीदास, रामानन्द राय, कवीर, तुलसीदास, मीरावाई, सुरदास सनक महान स्र्ष्टासभ अपन भक्ति भावनाक माध्यमसँ अपन मातृ भाषाकेँ समृद्ध कयलनि।

मैथिली साहित्यमे विद्यापति युग ओतबे महत्वपूर्ण अछि जतबे अङ्ग्रेजी साहित्यमे शेक्सपियर युग, नेपाली साहित्यमे भानुभक्त युग, बङ्गालीमे रवीन्द्र युग तथा हिन्दीमे भारतेन्दु युग। विद्यापतिक रचनासभमे मिथिला पहिल बेर अपन वैशिष्ट्य भक्तिभावना, शृङ्गारिक सरसता एवम् मौलिक साङ्गीतिक लय प्रस्फुटित भेल आभाष कयलक अछि। ओकर बाद विद्यापतिक पदावलीसभ जनजनक स्वर बनि सकल तऽ मिथिलामे युगोसँ व्याप्त असमानताक अन्त करैत विद्यापतिक रचनासभ समान रूपसँ लोकस्वरक रूप ग्रहण कऽ सकल।

वास्तवमे विद्यापति युगद्रष्टा रहथि। ओ मैथिली साहित्यक श्रीवृद्धिक लेल अथक प्रयास मात्र नहि कयलनि, तत्कालीन समयमे पतनोन्मुख मैथिल समाजक पुनर्संरचनाक लेल सेहो मद्दत पहुँचौलनि। विद्यापतिक प्रादुर्भावक समयमे भारतीय उपमहाद्वीपका प्रायः हरेक भागक सभ्यता आ संस्कृति सङकटपूर्ण अवस्थामे छल। मुसलमानी शासकसभक आतङक चरमोत्कर्षमे रहल ओहि समयमे मैथिल संस्कृतिक रक्षा आवश्यक भऽ गेल छल।

ओहन अवस्थामे विद्यापतिक आगमन मैथिली साहित्य आ संस्कृतिक विकासक लेल महत्वपूर्ण वरदान सिद्ध भेल। एक दिस मुसलमानी शासकसभक आक्रमण आ दोसर दिस बौद्ध धर्मक बढ़ैत प्रभावक कारण समाजमे सिर्जित वैराग्यक मनस्थितिसँ आक्रान्त मैथिल सभ्यता आ संस्कृति अपन उन्नयनक रूपमे सेहो विद्यापतिकेँ प्राप्त कऽ अपन मौलिकता बचाबयमे सक्षम भेल।

विद्यापति अपन विविध रचनासभक माध्यमसँ सामाजिक पुनर्संगठनक प्रक्रियाकेँ बल देलनि। ओ समाजसँ पलायन भऽ रहल मैथिल युवासभकेँ समाज निर्माणक मूल धारामे प्रभावित करएबाक लेल अथक प्रयास सेहो कयलनि। हुनकर एहने प्रयासक उपज अछि शृङ्गारिक रचनासभ । मुसलमानसभक आक्रमणसँ पीडित आ पलायन भऽ रहल तत्कालीन मिथिलाक युवासभकेँ मुसलमान विरुद्ध प्रयोग कऽ मिथिलाक अस्तित्व रक्षा करबाक लेल विद्यापतिक ई रचनासभ सहयोगी प्रमाणित भेल ।

तत्कालीन समयक लेल विद्यापतिक अहि प्रकारक चातुर्यकेँ कुटनीतिक सफलताक रूपमे देखल जा सकैया ।

समाजमे व्याप्त असमानाता, कुरीति, अन्धविश्वास सहित विभिन्न विसङ्गतिसकेँ मानव प्रेम एवम भाषा उत्थानक भरमे विद्यापति अन्त करबाक काजमे सफल छथि ।

विद्यापतिक सम्पूर्ण रचनासभ शृङ्गार आ भक्ति रससँ ओतप्रोत अछि। कतेको विद्वानसभ विश्व साहित्यमे विद्यापतिसँ दोसर पैघ श्रृंगारिक कवि आन किओ नहि रहल कहैत छथि।

महाकवि विद्यापति तत्कालीन समाजमे प्रचलित संस्कृत, अवहट्ठ आ मैथिली भाषाक ज्ञाता छलथि। ई तीनु भाषामे प्राप्त रचनासभ अहि बातकेँ प्रमाणित करैत अछि।

यद्यपी विद्यापतिक जन्म तथा मृत्युक सम्बन्धमे विभिन्न विद्वानसभक विभिन्न मत अछि। तथापि मिथिला महाराज शिव सिंहसँ ओ दू वर्षक जेष्ठ रहथि। अहि तथ्यक आधार पर विद्वानसभ हुनकर जन्म तिथिकेँ आधिकारिक मानैत छथि। कवि चन्दा झा विद्यापतिद्वारा रचित पुरुष परीक्षाक आधार पर विद्यापति राजा शिव सिंहसँ दू वर्ष पैघ रहथि उल्लेख कयने छथि। जँ ई तथ्यकेँ मानल जायतऽ सन् १४०२ मे राज्यारोहणक समयमे राजा शिव सिंहक उमेर ५० वर्ष छल आ विद्यापति ५२ वर्षक रहथि। अहि आधार पर विद्यापतिक जन्म सन् १३५० मे भेल निश्चित अछि ।

डा.सुभद्र झा, प्रो. रमानाथ झा, पं. शशिनाथ झा आदि विद्वानसभ ई मतकेँ स्वीकार करैत छथि मुदा डा.उमेश मिश्र, डा.जयमन्त मिश्र सहितक विद्वानसभ विद्यापतिक जन्म सन् १३६० मे भेल कहैत छथि ।

अहिना विद्यापतिक मृत्यु प्रसङ्गमे सेहो एक मत नहि अछि। अपन मृत्युक सम्बन्धमे मृत्यु पूर्व विद्यापति स्वयंद्वारा रचित पद विद्यापतिक आयु अवसान कात्तिक धवल त्रयोदशी जानेकेँ तुलनात्मक रूपमे अन्य मत सभसँ अपेक्षाकृत युक्ति संगत मानल गेल अछि। मुदा अहिसँ वर्षक निरुपण नहि भेल अछि ।

विद्यापतिक जन्म भारतक बिहार राज्यक मधुवनी जिल्ला अन्तर्गत बिसफी गाममे भेल छल। ई मधुवनी दरभङ्गा रेलवे लाइनक कमतौल स्टेसन लग अवस्थित अछि। हिनक पिताक नाम गणपति ठाकुर आ माताक नाम गंगादेवी रहनि। हाल विद्यापतिक वंशजसभ सौराठमे रहैत छथि ।

विद्यापति वाल्यकारहिए कुशाग्र वुद्धिक अलौकिक प्रतिभाक रहथि। अपन विद्वान पिताक सम्पर्कमे ओ प्रारम्भिक शिक्षा ग्रहण कयलनि। मुदा औपचारिक रूपमे प्रकाण्ड विद्वान हरि मिश्रसँ शिक्षा ग्रहण कयलनि। तहिना प्रकाण्ड विद्वान पक्षधर मिश्र विद्यापतिक सहपाठी रहनि।

विद्यापति मैथिली साहित्यक धरोहर मात्र नहि भऽ संस्कृतक सेहो प्रकाण्ड विद्वान रहथि। ओ मैथिली आ अवहट्ठक अतिरिक्त संस्कृतमे सेहो अनेको रचना कयने रहथि।

हुनकर रचनासभकेँ तीन भागमे वर्गीकरण कयल जाइत अछि।

क) संस्कृत ग्रन्थ : भू परिक्रमा, पुरुष परीक्षा, शैवसर्वस्वसार, शैवसर्वस्वसार प्रमाणभूत, लिखनावली, गङ्गा वाक्यावली, विभाग्सार, दान वाक्यावली, गया पत्तलक, दुर्गाभक्ति तरङ्गिणी, मणिमञ्जरी, वर्षकृत्य व्यादिभक्ति तरङ्गिणी ।

ख) अवहट्ठ ग्रन्थ : कृतिलता, कृतिपताका

ग) मैथिली ग्रन्थ : गोरक्ष विजय

महाकवि विद्यापति तीन भाषाक ज्ञाता रहथि। ओ दू दर्जनसँ बेसी ग्रन्थसभक रचना कयने छथि। हुनकर बहुतो कृति सभ अखन बजारमे उपलब्ध अछि। प्रस्तुत अछि विद्यापतिक ग्रन्थसभक संक्षिप्त विवरण

१) गंगावाक्यावली : अहि ग्रन्थमे गंगा नदी आ एकर तट पर होबय बला धार्मिक कार्य अर्थात कर्म काण्डक विषयमे विस्तृत जानकारी अछि। गंगा वाक्यावलीक रचना विद्यापति रानी विश्वास देवीक आज्ञासँ कयने रहथि। कृतिमे गंगा नदीक स्मरण, कीर्तन, गंगा तट पर प्राण विसर्जनक महात्म्य वर्णन अछि।

२) दानवाक्यावली : राजा नरसिंह दर्पनारायणक पत्नी रानी धीरमतीक आज्ञासँ ई ग्रन्थक रचना भेल अछि। अहिमे सभ प्रकारक दान विधि विधान विस्तार पूर्वक कयल गेल अछि।

३) वर्षकृत्य : अहि ग्रन्थमे वर्ष भरि होबयबला प्रत्येक पावनि तथा शुभ कार्यक विस्तृत विधान प्रस्तुत अछि। तहिना पूजा, अर्चना, वृत, दान आदि नियमक सम्बन्धमे सेहो चर्चा कयल गेल अछि।

४) दुर्गाभक्तितरंगिणी : दुर्गाभक्तितरंगिणीकेँ दुर्गोत्सव पद्धतिक नामसँ सेहो जानल जाइत अछि। विद्यापति एकर रचना राजा भैरव सिंहक आज्ञासँ कयने रहथि। अहि ग्रन्थमे कालिका पुराण, देवी पुराण, भविष्य पुराण ब्रह्म पुराण, मार्कण्डेय तथा दुर्गा पूजाक पद्धति संग्रहित अछि।

५) शैवसर्वस्वसार : राजा पद्मम सिंहक पत्नी विश्वास देवीक आज्ञासँ रचित अहि ग्रन्थमे महाकवि विद्यापति भगवान शिवक पूजासँ सम्बन्धित सभ विधि विधानक वर्णन कयने छथि। अहि ग्रन्थकेँ शम्भुवाक्यावली सेहो कहल जाइत अछि ।

६) गयापत्तलक : गयापत्तलक ग्रन्थक रचना कोनो राजा या रानीक आदेशसँ नहि भेल अछि। अहि ग्रन्थक सम्बन्ध सामान्य जनतासँ अछि। गयामे

श्राद्ध एवम पिण्ड दान तथा गया जा कऽ पितृ ऋणसँ मुक्त होबाक महात्म्य ग्रन्थमे अछि।

७) विभागसार : विद्यापति विभागसारक रचना राजा नरसिंह देव दपंनारायणक आदेशसँ कयलनि। अहिमे दानभागक संक्षिप्त मुदा सुन्दर आ आकर्षक विवेचन अछि। मिथिलामे तात्कालीन दायभाग आ उत्तराधिकार सम्बन्धी विधानक लेल ई प्रमाणिक ग्रन्थ मानल जाइत अछि।

८) लिखनावली : राजा शिवसिंह तिरोधान भेलाक बाद विद्यापति रजाबनौलीमे राजा पुरादित्यक आश्रममे अहि ग्रन्थक रचना कयलनि। ई ग्रन्थमे पत्राचार करबाक विधिकेँ स्पष्ट व्याख्या कयल गेल अछि। अपनासँ पैघ, छोट, समान तथा नियम व्यावहारपयोगी सहित चारि प्रकारक पत्रक उल्लेख अछि। ग्रन्थसँ मिथिलाक तात्कालीन सामाजिक आ सांस्कृतिक अवस्थाक परिचय भेटैत अछि ।

९) शैवसर्वस्वसार प्रमाणभूत संग्रह : शैवसर्वस्वसारक रचनाक बाद विद्यापति अहि ग्रन्थक रचना कयने रहथि। अहिमे शैवसर्वस्वसारक प्रमाणभूत पौराणिक वचनक संग्रह अछि ।

१०) व्याडिभक्तितरंगिणी : ई लघु ग्रन्थमे सर्पिणीक पूजाक वर्णन अछि। विभिन्न पौराणिक कथा सभ उल्लेख अछि।

११) द्वैनिर्णय : ई एक तन्त्र शास्त्रीय लघु ग्रन्थ अछि । जाहिमे तन्त्र शास्त्रक गुप्त चर्चा कयल गेल अछि । अहि ग्रन्थसँ विद्यापतिकेँ तन्त्रक सेहो विशद ज्ञान रहल प्रमाणित होइत अछि।

१२) पुरुषपरीक्षा : राजा शिव सिंहक निर्देशन पर रचित ई ग्रन्थकेँ विद्यापतिक उत्तम कोटिक ग्रन्थ मानल जाइत अछि। पुरुषपरीक्षामे वीर कथा, सुवुद्धि कथा, सुविद्य कथा आ पुरषार्थ कथा नामक चारि वर्गक पञ्चतन्त्रक शिक्षाप्रद कथा सभ समाविष्ट अछि। समाजशास्त्री, इतिहासकार, मानवशास्त्री, राजनीति शास्त्री सहित दर्शन एवम साहित्य विधाक व्यक्तिक लेल ई अपूर्व कृति अछि।

१३) भूपरिक्रमा : ई विद्यापतिक अत्यन्त प्रभावकारी ग्रन्थ अछि। राजा देव सिंहक आज्ञासँ भूपरिक्रमाक रचना कयल गेल अछि । ग्रन्थमे वलदेवजीद्वारा कयल गेल भूपरिक्रमाक वर्णन अछि। तहिना नैमिषारण्यसँ मिथिला धरिक सभ तीर्थ स्थलक वर्णन सेहो अछि।

१४) कीर्तिलता : कीर्तिलताक रचना विद्यापति अवहट्ठमे कयलनि अछि आ अहि ग्रन्थमे राजा कीर्ति सिंहक कीर्ति कीर्तन अछि। मिथिलाक तात्कालीन राजनीतिक, सामाजिक आ सांस्कृतिक स्थितिक अध्ययनक लेल ई ग्रन्थ महत्वपूर्ण मानल जाइत अछि। ग्रन्थसँ विद्यापतिक प्रौढ़ काव्य कलाक प्रमाण भेटैत अछि। तहिना विकसित काव्य प्रतिमाक दर्शन सेहो होइत अछि।

१५) कीर्तिपताका : अहि ग्रन्थमे राजा शिवसिंहक बहुत चतुरतापूर्वक यशोवर्णन अछि। ग्रन्थक रचना दोहा आ छन्दमे अछि। ग्रन्थक आरम्भमे अद्र्धनारीश्वर, चन्द्रचूड शिव आ गणेशक बन्दना अछि। कीर्तिपताका खण्डित रूपमे मात्र उपलब्ध अछि। एकर ९ सँ २० धरिक जम्मा २१ टा पृष्ठ अप्राप्त अछि। तीसम पृष्ठमे राजा शिव सिंहक युद्ध पराक्रमक वर्णन अछि।

१६) गोरक्षविजय : ई एक एकांकी नाटक अछि। अहिमे विद्यापतिक नूतन प्रयोग सेहो अछि। गोरक्षनाथ आ मत्स्येन्द्रनाथक कथा पर नाटक आधारित अछि। ग्रन्थक रचना राजा शिव सिंहक आदेशसँ कयल गेल छल।

१७) मणिमंजरी नाटिका : ई एक लघु नाटिका अछि। नाटिकामे राजा चन्द्रसेन आ मणिमंजरीक प्रेमक वर्णन अछि।

१८) मैथिली पदावली : विद्यापतिक मैथिलीमे रचित पदावलीक संग्रहित ग्रन्थ अछि मैथिली पदावली। लिखित संकलनक अभावमे विद्यापतिक गीत अपन माधुर्यक कारण लोक कण्ठमे जीवित छल आ बहुत बाद एकर समग्र रूपमे संकलित करबाक प्रयास कयल गेल। यद्यपी अनेक संग्रहसभमे विद्यापतिक गीतक संकलित भेल अछि। पदावलीमे राधा एवम कृष्णक प्रेम प्रसंग गेय पदमे प्रकाशित अछि।

हाइकू

चाँदनी राति
नीमक गाछ तर
जरैछ आगि।

गरम साँस
छिला गेलैक ठोर
प्रथम स्पर्श।

परिचित छी
जीवनक अन्तसँ
मुदा जीयब।

बहैछ पछबरिया
जरै उम्मिदक दीया
उदास मोन।

पीयाक पत्र
किलकिञ्चत् भेल
उद्दीप्त मोन

श्रम ठाढ़ छै
श्रमिक पड़ल छै
मसिनि युग।

मृत्युक नोत
जीबाक लेल सिखु
देब बधाइ।



नूतन झा

गाम: बेल्हवार, मधुबनी, बिहार; जन्म तिथि : ५ दिसम्बर १९७६; शिक्षा - बी एस सी, कल्याण कॉलेज, भिलाई; एम एस सी, कॉर्पोरेटिव कॉलेज, जमशेदपुर; फैशन डिजाइनिंग, निफ्ट, जमशेदपुर।

बारातीसत्कार

आजुक आधुनिक परिवेशमे विवाहक पुरान मान्यता आर विधि विधान अपन प्रतीकात्मक स्वरूपमे शेष बचल अछि। दिन पर दिन ओकर स्थान अपव्यय सँ परिपूर्ण परिपाटी लऽ रहल अछि। हम सब पौराणिक आ' तर्कसंगत विचारक अवशेष मात्र देखि रहल छी। आब निरंतर जीवनशैलीमे आधुनिकताक समावेष भऽ रहल अछि। एकर किछु प्रत्यक्ष लाभो अछि, जेनाकि बढ़ियाँ शिक्षा आ' स्वास्थ्य व्यवस्था। किन्तु आधुनिकताक दुष्परिणामक सूचि बनाबी तऽ ओ' अनन्त रहत।

विवाहादिमे जे आडंबर आ' विलासितापूर्ण प्रदर्शन होइत अछि ओकर निर्वाह सर्व साधारणक लेल काफी कठिन अछि।पालन-पोषण, शिक्षा-दीक्षा कएलाक बाद एक साधारण कन्यापक्ष विवाह समारोहक उच्चवर्गीय प्रदर्शनक आर्थिक आघात कँ कोना सहत? विभिन्न प्रकारक ताम-झाम युक्त महग व्यवस्थाक निर्वाह बहुत कष्टकारी होइत छैक। किछु घंटाक शोभा बढ़ाब' लेल वा विवाह समारोह कँ कथित रूप सँ अविश्वसनीय बनाबए केर दवाब सँ लोक हजारों लाखों टाका पानिमे बहा दैत अछि। नब पीढ़ीक सुशिक्षित लोक कँ बुझबाक चाही जे विवाहकँ अविस्मरणीय बनाबैत छैक दू परिवारक आपसी स्नेह आ' सम्बन्ध। विवाहकँ अविस्मरणीय बनाबैत छैक ओकर सफलता जाहि लेल मात्र निष्ठा आ' विश्वासक प्रचुरता चाही, टेंट हाउस भोज व्यवस्था वा महग कपड़ा लत्ता आर गहना जेवर नञि। ई सभ कृत्रिम साधनक माँग मध्यम वर्गीय परिवारक लेल सीमित रहय तखने कल्याण अछि।

अपव्यय सँ बचि कऽ यदि नवयुगक वर कन्या अपन सूझ बूझ सँ गरिमामय सम्बन्धक शुरूआत करथि तऽ ई सभक हितमे होयत।कन्यापक्ष पर वरपक्ष द्वारा बारातीक भव्य स्वागतक दबाब देखि बड़ा दुख होइत अछि। स्वागत तऽ हृदय सँ हुअक चाही रूपैया पैसा सँ नहिं। एकटा गरीब परिवारक व्यथा संवेदनशील व्यक्तिकँ आडंबरक प्रति आर कठोर बनाबए लेल पर्याप्त अछि।

एक कविक कविताक किछु पंक्ति उल्लेखित अछि :

''कोना करू बरियाती जी अहाँक सत्कार यौ ।

धानो नहि भेल हमरा रब्बियो के नञि आस यौ ॥

कठिन समय छैक सुनियउ भारी परिवार यौ।

रूख सुख जे भेटए कए लिअ स्वीकार यौ॥

सम्बन्ध बनाबऽ एलहुँ अहाँ राखू हमरो लाज यौ।

घर द्वारो टूटल फाटल दलान पर नहि खाट यौ॥

दिन राति पेट भरय लय करि कऽ रोजगार यौ।

खानपियनि द नहि सकलहुँ छी बहुत लाचार यौ॥''

आउ हम सब अहि आडंबरक समूल नाश कऽ मिथिलाक गरिमा बढ़ाबी।

जानकी-नवमी

वैशाख मासक शुक्ल पक्षक नवमी तिथि कँ जानकी-नवमी मनाओल जाइत अछि। लोक ओहि दिन व्रत राखैत छथि आ' सीताजीक पूजा अर्चना करैत छथि। सीता माता लक्ष्मीजीक अवतार मानल गेल छथि, तैँ ई मान्यता अछि जे ई व्रत कएलास ँ सुख एवम् सम्पत्तिक प्राप्ति होइत अछि। एहि वर्ष ई पाबनि अंग्रेजी तारिख १३ मई, २००८ मंगल दिन कँ अछि।

कथा अछि जे राजर्षि जनकजी कँ सीताजी शैशवावस्थामे अही दिन प्राप्त भेल रहथिन्ह।राजा जनक जनकपुरक राजा छलाह आ' संतानहीन जाहिसँ एहि दु:ख स ँ पीड़ित छलाह।एक दिन कोनो शुभ कार्यक प्रयोजन स ँ ओ' खेतमे हर जोतए गेलाह। ओही बीच हुनकर हरस ँ लागि एक स्वर्णक कलशमे स ँ एक दिव्य बालिका प्रकट भेलीह, जिनका राजा जनक आ' हुनकर पत्नी सुनयना गोद लऽ लेलखिन। बालिकाक नाम सीता राखल गेल जकर अर्थ होइत अछि हर। देवी सीताक जानकी नाम सेहो पड़ल अछि।

किन्वदन्ति अछि जे सीताजी लक्ष्मी माताक अवतार देवी वेदवतीक पुनर्जन्म रूप छलीह। ऋषि कुषध्वजक पुत्री वेदवती परम सुन्दरी छलीह आ स्वयम् कँ विष्णु देव कँ प्रति अर्पित कएने छलीह। अनेक राजास ँ आयल विवाहक प्रस्ताव अस्वीकृत क दैत छलीह। अहि कारणसँ ओ अहंकारी रावण के सेहो मना कऽ देलन्हि जाहि द्वारे हुनका रावणक अत्याचार सहए पड़लन्हि।दुःखी भय वेदवती प्रतिज्ञा लेलन्हि जे ओ अपन पुनर्जन्ममे रावणक विनाशक कारण बनतीह आ स्वयम्‌के अग्निमे भष्म कँ' लेलन्हि।एहि बीच मन्दोदरि गर्भवती भेलीह। अपन पतिक कुकृत्य द सुनलाक बाद ओ' अपन भावी संतानकँ ल क आशंकित भ गेलीह।ओ' अपन नइहर गेलीह आ' अपन माता पिताक संग तीर्थ करय लगलीह। जन्मक समय नजदीक अएला पर ओ' अपन संतानक लेल आश्रय ताकए लगलीह। तखने संजोगस ँ संतानहीन राज जनकक खिस्सा सुनलन्हि आ' समय पाबि अपन पुत्रीकँ राजाक पथमे नुकाबएमे सक्षम भऽ गेलीह।किछु लोक इहो कहैत छथि, जे संभवत: सीताजीक जन्मक बाद हुनका पानिमे बहा' देल गेल छल आ' संयोगसँ ओ' जनकजीक खेत लग कात लगलीह।

कथा इहो प्रचलित अछि जे राक्षसक अत्याचारस ँ हताहत ऋषि मुनिक शोणित एक कलशमे एकत्रित कऽ भूमिमे गाड़ि देल गेल छल। बादमे ओहि कलशस ँ सीताजीक जन्म भेल। जन्मक पाछाँ खिस्सा चाहे जे होअए उद्देश्य त रावणक नाशे रहए। एकर सांकेतिक अर्थ इएह अछि जे 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता। अर्थात् जतए स्त्रीक आदर होइत अछि ततए देवताक निवास होइत अछि आ' ओकर विपरीत स्त्रीक अपमान करनिहार दुखद अंत पाबैत छथि।

किछु लोक मानैत छथि जे सीताक जन्म फाल्गुन मासक कृष्ण पक्षक अष्टमी तिथिकँ भेल छन्हि।



ओमप्रकाश झा

गाम, विजइ, जिला-मधुबनी।

मिथिले तक नहि छथि मैथिल- ओमप्रकाश झा

गप्प अछि नवंबर 2007 केर, एहि समयमे हम गोवा न्यूज (जे कि गोवा अवस्थित अंग्रेजी क्षेत्रीय न्यूज चैनल छ्ल) मे काज करैत रही। गोवामे सोलहम अंतराष्ट्रीय मैथिली परिषदक सम्मेलन भेल छ्ल, जकर अध्यक्षता श्री विनय कुमार झा ,चीफ़ विजिलेंस,गोवा स्टेट केलथि। एहि कांफ़रेंसक एकटा छोट सनक अंश यू-टयूब साइट पर सेहो उपलब्ध अछि। एहि कार्यक्रमकँ कवर करबाक भार अपन संस्थासँ हमरे भेटल छ्ल। एहि कार्यक्रमक दौरान बहुत रास चित्र जे स्पष्ट भऽ कऽ सोझाँ आयल ओऽ ई सभ छल.......

1. बहुत रास मैथिल छतीसगढ आ मध्य प्रदेशमे बसल छथि। हालांकि आब हुनका सबहक मातृभाषा मैथिली नहि रहि गेल अछि। यदि आओर तहमे जाई तँ ओऽ लोकनि मैथिली भाषा बिसरि चुकल छथि, तथापि मिथिलासँ ओतबेक स्नेह आ लगाव छन्हि, जतबाक हमरा सबकँ अछि। हुनकर सबहक पुस्त बहुत पहिने ओतए चलि गेल रहथिन्ह। गप्प करीब 4-5 पुस्त पहिनेक अछि।

2. दिल्लीक नांगलोई इलाकामे सेहो किछु रास मैथिल छथि, जे कि अपन जीवन-यापनक क्रममे कतेक रास आन आन व्यवसाय सब अपना लेने छथि। संगहि देशक भिन्न- भिन्न भागमे कतेको ठाम मैथिल लोकनि वृहद समुदायक संग रहि रहल छथि। ओना भाषा एहिमे सँ बहुतो गोटेक हरा गेल अछि।

3. एकटा आरो गप्प जे कि सामने आयल ओऽ छल, जे कि गोवाकँ मैथिले ब्राहम्ण सब बसेने छथि आ एकर प्रमाण स्कन्द पुराणमे भेटैत अछि। हम अहाँ कँ ई बात कहि दी, जे कि गोवन (गोवाक वासी) सबहक मातृभाषा कोंकणी अछि मुदा एहि भाषाक बहुतो रास शब्द मैथिली भाषाक अछि। किछु शब्दक बारेमे हम अहाँ सबकँ कहि रहल छी, जेना कि अदहन (भातक लेल गरम कएल गेल पानि), पाहुन (गेस्ट), मधुर आदि। ओहो सब कोजगरा दिन लक्ष्मी पूजा करैत छथि। रहन-सहनक स्तर अपना सबसँ बहुत हद तक मिलैत अछि। आओर तहमे गेनाय अखन उचित नहि अछि।

कार्यक्रममे कतेको मिथिला-विभूति सब उपस्थित छलाह। वर्तमानमे दिल्ली पुलिसमे वरिष्ठ अधिकारी श्री उज्जवल मिश्र ओहि ठाम तत्कालीन डी.आइ.जी. छलाह। भारतक विभिन्न भागक संगे नेपालक किछु रास प्रतिनिधि सब सेहो पहुंचल छलाह। एहि कार्यक्रमक कवर करबाक लेल गोवा न्यूज आ नेपाल टीवी (नेपालक) चैनल पहुंचल छल, जखन कि बड़का-बड़का मैथिल पुरोधा सब गोवामे विभिन्न मीडिया लेल काज करैत छथि। बादमे जहन हुनका सबसँ जिज्ञासा बस पुछलियन्हि तँ कुनू ने कुनू ओहने बहाना बना लेलाह, जेना कि जखन प्रधानमंत्री स्व० राजीव गांधीक समयमे मधुबनी के एम०पी० हनान अंसारी लोक सभामे मैथिली कँ अष्टम सूचीमे जोरबाक लेल आवाज बुलंद केलथि **तँ** श्री भोगेन्द्र झा जी जे कुनू बहान्ना बनेने रहथि। हम एकर तहमे नहि जाय चाहब, सब गोटे बुझि रहल छी। अल्पज्ञ कहु वा किशोर हमरा मोनमे कतेको प्रश्न उठए लागल जे एनामे मैथिली कोना बचल रहत।

हयऔ, हमर भाषा कुनू अन्य भाषा सँ कनिको कमजोर नहि अछि। हमरा लोकनि अंग्रेजी बाजैत छी, आधुनिक परिधान पहिरैत छी, सबटा बड्ड नीक बात अछि। मुदा एहि तमाम चीजक मूल्यक रुपमे अपन भाषा आ संस्कृति **कँ** उत्सर्ग केनाय हमरा नहि पचि रहल अछि। ई तँ ओहने गप्प भेल जेना किछु रास लोककँ आर्थिक तंगी नहि रहलाक बादो दोसरसँ कर्ज लेबाक प्रवृति होय छन्हि।

परिवर्तनक फ़ेज सँ गुजरि रहल अपन समाज कहीं त्रिशंकु **तँ** नहि बनि रहल अछि।एखन बस एतबे।

मीडिया कतअ ल जा रहल अछि?

गप आरुषि कांड के करी वा मिथिलांचल मे आयल कोसी के कहरक या हाल मे दिल्ली मे भेल सिरीयल बम ब्लाष्टक। यदि अहां सब पछिला किछु दिनका मीडिया के इतिहास पर नजरि

डालि तअ देखु जे ओ कि परोसि रहल अछि आ विडंबना देखु,दर्शक/पाठक के जे ओ ओकरा यथावत ग्रहण करबाक लेल बाध्य छथि। मीडिया के भूमिका के लेल अपना अहि ठाम एकटा कहावत 'खशी के जान जाय,आ खाय वला के स्वादे नहि' वला सहत प्रतिशत ठीक बैस रहल अछि। हमरा बुझा रहल अछि जे अहां सब सनक पाठक लेल मीडियाक छवि के आओर उजागर केनाय उचित नहि हैत।

अहि स छोड़ि यदि मीडिया के आंतरिक संरचना पर ध्यान दी त जतेक निम्न काटि वा अहु स खराब जैं कुनु शब्द होय त संबोधनक स्वरुप ल सकैत छी। यदि टीवी पर देखाय वला सुन्दर चेहरा वा अखबार/मैगजिन मे लिखै वला पुरोधा सब के निजी जीवन मे झांकि क देखब त ओहि मे स अधिकतर व्यक्ती के व्यक्तित्वक समीक्षा केलाक बाद मोन घृणित भ जायत। मुदा विडंबना देखु जे सब गोटे सब बात बुझैत बेबस छी। जे मीडिया दोसरक स्टिंग आपरेशन करैया कि ओकरा लेल सेहो स्टिंग आपरेशन नहि होयबाक चाहि? मुदा इ के करत? हम सब त बगनखा पहिरने छी।

बहुतो मैथिल पुरोधा सब मीडिया के शिर्ष पद सब के सुशोभित क रहल छथि,मुदा कि मजाल जे ओ कखनो सत्य बाजि दैथ। हमहु ओहि भीड़ मे कतौह के कतौ शामिल छी,इ कहैत कोनो लाज नहि भ रहल अछि। कहियो तिलक जेकां पत्रकार होयत छलाह। मुदा आजुक पत्रकार सब समाज के धनाढय वर्ग मे स आबैत छथि।

पाठकगण अहां सब मे स जे कियो मीडियाकर्मी होयब त हमरा माफ़ क देब,मुदा कि हम सब इ दोहरा चरित्र जीवन जिबअ स मुक्त नहि भ सकै छी? अपन पूर्वज के रुप मे मंडण,अयाची,जनक आ विद्यापति के संतान हम सब कतह जा रहल छी? अहां सब मे स जे कियो मीडिया के नजदिक स नहि देखने होय त कोनो निकट परिचित जे अहि क्षेत्र मे काज क रहल हेताह,हुनका स पुछि लेबन्हि। जैं सत्य बाजअ चाहताह त सच्चाई स अवगत भ जायब।

कोना बचत मिथिलाक स्मिता ?

आई जहन अपना सबहक चहुतरफ़ा विकास भ रहल अछि त हम सब अपन महत्वांक्षा के पाबि के अत्यधिक प्रसन्न भ रहल छी,हेबाको चाही। मुदा कि महत्वाकांक्षा के रथ पर सवार भ कअ हम सब कतेक मगरुर नहि भ गेल छी जे अपन स्मिता अपना स कोसो दूर पाछु छुटि रहल अछि। मुदा तकरा समेतनिहार कियो नहि अछि। आय अपना अहिठामक युवा वर्ग अत्यधिक दिग भ्रमित भ रहल अछि,ओकरा कियो सहि मार्ग दर्शक नहि भेट पाबि रहल अछि। अखुनका समय कतेको पाबनि तिहार क महिना आबि गेल अछि आ कतेको गाम मे दुर्गा पूजा के अवसर पर सास्कृतिक कार्यक्रम आयोजित कैल जायत अछि मुदा किछु वर्ष पूर्व मे चलु-आइ सअ आलो पहिले हर गाम मे युवक सब नाटक खेलाय छलाह,महिनोतक रामलिला ले आयोहन होयत छल,ओ सब आय कतह चलि गेल छथि। कि आर्केस्ट्रा आ परोसी (तवायफ़) के नाच मे ओ सब हरा गेल छथि। परोसजी के कार्यक्रम इ असर पड़ैत अछि जे मंदिरक कार्यकर्ता सब सेहो एकर मजा उठाबअ लागैत अछि। इमहर मौका पाबि कुकुर,बिलाड़ि मैया के प्रतिमा के सेवा मे लागि जाइया। देखने हैब जे कुकुर मुर्ती के चाटि रहल अछि। उमहर हम सब अपन तीन पुस्तक (पुरुखा) संग माने बाप- बेटा आ पोता समेत बाईजी पर पाई लुटाबय के अवसर के नहि गवांबैत छी। अधिकतर गोटे अहि स अवगत होयब।

दोसर कतअ जा रहल अछि अपन संस्कार? हयउ,आब शायद कतौ महिनो तक चलैबला रामलिलाक तम्बु गाम मे देखायत होयत? हम अपन छोट सनक अनुभव अपने संग बांटअ चाहब। पहिले रामलीला के टोली के कियो माला (मने एक दिनक भोजन) उठेनिहार नहि होइ,माने इ जे मात्र पेटे पर जे टीम सबहक मनोरंजनक वास्ते तैयार रहैत छल,ओकरा अपन समाज नकारि देलक मुदा आखन प्रायःहर छोट पैघ शहर अतह तक कि देशक राजधानी मे दुर्गा पूजा के अवसर पर लाखो आदमी रामलीलाक खुब लुफ़्त उठबैत छैथ। कतो कतो तअ रामलीला देखै के लेल टिकट सेहो लागैत अछि,कि हम झूठ बाजि रहल छी। एना मे दु टा गप्प जे हमरा स्पष्ट भेल-पहिल जे लोक के ओहि प्रति ओ रुझान नहि रहलन्हि जे कि बाईजी के नाच मे वा कौआल-कौआली मे जे कि राति भरि सबके गरिया क चलि जाइया आ हजारो आदमी मंदिरक आस पास ततबाक गोत गोबर कअ दैत छथि जे अगिला किछु महिना तक उमहर नहिये जाय मे कुशल बुझैत छी। अहि स गामक कलाक ह्रास खूब पैघ स्तर पर भेल अछि,सब गोटे बुझिति अंजान छी।

तेसर आ गंभीर गप्प इ जे समाज मे जे भाई चारा मे छल कि ओ खत्म भ गेल अछि। कि अपन समाज ततेक गरीब तअ नहि भ गेल अछि जे आहिठम दस गोटे के भोजन करेनाय आय कठिन भ गेल अछि। एकर एकटा छोट सनक उदाहरण हम देबए चाहैत छी जे जौं अहाँ सब मे स किछु आदमी दिल्ली-बंबई स कमा क मास दिनक लेल गाम जायत होय तअ अनुभव करैत होयब जे गाम मे बीतल समय के संगे संग अपनेक मेंटिनेन्स पर होय वला खर्च मे कटौति सेहो सबगोटे व्यक्तीगत अनुभव के गहराई स देखु। अखन बस अतेबैक।

इति



डॉ पालन झा

ग्राम-हरौली, कुशेश्वरस्थान।

एम. ए. (मैथिली), सन्त साहेब रामदास पर डॉ दुर्गानाथ झा 'श्रीश' केर निर्देशनमे पी.एच.डी.। संप्रति बी. डी. जे. कॉलेज, गढ़बनैलीमे मैथिली विभागाध्यक्ष। सम्पादक।

सन्त साहेब रामदास

साम्प्रदायिक अर्थे मैथिली साहित्यमे सन्त कविक रूपमे साहेब रामदासक प्रमुख स्थान अछि। पचाढ़ी स्थानक महंथ बंशीदासजीक सानिध्यमे कवीश्वर चन्दा झा हिनक पदावलीक संकलन कए १९०१ ई. मे प्रकाशित कएने छथि। एहि पदावलीमे परिचयक क्रममे कवीश्वर चन्दा झा लिखैत छथि:

''शिवलोचन मुख शिव सन जखन,
साहेब रामदास तिथि तखन।
प्रबल नरेन्द्र सिंह मिथिलेश, शासित छल भल तिर्हुत देश॥''

अर्थात् ११५३ साल (१७४६ ई.) मध्य महाराज नरेन्द्र सिंहक राज्यकालमे ई रहथि।

छादनसँ न्याय-तत्त्व-चिन्तामणि कर्ता गंगेश उपाध्याय वंश कुलोद्भव साहेब रामदास ''कुसुमौल'' ग्रामक (जरैल परगना, जिला- मधुबनी) एक मैथिल ब्राह्मण छलाह।हिनक छोट भाइक नाम कुनाराम ओऽ एकमात्र प्राणसमप्रिय पुत्र 'प्रीतम' छलनि। हिनक पूरानाम साहेब राम झा छलनि, मुदा अन्य सन्त कवि जकाँ ईहो अपन नामक आगाँ भक्ति-भावनासँ 'दास' शब्द जोड़ि लेलनि। साहेब रामदासक पदावलीमे लगभग ४७८ टा पद संकलित अछि। एहि कविता मध्य ई अपन नाम साहेबराम, साहेबदास, साहेब, साहेबजन सेहो रखने छथि।

साहेबरामदास आरम्भहिसँ भक्ति-प्रवण विचारक लोक छलाह। ई सदिखन ईश्वरहिक ध्यान-चिन्तनमे लीन रहैत छलाह। सन्यास ई बादमे ग्रहण कएलनि। एहि पाछाँ एकटा दुखद घटना घटित भेल- हिनका एकमात्र पुत्र 'प्रीतम' छलनि। ओ अधिक समय दुखित रहए लगलाह। युवावस्था छलनि। एकबेर प्रीतम अधिक दुखित भए गेल छलाह। हिनक जीवनक अन्तिम कालक भान भए जएबाक कारणेँ साहेबरामदासविकल भए कानए लगलाह। मरण शय्या पर रहितहुँ प्रीतमकेँ एहन दुःखद दृश्य देखि नहि रहल गेलनि आ ओऽ अपन पितासँ पुछैत छथिन, ''बाबूजी! अपने एतेक विकल किएक भए रहल छी? पिता उत्तर दैत छथिन ''पुत्रक आवश्यकता एहि चतुर्थ अवस्थामे होइत छैक, से तँ अपने हमरा पहिने छोड़ि कए जाए रहल छी, तेँ ई सोचि-सोचि खिन्न चित्त भए व्याकुल भए रहल छी''। पुत्र प्रीतम प्रत्युत्तर दैत कहैत छथिन, ''ई संसार असार थिक, क्षणभंगुर थिक, एहिमे स्त्री-पुत्र-पुत्री केओ अपन नहि थिक, ई सभटा अनित्य थिक, माया-मोह थिक। सभटा स्वार्थमूलक थिक तेँ एहि सभसँ माया-मोह रखनाइ अनुचित थिक। हम तँ अपनेक भगवन्-भजनमे विघ्न मात्र छलहुँ, आब अपने निर्विघ्नपूर्वक भगवन्-भजनमे लागि जाऊ''। एतेक बात कहैत देरी प्रीतमक प्राण-पखेरू उड़ि गेलनि। साहेब रामदास विकल भए कानि-कानि कए गाबए लगलाह-

''प्रीतम प्रीति तेजि भेल परदेसिआ हो''

साहेब रामदासकेँ प्रीतमक देहावसानसँ बड़ आघात लगलनि, प्रीतमक उपदेशकेँ धारण कए परिवार-समाजकेँ तिलाञ्जलि दए सन्यास ग्रहण कए लेलनि।

पुत्र-वियोगक कारणेँ ई पक्का बैरागी भए गेलाह। गामसँ बाहर भए जंगले-

जंगल एकान्तमे वास कए भजन-कीर्तन करए लगलाह। गामक लोकसभ बहुत दिन धरि पाछाँ कएलकनि जे अपने घुरि जाऊ, हमहु सभ अपनेक पुत्रक समान छी, अपनेकेँ कोनो कष्ट नै होएत। मुदा साहेब रामदास पर तकर कोनो प्रभाव नहि पड़लनि, उनटे जतए लोकक आवागमन देखथिन्ह, स्थानकेँ बदलि पुनः निर्जनस्थानमे चलि जाइत छलाह। लोकसभ किछु दिन धरि पाछाँ तँ केलकनि, मुदा अन्तमे हारि-थाकि कए जे ई आब पक्का बैरागी भए गेल छथि, तेँ हिनका आब तंग नहि कएल जाए, विचारि कए पाछाँ करब छोड़ि देलकनि।

बैरागी भेलाक बाद ई देशक बहुतो भागमे भ्रमण कएलनि। भजन-कीर्तनक संग योग-साधनामे सेहो लीन भए गेलाह। योग-साधनामे सिद्धि प्राप्त कएलाक पश्चात् केओटीक निवासी बलिरामदासजीसँ दीक्षा ग्रहण कएलनि। दीक्षा ग्रहण कएलाक पश्चातो ई अनेक धर्म स्थानक भ्रमण करैत रहलाह। कहल जाइत अछि जे साहेबरामदास दण्ड-प्रणाम करैत-करैत जगन्नाथपुरी तक गेलाह। बाटमे बड़ कष्ट सहए पड़लनि, घाओ भए गेलनि, घाओमे पीब आबि गेलनि, मुदा दण्ड-प्रणाम ओऽ नहि छोड़लनि। दण्ड-प्रणाम करैत-करैत जगन्नाथपुरी तक गेलाह। जकर प्रमाण हुनकहि एक कवितासँ भेटैत अछि-

साधुके संगत धरि गुरुक चरण धरि,
आहे सजनी हमहु जाएब जगरनाथहि रेकी।
नहि केओ अन्नदाता संग नहि सहोदर भ्राता,
आहे सजनी माँगि भीखि दिवस गमाएब रे की।
सभ जग भेल भाला गुरुआ अठारह नाला,
आहे सजनी ओहिठाम केओ नहि छोड़ाओल रे की।
सिंह दरबाजा देखि मन मोर लुबधल,
आहे सजनी ओहिठाम पंडा पंडा बेंत बजारल रे की।
साहेब जे गुनि धुनि बैसलहुँ सिर धुनि,
आहे सजनी जगत जीवन निअराएल रे की।

गुरु बलिरामदास मुरिया रामपुरक एक महात्मा शिष्य छलाह तथा अपन गाम केओटा (केओटी)क घनघोर जंगलमे योग साधना करैत छलाह। ई योग साधनामे निष्णात् छलाह। कहल जाइत अछि जे गुरुक बिना वास्तविक ज्ञान असम्भव अछि आ तेँ साहेबरामदास एक योग्य गुरुसँ दीक्षा लए, योग-साधनामे सिद्धि प्राप्त कए लेलनि। योग क्रिया पर सिद्धि प्राप्त कए लेलाक बाद जन्म-मरणसँ छुटकारा पाबि जेबाक पूर्ण विश्वास भए गेलनि, से गुरुक प्रसादहिसँ। मोक्ष प्राप्तिमे आब कोनो सन्देह नहि रहि गेलनि, जे जीवनक चरम लक्ष्य थिक। बलिरामदास हिनक दीक्षा गुरु छलथिन, तकर प्रमाण हिनकहि एक कवितासँ भेटैछ-

''गुरु बलिराम चरण धरि माथे, साहेब हरि अपनाया है।
अब तौ जरा-मरण छुटि जैहे, संशय सकल मेटाया है''।

कृष्णक ई अनन्य भक्त छलाह। जगन्नाथपुरीक यात्राक क्रममे बाटहिमे हिनका स्वयं भगवान श्री कृष्ण दर्शन देने छलथिन। आब तँ ई कृष्णक ध्यानमे दिन-राति लागल रहैत छलाह। समाधिस्थ कालमे तँ दुनियाँक कोनो वस्तुक ध्यान नहि रहैत छलनि, ध्यान रहैत छलनि तँ एक मात्र भगवान श्री कृष्ण। जन-श्रुति तँ ईहो अछि जे भगवानक भजनक कालमे जखन ई नाच करैत छलाह तँ स्वयं भगवान श्री कृष्ण सेहो उपस्थित भए संग दैत छलथिन।

साहेबरामदास अनेक तीर्थ-स्थलक दर्शन कएलनि। सांसारिक मोह-मायाकेँ त्यागि वैरागी भए गेलाह, मुदा मिथिला भूमिकेँ नहि त्यागि सकलाह। एक पदमे ओऽ लिखैत छथि, ''मिथिला नगरी तोर दान बिनु साहेब होइछ बेहाल'' तथा दोसर पदमे ''साहेब करुणा करए शीश धुनि मिथिला होइछ अन्धेरि''। एहि पद सभसँ मिथिलाक प्रति हुनक प्रेमक सहज अनुमान लगाओल जाए सकैत अछि। धन्य ई मिथिला भूमि ओऽ धन्य महात्मा साहेब रामदास।

पहिने कहि चुकल छी जे ई जंगलमे एकान्त वास कए भजन-कीर्तन कएल करथि। जतए-जतए ई जाथि ताहि-ताहि ठाम ई अपन खन्ती गारि कुटियाक निर्माण कए एक पाकड़िक गाछ अवश्य रोपि दैत छलाह। हिनक अनेक जगह पर योगमढ़ी छल आ सबहि ठाम ई पाकड़िक गाछ अवश्य रोपि दैत छलाह। हिनक अन्तिम योगमढ़ी दरभंगा जिलाक 'पचाढ़ी' गाममे अछि, जे पूर्वमे बूढ़वनक नामे विख्यात छल। एहू ठाम पाकड़िक गाछ रोपने छलाह, जे अद्यावधि वर्तमान अछि। पल्लवित एहि गाछक शोध मानवशास्त्री लोकनि एखनहु कए रहल छथि।

कमलाक तट पर स्थित पचाढ़ी गामक वन आ वृन्दावनक तुलना करब कठिन भए जाइत छल। वृन्दावनसँ एको रत्ती कम शोभा पचाढ़ी (बूढ़वनक) नहि छल। मोरक नाच, सुगाक गान, नाना प्रकारक वन्यजीव प्राणीक निर्भय विचरण करब, भिन्न-भिन्न लता-पुष्पसँ शोभित

वनक दृश्य लोककेँ सहजहि आकृष्ट कए लैत छल। एहि स्थानक प्रशंसामे कवीश्वर चन्दा झा लिखैत छथि–

''पाकड़ि वृक्ष सएह कमला तट जएह
भजन कुटी विश्राम।
चन्द्र सुकवि मन धरम परमधन धन्य
पचाढ़ी ग्राम''॥

पचाढ़ी स्थानक शोभा आब नहि रहि सकल, जे पहिने एक निर्जन स्थान छल, ताहि ठाम आब ग्राम अछि, खेती-पथारी कएल जाइत अछि। वनक तँ आब निशानो नहि रहि गेल अछि, तथापि साहेब रामदासजीक समाधि-स्थलक चारूकात मन्दिर सेहो एक-दू नहि छओ-सातटा अछि। सभमे भोग-रागक व्यवस्था, पुजेगरीक संग-संग सहायकक व्यवस्था सभ मन्दिरमे फराक-फराक अछि। लगभग पाँच कट्ठा जमीनमे फुलबारी अछि। आगत-अतिथिक स्वागत यथासाध्य एखनहु कएल जाइत अछि। साहेब रामदासक नाम पर एकटा संस्कृत महाविद्यालय अछि, जाहिमे निर्धन छात्रकेँ स्थान दिससँ रहबाक व्यवस्था ओ मुफ्त भोजनक व्यवस्था कएल जाइत अछि।

पचाढ़ीस्थान मिथिलाक वैभवशाली स्थानमेसँ सर्वप्रमुख अछि। एकर वैभवशालीक पाछाँ राजदरभंगाक महत्वपूर्ण योगदान अछि। तत्कालीन दरभंगा मिथिलेश नरेन्द्रसिंह निःसन्तान छलाह। हुनक पत्नी रानी पद्मावती अतिथि-सत्कार, पूजा-पाठक निमित्त ३०० (तीन सए) बीघा जमीन पचाढ़ी स्थानकेँ दानस्वरूप देने छलथिन। मुदा कहल जाइत अछि जे साहेब रामदास ओहि जमीनक दान-पत्रकेँ प्रज्वलित अग्निमे फेकि देलखिन। शिष्य लोकनिकेँ भिक्षाटन वृत्तिसँ आगत-अतिथिक सेवा सत्कार करए पड़ैत छलनि, जाहिसँ ओ लोकनि तंग आबि गेलाह आ फलस्वरूप ओऽ दान-पत्र पुनः महारानीसँ प्राप्त कए चुप-चाप राखि लेलनि, जे एखनहु धरि सम्पत्तिक रूपमे विद्यमान अछि। किछु जमीन भक्त लोकनि वेतियामे सेहो देने छथि। योग्य शिष्य सभ एहि सम्पत्तिकेँ बढ़ाए लगभग हजार बीघा बनाए देलनि। सरकार किछु जमीनपर सिलिंग लगाए देलक, मुदा व्यवस्थापक लोकनि अधिकांश जमीनकेँ वन-विभागकेँ दए गाछ-वृक्ष लगवाए देलनि। अपेक्षाकृत एखनहु ई स्थान समृद्ध अछि।

साहेबरामदास एक सिद्ध पुरुष छलाह आ तँ हिनकामे चमत्कारिक गुण स्वाभाविक अछि। चमत्कारसँ सम्बन्धित अनेक कथा हिनकासँ जुड़ल अछि, जाहिमे एक चमत्कारक उल्लेख करब हम उचित बुझैत छी, जे हिनक अन्तः साक्ष्यसँ जुड़ल अछि।

राजा नरेन्द्र सिंहक समयमे पटनाक कोनो मुसलमान नवाब मिथिलापर आक्रमण कए देलक। राजा नरेन्द्र सिंहक सेना ओ नवाबक सेनाक बीच घोर संग्राम भेल, जाहिमे अपार धन-जनक क्षति भेल छल, मुदा राजा नरेन्द्र सिंह ओहिमे स्वयं वीरतापूर्वक युद्ध कएलनि आ शत्रु सेनाकेँ पराजित कएल। ओहि समयमे महात्मा साहेब रामदास नरेन्द्र सिंहक विजयी होएबाक कामना स्वरूप श्रीकृष्णसँ प्रार्थना कएलनि-

''साहेब गिरधर हरहु नरेन्द्र दुःख,
करहु सुखित मिथिलेशहि रे की''।

एहिपर क्रुद्ध भए नवाब हिनका बन्दी बनाए पटनाक कारागारमे बन्द कए देलनि। साहेब रामदास योगबलेँ सभ दिन गंगा-स्नान, संध्या-तर्पण, पूजा-पाठ आदि गंगहि तटपर कएल करथि। कारागारमे रहितहुँ ई क्रम हिनक निरन्तर चलैत रहलनि। लोक सभ हिनका गंगा तटपर सभ दिन देखैत छलनि। नवाबकेँ कोना ने कोना एहि बातक जानकारी भेट गेलनि। नवाबकेँ तँ विश्वास नहि भेलनि तथापि हुनका अपन कर्मचारी सभपर संदेह भेलनि आ ओऽ अपनेसँ कारागारमे ताला लगाए देलनि। तथापि साहेब रामदासक गंगा-स्नानक क्रम नहि टुटलनि। अन्तमे नवाब साहेबरामदासक पएरमे बेड़ी बान्हि कारागारमे ताला लगाए देलनि। साहेबरामदास तत्क्षणहि करुणाद्र भए अपन आराध्य देव श्री कृष्णकेँ पुकारलनि-

''अब न चाहिए अति देर प्रभुजी,
अब न चाहिए अति देर।
विप्र-धेनु-महि विकल सन्त जन,
लियो है असुरगण घेरि''।

गविते छलाह की पएरक बेड़ी ओ फाटकक ताला आदि सभ टूटिकए खसि पड़ल। नवाब आश्चर्य चकित भए गेल। ओ महात्माजीक पएरपर खसि पड़ल। साहेबरामदाससँ क्षमा माँगलक आ बादमे ससम्मान स्वागत कए मिथिला पहुँचाए देल।

एहि तरहक कएक गोट चमत्कार अछि, जेना राजा राघव सिंहक समयमे राजदरभंगामे प्रेत-बाधाकेँ शान्त करब, माटिक भीतकेँ हाँकब। कृष्णाष्टमी, जन्माष्टमी आदि उत्सवक अवसरपर अधिक साधु-सन्तक भीड़ जुटलाक बादो थोड़बहु सामग्रीमे भोजनक अवसरपर भण्डारामे कोनो कमी नहि होएब आदि कतोक चमत्कारिक घटना सभ अछि, जे हिनकासँ जुड़ल अछि। एहि सिद्ध पुरुषक चमत्कारिक घटनासभसँ लोकक हिनका प्रति कतेक श्रद्धा छल से सहजहि अनुमान कएल जाए सकैत अछि।

साहेबरामदास वैरागी वैष्णव-भक्त-कवि छलाह। पदक रचना करब हिनक साधन छल मुदा साध्य तँ एकमात्र छल भगवान विष्णुक भजन-कीर्तन करब। कहल जाइत अछि जे ओऽ अपनहि पदक रचना कए सभ दिन भगवानक भजन-कीर्तन कएल करथि। ओऽ भक्तिमार्गी छलाह आ तँ भक्ति-मार्गक सिद्धांतक अनुरूप पदक रचना कएल करथि। भक्ति मार्गक सभ रसक पदरूपमे रचना कएलनि, मुदा प्रधान रस "मधुरं" रस सएह अछि। भगवानक कोनो एक रूपक ओऽ आग्रही नहि, सगुण-निर्गुण दुनू रूपमे मानैत छलाह, जे अपन मनोगत भाव कवितामध्य व्यक्त कएने छथि।

"निर्गुण सगुण पुरुष भगवान, बुझि कहु साहेब धरइछ ध्यान"।

"धैरज धरिअ मिलत तोर कन्त, साहेब ओ प्रभु पुरुष अनन्त"।

साहेब रामदासक यद्यपि एकमात्र पदावली उपलब्ध अछि, जाहिमे ४७८ टा पद संकलित अछि। मुदा ईएह पदावली हुनक यशकेँ अक्षुण्ण बनाए रखबामे सभ तरहेँ समर्थ अछि। भक्तिक प्रायः सभ विषयपर पदक रचना कएने छथि, यथा- कृष्ण-जन्म, वात्सल्य, वंशीवादन, संयोग-श्रृंगार, रास-लीला, झुलोत्सव आदि। रासलीला परक जेहन पद सभक ई रचना कएने छथि से प्रायः मैथिलीमे आन केओ कवि नहि कएने छथि। हिनक रास-लीला परक पदक विवेचन स्वतंत्र रूपेँ कएल जाए सकैत अछि। कृष्ण-प्रेमक अनन्यता, भक्ति प्रवणता ओ प्रसाद गुण हिनक काव्यक मुख्य गुण कहल जाए सकैत अछि। ऋतुगीत, दिन-रातिक भिन्न-भिन्न समयोपयोगी पदक रचना, जेना-प्राती, सारंग, ललित, विहाग आदिक रचना कएल करथि।

मिथिला पञ्चदेवोपासक सभ दिनसँ रहल अछि। साहेब रामदासक रचनामे सेहो भक्तिक विविध-रूपक दर्शन होइत अछि। कृष्णक तँ ई अनन्य भक्त छलाह मुदा आनो-आन देवी-देवता परक पदक रचना कएने छथि। हिनक हनुमानक फागु परक कविता देखल जाए सकैत अछि। एकरा सन्त लोकनिक फागु सेहो कहल जाए सकैछ-

"प्रवल अनिल कपि कौतुक साजल लंका कएल प्रयाण।
कनक अटारी कए असवारी छाड़थि अगनिक वाण॥
जरए लंक कपि खेलए फगुआ, उड़ए गगन अंगार।
धुँआ वाढ़ि अकासहि लागल दिवसहि भेल अन्धार"।

हिनक रचित एकटा महादेवक गीत सेहो अछि, जकर उल्लेख डॉ. रामदेव झा अपन "शैव साहित्यक भूमिका" नामक ग्रन्थमे कएने छथि-

"पुछइत फिरइत गौरा वटिया हे राम।
कहु हे माइ, जाइत देखल मोर भंगिया हे राम॥
हाथ भसम केर गोला हे राम।
वरद रे चढ़ि कोन नगर गेल भोला हे राम"॥

विरहिणी व्रजाङ्गनाक मनोदशाक एक विलक्षण रूप एहि ठाम सेहो देखल जाए सकैत अछि:

"कमल नयन मनमोहन रे कहि गेल अनेक।
कतेक दिवस भए राखब रे हुनि वचनक टेक॥
के पतिआ लए जाएत रे जहँ वसु नन्दलाल।
लोचन हमर सतओलनि रे छतिआ दए शाल॥
जहँ-जहँ हरिक सिंहासन आसन जेहिठाम।
हमहु मरब हरि-हरि कै मेटि जाएत पीर॥
आदि"

मिथिलाक सन्गीत परम्परा अति प्राचीन ओ समृद्ध अछि। संगीतक रचना तँ विद्यापति ओ हुनकहुँसँ पूर्व होइत आएल अछि, मुदा रहस्यवादी संगीत-काव्य-रचना नवीन रूपमे आएल अछि, जकर प्रवर्तक साधु-सन्त लोकनि भेलाह। जाहिमे सन्त साहेब रामदासक स्थान अग्रगण्य अछि। हिनका लोकनिक रचनाक प्रभाव प्रायः सभ वर्गपर पड़ल। हिनक प्रायः सभ कवितामे रागक उल्लेख अछि। अतः एहिपर संगीत-शास्त्रक अनुकूल शोध-कार्य कएल जएबाक आवश्यकता अछि।

साहेब रामदास परम वैरागी सुच्चा साधु छलाह, भक्त छलाह आ तँ हिनक भाषापर सधुक्करी ओ तत्काल प्रचलित व्रजभाषाक किछु प्रभाव सेहो पड़ल अछि, तथापि हुनक जे पदावली उपलब्ध अछि से मैथिली साहित्यकेँ समृद्ध बनएबामे अपन महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त कएने अछि। भक्ति-भावनाक सरलता ओ सहजताक दृष्टिएँ हिनक भाषा सरल ओ सहज अछि। भक्ति-भावना परक एहन कविता मैथिली-साहित्यमे प्रायः दुर्लभ अछि। हिनक भक्ति परक गीत एखनहु मिथिलाक गाम-घरमे बुढ़-बुढ़ानुसक ठोरपर अनुवर्तमान अछि, जकर संकलन करब परम आवश्यक अछि।



श्री डॉ. पंकज पराशर (१९७६-)

मोहनपुर, बलवाहाट चपराँव कोठी, सहरसा। प्रारम्भिक शिक्षासँ स्नातक धरि गाम आ सहरसामे। फेर पटना विश्वविद्यालयसँ एम.ए. हिन्दीमे प्रथम श्रेणीमे प्रथम स्थान। जे.एन.यू.,दिल्लीसँ एम.फिल.। जामिया मिलिया इस्लामियासँ टी.वी. त्रकारितामे स्नातकोत्तर डिप्लोमा। मैथिली आ हिन्दीक प्रतिष्ठित पत्रिका सभमे कविता, समीक्षा आ आलोचनात्मक निबंध प्रकाशित। अंग्रेजीसँ हिन्दीमे क्लॉद लेवी स्ट्रॉस, एबहार्ड फिशर, हकु शाह आ ब्रूस चैटविन आदिक शोध निबन्धक अनुवाद। 'गोवध और अंग्रेज' नामसँ एकटा स्वतंत्र पोथीक अंग्रेजीसँ अनुवाद। जनसत्तामे 'दुनिया मेरे आगे' स्तंभमे लेखन। रघुवीर सहायक साहित्यपर जे.एन.यू.सँ पी.एच.डी.। **<u>सम्पादक</u>**

रावलपिंडी

1.

रावलपिंडी सँ आइयो बहुत दूर लगैत छैक लाहौर
बहुत दूर...
जतय स्वतंत्रता केर समवेत स्वर
प्रचंड नरमेधक इतिहास मे बदलि गेल छल

दूर-दूर होइत समय मे अनघोल करैत
अनंत स्वर-श्रृंखला...
जेहो सब छल निकट
सेहो दूर भेल जा रहल अछि
दूर-दूर होइत बहुत किछु
आब विलीन भेल जा रहल अछि

चारू दिशा मे टहलैत इंसाफी मरड़ आ छड़ीदार लोकनि
इंसाफ करबाक लेल अपस्यांत
वर्तमान सँ भविष्य धरि
अगुताएल छथि इतिहासो मे घुरि कए
इंसाफ करबाक लेल

2.

जखन हम फोन पर होइत छी खांटी मातृभाषी
बजैत मायक लेल चिंताहरण बोल
आ कि टैक्सी रोकैत हमर ड्राइवर करीम खान
अविश्वास आ आश्चर्य भरल स्वर मे पुछैत अछि-
-भाय तोंय हिंदुस्तानी छहो?
हमरा अब्बा सँ तनी मिलभो-
हुनि बोलइ छथिन इएह बोली
जे तोंय अखनी बोलइ रहो
आ शनैः शनैः पसरि जाइत अछि हमरा टैक्सी मे आकुल-व्याकुल अविभाजित देशक भागलपुर
लाहौरक बाट मे

3.

हमरा डाकघरक मोहर मे आइयो कायम अछि मुंगेर
आ एतय कतरनी धानक चूड़ा मोन पाड़ैत करीम खानक वृद्ध पिता

दुनिया सँ जयबा सँ पूर्व एक बेर
जाइ चाहैत छथि अपन देसकोस
एकटा देश भेटबाक बादो ओ तकैत छथि
अप्पन देसकोस!

अपन देस सँ नगर-नगर बौआइत
पहुँचल छी रावलपिंडी
जतय आइयो पछोड़ धयनैं अछि हमर
अप्पन देसकोस!

कोस-कोस पर परिवर्तित होइत पानि
एतेक दूर ओहिना लगैत अछि
जेहन अपन गाम केर इनारक
आ दस कोस पर परिवर्तित होइत बोली
साठि-एकसठ बरखक बादो ओहने लगैत अछि
जेहन आजुक भागलपुरक

पन्ना त्रिवेदी

गुजराती कवि

गुजरातीसँ अंग्रेजी अनुवाद हेमांग देसाई द्वारा। अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद गजेन्द्र ठाकुर द्वारा।

आमद

हे विदेशी!

देखाऊ हमरा एहन दृश्य

यदि अछि कोनो एहन

बिनु प्रकाश

बिनु गद्दाक ओछाओन

बिनु छाह

जतए

नहिए अछि

चुप्पीक अंश

व्यथित हृदयक ध्वनि

नहिए ध्वनिक आँगुरक नोकक स्पर्श

देखाऊ हमरा ओ दृश्य

यदि अछि कोनो एहन

हौ विदेशी!

जतए

केओ नहि करैछ एकत्रित

स्वासक (मालगुजारि)।

परमेश्वर कापड़ि

अपन अपन माय

सबके नव नेपाल, समृद्ध आ संघात्मक नेपालक सुन्दर चित्र बनएबाक बेगरता रहनि। उमटुमाएल त' बहुतो गोटे रहथि धरि चुनुआ बिछुआ, नामी–गरामी सातटा कलाकारके अपन बुमि ई भार देल गेलनि। भार अबधारि सब एहि निहुछल काजमे लागि जाइत गेला।

केओ धर– मुडी, केओ हाथ त' केओ टाङ्ग, केओ पयर त केओ बाहिँहाथ बनाबऽमे तन्मय भ गेलाह।

देखिते देरि समकेँ सभ अगि बना बनाक अनलनि।

आहिरेबा। जखनि जे सबके द्धारा बनाएल नेपाल मायक आगि एकठाम जोडिक देखलनि त ओ आकृति कुरुपे नहि विद्रुप आ राक्षसी लगैत छल। ई चित्र देखिते निर्माणक आग्रही संरचनावादी लोक भडकिक आन्दोलन पर उतारु भगेल।

असलमें ई नारी चित्र भेलै कि नहि सेहे विवादक विषय बनि गेल।

भेल कि रहै त जे पयर बनएने रहथि से रहथि माटिक मूर्तिकार आ पएर एहन सुकोमल माने परी रानीक सुन्नर पयरसन रहै। माय माये होइछै। मायक पयर धरती परक लोकक रेहल खेहल आ कर्मठ पयर होएबाक चाही ने से रहबे नहि करए। मुँह जे बनएने रहथि से अमूर्त पेन्टिङ्गक रहैक। आँखि किदन त नाक निपत्ता। केश दोसरे रङ्गके, पश्चिमी कटिङ्गके। फडफरायल ठाढ, किछु लट ओम राएल बेहाल। हाथ धातु मूर्तिकारद्धारा बनाएल रहैक त धर काठ मुर्तिकारद्धारा बनाएल कोकनल, निरस। लगै जेना मेहन जोदर्डो सभ्यताक वा पाषणकालक उत्खनन कएल गेल हो। तहिना कटि आ ओद्रभाग हिन्दी फिल्मक आइटम गर्लक कपचि छपटिक ल आएल सनके। बेनङ्गन निर्लज।

बात निर्विवाद छलै जे समरसताके अभावमे ई मूर्तिपूर्ण नहि भेलै। गढनिसब बेमेल बानि उबानि। बेलुरा रहैक।

असफलता पर पछताबा कोनो कलाकारके नहि रहैक। अहँकारी हेठी सबके मनमे। आब ऐ बात पर घोंघाउज कटाउँज होइत होइत अरारि आ मारि पीट धरिक नौबत आबि गेलै। से केना त जेना एखनि नेपालक क्षेत्रीय मुद्दाक बलिधिङ्गरोक विवाद।

काष्ठकलाबाला कहथि हपरा के अदुस अधलाह कहत, तेकरा हम बसिलेस पाङ्गि देबै। पेन्टर रङ्गकर्मीके अपन हठ हमर सृजनाके चिन्ह बुमके एकरा सबके दृष्टिए दम नै छन्हि। चित्रकारके अपने राग। पाषाणमुर्तिकारक अपने ठक ठक। सब अपन बातके इर बान्हि, गिठर पारि अडल जे मायक चित्र हमरे कल्पना भावना अनुसार बनए।

सह लहके बाते कोन अपना आगूमे सबके सब अदने, निकम्मे बुमथि। घोल घमर्थन, गेङ्ग छेंटके वैचारिक दर्शन कहैत सब हुडफेर फेरने घुमए।

अपना अपनीके सब तानहिबला, सुनबाला निठाहे नइ।

लोकमे सब रङ्गके, सब तौंतके लोक रहैछ ने। ओइमेस एगोटे आगू अएलाह आ थोडथम्ह लगबैत कालाकार सहित सबके बम्बोधित करैत कहलन्हि हमर बात पहिने ध्यानस सुनैत जाऊ। बात हम पयरस सुरु करैत छी, मूहँस नहि। पहिने पयरेस एहि दुआरे जे हमरासबके सँस्कृतिमे सबसँ पहिने पयरे पूजल जाइत अछि। पयरे चलिक केओ अबैत अछि। पयरेपर केओ ठाढ होइत अछि। पयरै लक्ष्मी होइत अछि। आगत अतिथिके पयरे पवित्र मानल जाइत अछि। प्रवेशके पयर देव कहल जाइत अछि। माने पयरे प्रथम अछि। कर्मशील भेने बन्दनीय आ ई लक्ष्मीपात्र अछि। ताहि दुआरे पयरेस चित्रक निर्माण शुरु हुअओ।

पीयूष ठक्कर

गुजराती कवि

गुजरातीसँ अंग्रेजी अनुवाद हेमांग देसाई द्वारा। अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद गजेन्द्र ठाकुर द्वारा।

सांध्य बेला

साँझ होइते

शिशिर आह पर्वतक

आच्छादित कएल आकाश

अविलम्ब पड़त सम्पूर्ण आकाश फाँसमे

एहि पर्वतक छाहक

पर्वतकेँ भेटत अकाश

प्रकाशकेँ छाह

शरीर सुतत

हृदय दुखित

ओहिना जेना

ईश्वरकेँ भेटल मनुक्ख



प्रकाश झा

सुपरिचित रंगकर्मी। राष्ट्रीय स्तरक सांस्कृतिक संस्था सभक संग कार्यक अनुभव। शोध आलेख (लोकनाट्य एवं रंगमंच) आ कथा लेखन। राष्ट्रीय जूनियर फेलोशिप, भारत सरकार प्राप्त। राजधानी दिल्लीमे मैथिली लोक रंग महोत्सवक शुरुआत। मैथिली लोककला आ संस्कृतिक प्रलेखन आ विश्व फलकपर विस्तारक लेल प्रतिबद्ध। अपन कर्मठ संगीक संग मैलोरंगक संस्थापक, निदेशक। मैलोरंग पत्रिकाक सम्पादन। संप्रति राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्लीक रंगमंचीय शोध पत्रिका रंग-प्रसंगक सहयोगी संपादकक रूपमे कार्यरत।–**सम्पादक**

बाल-बुदरुकक लेल कविता

(मिथिलामे सभसँ उपेक्षित अछि मिथिलाक भविष्य; यानी मिथिलाक बच्चा। मैथिली भाषामे बाल-बुदरुक लेल किछु गीतमय रचना अखन तक नहि भेल अछि जकरा बच्चा रटिक' हरदम गाबए-गुनगुणावए होअए जाहिसँ बच्चा मस्तीमे रहै आ ओकर मानसिक विकास दृढ़ होअए। एहि ठाम प्रस्तुत अछि बौआ-बच्चाक लेल किछु बाल कविता।) चित्र: प्रीति ठाकुर

बिलाड़ि

बाघक मौसी तूँ बिलाड़ि
म्याऊँ म्याऊँ बजै बिचारि,
मुसबा के हपसि क' खाई
कुतबा देख भागि जाई।

बाघ

मौसी तूँ बिलाड़ि के
बाघ छौ तोहर नाम,
जंगल के तूँ राजा छँ
बा''' बा''' केनाइ तोहर काम।

गैया

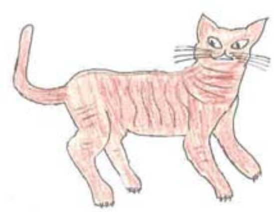
बाबा यौ! अबै यै गैया
हरियर घास चड़ै यै गैया,
मिठगर दूध दै यै गैया
हमर सभहक मैया गैया।

कुतबा

दिन मे सुतै, राति मे जगै,
चोर भगाबै कुतबा।
रोटी देखिक' दौड़ल अबै,
नाड़डि डोलाबै कुतबा।
अनठिया के देखिते देरी,
भौं''' भौं''' भुकै कुतबा।

हाथी

झूमै-झामैत अबै हाथी,
लम्बा सूढ़ हिलाबै हाथी,
सूप सनक कान, हाथी,
कारी खटखट पैघ हाथी।

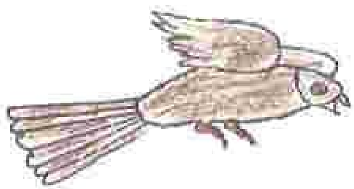


चिड़ै/जानवर



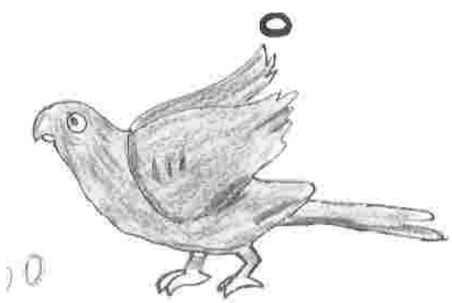
सुग्गा, मेना, कौआ, बगरा,
चिड़ै-चुनमुन के नाम छै।
गैया, बरद, बिलाड़ि, कुतबा
सभके दादी पोसै छै

कौवा



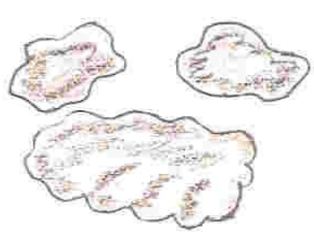
चार पर बैसलौ कार कौआ,
कारी खटखट देह कौआ।
कॉव-कॉव कुचरौ कौआ,
रोटी ल' क' उड़तौ बौआ॥

सुग्गा



हरियर सुग्गा पिजड़ामे
राम राम रटै छै।
कुतरि-कुतरि क' ठोर स'
मिरचाई लोंगिया खाई छै ॥

मेघ



कारी-कारी मेघ लगै छै,
झर-झर झिस्सी झहरै छै।
लक-लक लौका लौकै छै,
झमझम-झमझम बरसै छै।
फह-फह फूँही पड़ै छै,
टपटप-टपटप टपकै छै।

दीयाबाती



सुक-सुकराती दीयाबाती, दादी सूप पिटतै।
छुड़छुड़ी, अनार, मिरचैया, खूब फटक्का फोड़बै।
जगमग जगमग दीप जराक' हुक्का लोली भँजबै।

नानी



माँ के माँ हमरे नानी,
मामा के माँ हमरे नानी।
मौसी के माँ हमरे नानी,
खिस्सा सुनाबै हमरा नानी।

छैठ परमेसरी

आइ छै खड़ना खीर रातिमे, दादी सबके देतै
ढाकी, केरा,कूड़ा ल' क', घाट पर हमहू जेबै
भोरे भोर सूरज के ,अरघ हमहू देखेबै
ठकुआ, मधूर, केरा, भुसवा हाउप हाउप खेबै



प्रकाश झा

ग्राम+पो.- कठरा, भाया-पुटाई, थाना- मनीगाछी, दरभंगा, बिहार (भारत)

हमर मिथिलाक दर्शन

मैथिल छी हम, मैथिली बजबामे अछि कोन लाज

देश हो वा परदेश ज्यो हम करै छी ओऽ तऽ काज

मिथिला के याद करबैछ सदिखन, विद्यापतिजी माथपर शोभैत पाग।

हमरा लोकनिक पिता जनक, बहिन सीता, बहनोइ छथि राम

कमला-कोशी अछि चरण जकर पखारैत ओ अछि हमर मिथिला धाम।

मैथिल कवि लोकनिक पोथीमे पढ़ैत रहैत छी जे खिस्सा

मनमे उठैत रहैत अछि जिज्ञासा जे आओर कतेक बाकी अछि प्रशंसा

कोइलिक कु-कू राग सुनि मोन म मारऽ...लगैत अछि टीस

तखने किछु काल बाद नम्र हृदय सऽ निकलैत अछि गोसाउनिक गीत

विद्यापति, मण्डन, अयाची आ मैथिलपुत्र प्रदीप

हिनकर लोकनिक सुन्दर लेखन पढ़ि मोनमे जड़ैत अछि शब्दक दीप

एहि मातृभूमिपर पान, मखान, खराम कऽ अछि एकटा इतिहास

बाढ़-बोन के आड़ि-धुरपर बैस, नीक लगैछ मड़ुआ रोटी- सागक स्वाद।

चहु ओर हरियाली, घर फूसक, लच-लच करैत ओऽ खरहीक टाट।

भोरे सुइत-उठि कए बाधमे सुन्दर लगैत अछि शीतल घास।

घरक चारपर कुम्हर, कदीमा आओर सजमनिक अछि लत्ती पसरल

नजरि नञि लागए कोनो डैनियाहीके, ताहि लऽ एकटा खापैड़मे कारी-चून लेपल राखल।

पछबाड़ि कातक बारीमे राखल एकटा कटही गाड़ी पुरान

बाबू-कक्का चौकपर बैसल, बाबा धेने छथि दलान।

आब कतेक हम विवरण करबए, शब्दसँ अछि ठेक भरल

मिथिलांचलमे मैथिली भाषाक लेल छी हम मैथिल भिड़ल

मिथिला चित्रकला एखनो धरि केने अछि राज देश-विदेश

संगहि प्रकाशझाक ई प्रस्तुति पढ़ि बुझबइ एकटा छोट सनेस।



प्रीति

(प्रीति अभियंत्रणक छात्रा छथि संगमे नेपाल १ टी.वी. मे दैनिक मैथिली कार्यक्रमक होस्ट छथि।)

१.

वियाह एकटा रिश्ता के एहन अटूट बंधन अछि जकरा सामाजिक मान्यता प्राप्त छैक आ एक खास अवस्था में सब स्वेच्छा सअ अहि बंधन में बंधय चाहैत अछि। प्राचीनकाल में स्वयंबर के प्रचलन छल। यानि महिला के स्वयं वर चुनवाक सामाजिक आजादी छलन्हि। कालांतर में सामाजिक स्थिति में बदलाव आयल। बहु विवाह या दोसर वियाह पहिनुहुं व्याप्त छल मुदा महिला के नहि भेटल ई आजादी। आइयो कमोवेश दोसर वियाह पर समाज महिला के प्रति ओतेक उदार शायद नहि अछि जतेक उदार ओ पुरूषक दोसर वियाह पर अछि।

दोसर वियाह के बारे में जौं सच पुछी त समाज पुरूख के संग दैत अछि। पहिने त समाज में बहु वियाहक प्रथा छल मुदा आब यद्यपि एकरा मान्यता नहि छैक तथापि समाज सँ ई प्रथा पूर्णत: खत्म नहि भेल अछि। दोसर वियाह जौं विधुर द्वारा या कोनो खास विशेष परिस्थिति में कयल जाय त एकर कारण बुझवा में अबैत अछि पर यदि मात्र शौक, दहेजक लोभ Sया छद्म आधुनिकता के होड़ में कयल जाय त ई अक्षम्य अपराध अछि। अहि मादे समाज आ स्वयं पुरूष के अपन सोच बदलबाक आवश्यकता अछि।

समय बदलल संगहि लोक के सोच सेहो बदलल अछि। मुदा एखनो नहि बदलल अछि महिला के मादे पुनर्विवाह या दोसर वियाह पर समाजक नजरिया। जौं पुरूष क सकैत छथि दोसर वियाह त किएक नहि परित्यक्ता, विधवा महिला के सेहो भेटबाक चाही ई अधिकार। कतेक नींक महिला होयत जौं जवान के संतानहीन विधवा के पुनर्विवाह के अनिवार्य बना देल जाय आ बाकियो के स्वेच्छा पर छोड़ि देल जाय। जौं ई भ सकय संभव त नहि सिर्फ समाज सअ महिला आ पुरूषक भेदभाव किछु कम होयत अपितु बल्कि समाज द्वारा उपेक्षित आ एक तरहे त्यागल महिला पुन: समाज के मुख्यधारा में शामिल भय अपन जीवनक नैराश्य सअ मुक्ति पाबि सकलीह।

२.

कोजागरा पावनि आश्विन शुक्ल पूर्णिमा के मनाओल जाइत अछि। नवविवाहित लड़का लेल अहि पावनि के विशेष महत्व अछि या कहू त ई पावनि खासकय हुनके सभक लेल छन्हि। नवका बरक लेल ई पावनि तहिने महत्वपूर्ण अछि जेहन नवविवाहिता लेल मधुश्रावनी। फर्क यैह अछि जे मधुश्रावनी कतेको दिन लम्बा चलैय बला पावनि अछि आ अहि में नव कन्या लेल बहुत रास विधि-विधान अछि जखनकि कोजागरा मुख्यतःमात्र एक दिन होइत अछि।

जहिना मधुश्रावनी में कनिया सासुरक अन्न-वस्त्रक प्रयोग करैत छथि तहिना कोजागरा में बर सासुर सं आयल नव वस्त्र धारण करैत छथि। कोजागरा के अवसर पर बर के सासुर सँ कपड़ा-लत्ता, भार-दोर अबैत छन्हि। अहि भार में मखानक विशेष महत्व रहैत अछि। यैह मखान गाम-समाज मे सेहो बरक सासुरक सनेस के रूप मे देल जाइत अछि। सासुर सँ आयल कपड़ा पहिरा बरक चुमाओन कयल जाइत अछि। बरक चुमाओन पर होइत अछि बहुत रास गीत-नाद।

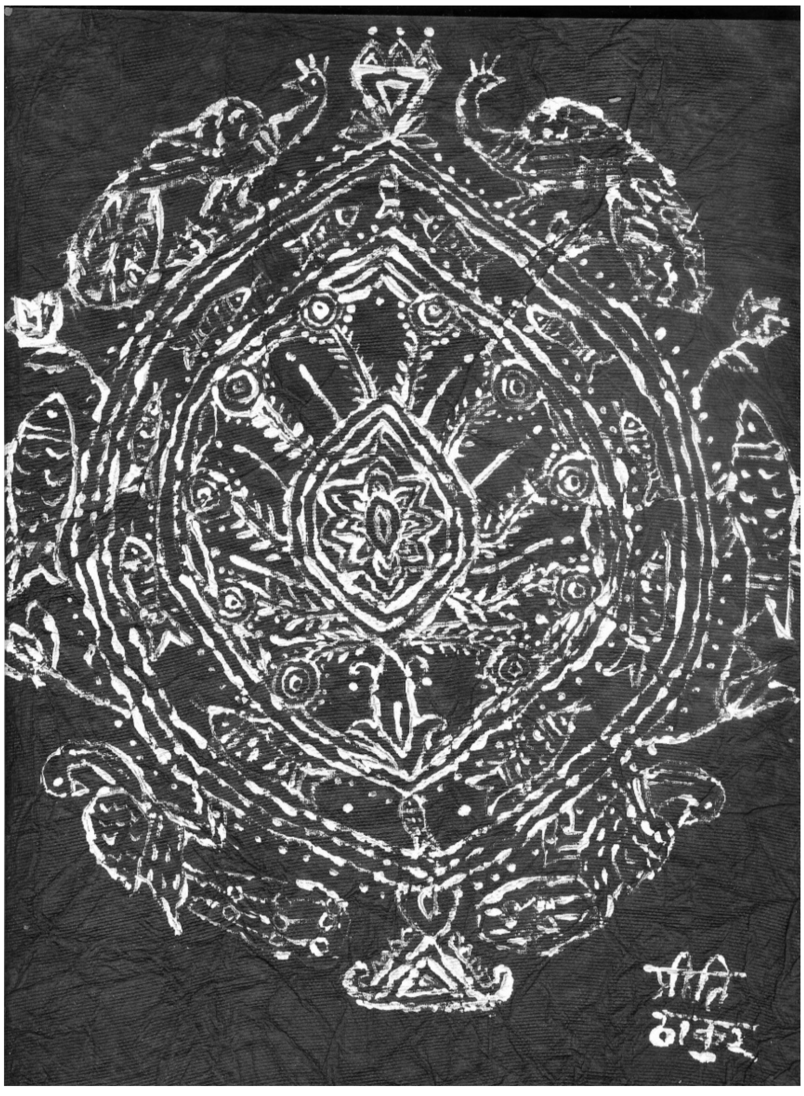
कोजागरा में नींक जकाँ घर-आंगन नीपी-पोछि दोआरी सँ भगवतीक चिनवारि धरि अरिपन देल जाइत अछि। भगवती के लोटाक जल सँ घर कयल जाइत अछि। चिनबार पर कमलक अरिपन दय एकटा विटा में जल भरि राखि ओहि पर आमक पल्लव राखि तामक सराई में एकटा चांदी के रूपैया राखि लक्ष्मी के पूजा कयल जाइत अछि। राति में अधपहरा दखिक बरक चुमाओन कयल जाइत अछि। आंगन में अष्टदल अरिपन द ओहि पर डाला राखि कलशक अरिपन द ताहि में धान द कलश में आमक पल्लव राखल जाइत अछि। एकटा पीढ़ी पर अरिपन देल जाइत अछि जे अष्टदलक पश्चिम राखल जाइत अछि। चुमाओनक डाला पर मखान, पांच टा नारियल, पांच हत्था केरा, दही के छांछ, पानक ढोली, गोटा सुपारी, मखानक माला आदि राखि पान, धान आ दूबि सँ वर के अंगोछल जाइत अछि तहन दही सँ चुमाओन कयल जाइत अछि। चुमाओन काल में बर सासुर सँ आयल कपड़ा पहिरि पीढ़ी पर पूब मुँहे बैसैत छथि।

पुरहरक पातिल के दीप सँ वर के चुमाओन सँ पहिने सेकल जाइत छथि। फेर कजरौटा के काजर सँ आँखि कजराओल जाइत छन्हि। तकर बाद पाँच बेर अंगोछल जाइत छन्हि। तखने होइत छन्हि चुमाओन। चुमाओनक बाद वरकँ दुर्वाक्षत मंत्र पढ़ि कम सँ कम पाँच टा ब्राह्मण दूर्वाक्षत दैत छन्हि। फेर पान आ मखान बांटल जाइत अछि। आ अगिला दिन धरि मखान गाम घर में बाँटल जाइत अछि।



प्रीति ठाकुर

गाम जगेली पूर्णियां





प्रेमचन्द मिश्र

गाम बरहारा, जिला-मधुबनी

अनाम कथा

पी. सी. मिश्र गामक एकटा कम पढ़ल-लिखल युवक छथि, उम्र करीब २४ वर्ष। ६ साल पहिने गामसँ दिल्ली आयल छलाह। संघर्षरत जीवनसँ सफर करैत आब ठीक-ठाक अवस्थामे छलाह यानि ताहि समयमे एकटा मध्यम् वर्गक युवककेँ तनख्वाह जे हैत से तनख्वाह पावैत छलाह आ संगे गामसँ अयलाक बाद दिल्लीमे किछु नीक लोकक संपर्कमे रहलासँ अंग्रेजी फर्राटेसँ बजैत छथि यानि कि अंग्रेजी बजैत काल कियो नहि कहि सकैत छनि जे ओ पढ़ल-लिखल कम छथि। ताहि कारण लोककेँ कहैत छथिन सत्यता- जे हम पढ़ल-लिखल कम छी- तँ लोक मजाक बुझैत अछि। एकटा प्राइवेट कम्पनी, जे ट्रैवेल एजेन्टक काज करैत अछि, मे पी.सी.मिश्र रंजीतक, जे हुनकर रिश्तामे भागिन छथिन मुदा कम्पनीमे उच्च पदपर छथिन्ह, केर संग कज करैत छथि। पी.सी.मिश्र विवाह योग्य भऽ गेल छथिन, पिताजी बुढ़ापामे प्रवेश कऽ लेने छथिन। ओऽ चाहैत छथि जे जहिना पैघ भाई सभक विवाह भऽ गेल छनि, हुनको विवाह कऽ देल जाय। कारण एकटा छोट भाई सेहो छनि, रुपैय्या पाइ कमा लैत छथि आ अपन आब कोन भरोस। कखन छी कखन नहि छी। चुंकि जमाना बदलि गेल छैक, ताहि हेतु पी.सी.मिश्रासँ संपर्क केलन्हि जे लोक सभ बहुत परेशान करैत छथि अहाँक विवाह लेल, से की कहैत छी। हुनकर जवाब छलनि, जे पिताजी हमर किछु शर्त अछि विवाहमे। तँ पिताजी कहलखिन- ठीक छै, रातिमे भौजीसँ गप्प करायब, ठीक छै। रातिमे भोजनक बाद पी.सी.मिश्रा जी भौजीक द्वारा अपन शर्त पठेलन्हि- एक विवाहमे रुपैय्या पैसाक आदान-प्रदान नहि, यानि बिना पैसाक विवाह-आदर्श विवाह। दोसर लड़की पढ़ल-लिखल आ अंग्रेजी बजनाय अनिवार्य ताकि बच्चाक शिक्षा उच्च होय। तेसर द्विरागमन जल्दी होय ताकि साल भरि जे अपन संस्कार यानी विध-विधानमे कम खर्च होयत। चारिम जिनका ओहिठाम विवाह होय ओ हमर तुलनामे गरीब होय ताकि हुनका ओहिठाम सम्मान बेसी भेटत।

ई सभ शर्त सुनि हुनकर पिताजी कहलनि- हम शर्तसँ बहुत प्रसन्न छी, लेकिन सभ शर्त हमरासँ भऽ सकत मुदा दोसर शर्त हमरा विश्वास नहि अछि की गामक लोक पूरा करए देत वा नहि। ताहि हेतु कहबनि जे एहन कुनू भेट जानि तँ ओऽ हमरा कहि देत। ई बात रंजीतकेँ पता लगलनि, तँ ओहो सोचलन्हि जे कोनो सम्पर्कक आदमीसँ पी.सी.मिश्राक विवाह करल जाय तँ उत्तम। ई दू-चारि ठाम बजलाह जाहिमे "श्रीमति महारानी मिश्रा" जे रंजीतक भाभी आ पी.सी. मिश्राक रिश्तामे भौजी छलथिन केँ सेहो पता लगलन्हि। अपन छोट बहिन अनीता झाक ननदि छलथिन सोनी आ हुनकर उम्र १९ साल रहनि। ओऽ अपन बाबूजी श्री भरत झाकेँ कहलथिन जे ई कथा मुफ्तमे भऽ जाएत। ओऽ अपन जमाय दिलीप झाकेँ फोनसँ संपर्क केलन्हि। दिलीप झाक बाबूजी १० साल पहिने स्वर्गवासी भऽ गेल छथिन, ताहि हेतु बहिन सोनीक विवाह दिलीप झा आ विनय झाकेँ करबाक छनि। ई सभ बात सुनि दिलीप झा अपन पत्नी अनीताकेँ कहलथिन जे ई काज बुझू मँगनीमे भऽ जाएत। ई बात सुनिते अनीता कहलथिन जे अहाँ देरी नहि करू आ जयपुर जाऊ। बुझू लक्ष्मी चलि कऽ आबि गेल छथि। ई बात ओऽ विनय झाकेँ सेहो कहलन्हि आ सोनीक दूटा नीक फोटो लऽ जयपुर आबि गेलाह। आब महारानी रंजीतक द्वारा पी.सी.मिश्राकेँ जयपुर बजेलन्हि। होलीक बहन्ना बना कय अपन दफ्तरसँ रंजीत आ पी.सी.मिश्रा जयपुर गेलाह। साँझक हवाई जहाजसँ जयपुर पहुँचलाह। पहुँचलाक उपरान्त चाय-पानिक बाद महारानी पी.सी.मिश्रासँ बजलीह- बौआ विवाह कहिया करब, आब तँ लगन आबय बला छैक आ विवाह योग्य भय गेल छी। हम काकासँ बात करू? पी.सी.मिश्र हँसैत कहलन्हि- जे भौजी हमर किछु शर्त अछि, से जँ पूरा भय जायत तँ हम विवाह एखन

कय लेब। ई गप सुनि महारानी कहलथिन बुझू बौआ जे अहाँक विवाह भऽ गेल आ अपन बातसँ पलटब नहि। पी.सी. एकरा एकटा मजाक बुझि ठहक्का लगा कऽ हँसऽ लगलाह। तावत लगभग रातिक ११ बाजि गेलैक। महारानी कहलथिन- चलू खाना खाऽ लिअ, रुकू हम खाना लगावैत छी। रातुक भोजनमे दू तोर भेल, एक बेर भोजनक लेल बैसलाह पी.सी.मिश्रा, रंजीत ठाकुर आ रामानन्द मिश्रा। भोजनक उपरान्त ओऽ तीनू गोटे पहिल तलपर गेलाह सुतक लेल। दोसर बेर फेर भोजन लागल जाहिमे भरत झा, दिलीप झा, राजू झा व नूनू झा ___राजू आ नूनू झा महारानीक छोट भाई छथिन-, फेर सभ अपन-अपन बिस्तरपर सुतक लेल गेलाह। भोर भेल चायक आयोजन भेल। सातो गोटे भरत झा, दिलीप झा, रामानन्द मिश्रा, राजू झा, नूनू झा, रंजीत ठाकुर, पी.सी.मिश्रा व महारानी चायक पश्चात् गप्प करए लगलाह। महारानी बजलीह-बौआ विवाह कहिया तक करब। मजाकक स्वरमे पी.सी.मिश्रा बजलाह- देखियौक आब जल्दी करब, कारण जे बाबूजीक फोन आयल छल जे लोक सभ परेशान करैत अछि विवाहक लेल, तँ आब जल्दी भऽ जाएत। ई सुनिते भरत झा बजलाह जे कतेक पैसा लेताह। पी.सी.मिश्रा कहलथिन जे एहन कोनो बात नहि छैक। ई शब्द पूरा होइसँ पहिने बीचेमे रंजीत बजलाह- लड़की जँ नीक भेटत तँ कोनो पाई-रुपैया नहि। ई शब्द सुनिते पाछूसँ महारानीक माय बजलीह- जे कही तँ अनीताक ननदिसँ करा दियौन, लड़की तँ बड़ भव्य छथिन, सज्जन-भव्य व धार्मिक प्रकृतिक घरक, सभटा काज आ लूरि-व्यवहार जनैत छथिन्ह। ई बात पूरा भेलाक बाद महारानी बजलीह जे ओझा ओतेक पाई कतएसँ देथिन्ह। ताहिपर रंजीत बजलाह- पाइक कोनो प्रश्न नहि छैक, हुनकर किछु शर्त छन्हि ओऽ चारूटा शर्त दोहरेलन्हि। ताहिपर दिलीप झा बजलाह- हम चारू शर्तसँ परिपूर्ण छी। ई बात सुनि रामानन्द मिश्र बजलाह जे जल्दीमे काज नहि होयबाक चाही। पहिने ई शर्तपर चिन्तन कैल जाऊ। कारण जे सवाल दू टा जिनगीक अछि आ शर्तक कोनो जवाब नहि अछि। एहन सोच तँ बहुत कम लोकक होइत छनि, ताहि हेतु पुनर्विचार करू।

ई बात पूरा भेलाक बाद दिलीप झा बजलाह जे लड़कीक फोटो देख लेल जाओ आ हमहु पढ़ल-लिखल छी आ पेशासँ एकटा प्राइवेट शिक्षक छी ताहि हेतु शिक्षाक महत्व बुझैत छी। ई बात सुनिते भरत झा बजलाह- रंजीत ई (फोटो दैत) लिअ आ अहाँ सभ देख लिअ। हम भीम बाबू (समधि) सँ बात कऽ लैत छी। बिच्चेमे रंजीत फोटो लैत आ पी.सी.मिश्राक हाथ पकड़ैत पहिल तलसँ ऊपर छतपर गेलाह आ मजाकक तौरपर बजलाह जे देखू भाई जँ अहाँ नहि करब तँ हमही दोसर विवाह कय लेब। हमरा तँ लड़की बहुत पसन्द अछि। ई कहैत पी.सी.मिश्रकेँ हाथ फोटो पकड़ेलन्हि। फोटो बहुत आकर्षक छल। पी.सी.मिश्र कहलथिन- फोटो तँ बहुत आकर्षक अछि, हमरा किछु सन्देह भऽ रहल अछि। रंजीत उत्तर देलन्हि- भाभी झूठ नहि कहतीह। संदेहक मतलब अछि भाभीपर शक करब। ताहिपर पी.सी.मिश्रा जवाब देलन्हि- हम शकक नजरिसँ नहि देखैत छी, चलू जे छथि, ई तँ हमर शर्तमे नहि शामिल अछि। लेकिन लड़की पढ़ल-लिखल अवश्य चाही। सुन्दर-खराब कोनो बात नहि अछि ई बात करैत दुनू नीचाँ अएलाह। एतबामे महारानी पुनः चाह अनलन्हि, फेर चाहक चुश्की लैत रंजीत बजलाह- देखू सभ बात बुझू भऽ गेल। आगू बात जे बरियाती ६५-७५ तक जाएब आ सत्कारमे कोनो तरहक शिकायत नहि। ई बात सुनैत दिलीप झा बजलाह जे सरकार हम गरीब छी, हमरासँ संभव नहि अछि ७५ टा बरियाती, हमरा किछु छूट देल जाऊ! लेकिन सत्कारमे कोनो त्रुटि नहि होएत। ई बातक बिच्चेमे महारानी बजलीह जे लड़काकेँ एकटा अंगूठी आ दू भरीक सोनाक चेन (सीकरी) आ लड़कीक नामसँ ५१,०००/-क फिक्स डिपोजिटक कागज ओझाजी दऽ देथिन, बरियाती ५१ टाक बात फाइनल, बस आब ने बौआ। ने ई किछु बजताह आ ने ओझा किछु बजताह! आर खान-पीन दिन घरक प्रत्येक सदस्यकेँ नीक आ ५ टूक कपड़ा। बस रंजीत आब किछु नहि बाजू आ ओझाजी अहूँकेँ एतेक तँ करए पड़त। रंजीत किछु बजैक उत्सुकता देखबैत छलाह की बिचमे भरत झा बजलाह जे फेर विवाहसँ एक साल तक दुनू दिस लड़की वलाक काज छैक, रंजीत ताहि हेतु आब बुझू जे ई बहुत महग भऽ गेल।

भरत झा बजलाह जे चलु कुल मिलाकय बात बरियातीक ६५ टा आ आब दिनक निर्णय कएल जाएत। तखनहि प्रेमचन्द्र बजलाह जे ई निर्णय गामपर बाबूजी करताह कारण जे हमरा बहुर सर-कुटुम छथि आ सभकेँ सूचना (नोत-हकार) सेहो देनाय छैक। भरत झा बजलाह- ई सत्य अछि, कोनो बात नहि, हम दिन ताकैत छी आ फोन कय देबनि वा भेँट कऽ लेल जाएत। बस किछु समय पश्चात् पतराक अनुसार दिन भेल- २०, २१ अप्रील आ २,३ मई। ई सूचना देल गेल, फेर बड़हरा (गाम)सँ किछु दिन बाद सूचित भेल जे २१ अप्रील क ठीक रहत, तदुपरान्त प्रेमचन्दकेँ पिताजी गामसँ कहलथिन जे कपड़ाक खरीदारी दिल्लीमे कऽ लिअ आ जेवर सभ एहिठाम (गाममे) खरीदब। कपड़ा खरीदल गेल, विवाहक, कनियाक लेल, कनिया बहीन लेल, भौजीक लेल, मायक लेल आ विधकरीक लेल आ घरक प्रत्येक सदस्यक लेल।

२१ अप्रील कय दिनक विवाह छल। कन्या पक्ष आ वर पक्षक बीच सहमति छलनि जे दिनक विवाह छैक ताहि हेतु हाथ धरएके लेल समयसँ पहुँचब आ बात भेल जे दू आदमी हाथ धरैक लेल अएताह। एम्हर वर पक्षक ओहिठाम सबेरेसँ चहल-पहल छल। गाम-गामक बच्चा वा स्त्रीगण दू दिन पहिनेसँ आयल छल। पुरुष लोकनि सेहो सबेरे पहुँचलाह कारण जे दिनक विवाह छै ताहि हेतु बरियाती सेहो जल्दी जयबाक विचार छल आ दूरी वा सड़कसँ सभ अवगत छलाह। गामक धाय-माय सेहो एक अँगनासँ दोसर अँगना कय रहल छली। ताबत धरि लगभग २ बाजि गेल घड़ीक अनुसार लेकिन कन्या पक्षक कोनो पता नहि देखि बच्चा सभहक भीतरक उत्साह कम भऽ रहल छल! करीब चारि बजेक लगभग एकटा आदमी राजू, दिलीप झाक जेठ सार, संवाद लऽ कय अयलाह जे किछु विलम्ब भय गेल ताहि लेल क्षमा करब। लगभग ५ बजेक करीब एकटा मार्शल (गाड़ी) दरबाजापर लागल। ओहि गाड़ीसँ चारि टा सज्जन उतरलाह आ एकटा चारि सालक बच्चा सेहो, कुल मिला कय पाँच! ई देखितहि दाइ-माइ कनफुसकी करए लगलीह जे कहने छलथिन दू आदमी आ पहुँचलाह पाँच! पुरुष वर्ग आगन्तुकक सेवामे जुटलाह। विश्वनथवा सभकेँ पानिसँ पएर धोबि कय अपन काज सम्पन्न कयलक। तावत कियो ठंढ़ा पानि अनलक आ ई काज सभ पूरा भेलाक बाद पुरुष वर्ग बजलाह जे अँगनामे दाय-माय सब कने अहाँ सभ अपन काज जल्दी करू, कारण जे पहिलेसँ विलम्ब भऽ गेल अछि। अँगनामे गोसाउनिक आ ब्राह्मणक गीत शुरू भेल। सभ दाय-माय अँगनाक माँझमे मरबापर गीत गावैत छलीह तावत एकटा बच्चा एकटा लोकल ब्रिफकेश लऽ कय पहुँचल। प्रेमचन्द पश्चिम दिशाक घरमे पलंगपर बैसल भौजी आ बहिनसँ वाच कय रहल छलाह। ब्रिफकेशकेँ देखि विभा (बहीन) भौजीसँ कहलथिन अहाँ सभ बात करू, हम कनी ब्रिफकेशक समान देखैत छी आ ओऽ मरबा दिश निकलि पड़लीह! तावत धरि एकटा बुजुर्ग महिला ब्रिफकेश खोललन्हि। प्रेमचन्द्रक नजरि पड़ि गेल तौलियापर जे पीयर रंगक दु-सूतीक छल। ई देखते दाय-माय एक दोसरकेँ मुँह दिश देखऽ लगलीह जे ई केहेन आदमी अछि, आयल अछि मार्शलसँ आ कपड़ा देखियौ। तौलियाकेँ देखिते प्रेमचन्दक क्रोध आसमानकेँ छूबि लेलक। ओऽ दू डेगमे बरन्डा फानि कय मरबापर पहुँचलाह आ कपड़ा साड़ी आ ब्रिफकेश देखैत बजलाह जे दाय-माय ई बन्द करू आ गीत-नाद सेहो। हम विवाह नहि करब। ई सुनिते बिभा हुनका सम्हारैत बजलीह, बौआ की भेल अहाँकेँ? अपन क्रोधकेँ शान्त करू, दलानपर लोक सभ की कहताह। दू मिनटमे अँगनामे गीतक बदलामे सन्नाटा भय गेल। आब दाय-माय गीत की कहती, सभ कहलथिन जे अहाँ चुप रहू, की हेतै। अहाँ एतेक खर्च कएलहुँ, तिलक नहि लेलहुँ आ कपड़ा वा समानक लेल की हल्ला करैत छी। प्रेमचन्दक जवाब छलनि, जे हम विवाह नहि करब। ई बात भए रहल छल की गीतक अवाज बन्द सूनि ४-५ टा बुजुर्ग पुरुष वर्ग दरवाजासँ अँगना पहुँचलाह आ ई दृश्य देखि सभ हुनका बुझाबय लगलाह आ कहलथिन दाय-माय अहाँ सभ आगू काज करू! आ ओ लोकनि प्रेमचन्दकेँ पुनः पछबरिया घरमे लय गेलाह। किछु पुरुष वर्ग आगन्तुक देख-भाल कय रहल छलाह। पुरुष-वर्ग मे सँ एकटा काका पुछलथिन जे बौआ की भेल, शान्तिसँ बाजू। बिभा एकटा गिलासमे पानि दैत कहलन्हि जे कपड़ा सभ नीक नहि छैक काका। काका बजलाह जे ई तँ छोट बात अछि। ई तुक्षताक प्रतीक छी! अहाँ शान्त रहू, अहाँकेँ केहेन चाही हम मँगवा दैत छी। एक घंटामे बजारसँ उपलब्ध भय जायत! प्रेमचन्द जवाब देलखिन जे काका, बात कपड़ाक नहि अछि, कारण जे हम स्पष्ट कहने छलियनि जे हमरा किछु नहि चाही। लेकिन जँ अपने किछु अनबए तँ समान नीक कम्पनीक चाही। ई तँ हमरा बेवकूफ बनओलथि! हमरा बातक दुःख अछि! जँ अपनेकेँ हमरा बातपर विश्वास नहि अछि तँ भौजी (महारानी) केँ पुछल जाय! आ अबाज देलखिन यै भौजी, अहाँ एम्हर आऊ! भौजी शब्द सुनिते महारानी उपस्थित भेलीह आ बजलीह जे बौआक बात १००% सही छनि। कन्यागत गलत काज कयने छथि, एहिमे कोनो सन्देह नहि! ई बात पूरा होमयसँ पहिने बिच्चेमे प्रेमचन्द बजलाह जे हम विवाह नहि करब कारण जे कि पता ? ओ हमरा लड़कीमे सेहो ठकताह। लेकिन बात आब इज्जत आ मान-मर्यादाक अछि, जँ विवाह नहि होएत तँ दुनू पक्षक इज्जत बर्बाद भय जायत! एक-दिश इज्जत, मान-मर्यादा आ दोसर दिशसँ दू-टा जिनगीक प्रश्न। समस्या जटिल अछि, कोनो सन्देह नहि! लेकिन छी तँ मैथिल आ मान-मर्यादासँ पैघ जिनगी नहि अछि। जे मान-मर्यादा ककरो लेल अभिशाप बनि जाइत अछि! हम सभ मैथिल जे किछु छी, बाप-दादाक पाग छी, जिनगीक कोनो मोल नहि! मोनमे एक हजार प्रश्न अबैत अछि जे हम मैथिलगण विश्वमे सभसँ बेशी चतुर छी आ तखनो सभसँ पाछू छी, तेकर की कारण अछि? हमरा नजरिमे जे हम सभ भूतकेँ बेशी महत्व दैत छी आ भविष्यकेँ गला दबा दैत छी, सेहो बहुत आसानीसँ हमरा लोकनिकेँ कनियो हिचकिचाहटि नहि होइत अछि! प्रेमचन्दक एकेटा उत्तर छलनि जे किछु बीति जाएत, हम विवाह नहि करब। कारण जे हमरा आब हुनका सभ (कन्यापक्ष) पर विश्वास नहि अछि। दाय-माय गीत तँ गबैत छलीह लेकिन

श्वरमे उदासी गीत छल। गोसाउनिक (हे जगदम्बा जगत माँ काली प्रथम प्रणाम करै छी हे), लेकिन श्वर सुनयमे लागैत छल जेना उदासी गाबैत छथि। अँगनाक माहौल खराब भय गेल छल। लगभग एक घंटा बीति गेलाक उपरान्त जखन कोनो तरहसँ मानैत नहि देखि भीम मिश्र (प्रेमचन्दक पिताजी) बजलाह- आब हमरोसँ बर्दाश्त नहि भय रहल अछि आ हमरो निर्णय अछि से अहाँ सुनू- जँ अहाँ विवाह नहि करब तँ हम आत्म हत्या कय लेब। आब अहाँक हाथमे गेंद अछि! निर्णय अहाँकँ लेबाक अछि जे की करब। पहिल निर्णय विवाह ओहि लड़कीसँ करब आकि दोसर निर्णय हमर दाह-संस्कार करब? कारण हम अपन जिबैत अपन पुरुखाक इज्जत नहि गवाँ सकैत छी। ई कहि ओ ओहिठामसँ उठि चलि पड़लाह। हुनका उठिते सभ पुरुषवर्ग ठाढ़ भय गेलाह आ एकक बाद एक दरबज्जा दिस बिदा भेलाह। हुनका (भीम मिश्र) कँ बुझबैत जे अहूँ एना नहि करू, ओ बात मानताह अहाँक आ अहाँसँ पैघ हुनकर अपन भविष्य नहि छनि। सभ मड़वापर ठाढ़ गप्प करैत छलाह। एतबेमे प्रेमचन्द घरसँ निकललाह आ आँखिमे दहो-बहो नोरक मुद्रामे पिताक पएर पर खसैत बजलाह जे हमरा माफ करू आ करुण स्वरमे बजलाह, जखन श्रवण कुमार मातृ-पितृक लेल अपन प्राण न्योछावर कय देलन्हि तँ हम अपन पिताक लेल अपन भविष्यक बलिदान दैत छी। लेकिन किछु शर्त अछि, भीम मिश्र बजलाह- मंजूर अछि। पहिल शर्त हम कन्यागतक समान नहि लेब दोसर हुनकर गाड़ीपर नहि जाएब तेसर देल गोरलगाइक रुपैया नहि लेब। ई शब्द सुनैत सभ दाय-माय समेत उपस्थित पुरुषवर्ग आ नेना-भुटकाक हृदय सेहो करुण भय गेल! प्रेमचन्दकँ उठबैत भीम मिश्र करुण स्वरमे बजलाह- हे दाय-माय। जल्दी-जल्दी अपन काज करू। हजामकँ अबाज दैत कहलथिन- अहाँ जल्दीसँ स्नानी चौकी धो कऽ आनू। फेर अबाज देलखिन- भोजी पाहुनकँ जल्दीसँ खानाक व्यवस्था करू! ई शब्द सुनितहि सभ बिहारि जेना काज करए लगलाह आ लगभग २०-२५ मिनटमे सभटा काज भऽ गेल। एतबामे जयदेव मिश्र बसकँ दरबज्जापर लगबैत सभ बरियातीकँ बसमे बैसबैत बजलाह- भीम भैया हम बसमे सभकँ बैसा लेलहुँ। अहाँ- मार्शल दिश इशारा करैत- बैसू। प्रेमचन्दक आँखिसँ गंगा-जमुनाक धार जकाँ नोर बन्द होइके नाम नहि लैत छलनि। बड़की भौजी एक आँखिमे काजर कऽ आबथि जा दोसर आँखिमे करतीह ताधरि ओ काजर नोरक रूपमे परिवर्तित भय नीचाँ चलि आबनि। हुनकर बुझु अधा आँचर नोरमे भीजि कय गुलाबी साउथ शिल्कक साड़ी काजरमय भय गेलनि आ हुनका किछु खबरि तक नहि! एहि तरहेँ ओहिठाम हाथधरीक विध पूरा भेल आ बर आ बरियाती प्रस्थान कयलक!

ड्राइवर गाड़ीकँ तेज चलाबयके प्रयास करैत लेकिन गामसँ तीन कि.मी. क बाद रस्ता सेहो नीक नहि। गाड़ी आगू जायके नाम नहि लैत छल जेना सभटा कँ मुहछी मारि देने हो। कोनो तरहेँ वर आ बरियाती गन्तव्य तक पहुँचल। ओहिठामक दृश्य तँ बहुत रमणीय छल। नीक पंडाल जे बहुत नीक सुसज्जित नीक-नीक मधुर स्वरमे मैथिली कैसेट सँ स्टीरियोक अवाज मोन मोहित कय रहल छल। ई दृश्य देखि बरियाती लोकनिकँ विश्वास नहि भेलनि जे एहिठाम हमर बैसबाक व्यवस्था अछि! ओ सभ तुलना करए लगलाह ब्रिफकेश आ कपड़ाक जे वरक लेल गेल छल आ ओहि सजावटक। हुनका लोकनिकँ विश्वास नहि होइत छलनि जे समान एहिठामसँ गेल अछि। तावत अवाज आबए लागल जे अपने सभ बैसल जाऊ, सरकार ठाढ़ कियैक छी? ओम्हर सँ दिलीप झाकँ कियो अवाज देलखिन जे हजमा कतऽ गेलाह। बरियातीकँ पएर धो कय शुद्धिकरणक विध पूरा करबाऊ! पंडालमे सभटा आधुनिक सुविधा उपलब्ध छल! किछु नवतुरिआ लोकनि पेपसी आ पेयजल तँ कियो बिगजीक समान बन्द डिब्बामे ल कय उपस्थित भेलाह! बरियाती लोकनि शहरी मजा लऽ रहल छलाह। लेकिन प्रेमचन्दक आँखिसँ नोर बन्द हो से नामे नहि लऽ रहल छल। ओ मोने-मोन अतेक दु:खी छलाह जेना शमसान घाटमे कोनो मुर्दाक अन्तिम संस्कार हो। करीब बीस मिनटक बाद गामक नवतुरिआ लड़की आ नेना भुटका पंडालक पाछूसँ अबाज देलथिन जे वरकँ कहियन्हु कनि पागक लटकैत भागकँ आगूसँ उठा देथिन ताकि ओ लोकनि वरकँ देखि सकथि। किछु नवतुरिआ लड़का सभ मजाक करैत छल वरक प्रति- एतवामे आज्ञा-डाला आयल आ ई विध सेहो पूरा भेल। ओम्हर परिछनक लेल आय-माय अयलीह आ परिछनक लेल प्रेमचन्द बिदा भेलाह मुदा हुनकर डेग आगू नहि होइन। चलथि जेना महुअकक चालि हो, किछु जवान लड़की मजाकमे बाजथि जे बड़ शान्त आ सुशील छथि वर, तँ कियो किछु जे खाना खाऽ कय नहि आयल छथि। प्रेमचन्द कोनो जवाब नहि देथि जेना गामपर सभटा क्रोध छोड़ि आयल होथि। कारण छल पिताक देल वचन जे जाधरि अपने लोकनि रहबए हम किछु नहि बाजब आ तकर बाद जँ आगू ओ गलती करताह तँ हम नहि छोड़बनि हुनका सभकँ। परिछन भेल आ विवाहक शुरुआत भेल। ओम्हर बरियाती लोकनिक स्वागतमे कोनो कमी नहि। सभ समान पर्याप्त मात्रामे उपलब्ध छल। विवाहक अन्तिम विध छल सोहाग देब। सभ बरियातीगण प्रस्थान करत। एहि बीचमे दुनू पक्ष वार्ता कयलनि जे द्विरागमन संगे होय कारण भीम मिश्रकँ कनी डर भऽ रहल छलनि, लोककँ चिन्हबामे देरी नहि लगलनि, जे एकरा

सभकेँ लड़काकेँ एकटा नीक कुरता देबाक उपाय नहि छैक आ पंडाल लगैत अछि जेना पैघ घरक काज हो। विवाह तँ भेल मुदा दू सालक बाद अगर द्विरागमन हो तँ ई किछु देत तँ अपमान वा कलहक कारण। द्विरागमनक दिन पक्का भऽ गेल एगारहम दिन। सोहागक उपरान्त श्री भीम मिश्र प्रेमचन्दकेँ बजाकय एकान्तमे ५-७ टा गणमान्यक संग बुझेलखिन जे संगे द्विरागमनक हम बात कय लेलहुँ आ अहाँकेँ इच्छा अछि जे किछु नहि लेबाक अछि तँ आब ओ लड़की हमर आदमी भेलीह, पुतोहु भेलीह। हम अपन आदमीकेँ एहनठाम नहि छोड़ब कारण जे ओ हिनके रूपमे रंगि जेतीह। ई सभ बुझबैत श्री भीम मिश्र प्रेमचन्दकेँ भरोसा दैत कहलथिन जे हम अपन पुतोहुकेँ अपना रंगमे रंगि लेब। अहाँ चिन्ता नहि करब आ चतुर्थी दिन गाम जरूर आयब तखन बात करब। ई शब्द कहैत ओ विदा भय गेलाह।

प्रेमचन्द आब कोबरघरमे छथि। विधकरी आ किछु घरक सदस्यगण सेहो छथि। ओ उदासीक कारण पुछलथिन। ओ किछु नहि बजलाह। करीब ५-७ बेर अलग-अलग दाय-मायक शब्द सुनिकय उत्तर देलखिन जे एखन नीन्द आबि रहल अछि, भोर भेलापर बात करब। ई बात सुनैत सभ एका-एकी घरसँ बाहर भेलीह। कोबरमे नीचाँमे बिस्तर लगाओल गेल। प्रेमचन्द सुतबाक प्रयास जरूर केलन्हि, मुदा आँखिसँ नोर पुनः आबय लगलनि। करीब २०-२५ मिनटक बाद एकटा जनानी कोबरमे प्रवेश कएलक लेकिन हुनका ऊपर कोनो प्रभाव नहि पड़लनि, आँखिसँ अश्रु पूर्ववत निकलैत रहलनि। ओ जनानी किछु काल धरि ठाढ़ रहल आ तावत पाछूसँ अवाज भेल जे प्रणाम करू, ठाढ़ भय की कय रहल छी। मुदा प्रेमचन्दक ऊपर कोनो असर नहि कारण ओ पहिने कहने छलाह जे हम भोर भेलापर किनकोसँ बात करब। तखने हुनका बुझना गेलनि जे हमर पएरकेँ कियो स्पर्श कय रहल अछि आ लहठीक खन-खनाहटि सेहो आयल। ई अवाज सुनैत आ पएरक स्पर्श अनुभव करैत ओ पहिनेसँ बेशी अनभिज्ञताक परिचय देलखिन आ जहिना छलाह ओहिना रहि गेलाह जेना हुनका कोनो खबरि नहि। बस पएर स्पर्शक दू-मिनट बाद ओ जनानी वापस भेल। ओ मोनमे सोचैत छल जे ई जरूर नव विवाहिता छलीह। लेकिन ई बात गुप्त राखएमे नीक जे हम सुतल छलहुँ, हमरा कोनो बातक खबरि नहि। किछु समय पश्चात् भोर भेल। भोरमे निन्न आबए लगलनि। ओ घर बन्न कए सूतय लेल चलि गेलाह। कोबरमे दू पहर बितलाक बाद गामक दाय-मायक झुण्ड तँ कखनो दू-चारि गोटेक आवाजाही छल। आब सभकेँ पएर छूबि प्रणामक सेहो प्रावधान अछि कारण जे हम मैथिल छी। साँझमे मौहकक विध पूर्ण भेल। पुनः रात्रिमे बिस्तरपर विश्रामक लेल गेलाह। लगभग दस-पन्द्रह मिनट बाद अनुभव भेलनि जे पुनः कोनो जनानी प्रवेश कए रहल अछि। ओ पुनः पएरक स्पर्श कय रहल अछि आ ओ अहिठाम बैसल अछि। प्रेमचन्दकेँ निन्न तँ नहि लागल छलन्हि मुदा निन्नक बहन्ना जरूर भेटलन्हि कारण विवाहक रात्रिमे ओ नहि सूतल छलाह। ओ दिनमे दुपहरिया बादसँ जागल छलाह। करीब दू घण्टा बैसि ओ जनानी पुनः वापस भेलीह। पुनः तेसर राति ओ जनानी पुनः अएलीह आ पूर्ववत अपन कर्ममे लिप्त भय गेलीह, यानी चरण-स्पर्श कए बैसि रहलीह। लगभग चारि-पाँच घंटा धरि ओ बैसलि रहलीह आ पएर धय निकलबाक कोनो चेष्टा नहि कय रहलि छलीह, जेना हुनकर प्रतिज्ञा हो जे आशीर्वाद कानमे जरूर सुनी। एतबेमे प्रेमचन्दकेँ एकटा शरारत सुझलनि आ ओ बहन्ना केलन्हि जेना पूरा निन्नमे होथि। ओ करोट बदलि कय पएरकेँ स्थानान्तर कय देलथिन। एकरा बाद ओ जनानी पुनः ओहिठामसँ हिलय के कोशिश नहि केलक। प्रेमचन्द तँ करोट लेलन्हि मुदा ओ जनानी पूर्ववत छलि जेना माटिक मूर्ति हो जेकरा कियो ओहिठाम बैसल अवस्थामे राखि बिसरि गेल हो। चारिम राति पुनः ओहि जनानीक प्रवेश भेल आ ओ अपन कर्तव्यमे पूर्ववत छल। प्रेमचन्द बजलाह- हमरा कोन कारणसँ परेशान कय रहल छी? अहाँ के छी? हम की कपट देने छी जे अहाँ प्रति रात्रिमे आबि हमर पएरकेँ स्पर्श करैत छी? हमर निन्नकेँ कोन कारणसँ खराब कय रहल छी? ई बात सुनिते ओ जनानी लाजसँ शरीरकेँ सकुचा लेलक। जेना लजबिज्जीक पातमे किछु स्पर्श भेलापर ओ सिकुरि जाइत अछि ठीक ओहि प्रकारसँ ओ बाला सिकुरि गेलीह। कोनो उत्तर नहि भेटलापर प्रेमचन्द पुनः निन्नक बहन्ना बना कए फोंफ काटए लगलाह। किछु समय उपरान्त ओ बाला कोबरसँ निकलि गेलीह। करीब दू-तीन घंटा पश्चात् विधकरी कोबरमे प्रवेश कय अवाज देलन्हि जे मिसरजी उठथु, नहा लथु। नित्यक्रियासँ निवृत्त भऽ स्नान भेल। हरक पालोपर बैसाकए नवविवाहिता संग पुनः विवाह शुरू भेल- चतुर्थीक विध सभ। आजुक दिन नुनगर-चहटगर भोजन भेटलन्हि आ प्रेमचन्द घरक लेल प्रस्थान करबाक तैयारीमे छलाह तँ रिश्तामे ज्येष्ठ साढ़ू कहलन्हि जे साढ़ू भाइ, हमरो जेबाक अछि। संगे चलब। हम हुनके दू-पहियापर बैसि गाम अयलहुँ। किछु काल पश्चात् पुनः गाममे भोजन कय प्रेमचन्द एम्हर-ओम्हर निकलय के प्रयास जरूर केलन्हि, लेकिन ओ ओहिठाम सँ निकलि नहि सकलाह। पुनः साँझमे पिताजी आ ज्येष्ठ भ्रातृगणक दवाबमे सासुर घुरि कए अएलाह। रात्रि-भोजनक पश्चात् विश्रामक लेल कोबर गेलाह। करीब मध्यरात्रिमे पुनः ओहि बालाक प्रवेश भेल। ओ अपन काजमे व्यस्त छलीह। प्रेमचन्द

पुनः निन्नक बहन्ना कयलनि। फेर मोन पड़लनि जे गामसँ जखन आबय लगलाह तँ बड़की भौजी किछु ज्वेलरी देने छलथिन जे ई कनियाँकेँ मुँहबजना छी, दऽ देबय, तखन सुतब। जेबीसँ निकालि कय ओ बालाकेँ कहलथिन, ई अहाँक समान अछि, लऽ लेब। हमरा निन्न आबि रहल अछि, सूति रहल छी।

निन्न की होयतनि, शरीर तँ लगभग चारि-पाँच दिनमे आधा भय गेल रहनि। दिमागमे सोच जे पैसि गेलनि! ने खेनाइ-पिनाइ नीक जेकाँ ने निन्न। एकदम चिरचिरा स्वाभावक भय गेल छलाह। मध्यरात्रिमे प्यास लगलन्हि तँ पानिक लोटा ताकि रहल छलाह। ओ बाला हुनका एकटा गिलासमे लगभग ठंढा भऽ गेल दूध बढ़ेलखिन। प्रेमचन्द कहलथिन जे ई दूध छी, हमरा प्यास लागल अछि, ई राखि देल जाओ। मुदा ओ नहि रखलन्हि। हुनका संग समस्या छल जे ओ घोघमे छलीह, भरि रातिक जागलि छलीह आ कहियो बाजल नहि छलीह। ई सभ कारणेँ ओ हाथमे दूधक ग्लास लऽ तपस्याक मुद्रामे ठाढ़ रहलीह। प्रेमचन्दकेँ लगेमे लोटामे राखल पानि भेटलन्हि आ ओ पानि पीबि कए पुनः सुतबाक प्रयासमे छलाह। हुनका की जिज्ञासा भेलनि जे देखियै ई बाला कतेक काल धरि ठाढ़ भय गिलाससँ भरल दूध रखैत अछि। लगभग एक घण्टा बीति गेल मुदा ओ तपस्यामे लीन छथि ई देखि प्रेमचन्दकेँ दया आबि गेलनि आ दूधक गिलास हाथसँ लय दू-चारि घोंट पीबि गिलास राखि देलन्हि। पुनः परिचय भेल। प्रेमचन्दक प्रश्नक उत्तरक समय ओ बाला थर-थर काँपि रहल छलीह, जेना कसाइकेँ देखि छागरक आँखिमे डर।

प्रेमचन्द- नाम?

-सोनी।

-कतेक पढ़ल छी?

-दसम बोर्ड फेल छी।

-सत्य या झूठ?

-ई ध्रुव सत्य अछि।

ई बात सुनिते प्रेमचन्दक आँखिमे पुनः गंगा-यमुनाक धारा प्रवाहित भय गेलन्हि तँ सोनी रुदन अवस्थामे बजलीह- हम अपनेसँ झूठ नहि बाजि सकैत छी। हमरा क्षमा करू। हमरा जे सजा देब से कम अछि। आ हुनको आँखिसँ दहो-बहो नोर खसए लगलन्हि।

-अपने शरीरसँ विकलांग तँ नहि छी?

-नहि।

-अपने कोनो बीमारीसँ ग्रसित तँ नहि छी?

-नहि।

-अपने जिबैत किनका लेल छी?

-अहाँ हमर गरदनि दबा दिअ तँ हमरासँ बेशी भाग्यशाली कियो दोसर नहि होएत।

-अपनेक सभसँ पैघ लक्ष्य?

-अहाँक खुशी।

-अपने कानि रहल छी, कारण?

-अहाँक कष्ट देखि बर्दाश्त नहि भऽ रहल अछि।

-अहाँ जुनि कानू सोनी। एहिमे अहाँक कोनो दोष नहि अछि।

-आइ हम मरि गेल रहितहुँ तँ अहाँकेँ कष्ट नहि भेल रहैत।ई तँ ईश्वरक बनायल विधिक विधान छी! एकरा कोनो शक्ति नहि काटि सकैत छैक।

-देखू, एहि दुनियाँमे दू तरहक लोक होइत अछि- आशावादी आ पुरुषार्थवादी। हम आशावादी पुरुष नहि छी, पुरुषार्थवादी छी आ आशावादीसँ घृणा करैत छी। कारण आशावादी पुरुष या औरत मेहनती नहि होइत अछि। अपने कोन तरहक छी?

-हम धार्मिक प्रवृत्तिक छी आर धर्ममे बहुत विश्वास अछि, ताहि हेतु आशावादी छी!

ई सुनि प्रेमचन्दक मोनमे आर बेशी तकलीफ बढ़ि गेलन्हि। एहि तरहेँ चतुर्थीक राति दुनू नव-विवाहित जोड़ी कटलन्हि। प्रेमचन्द फेर अपन गाम घुरि गेलाह।

साँझ भेल, भौजीसभकेँ भेलन्हि जे प्रेमचन्द पुनः गाम जएताह। मुदा कोनो प्रतिक्रिया नहि देखि पुछल गेलन्हि तँ उत्तर आएल जे आब द्विरागमनक लेल हम उपस्थित होएब सासुरमे, नहि तँ आब दिल्ली घुरि जाएब। अन्यथा हमर पीड़ाकेँ बढ़ाओल नहि गेल जाऊ। हमरा आब जीवित रहय के कोनो इच्छा नहि अछि। कोनो मनोरथ नहि अछि। हमर कोनो भविष्य नहि अछि!

द्विरागमन भेल, कनियाँ सासुर अयलीह। भड़फोरीक पश्चात् प्रेमचन्द दिल्ली उपस्थित भेलाह। अपन कम्पनीक काम-काज सम्हारलथि। काजपर तँ जाथि मुदा अन्तरात्मामे कतेक प्रश्न अबन्हि। कारण जे जीबाक आशाक किरण लगभग अन्तिम चरणमे पहुँचि गेल छलन्हि। आब कोनो मनोरथ नहि, नहिए जिनगीक कोनो लक्ष्य बाँचि गेल छलन्हि। आ एकर कारण मैथिल समाजक किछु महानुभावक विचार आ कृत्य अछि, संगहि मैथिल समाजक किछु प्रावधान सेहो जिम्मेदार अछि। एहि प्रकारेँ नहि जानि कतेक मैथिल नव-युवक-युवतीकेँ अपन करुण जिनगी जीबाक लेल मजबूर होमए पड़ैत अछि।



डॉ. प्रेमशंकर सिंह (१९४२-)

ग्राम+पोस्ट- जोगियारा, थाना- जाले, जिला- दरभंगा। 24 ऋचायन, राधारानी सिन्हा रोड, भागलपुर-812001(बिहार)। मैथिलीक वरिष्ठ सृजनशील, मननशील आ अध्ययनशील प्रतिभाक धनी साहित्य-चिन्तक, दिशा-बोधक, समालोचक, नाटक ओ रंगमंचक निष्णात गवेषक, मैथिली गद्यकेँ नव-स्वरूप देनिहार, कुशल अनुवादक, प्रवीण सम्पादक, मैथिली, हिन्दी, संस्कृत साहित्यक प्रखर विद्वान् तथा बाङला एवं अंग्रेजी साहित्यक अध्ययन-अन्वेषणमे निरत प्रोफेसर डॉ. प्रेमशंकर सिंह (२० जनवरी १९४२)क विलक्षण लेखनीसँ एकपर एक अक्षय कृति भेल अछि निःसृत। हिनक बहुमूल्य गवेषणात्मक, मौलिक, अनूदित आ सम्पादित कृति रहल अछि अविरल चर्चित-अर्चित। ओऽ अदम्य उत्साह, धैर्य, लगन आ संघर्ष कऽ तन्मयताक संग मैथिलीक बहुमूल्य धरोरादिक अन्वेषण कऽ देलनि पुस्तकाकार रूप। हिनक अन्वेषण पूर्ण ग्रन्थ आ प्रबन्धकार आलेखादि व्यापक, चिन्तन, मनन, मैथिल संस्कृतिक आ परम्पराक थिक धरोहर। हिनक सृजनशीलतासँ अनुप्राणित भऽ चेतना समिति, पटना मिथिला विभूति सम्मान (ताम्र-पत्र) एवं मिथिला-दर्पण, मुम्बई वरिष्ठ लेखक सम्मानसँ कयलक अछि अलंकृत। सम्प्रति चारि दशक धरि भागलपुर विश्वविद्यालयक प्रोफेसर एवं मैथिली विभागाध्यक्षक गरिमापूर्ण पदसँ अवकाशोपरान्त अनवरत मैथिली विभागाध्यक्षक गरिमापूर्ण पदसँ अवकाशोपरान्त अनवरत मैथिली साहित्यक भण्डारकेँ अभिवर्द्धित करबाक दिशामे संलग्न छथि, स्वतन्त्र सारस्वत-साधनामे।

कृति-मौलिक मैथिली: १.मैथिली नाटक ओ रंगमंच,मैथिली अकादमी, पटना, १९७८ २.मैथिली नाटक परिचय, मैथिली अकादमी, पटना, १९८१ ३.पुरुषार्थ ओ विद्यापति, ऋचा प्रकाशन, भागलपुर, १९८६ ४.मिथिलाक विभूति जीवन झा, मैथिली अकादमी, पटना, १९८७५.नाट्यान्वाचय, शेखर प्रकाशन, पटना २००२ ६.आधुनिक मैथिली साहित्यमे हास्य-व्यंग्य, मैथिली अकादमी, पटना, २००४ ७.प्रपाणिका, कर्णगोष्ठी, कोलकाता २००५, ८.ईक्षण, ऋचा प्रकाशन भागलपुर २००८ ९.युगसंधिक प्रतिमान, ऋचा प्रकाशन, भागलपुर २००८ १०.चेतना समिति ओ नाट्यमंच, चेतना समिति, पटना २००८

मौलिक हिन्दी: १.विद्यापति अनुशीलन और मूल्यांकन, प्रथमखण्ड, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना १९७१ २.विद्यापति अनुशीलन और मूल्यांकन, द्वितीय खण्ड, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना १९७२, ३.हिन्दी नाटक कोश, नेशनल पब्लिकेशन हाउस, दिल्ली १९७६.अनुवाद: हिन्दी एवं मैथिली- १.श्रीपादकृष्ण कोल्हटकर, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली १९८८, २.अरण्य फसिल, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली २००१ ३.पागल दुनिया, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली २००१, ४.गोविन्ददास, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली २००७ ५.रक्तानल, ऋचा प्रकाशन, भागलपुर २००८.लिप्यान्तरण-१. अङ्कीयानाट, मनोज प्रकाशन, भागलपुर, १९६७।

सम्पादन- १. गद्यवल्लरी, महेश प्रकाशन, भागलपुर, १९६६, २. नव एकांकी, महेश प्रकाशन, भागलपुर, १९६७, ३.पत्र-पुष्प, महेश प्रकाशन, भागलपुर, १९७०, ४.पदलतिका, महेश प्रकाशन, भागलपुर, १९८७, ५. अनमिल आखर, कर्णगोष्ठी, कोलकाता, २००० ६.मणिकण, कर्णगोष्ठी, कोलकाता २००३, ७.हुनकासँ भेट भेल छल, कर्णगोष्ठी, कोलकाता २००४, ८. मैथिली लोकगाथाक इतिहास, कर्णगोष्ठी, कोलकाता २००३, ९. भारतीक बिलाड़ि, कर्णगोष्ठी, कोलकाता २००३, १०.चित्रा-विचित्रा, कर्णगोष्ठी, कोलकाता २००३, ११. साहित्यकारक दिन, मिथिला सांस्कृतिक परिषद, कोलकाता, २००७. १२. वुआड़िभक्तितरङ्गिणी, ऋचा प्रकाशन, भागलपुर २००८, १३.मैथिली लोकोक्ति कोश, भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर, २००८, १४.रूपा सोना हीरा, कर्णगोष्ठी, कोलकाता, २००८।

पत्रिका सम्पादन- भूमिजा २००२–**सम्पादक**

बीसम शताब्दी मैथिली साहित्यक स्वर्णिम युग

अतीत आ भविष्यक संग सम्बन्ध स्थापित कऽ कए साहित्य अपन अस्तित्वक सत्यताक उद्घोषणा करैछ। विश्व-मानव अत्यन्त उत्सुकतापूर्वक साहित्यक गवाक्षसँ अतीतक गिरिगह्वरक गुफामे प्रवाहित जीवन-धाराक अवलोकन करैछ आ अपन गम्भीरतम उद्देश्यक विविध प्रकारक साधन भूल आ संशोधन द्वारा प्राप्त करैत अपन भावी जीवनकेँ सिंचित होइत देखबाक उत्कट अभिलाषा रखैछ। अतीतक प्रेरणा आ भविष्यक चेतना नहि तँ साहित्य नहि। अतीत, वर्तमान आ भविष्यक कड़ीक अनन्त शृंखलाक रूपमे भावक सृष्टि होइत चल जाइछ आ मानव अपन प्रगतिक नियमादि, सिद्धान्तादिकेँ अपन वास्तविक सत्ताक विकासक मंगल कंगन पहिरि कए अपन दुनू हाथसँ आवृत्त कयने रहैछ। विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर (१८६१-१९४१)क कथन छनि जे विश्व-मानवक विराट जीवन साहित्य द्वारा आत्मप्रकाश करैछ। एहन साहित्यक आकलनक तात्पर्य काव्यकार एवं गद्यकारक जीवनी, भाषा तथा पाठ सम्बन्धी अध्ययन तथा साहित्यक विविध विधादिक अध्ययन करब मात्र नहि, प्रत्युत ओकर सम्बन्ध संस्कृतिक इतिहाससँ अछि, मानव-मनसँ, सभ्यताक इतिहासमे साहित्य द्वारा सुरक्षित मनसँ अछि।

उन्नैसम शताब्दीमे भारतवर्षमे नवजागरणक प्रबल ज्वार उठल। तकर कोनो प्रभाव मिथिलांचलपर नहि पड़ल, कारण मिथिलावासी प्राचीन परम्पराक पृष्ठपोषक रहलाक कारणेँ संस्कृत शिक्षामे लागल रहलाह आ अंग्रेजी शिक्षा तथा पाश्चात्य विचारधाराक महत्वकेँ नहि स्वीकारलनि। नवजागरणक फलस्वरूप षष्ठ दशकमे भारतीय परतन्त्रताक बेड़ीसँ मुक्त होएबाक निमित्त सन् १८३७ ई. मे सिपाही विद्रोह कएलक। मिथिलाक नव शासक मैथिलीकेँ कोनो स्थान नहि देलनि। एहि दशकक अन्तिम बेलामे मिथिलाक प्रशासन ''कोर्ट ऑफ वाड्र्स''क अधीन चल गेल जकरप्रभाव मिथिलापर पड़लैक। जे एहिठामक निवासीकेँ प्रथमे-प्रथम पश्चिमक स्पर्शानुभूति भेलनि। किन्तु दुर्भाग्य भेलैक जे ''कोर्ट ऑफ वाड्र्स'' द्वारा मिथिलाक भाषा मैथिली आ ओकर लिपिकेँ बहिष्कृत कऽ कए ओकरा स्थानापन्न कयलक उर्दु आ फारसी तथा देवनागरी। मिथिलेश महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह (१८५८-१९९८)क गद्देनशीन भेलापर उन्नैसम शताब्दीक अष्टदशकोत्तर कालमे मिथिलावासीक सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक जीवनमे नव चेतनाक संचार भेलैक। हुनक चुम्बकीय व्यक्तित्व, कृपापूर्ण व्यवहार, विद्या-व्यसन आ असीम देशभक्ति एवं दानशीलताक फलस्वरूप विद्वान साहित्य सर्जककेँ आकृष्ट कएलक। हुनक उत्तराधिकारी मिथिलेश महाराज रमेश्वर सिंह (१८९८-१९२९) सेहो उक्त परम्पराकेँ कायम रखलनि।

उन्नैसम शताब्दीक अष्टदशकोत्तर कालमे भारतीयमे अभूतपूर्व जनजागरण भेलैक, जकर फलस्वरूप स्वतन्त्रता संग्रामक नव स्फुलिंग जागृत भेल आ ओऽ सभ स्वतन्त्रताक निमित्त अत्यधिक सचेष्टताक संग सन्नद्ध भेलाह, जकर प्रभाव साहित्य सृजनिहारपर पड़लनि। यद्यपि शताब्दीक अन्तिम वर्ष धरि धार्मिक आ सांस्कृतिक चिन्तनपर रुढ़िवादिताक पुनः प्रकोपक विस्तृत छायासँ बौद्धिक आ साहित्यिक प्रगतिक समक्ष अवसादपूर्ण वातावरणक परिव्याप्त भऽ गेलैक। तथापि मैथिली साहित्य जगतमे उत्कर्ष अनबाक निमित्त अपन परम्परागत परिधानक परित्याग कऽ नव प्रवृत्तिक रचनाकारक प्रादुर्भाव भेल जाहिमे मातृभाषानुरागी आ प्रकाशनक सौविध्यसँ साहित्य नव रूप धारण करय लागल जकर नेतृत्व कयलनि कवीश्वर चन्दा झा (१८३०-१९०७), कविवर जीवन झा (१८४८-१९१२), पण्डित लालदास(१८५६-१९२१), परमेश्वर झा (१८५६-१९२४), तुलापति सिंह (१८५९-१९१४), साहित्य रत्नाकर मुन्शी रघुनन्दन दास (१८६८-१९४५), मुकुन्द जा बक्शी (१८६०-१९३८), जीवछ मिश्र (१८६४-१९२३), चेतनाथ झा (१८६६-१९२१), खुद्दी झा (१८६६-१९२७), मुरलीधर झा (१८६८-१९२९), जनार्दन झा ''जनसीदन'', सर गंगानाथ झा (१८७२-१९४१), दीनबन्धु झा (१८७३-१९५५), रामचन्द्र मिश्र (१८७३-१९३८), बबुआजी मिश्र (१८७८-१९५९), गुणवन्तलालदास (१८८०-१९४३), कुशेश्वर कुमर (१८८१-१९४३), विद्यानन्द ठाकुर (१८९०-१९५०), कविशेखर बदरीनात्र झा (१८९३-१७४), पुलकितलालदास (१८९३-१९४३), गंगापति सिंह (१८९४-१९६९), उमेश मिश्र (१८९६-१९६७), धनुषधारीलालदास (१८९६-१९६५), भोलालालदास (१८९७-१९७७), अमरनाथ झा (१८९७-१९५५), राजपण्डित बलदेव मिश्र (१८९७-१९६५), कुमार गंगानन्द सिंह (१८९८-१९७०), ब्रजमोहन ठाकुर (१८९९-१९७०) एवं रासबिहारीलालदास आदि-आदि जे विविध साहित्यिक विधादिक जन्म देलनि आ एकरा सम्वर्धित करबाक दृढ़ सन्कल्प कयलनि।

वस्तुतः विगत शताब्दी मैथिली साहित्यक हेतु एक क्रान्तिकारी युगक रूपमे प्रस्तुत भेल। अंग्रेजी राज्यक स्थापना देशक साहित्यिक, वैज्ञानिक, राजनैतिक, आर्थिक आ सामाजिक क्षेत्रमे एक नव स्फूर्ति प्रदान कऽ कए मिथिलांचलक जीवन-शैली आ सोचक पुनर्संस्कार कयलक। एहि शताब्दीमे आधुनिक शिक्षा, छापाखाना आ सरल यातायातक सुविधाक अभाव रहितहुँ मैथिलीमे साहित्य सृजनक परम्परा वर्तमान रहल। बहुतो दिन धरि मैथिली साहित्य संस्कृत साहित्यक प्रतिछाया सदृश रहल। एहिमे साहित्यिक एवं अन्य प्रकारक लेखन निरन्तर होइत रहल। दुइ विश्व युद्धक बीचक कालमे मैथिली साहित्यक सर्वांगीन समुद्धारक चेतना अनलक। एहि कालक लेखनमे ई नव मनोदशा प्रतिफलित भेल आ साहित्यक विभिन्न विधामे उल्लेख्य योग्य परिवर्तन भेल।

राजेन्द्र पटेल

गुजराती कवि

गुजरातीसँ अंग्रेजी अनुवाद हेमांग देसाई द्वारा। अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद गजेन्द्र ठाकुर द्वारा।

१

हम किएक कऽ रहल छी अनुभव
धरा बिन शाखक
बिना एहि हाथक?

पसारैत दूर आ विस्तृत
जीवित साँपक ताकिमे
ई सभ हाथ एक दोसरमे ओझराएल
आ समाप्त होइत मात्र नहक वृद्धिमे।

बाबाक छड़ीक पकड़िसँ
बसक ठाढ़ होएबला लटकल चक्र
मुट्ठी अनैत अछि वैह अविचल शून्याकाश।
ओकर कए अनुभूति
ई सभ खेंचल कार कौआक हाथ
घुमि जाएत आकाश दिस
सभटा खेत अंकुरित प्रफुल्लित

पृथ्वीक गत्र-गत्रक
पाँजर खेतमे औँगठल
बाँहि जकाँ।
सभटा हरक फारक चेन्ह
भाग्य रेखा हाथक।

पंक्ति जोखि सकैए
मात्र हाथक लम्बाई
नहि एकर जड़ि
पहिने हम कए सकी एकर निदान
हाथक आक्रमण जड़िपर
श्वेत धरापर
रोशनाईसँ पसरल
अपन नव अंकुरित आँखिए
उड़ि गेल नव-जनमल पाँखिए
ओहि धूसरित गगनक पार
आब
सभटा मस्तिष्क कोशिकामे
हाथ रहैछ अहर्निश
प्रवेश कए रहल गँहीर आर गँहीर जड़िमे



राजेन्द्र विमल (1949-)।

चामत्कारिक लेखन-प्रतिभाक स्वामी राजेन्द्र विमल नेपालक मैथिली साहित्यक एक स्तम्भ छथि। मैथिली, नेपाली आ हिन्दी भाषाक प्राज्ञ विमल शिक्षाक हकमे विद्यावारिधि (पी.एच.डी.)क उपाधि प्राप्त कएने छथि। सुललित शब्द चयन एवं भाषामे प्राञ्जलता डा. विमलक लेखनक विशेषता रहलनि अछि। अपन सिद्धहस्त लेखनसँ ई कोनहु पाठकक हृदयमे स्थान बना लैत छथि। कथा आ समालोचनाक सङ्गहि मर्मभेदी गीत गजल लिखबामे प्रवीण डा. विमलक निबन्ध, अनुवाद आदि सेहो विलक्षण होइत छनि। कम्मो लिखिकऽ यथेष्ट यश अरजनिहार डा. विमलक लेखनीक प्रशंसा मैथिलीक सङ्गसङ्ग नेपाली आ हिन्दी साहित्यमे सेहो होइत रहलनि अछि। खास कऽ मानवीय संवेदनाक अभिव्यक्तिमे हिनक कलम बेजोड़ देखल जाइत अछि। त्रिभुवन विश्वविद्यालयअन्तर्गत रा.रा.ब. कैम्पस, जनकपुरधाममे प्राध्यापन कएनिहार डा. विमलक पूर्ण नाम राजेन्द्र लाभ छियनि। हिनक जन्म २६ जुलाई १९४९ ई. कऽ भेल अछि। साहित्यकारक नव पीढ़ीकेँ निरन्तर उत्प्रेरित करबाक कारणे ई डा.धीरेन्द्रक बाद जनकपुर-परिसरक साहित्यिक गुरुक रूपमे स्थापित भऽ गेल छथि। जनकपुरधामक देवी चौक स्थित हिनक घर सदति साहित्यक जिज्ञासुसभकअखाड़ाजकाँबनलरहैतअछि।–**सम्पादक**

गजल

१.

नयनमे उगै छै जे सपनाकेर कोँढ़ी
फुलएबासँ पहिने सभ झरि जाइ छै
कलमक सिनूरदान पएबासँ पहिने
गीत काँचे कुमारेमे मरि जाइ छै
चान भादवक अन्हरिये
कटैत अहुरिया
नुका मेघक तुराइमे हिंचुकै छल जे
बिछा चानीक इजोरिया
कोजगरामे आइ
खेलए झिलहरि लहरिपर
ओलरि जाइ छै
हम किछेरेपर विमल ई बूझि गेलियै
नदी उफनाएल उफनाएल
कतबो रहौ
एक दिन बनि बालू पाथरक बिछान
पानि बाढ़िक हहाकऽ हहरि जाइ छै
के जानए कखन ई बदलतै हवा
सिकही पुरिवाकेर नैया डूबा जाइ छै
जे धधरा छल धधकैत धोंवा जाइ छै
सर्द छाउरकेर लुत्ती लहरि जाइ छै
रचि-रचिकऽ रूपक करै छी सिंगार
सेज चम्पा आ बेलीसँ सजबैत रहू
मुदा सोचू कने होइ छै एहिना प्रिय
सींथ रंगवासँ पहिने धोखरि जाइ छै

२.

जगमग ई सृष्टि करए तखने दिवाली छी
प्रेम चेतना जागि पड़ए तखने दिवाली छी
जीर्ण आ पुरातनकेँ हुक्का-लोली बनाउ
पलपल नव दीप जरए तखने दिवाली छी
स्नेहकेर धार बहत बनत जग ज्योतिर्मय
हर्षक फुलझड़ी झरए तखने दिवाली छी
अनधन लछमी आबए दरिदरा बहार हो
रङ्गोली रङ्ग भरए तखने दिवाली छी
रामशक्ति आगूमे रावण ने टीकि सकत
रावण जखने डरए तखने दिवाली छी

तृष्णा

आइ फेर बहु-बदला भेलैए कहाँ दन!...गे दाइ, गे दाए!

रजदेबाके बहु सिकिलिया आ देबलरैनाके बहु सोनावती। सिकिलिया ओना छै मोसकिलसँ अढ़ाइ हाथक मौगी मुदा सउँसे गोर देहमे गजगज मासु करै छै। देखिते होएत जे काँचे चिबा जाइ। टोङि देबै, बन्न दऽ सोनित फेकि देतै। देहपर जेना इस्त्री कएल होइ; छिहलैत आ गतानल अंगअंग। देबलरैनके मुँहसँ तँ कहिया सऽ ने लेर चूबैत रहै- लसलस। देबलरैना-बहु सोनाबती, रोलल-छोलल, पोरगर करची सन लचलच करैत देह। रजदेबाके ततराटक लागि जाइक- देखैक तँ देखिते। एक्के टोलमे दसे घरक तऽ फरक हएतै दुनूक घरमे। छिनरझप्पबाली सोनावतियो केहन मन सरभसी जे जखने रजदेबासँ नयन मिलै कि छट्ट दऽ बिहुँसि उठै अंग-अंग- जेना लौका लौकि गेल होइ भीतरे भीतर। उपर सऽ सतबरती जे बनैय। रजदेबा माने राजदेव मंडल, अंचल अस्पतालमे चपरासी अछि। बाप ओकरा जनमऽ सँ पहिनहि सरग सिधारि गेल रहथिन्ह। पोसल केऽ तऽ माए। एकटा बहीन रहै चंचलिया। सभ कहै कुमरठेल्ली। सउँसे गाम अनघोलकएने

रहै छौंड़ी। कहियो खेसारीक झारमे पकड़ल जाइक, कहियो राहरि खेतमे केयो देखि लैक। कहिने कते आगि भगवान देहमे देने रहथिन्ह। चंचलियाक माय कहै जे ई देहक आगि थोड़बे रहैक, पेटक आगि रहै, पेटक। आब जे रहौक, मुदा ओ मारलि गेलि। ओकरा लऽ कऽ दू टा मनसामे झगड़ा भऽ गेलैक। जगदिसबा कहै जे हमर धरबी अछि, मनमोहना रिक्साबला कहै जे हम्मर माल अछि। चंचलिया दुन्नूकेँ दूहै छलि। से बरदास्स नहि भेलै मनमोहना रिक्साबलाकेँ। ताड़ीक झोंकमे रिक्साक पुरना चेनसँ तेना ने ततारऽ लगलै जे होशे ने रहलै। सउँसे देहसँ सोनित बहि रहल छलै आ ओ मुँह बाबि देने छलि। परिवारमे विधवा माय छलै, स्वयं छल, सिकिलिया छलै आ पाँच बरखक बेटा रहै। बेटा बड़ड सुन्नर आ बड़ ठोला! चंचलिया तऽ संसारसँ उठिए गेलै। आब परिवारक सुखाएल आँतक घघरा मिझएबाक लेल सोनित सुखएबाक जिम्मेबारी रजबेक छलै। जूआमे चुपचाप कान्ह लगा देलक आ बहए लागल। बहु रहै चमचिकनी, फरदेबाल आ फसलीटीबाली। रोज गमकौआ तेल चाही, स्नो-पाउडर चाही। रङसँ ठोर नइँ रङब, लिपेस्सी चाही। सिनेमामे चसकलि। जी-मुँह चलिते रहइ। पनपियाइमे घुघनी-मुरही, कचरी भरि पोख। दुसंझी। रोज-रोज माध-मासु गमकैत रहउ आङनभरि- ने किछु तऽ डोका-ककरि। आकि कछुएक झोर। कतेक दिनसँ एक जोर परबा पोसक लेल रगड़ा कए रहलि छलि साँयसँ। छमकि कए एमहर, छमकि कए ओमहर। राति-राति भरि झूलन देखए, सलहेसक नाचमे खतबैया टोलक झुलफिया या नटुआक नाच आ सतरोहनाक बिपटइ देखि-देखि कऽ लहालोट भऽ जाए। रजबाकेँ ई सभ सतखेल्ली मौगिक लच्छन बुझाइक, तँ रोज बतकुटौअलि होइ। रिक्साबला देबलरैनासँ यारी रहै रजदेबाकेँ। देबलरैना सिकलियाके बड़ पसिन्न। कारण रहै जे देबलरैना सेहो सलहेसक नाचमे ढोलकिया रहै। ईह ढोलक बजबैकाल ओकर कनहा जे उपर-नीचाँ होइ छल- गुम-गुमुक-गुमुक...गुम गुमुक गुमुक! .. बेर-बेर झुलफी मुँहपर खसि पड़ै जकरा ओ ओहिना छोड़ि दैक। मुँहपर बुनकिआएल ओसक बूँद सन पसेना! ओ मोनहि मोन अपन साँय रजदेबासँ देबलरैनाक मिलान करै। ... कहाँ देबलरैना, कहाँ रजदेबा। रजदेबाक मुँहपर चौबीस घंटा जेना विपत्तिके झपसी लधने रहै। घोघनमुँहा एक रत्ती ने सोहाइ सिकिलियाकेँ। मगर करओ तऽ की करओ? सिङार-पटार कए एकान्तमे एसगर बिछाओनपर पड़ि रहय आ कल्पना करए-साँय जे बदलतै! देबलरैना फुलपेन्ट पेन्हि कऽ, चसमा पेन्हि कऽ बाबू-भैया नाहित जे रिक्शापर बैठिकऽ रिक्सा चलबइ हइ तऽ सिनेमाके गोबिना माउत कऽर हइ। .. मानली जे ताड़ी-दारू पीबै हइ, त की भेलइ। सुनइ छिऐ जे कहाँदुन ताड़ी-दारु पीलै हइ मनसासुन तऽ ओकरा देहपर राछच्छी सबार भऽ जाइ छै, मौगीके छोड़ने ने छोड़ै छै।..धौर, केनाकऽ सकैत होतै देबलरैना बहु।..रजदेबा ला धन्न-सन! बिछाओनोपर जाएत त खाली घरेके समेस्सा। ..रङ आ लस!! .. देहो हाथ छूबैतऽ खौंझा कऽ छूटत!..

देबलरैनाके बँसुरीके आवाज सुनएलै। ..दारू पीकऽ अबै छै तऽ आङनमे बैसिकऽ बँसुरी टेरऽ लगै छै।..अहाहाहा..की राग, की तान।..सोनाबतीके तऽ लीरीबीरी कऽ दै छै। फेर दुनू परानीमे मुँहाठुट्ठी होइत-होइत पिटापिटौअल शुरू भऽ जाइत छै।..सोनाबतीके कहब छै जे मरदाबा जे कमाइ हए से तऽ दारू पानीमे उड़ा दै हए, सिनेमामे गमा दै हए आ सूतऽ लागी हरान रहै हए।..पेटमे अन्न नैआ..

"मनसा तऽ रजदेबो हइ"- सोचैए सिकिलिया- "ओकरा सूतऽ के मन नै होइ हइ?..केरबा आमसन मुँह लटकओने रहैए!" सिकिलियाके अपने हँसी लागि जाइ छै।

"दोसजी कहाँ गेलखिन"?- अरे, ई बारह बजे रातिमे सोनाबती!!..

"की हइ, हे"?- बाँसक फट्टक खोलिकऽ सिकिलिया बाहर अबैत अछि।..छौंड़ाक बाप तऽ नै एलैगऽ अस्पताल सऽ।..लैटडिपटी (नाइट ड्यूटी) हइ।.."

"बहीन की कहियो दुखके बात। आइ फेनू मनसा मारलकगऽ।"

"कइला?"

"धुर। की जान गेलिऐ कोन बढ़मकिटास हइ देहपर।..हमर तऽ जान लऽ लेलक।..अन्न-पानी जरि गेलै, जी-जाँघमे खौंत फुकने रहै छै चौबीस घंटा। __बलू, चल नऽ सूतऽ।..सुतना बेमारी धऽ लेलकैगऽ।"..सोनाबती घौलेघौले बजैत रहल। जोर-जोरसँ घोल-चाउर भेलै तँ बुढ़िया रजदेबामाइ टुघरि कऽ अङनामे आएल- गे, की भेलउ गऽ? चुप, लबरी। साँइयो बहुके बातके कहूँ एते घोलफचक्का भेलै गऽ?"

सोनाबती घेओना पसारलकि। रित्ती रित्ती कऽ फाटल, सतरह ठामसँ गिरह बान्हल अपन नूआ आ अङिया देखओलकि। घरबाली अन्न बेत्रेक मरै छै आ ओ दारु-ताड़ी पीबिकए बेमत्त भेल रहै छै। घरमे लाल छुट्टी नै दै छै। दारू पी कऽ सेजपर ओकर गत्रगत्रमे दाँत गड़ा दै छै!

"इस्स!" रजदेबाबहुके मुँहसँ अनायासे बहार भऽ गेलै। भीतर चीनीक गरम पाक जेना टघरि रहल छलै। ओ गत्रगत्र देबलरैनाक हबकबाक कल्पनामे हेरा गेलि।

"हे बहीन!..मनसा नै भोगतओ तँ ई देह लऽ कऽ की करबा।..एक दिन अँचियापर तऽ सबहक देह जरै छै!"- रजदेबा-बहु समझओलकै। रजदेबामाइ दुरदुरओलकै। ताबत डिप्टीसऽ रजदेबो घूरि अएलै। आङनमे ठहाठहि इजोरियामे चमकैत सोनाबतीक मुँह चमकैत देखलक। नयन मिललै, सोनावती विहुँसि देलकि, जेना रजनीगंधा फूल झरझरा गेलै। मोनप्राण गमैक उठलै। रजदेबा बाजल किच्छु नैं। बस पुछलकै- "की भेलौ गऽ भौजी?" सोनावती फेर सउँसे खेरहा दोहरओलकि।...

सिकिलिया चौल कएलकै- ''साँय बदलबे?''

''सहे तऽ ने उपाइ हइ।..तोहर डागदरसनके साँय हउ गजै छे।..अस्पतालमे काम करै हउ। ने दारू, ने पानी। घरगिरहस्थी डेबने हउ। भरिमुँह कोनो छौंड़ी मौगी जरे बोलबो ने करइ हउ। अपन काम से काम। एहन महाभारथ पुरुख हमर भागमे कहाँ?..''

सिकिलियाकँ देह जरि गेलै- हइ गोबरके चोत महाभारत कहाँदुन! मनसरभसी। अपना साँय महकै छनि आ छौंड़ाक बाप जरे केना रसिया-रसिया, सिलिया बतिआइ हए।

''बहीन, तौँ घर जा।..तोहर साँयके दोसरकँ सम्हारि देत ओ? जे अपन साइँयो के कसमे ने रखलक, से मौगी कथिके?'' आ सिकिलिया रजदेबाक बाँहि पकड़ि घरदिशि घीचय लागलि। रजदेबामाइके पित्त लहरि गेलै। सोनाबत्ती कनिकाल थरभसाएलि, फेर बाजलि-''दोस जी!..हम आइ घरे नैं जबे..फेन ''निम्मन सऽ कूटत।..'' ओकर आकृति कातर छलै।

''अहाँ जाउ। लोक फरेब जोड़त''।

रजदेबा समझओलकै। ओ घूरि गेलि। सभ अप्पन-अप्पन फट्टक लगा लेलक। मुदा, भोरे उठल रजदेबा जँगलझार लेऽ तँ देखलक जे देबलरैनाके बहु दरबज्जापर एकटा फेकल तरकुन्नीपर ओंघराएलि छै, घर नैं गेलउ।..कनिकाल ओ टुकुर-टुकुर ओकर मुँह तकैत रहल। केना निभेर भऽकऽ सूतलि छै, दुधपीबा पिहुआजेकाँ। नूआँ-बस्तर अस्त-व्यस्त। बिन तेलकूँडक जट्टा पड़ल, भुल्ल भऽ गेल पैघ पैघ केश, भुँइयापर एमहर-ओमहर जौंड़ जेकाँ लेटाएल।

ओकरा देवलरैनापर बड्ड तामस भेलै। सोन-सनक सोनावती अन्न-वस्त्र बेत्रेक झाम भऽ गेलै- बीझ लागल ताम-सन। एखनो जँ नहा धो देल जाइक आ सिङार कऽ दै तऽ झकाझक भऽ जएतै। मुदा दोस तऽ दारू पीकऽ मस्त रहै छै। सलहेसक नाचमे ओकर ढोलकक गुमकीपर खतबैया टोलक कतेको छौंड़ी-मौगी ओकरापर जान दैत छै। दोसजी, खत्ता-पैन, चर-चाँचर, राहरि-कुसियारक खेत, भुसुल्ला घर, पोखरिक भीर जत्तहि पओलक, तत्तहि छौंड़ी-मौगी लऽकऽ...। राम-राम।..एहन गुनमन्तीके एना काहि कटबै हइ, दोसजी निम्मन नहि करै हइ!

बड़ समझओलकै रजबा सोनाबतीके। सोनाबती नैं गेलै। देबलरैनाके धन्न-सन। खोजैत-खोजैत एक्के बेर सुरुज जखन नीचाँ अएलै तऽ बँसुरी टेरैत आएल। सोनाबतीके भरिपाँज पकड़ि कए चुम्माचाटी लेबए लागल। सबहक सामने! दरूपिबाके कोन लाज आ बीज। रजबामाइके हँस्सी लागि गेलै। सोनाबत्ती मनसाकँ धकेलि देलकै, मनसा धाँय दऽ चारूनाल चित्त खसल। बिच्चे आङनमे।..चटाक!...मनसा उठिकए एक चाट देलकै। मौगी घेओना पसारलकि। मनसाकँ धन्न-सन।..दोसजी अस्पतालमे रहै।

सिकिलियाक बेटाके ''मैंगोफ्रूटी''क खाली डिब्बा कतहु सड़कपर फेकल भेटि गेल रहै। ओ ओहिमे पानि धऽधऽ पीबै छल। सिकिलियाक नजरि पड़लै- ''केहन लगइ हउ?'' छौंड़ा हँसि देलकै- आमके रस नहिंता!..पीबे?''

सिकिलियाक मोन भेलै- एक बेर ओहो पीबि कए देखैत। ओ बड़का-बड़का बाबू-भैया सबके पीबैत देखने रहै।..मुदा, ओइमे तऽ पतरसुट्टी फोंफी लागल रहै, एइमे कहाँ हइ?.. ओ बड़ा ललचाएल दृष्टिसँ फ्रूटीक डिब्बाकँ देखि रहलि छलि।

''दोस्तिनी, पीयब?''-देवलरैना टुभ दऽ पूछि बैसल। दोस्तिनीक आँखिमे फ्रूटीक लालच, पतिसँ उलहन, अभावजन्य वेदना लक्काबाज देवलरैनाकँ झक् दऽ लौकि गेलै।

''चलू दोस्तिनी, फ्रूटियो पीयब, सिनेमो देखब आ होडरोमे खाएब। घूमैत-घूमैत राति तओले च्हलि आएब''। देवलरैना बजलै आ फेर कोन जादूके बान लगलै कहिने, सिकिलिया चट दऽ ओकर रिक्सापर बैसि गेलि। सभ मुँहे तकैत रहि गेलै। ओ जे गेलै सिकिलिया से फेर ६ महीना नैं घुरलै। सोनाबती रजबाके घरसऽ टकसऽ के नाम नैं लै। पऽर भेल, पंचैती भेल। दुनू मौगीमे सँ कोनो अपन-अपन साँय लग घुरबाक लेल तैयार नहि भेलि।

छओ मासक बाद दुनू अपन-अपन मनसा लग कनैत-कनैत घूरलि-ढाकीक ढाकी सिकाइत नेने। सिकिलिया आ सोनाबती एक दोसरक गरदनि पकड़ि झहरा देमए लागलि। सिकिलियाक घेओनाक आशय छल- देबलरैनाके मुँह महकै छै, ओ बदमास अछि, गुन्डा अछि, निसेबाज अछि, लापरवाह अछि; स्वार्थी अछि आदि-आदि। सोनावती छाती पीटिपीटि बेयान करै छलि- रजबा गुम्मा अछि, बहुसँ बेसी मायकें मानै अछि, दिनराति पाइ लेऽ खटै अछि आ सभ पाइसँ घरे चलबै अछि, बहु ले कहियो कचरी- मुरही नै अनने अछि। कहियो सिनेमा नैं जाइ अछि, बहुकें चुम्मा नैं लैत अछि..आदि...आदि...

दुनू अपन-अपन ओरिजिनल साँय लग घूरि गेलि।

मनोविज्ञानक प्रोफेसर सत्यनारायण यादव कहलैन्हि- यार, जे भेटैत छै, तकर मोल नै बुझाइ छै। जकर पति गंभीर छै ओकरा चंचल पतिक लेल मोन पनिआइ छै, जकर चंचल छै से गंभीर पतिक लेल सिहाइए..इएह क्रम छै...नो वन इज परफेक्ट..

एक दिन सिकिलिया आ सोनावती सुनू एक-एकटा कोनो मनसा संगे उरहरि गेलै- ओहो एक्के दिन। रजदेबामाइ भोरेसँ आसमान माथपर उठा लेलकि- ''जुआनी कक्कर ने उमताइ हइ..फेनू बान्ह हइकि नै।..समाज आ पलिवारके बन्हन टूटि जतइ तऽ मनसा-मौगी जिनगी भरि अहिना भँड़छि-भँड़छि कए मरि जतइ...

प्रो. सत्यनारायणक व्याख्या छैन्हि-

म्यान इज पोलिग्यामस बाइ नेचर..इट इज सोसाइटी ह्विच च्यानलाइजेज सेक्स एनर्जी..सओ मुँह, सओ बात!..सबसँ बड़का सत्य जे सोनाबती, सिनकिलिया दुनू उरहरि गेल!



डा. रमानन्द झा 'रमण'

जन्म: 02 जनबरी,1949, शिक्षा-एम.ए., पीएच.डी., आजीविका-भारतीय रिजर्व बैंक, पटना (सेवा निवृत्त)।

प्रकाशन: मौलिक- समीक्षा 1. नवीन मैथिली कविता,1982, 2. मैथिली नऽव कविता,1993, 3. मैथिली साहित्य ओ राजनीति, 1994, 4. अखियासल, 1995, 5. बेसाहल,2003, 6. भजारल, 2005., 7. निर्यात कैसे शुरू करें? हिन्दी- रिजर्व बैंक, पटनाक प्रकाशन **सम्पादित** 8. मैथिलीक आरम्भिक कथा, 1978 समीक्षा, 9. श्यामानन्द रचनावली, 1981, 10. जनार्दनझा' जनसीदनकृत निर्दयीसासु (1914) आ पुनर्विवाह (1926), 1984, 11. चेतनाथझाकृत श्रीजगन्नाथपुरी यात्रा (1910), 1994, 12. तेजनाथ झाकृत सुरराजविजय नाटक (1919), 1994, 13. रासबिहारीलाल दासकृत सुमति (1918), 1996, 14. जीबछ मिश्रकृत रामेश्वर (1916), 1996, 15. भेटघाँट (भेटवार्ता), 1998, 16. रूचय तँ सत्य ने तँ फूसि, 1998, 17. पुण्यानन्द झाकृत मिथिला दर्पण (1925), 2003, 18. यदुवर रचनावली (1888-1934) 2003, 19. श्रीवल्लभ झा (1905-1940) कृत विद्यापति विवरण, 2005, 20. मैथिली उपन्यासमे चित्रित समाज, 2003, 21. पण्डित गोविन्द झाः अर्चा ओ चर्चा, 1997 प्रबन्ध सम्पादक, 22. कवीश्वर चेतना, 2008, चेतना समिति, पटना अनुवाद 23. मौलियरक दू नाटक, 1991, साहित्य अकादमी, 24. छओ बिगहा आठ कटठा, 1999, साहित्य अकादमी, 25. मानवाधिकार घोषणा Universal Declaration of Human Rights २००७(यूनेसको), 26. राजू आ' टाकाक गाछ, 2008 रिजर्व बेंक -वित्तीय शिक्षा योजना के अन्तर्गत **पत्रिका सम्पादन-सह-सम्पादन** 1. प्रयोजन, 1993 (मासिक), 2. कोषाक्षर (हिन्दी) 1982, 3. घर बाहर, त्रैमासिक, चेतना समिति, पटना **कार्यशाला** 1. National Workshop on Literary Translation,- Dec 20.1991 to January 12,02,1992, Sahitya Akademi, New Delhi2.Bonds Beyond the Borders (India-Nepal civil society interaction on Cross Border issues) -Consulate General of India, Birgunj, Nepal and B.P. Koirala India-Nepal Foundation-May 27-28, 20062.Preparation of Intensive Course in Maithili- ERLC, Bhubneswar जूरी 6th Inter National Maithili Drama Festival,1992 -Biratnagar, Nepal पुरस्कार- सम्मान

1. जार्ज ग्रियर्सन पुरस्कार, 1994-95, राजभाषा विभाग,बिहार सरकार, मैथिली नऽव कविता पुस्तक पर, 2. भाषा भारती सम्मान, 2004-05 छओ बिगहा आठ कटठा, (अनुवाद) CIIL, मैसूर।–**सम्पादक**।

बहुत दिनक बाद मिथिलाक ग्रामांचल मे सगर राति दीप जरयक

आयोजन भेल अछि। ओना एहिसँ पूर्व हटनी (19.05.2001) आ ओहूसँ पहिने घोघरडीआ (22.10.1994) आ' डयौढ.(29.04.1990)मे आयोजित भेल छल। शहरे शहरे बौआए सगर राति गाम दिस एक बेर आएल अछि। एहि लेल अशोक कुमार झा 'अविचल'धन्यवादक पात्र तँ छथिहे। हुनक गौँआँ लोकनि सेहो ओहिना धन्यवादक पात्र छथि।

मुजफ्फरपुरसँ रहुआ-संग्राम धरिक सगर रातिक यात्रामे कतेको बेर निराशाजनक स्थिति आएल। कतेको गोटय एहि रतिजग्गापिकनीकके बन्द करबाक परामर्श देल, मुदा काठमाण्डूसँ कोलकाता, विराटनगरसँ वनारस जनकपुरसँ राँची, देवघरसँ पूर्णियाँ, सुपौलसँ जमशेदपुर धरि सगर रातिक दीप जरैत रहल। नव नव कथाकार अपन नवनव कथाक संग अपनाकँ जोड़ैत गेलाह। विभिन्न स्थानक मातृभाषा अनुरागीक स्नेह आ सहयोग एकरा भेटैत गेलैक। सगर रातिक दीप अवाधित रूपे जरैत रखबा लेल ओ ओलोकनि टेमी बातीक ओरिआओन सुरुचिपूर्वक करैत रहलाह। जे सबएकरा अजगूत बुझैत छलाह, सहटि लग आबि अपने आखिए देखल, विश्वास भेलनि। सगर राति दीप जरय कोन पृष्ठभूमिमे आ प्रयोजनवश शुरू भेल छल, आयोजन हेतु कोन कोन शर्त आवश्यक छलैक, तकरा स्पष्ट करबाक हेतु हम प्रथम तीन संयोजक द्वारा प्रेषित आमंत्रण पत्रक सारांश प्रस्तुत करब।सगर राति दीप

जरयक अवधारणाक जन्म किरण जयन्तीक अवसर पर 01 दिसम्बर, 1989 कँ लोहनामे साहित्यकार लोकनिक बीच भेल। मुदा साकार भेल प्रभास कुमार चैधरीक माध्यमसँ। ओहि अवधारणा कँ साकारकरबाक उद्देश्यसँ प्रभास कुमार चैधरी साहित्यकार लोकनिकँ आमन्त्रित करैत छओ जनवरी 1990क पत्र द्वारा अनुरोध कएने छलाह-आदरणीय, अपने कँ विदित होएत जे किरण जयन्तीक अवसरपर लोहनामे एकत्रित साहित्यकार लोकनि निर्णय लेलनि जे पंजाबी साहित्यकार लोकनि द्वारा आयोजित 'दीवा जले सारी रात' जकाँ भरि राति कथा पाठक आयोजन घूमि-घूमि कए विभिन्न स्थान पर साहित्यकार लोकनिकआवास पर होअय। पहिल आयोजन 24 दिसम्वर,1989 के ँ कटिहारमेअशोकक डेरा पर राखल गेल छल जेस्थगित भए गेल एक दुखद घटनाक कारणँ। आगू ओ लिखैत छथि- हमरा पत्र द्वारा ई समाचार भेटल आ एहिआयोजनक प्रारम्भ मुजफ्फरपुरमे करबाक आग्रह सेहो। हम एहि निर्णयकस्वागत करैत दिन राति कथा पाठ आ परिचर्चाक अष्टयामक आयोजन 21 जनवरी 1990, रविदिन राखल अछि। सादर आमंत्रित छी। अपनेक उपस्थितिये पर आयोजनक सफलता निर्भर अछि। अपने 21 तारीखकँ भोरे दस बजे पहुँचि जाए हमर कार्यालय जकर पाछाँ हमर निवास सेहो अछि। ई स्थान मुजफ्फरपुरक प्रसिद्ध देवी स्थानक सामने अछि। कोनो तरहकअसुविधा नहि होएत। 21 तारीखके ँ दिनुका भोजनोपरान्त कार्यक्रम शुरु होएत, जे प्रातधरि चलत। कथापाठ (नव लिखल कथा) ओ ओहिपर विशेष चर्चा होएत। अपन अएबाक सूचना पत्र द्वारा पहिनहि दए दी तँ विशेष सुविधा रहत। अगिला कार्यक्रमक स्थान आ तिथिक निर्णय एहीठाम कार्यक्रममे लेल जाएत। डेओढ, कटिहार, दरभंगा,पटना आ जनकपुरमे कार्यक्रम करबाक विचार अछि। अहाँक आगमानक प्रतीक्षा मे''- प्रभास कमार चैधरी।



एही प्रकारँ सगर रातिक अवधारणाकँ प्रभास कुमार चैधरी साकार कएल। हुनक पत्नी ज्योत्सना चौधरी करतेबताक आंगनक गृहपत्नी जकाँआगत साहित्यकारक स्वागत करैत भरि राति टेमी उसकबैत रहलीह। पति द्वारा आयोजित साहित्यिक कार्यक्रममे पत्नी द्वारा भरि राति टेमी उसकाएब आ अतिथिक स्वागतमे तत्पर रहबाक दोसर आ सेहो दू बेर उदाहरण प्रस्तुत कएलनि अछि काठमाण्डूक दूनू आयोजनमे श्रीमती रूपा धीरू। पहिल सगर रातिक आयोजनमे रमेश (थाक), शिवशंकर श्रीनिवास (बसात मे बहैत लोक), विभूति आनन्द (अन्यपुरुष), अशोक (पिशाच), सियाराम झा 'सरस' (ओहिसाँझक नाम), प्रभास कुमार चैधरी (खूनी) रवीन्द्र चैधरी, आदि कथा पढल। डा.नन्दकिशोर हिन्दी कथाक पाठ कएने छलाह। अध्यक्षता कएल रमानन्द रेणु। कथाकार लोकनिक अतिरिक्त कथाचर्चामे भाग लेलनि जीवकान्त, भीमनाथ झा, मोहन भारद्वाज, डा. रमानन्द झा 'रमण'। पठित कथापर चर्चाक उपरान्त डा.रमण अपन कथा विषयक आलेख शैलेन्द्र आनन्दक कथा यात्राक पाठ कएल। साहित्यकारकस्वाभिमानक रक्षाक हेतु चर्चाक क्रममे निर्णय भेल जेसमाद पर सगर रातिक आयोजनक भार लेबाक अनुरोध स्वीकार नहि कएलजाएत। आमंत्रित कएनिहार लेल स्वयं उपस्थित भए सहभागी बनब आवश्यककए देल गेल।एकर निर्वाह अद्यावधि भए रहल अछि। एक शब्दमे कहि सकैत छी, इएह शर्त सगर रातिक प्राण थिकैक। जीवकान्तक अनुरोध पर

दोसर सगर राति डेओढमे तीन मासक बाद करबाक निर्णय भेल। एहिठाम हम दोसर (डेओढ) आ तेसर (दरभंगा)क संयोजक द्वाराप्रेषित पत्रक अंश प्रस्तुत करब जाहिसँ सगर रातिक लक्ष्य तँ स्पष्ट होएबे करत पत्र लिखबाक क्रम कोन स्थितिमे सम्प्रति अछि, सेहो बुझा जाएत। डेओढ आयोजनक संयोजक जीवकान्त लिखैत छथि-मैथिली भाषाककथाकार लोकनि एकठाम बैसथि अपन नव रचना पढथि आ ओहि पर टीकाविश्लेषण करथि कथाक गति देबामे सामूहिक प्रयत्न करथि। एहि उद्देश्यसँकथा रैलीक आयोजन डेओढमे कएल जाइछ-सृजनात्मक उपलब्धि लेल एकरा स्मरणीय बनेबा मे अपन योगदान करी।दोसर आयोजनमे प्रो.रमाकान्त मिश्र, कीर्तिनारायण मिश्र, वातारानन्द वियोगी, नवीन चैधरी आदि संग भए गेलाह। डा.भीमनाथ झा आ प्रदीप मैथिलीपुत्र दूनू गोटे संयुक्तरूपँ आयोजनक भार लेल जे श्री विजयकान्त ठाकुरक सौजन्यसँ चिनगी मंच द्वारा दरभंगामे सम्पन्न भए सकल। तेसर सगर रातिक संयोजक डा.भीमनाथ झा लिखैत छथि-पत्र पत्रिकाक एहि संक्रान्ति कालमे साहित्यमे संवादहीनताक स्थिति आबि गेलअछि, कथाक स्थिति तँ आर दयनीय। स्पष्टतः कथा लेखनमे गतिरोध देखलजा रहल अछि। एकरे दूर करबाक इच्छुक किछु युवा साहित्यकर्मी कथा संवाद लेल गोष्ठीक आयोजनक निर्णय लेलनि। दरभंगाक आयोजन एकटा नव अध्याय लिखाएल। से थिक एहि अवसर पर पोथीक लोकार्पण। सगर रातिक अवसर पर लोकार्पित पोथीक नामावली विवरण मे देल गेल अछि। तथापि ई उल्लेखनीय अछि जे एहिअवसर पर लोकार्पित होअए बला पहिल पोथी थिक पण्डित श्री गोविन्द झाक कथा संग्रह सामाक पौतीं। प्रभास कुमार चैधरी, जीवकान्त आ भीमनाथ झाक पत्रसँ सगर रातिक आयोजनक, लक्ष्य आ कोन परिस्थितिमे सगर राति दीप जरय सनकार्यक्रम शुरू

भेल छल, स्पष्ट अछि। सगर रातिक नियमक अनुसारदरभंगाक आयोजनमे चारिम सगर राति तीन मासक बाद जनकपुरमे डा धीरेन्द्रक अनुरोध पर आयोजित करबाक निर्णय भेल। मुदा कोनो कारणवशआयोजनमे विलम्ब होइत देखि पण्डित दमनकान्त झाक पटना आवास पर पण्डित श्रीगोविन्द झाक संयोजकत्वमे चारिम आयोजन भेल। प्रसिद्ध कथाकार उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास' अध्यक्षता कएल आ कथा पाठ कएल। निशा भाग रातिमे व्यासजी अध्यक्षताक भार राजमोहन झाकेँ सौंपि देने छलाह। प्रदीप बिहारी पहिल बेर एहीठाम सम्मिलित भए अगिला आयोजन बेगूसरायमे करबाक भार लए लेलनि। दमन बाबू आ व्यासजी नहि छथि। दूनू गोटे मोन पड़ि रहल छथि। प्रभास कुमार चैधरीक अन्तिम सहभागिता बेगूसरायमे सम्पन्न उनतीसम सगर रातिमे छल। डा. धीरेन्द्र अन्तिम बेर बिट्ठो मे कथा पढ़ने छलाह। वनारसमे सगर रातिक उदघाटन कएने छलाह हिन्दीक प्रख्यात साहित्यकार ठाकुर प्रसाद सिंह। एहिठाम हमर आँखिक समक्ष हुनका लोकनिक स्मृति साकार भए गेल अछि। ओना मजफ्फरपुरसँ प्रभास कुमार चैधरीक संयोजकत्वमे सगर रातिक यात्रा आरम्भ भेल छल। मुदा केन्द्र रहल पटने। पटनामे सात खेप सगर राति अयोजित भेल अछि। सगर रातिक यात्राक विस्तृत वर्णन आ खण्ड खण्डमे विश्लेषण प्रस्तुत अछि। ओकर संक्षिप्त उल्लेख प्रस्तुत अछि।

कटिहार सगर रातिमे नवानीमे आयोजनक निर्णय भेल छल।संयोजक मोहन भारद्वाज प्रो. सुरेश्वर झाकेँकथाकार रूपमे प्रस्तुत कएल। ओतय श्यामानन्दचैधरी आ झंझारपुरक तात्कालीन डी.एस.पी. सरदार मनमोहन सिंह सम्मिलित भेलाह। ओ बरोबरि सम्मिलित होइत रहलाह। पंजाबक कलमकेँ मिथिलाक फूलबाड़ीमे चतरल देखि प्रमुदित होइत छलाह। सुरेश्वर झा डा. राम बाबूक सौजन्यसँ सकरीमे आयोजन कएल। सकरीमे ए.सी.दीपक अएलाह। नेहरामे आयोजन भेल। नेहरामे मन्त्रेश्वर झा सम्मिलित भेलाह। विराटनगरसँ जीतेन्द्र जीत अएलाह। नेहरामे सगर रातिक अवसरपर पठित कथाक एक प्रतिनिधि संग्रह प्रकाशित करबाक निर्णय भेल। डा.तारानन्द वियोगी एवं रमेश सहर्ष दायित्व ग्रहण कएल। कथा संग्रह श्वेत पत्र प्रकाशित भेल। श्वेत पत्रमे पैटघाट धरि पठित कथासँ बीछल कथा संगृहीत अछि। सगर राति दीप जरय कार्यक्रमकेँजीतेन्द्र जीत नेहरासँ विराटनगर, नेपाल पहुंचाओल। विराटनगरसँ बनारस आ बनारससँ पटना। पटनामे बुद्धिनाथ झा, अर्धनारीश्वर, रा.ना.सुधाकर केदार कानन, अरविन्द ठाकुर संग भेलाह तँ सगर राति सुपौल पहुंचि गेल। सुपौलसँ बोकारो, ओतयसँ पैटघाट आ पैटघाटसँ रमेश रंजन जनकपुरधाम लए गेलाह। जनकपुरधामसँ इसहपुर। इसहपुरसँ श्यामानन्द चैधरी झंझारपुर आनल। ओतयसँ घोघरडीहा, बहेरा सुपौल आ फेर सुपौल सँ धीरेन्द्र प्रेमर्षि काठमाण्डू लए गेलाह।काठमाण्डूसँ रामनारायण देव राजविराज आ ओतयसँ कोलकातामे प्रभास कुमार चैधरी सगर रातिक रजत जयन्ती आयोजित कएल। कहबाक तात्पर्य जे नव-नव लोकक अबैत रहलासँ सगर रातिक आयोजन बढैत गेल। किन्तु जतय कतहु अग्रिम प्रस्तावक संकट होइत छलैक प्रभास जी आ फेर कमलेश जी ठाढ़ छलाह। किछु आयोजकक अनुरोध बरोबरि अशोकजीक पाकेटमे पेंडिंग रहैत छलनि। बेगूसरायसँ श्याम दरिहरे संग भेलाह अछि।ओहो कौखन आ कतहु आयोजन लेल तत्पर छथि।जेना जेना किछु लोक संग होइत गेलाह अछि, ओहिना किछु गोटेअपनाकेँ असम्वद्ध सेहो करैत गेलाह अछि। एकर मुख्यतः तीनि टा कारण अछि-

1. अस्वास्थ्य,
2. पठित कथाक प्रतिक्रिया पर खौझा कए असंगत प्रहार, आ'
3. प्रतिक्रिया सूनि हतोत्साहित होएब, एवं
4. कार्यालयीन व्यस्तता।

एहि बीच नियमित एवं सक्रिय रूपसँ सहभागी बनैत कतेको साहित्यकार अस्वास्थ्य अथवा वार्धक्यक कारणँ आब सम्मिमलित नहि भए पाबि रहल छथि। जाहि मे प्रमुख छथि पण्डित श्री गोविन्द झा, रमानन्द रेणु, सोमदेव, जीवकान्त, मोहन भारद्वाज आदि। पठित कथा पर अपन स्पष्ट मंतव्यसँ चर्चाकँ जीवन्त बनौनिहार प्रो. रमाकान्त मिश्र कथाकार शिवशंकर श्रीनिवासक प्रतिक्रियासँ आहत भेला पर सकरीक बाद अपनाकेँ पूर्णतःसमेटि लेलनि। विविधा पर साहित्य अकादमीक पुरस्कारक विरोधमे केदार काननक नेतृत्वमे कलमल सुपौलक साहित्यकारक प्रतिक्रियाक कारणँ डा.भीमनाथ झा जाएब छोड़ि देलनि। जे प्रभास जीक मनौअलि पर पण्डित गोविन्द झाक गाम इसहपुर जएबाक लेल तैआर भेल छलाह। तकर बाद कमे ठाम गेलाह अछि। श्वेतपत्र मे अपन कपचल कथासँ आहत जीतेन्द्र जीत अपन बाट काटि लेलनि। किछु गोटे एहि आशाक संग संवद्ध भेल छलाह जे लोक प्रशंसाक महल ठाढ कए देत, तकर पूर्ति नहि भेला पर उत्साह कमि गेलनि। किछु गोटेक मास्टरी नव आगन्तुक लेल आतंककारी एवं अनुत्पादक भए गेल अछि। सगर रातिक प्राण थिक अप्रकाशित आ अपठित कथाक पाठ। ओहि पर श्रोता अपन प्रतिक्रिया व्यक्त करैत छथि। ई प्रतिक्रिया तात्कालिक होइछतँ सम्भव रहैत छैक जे पुनः सुनला वा पढला पर भिन्न प्रतिक्रिया हो। एहि सक्रियताक तीन प्रकारक सकारात्मक प्रभाव अछि-

1. रचनात्मक सक्रियतामे वृद्धि,
2. कथाक शिल्पमे सुधारक अवसर आ'
3. व्यक्तित्वमे सहनशीलताक गुण बढेबाक अवसर।

पहिल सगर रातिमे प्रायः आठ टा कथाक पाठ भेल छल। कथाकसंख्या

क्रमशः बढैत गेल। सबसँ बेसी कथाकारक सहभागिता महिषीमे भेल छल। एहि बीच जतेक कथा संग्रह छपल अछि, अधिकांश कथा सगर रातिक अवसर पर पठित आ चर्चित अछि। वयोवृद्ध साहित्यकार श्यामानन्द ठाकुर बहेरामे संग भेलाह।ओहिठामसँ संग छथि। हुनक सक्रियताक अनुमान एहीसँकए सकैत छी जे ओ प्रत्येक आयोजन लेल दू टा कथा लिखैत छथि।

एमहर आबि पठित कथाक चर्चाक स्वरूप बदलि गेल अछि। पहिने पठित कथाधरि अपन प्रतिक्रिया सीमित राखल जाइत छल। मुदा आब व्यक्त विचारकँ कटबा पर विशेष ध्यान रहैत अछि। एहिसँ पक्ष विपक्षक स्थिति बनि जाइछ। कतेकोठाम अप्रीतिकर स्थिति उत्पन्न भए गेल अछि। चर्चाबहकय नहि एहि लेल प्रभासजी पूर्ण सतर्क रहैत छलाह। हुनक अभाव खूब खटकैत रहैत अछि।कवि सम्मेलन मनोरंजनक हेतु आयोजित होअय लागल अछि।रचनात्मक स्पर्धा अथवा सक्रियताक महत्व गौण छैक। तँ कवि लोकनि गओले गीत गबैत छथि। मुदा सगर रातिक अवसर पर अप्रकाशित एवंअपठित कथा पढबाक वाध्यताक कारणेँ रचनात्मक सक्रियता बढल अछि।

एक बेर व्यासजी गोविन्द बाबूकँ परामर्श दैत कहने छलथिन्ह जे धूमि घूमि भरि राति जागब अहाँक स्वास्थ्य लेल ठीक नहि अछि। गोविन्द बाबूक उत्तर छल जे हमरा एहिसँ उर्जा प्राप्त होइत अछि। आंकड़ा कहैत अछि ओ सबसँ बेसी भरि राति ओएह बैसलाह अछि तथा सबसँ बेसी हुनके व्यक्तिगतपोथीक लोकार्पण एहि अवधिमे भेल अछि। ई थिक सगर रातिक रचनात्मक प्रभाव। रचनाकारकँ उर्जस्वित रखबाक महान अवसर। कवि सम्मेलनमे आयोजककँ विदाइक व्यवस्था करय पड़ैत छनि। सगर राति एहि व्याधिसँ मुक्त अछि। सहभागी सत्यनारायणक पूजाक हकारजकाँ अबैत छथि आ भोर होइते घूमि जाइत छथि। एहिमे व्यावसायिकता नहि अछि, ई मातृभाषा प्रेमक सन्देश दैत अछि।सगर रातिक आयोजन विभिन्न स्थान पर भेलासँ स्थानीय विद्वत समाज आकर्षित होइत छथि। एकर प्रभाव ओहि स्थानक मैथिलीक सक्रियता पर पड़ैत अनुभव कएल गेल अछि। सगर राति दीप जरय समानधर्माकँ भरि राति एकठाम रहबाक अवसर दैत अछि। विचारक आदान प्रदानक केन्द्र स्वतः मैथिली भाषा आ साहित्य भए जाइत अछि। एहिसँ परिचय आ अनुभवक क्षेत्रक विस्तार होइछ। मैथिलीक रचनाकारमे भावात्मक संवद्धता बढैत अछि।सगर राति दीप जरयक निरन्तर आयोजनसँ मैथिली कथा लेखनक क्षेत्रमे शान्तिपूर्ण क्रान्ति आबि गेल अछि। आन भाषाभाषी आ सात्यिकारकबीच मैथिलीक कथाकारक प्रतिष्ठा बढ़ल अछि। विशेषतः एहि हेतु जे मैथिलीक कथाकार दूर-दूरसँ अपन पाइ खर्च कए पहुचैत छथि। कथा पढैत आ सुनैत छथि। अपन कथा पर लोकक प्रतिक्रिया धैर्यपूर्वक सुनैत छथि। आ फेर अग्रिम आयोजनमे सम्मिलित होएबाक संकल्पक संग घूमि जाइत छथि। जे सगर राति कथाकार लेल कल्पित भेल छल,समाजक सुधी समाजक अन्तःकरण मे प्रवेश कए मैथिली भाषा साहित्यक पक्षमे अनुकूल वातावरणबनेबामे सार्थक भूमिकाक निर्वाह कए रहल अछि। जहिआ सगर राति प्रारम्भ भेल छल आ एखनुक जे स्थिति अछि ओहि मे गुणात्मक आ परिमाणात्मक दूनू प्रकारक परिवर्तन स्पष्ट अछि। विकासक ई दिशा आ गति निश्चिते शुभलक्षण थिक। एहि शुभ लक्षणक उदाहरण तँ इएह थिक जे दरभंगाक पहिल आयोजनमे पहिले पहिल दू टा पोथीक लोकार्पण भेल छल आ स्वर्ण जयन्तीक अवसर पर 36 टा पोथी लोकार्पित भेल। विद्वानलोकनि कहि सकैत छथि कोन भाषाक मंच पर एकबेर 36 टा पोथीक लोकार्पण भेल अछि।दरभंगामे एकटा अमेरिकन नागरिक मैथिलीमे कथाक पाठ कएने छलाह। सगर राति दीप जरयक दृष्टिसँ बोकारो उर्वर छल, एम्हर आबि राँची, जमदेशपुर देवघर पूर्णियां आदि स्थान मैथिली लेल जगरना कएलक अछि,इहो शुभ लक्षण थिक।मुदा, सगर रातिक लोकप्रियता आ बिना वर.विदाइक साहित्यकार एवं साहित्यानुरागीक उपस्थितिक उपयोग कतहु कतहु कथा पाठ एवं ओहि पर चर्चासँ भिन्न प्रयोजन सिद्धि लेल सेहो भए गेल अछि। जे सगर रातिक मूल अवधारणाक अनुकूल नहि अछि। ओहिसँ बचबाक चाही। सहरसामे दोसर खेप सगर रातिक आयेजन 21 जुलाई, 2007 कँ भेल छल। सगर राति आयोजनक एक प्रमुख आकर्षण अछि भेटघाँट। ओहिसँ बाहरक साहित्यकार वंचित रहलाह। उपस्थितिक प्रसंग सूनि जीवकान्त जी 22 जुलाई, 2007क अपन पोस्ट कार्डमे लिखलनि अछि-

'सहरसा कथा गोष्ठीक खबरि भेल। कथा गोष्ठी भूतकालक वस्तु भेल। लेखन काज लेखक सभ छोड़ने जाइत छथि। सेमिनार, तकर प्रचलनबढ़ल अछि। टी.ए./डी.ए./भेटघाँट ई सभ भए गेँबू जे लेखकीय ल तझअस्मिताक अहंकार पुष्ट भेल आ' एक दोसराकँ बल देल। सरकारी मान्यताक बाद भाषामे अनेक राजरोग उत्पन्न होइत छैक। मैथिली निरपवाद रूपे पहिनेसँ बेसी रोगाहि भेल छथि। जिबैत रहओ।'हमरा विश्वास अछि सगर रातिक नियमित आयोजन मैथिलीके राजरोगसँ मुक्त रखबामे सफल होएत। साहित्य अकादेमी सँ वर्ष 2007 लेल पुरस्कृत प्रहरी प्रदीप बिहारीक कथा संग्रह सरोकारक प्रायः समस्त कथा सगर राति दीप जरयक अवसर पर लोक सुनने अछि। आ' ओहि पर अपन-अपन प्रतिक्रिया व्यक्त कएने अछि। सगर रातिक ई पहिल उपलब्धि थिकैक। एहि उपलब्धि पर मैथिली एहि शान्ति क्रान्तिक एक प्रतिभागीक रूपमे गर्व अनुभव करैत छी आ'कामना करैत छी इतिहास दोहराइत रहय।



रामाश्रय झा "रामरग" (1928- 2009)

विद्वान, वागयकार, शिक्षक आ मंच सम्पादक छथि।

मैथिली भाषामे श्री रामाश्रय झा "रामरंग" केर रचना।

१.राग विद्यापति कल्याण- एकताल (विलम्बित)

स्थाई- कतेक कहब गुण अहाँकेँ सुवन गणेश विद्यापति विद्या गुण निधान।
अन्तरा- मिथिला कोकिला किर्ति पताका "रामरंग" अहाँ शिव भगत सुजान॥

स्थायी - - सा रेगमंप गरेसा
ऽ ऽक ते ऽऽऽ क,कऽ

रे सा (सा), निध निसा रे निधप़ ध़नि सा सारे गरे रेगमंप (मं)
ह ब ऽ ऽऽ गु न ऽअ हां,ऽऽ केऽ ऽ सुव नऽ ऽऽऽऽ ऽ ग
प प धनि धप धनिसां - -रे सांनि धप (प)ग रे,सा रेगमंप ग, रेसा
ने स विऽ द्याप तिऽऽ ऽ ऽवि द्या गुन निधा न, क तेऽऽऽ क,क

अन्तरा पप निध निसां सांरें
मिथि लाऽ ऽऽ कोकि

सां निसांरेंगं रें सां रें सां रें नि सांरे नि धप प (प) ग रेसा
ला ऽ की ऽऽऽ तिं प ता ऽ ऽऽ का ऽऽ रा म रं ग अ

रे सासा ध़निप़ध निसा -सा रेगमंप - ग सारे सा,सा रेगमंप ग, रेसा
हां शिव भऽ,ग तऽ ऽसु जाऽऽऽ ऽ ऽ न ऽ, क ते ऽऽऽ क,कऽ

***गंधार कोमल, मध्यम तीव्र, निषाद व अन्य स्वर शुद्ध।

२.राग विद्यापति कल्याण त्रिताल (मध्य लय)

स्थाई- भगति वश भेला शिव जिनका घर एला शिव, डमरु त्रिशूल बसहा बिसरि उगना भेष करथि चाकरी।
अन्तरा- जननी जनक धन, "रामरंग" पावल पूत एहन, मिथिलाक केलन्हि ऊँच पागड़ी॥

स्थाई-

रे
भ
सा गमं प मं प - - मंग - रे सा सारे नि सा -, नि
ग तिऽऽ व श ऽ ऽ भे ऽ ला ऽ शि ऽ व ऽ ऽ जि

ध़ नि सा रे सा नि प़ ध़ नि ध़ प़ नि सा - - सा
न का ऽ घ र ऽ ऽ ए ऽ ला ऽ शि व ऽ ऽ ड

रे ग मं प प प नि ध प मं प धनि सां सां गं
म रु ऽ त्रि शू ऽ ल ब स हा ऽ बि सऽ ऽऽ रि उ

रें सां नि रें सां नि ध प मं प पनि ध प - -ग --रे
ग ना ऽ ऽ भे ऽ ष क र थि चाऽ ऽ कऽ ऽरी ऽऽ, भ

अन्तरा प
ज

प नि सां सां सां - - ध नि - ध नि नि सां रें सां -, नि
न नी ऽ ज न ऽ ऽ ऽ ऽ क ध न ध न ऽ, रा

नि सां गं रें सां सां नि ध नि सां नि ध प ग

मं प नि सां सां नि ध प मं प पनि ध प- -ग रे
थि ला ऽ क के ल न्हि ऊँ ऽ च पाऽऽ गऽ ऽड़ी ऽऽ,भ

***गंधार कोमल, मध्यम तीव्र, निषाद दोनों व अन्य स्वर शुद्ध।

३.श्री गणेश जीक वन्दना

राग बिलावल त्रिताल (मध्य लय)
स्थाई: विघन हरन गज बदन दया करु, हरु हमर दुःख-ताप-संताप।

अन्तरा: कतेक कहब हम अपन अवगुन, अधम आयल ''रामरंग'' अहाँ शरण।
आशुतोष सुत गण नायक बरदायक, सब विधि टारु पाप।

स्थाई
नि
ग प ध नि सा नि ध प ध नि
ध प म ग म रे
वि ध न ह र न ग ज ब
द न द या ऽ क रु

ग ग म नि ध प म ग ग प
म ग म रे स सा
ग रु ऽ ह म र दु ख ता
ऽ प सं ता ऽ प ऽ

अन्तरा
नि

रें
प प ध नि सां सां सां सां
सां गं गं मं गं रें सां ___
क ते क क ह ब ह म अ
प न अ व गु न ऽ

रे
सां सां सां सां ध नि ध प
ध ग प म ग ग प प
अ ध म आ य ल रा म
रे ऽ ग अ हां श र ण

ध प म ग म रे सा सा सा
सा ध - ध नि ध प
आ ऽ शु तो ऽ ष सु त ग
ण ना ऽ य क व र
धनि संरें नि सां ध नि ध प
पध नि ध प म ग म रे
दाऽ ऽऽ य क स ब बि
ध टाऽ ऽ रु ऽ पा ऽ ऽ प

४. मिथिलाक वन्दना

राग तीरभुक्ति झपताल

स्थाई: गंग बागमती कोशी के जहँ धार, एहेन भूमि कय नमन करूँ बार-बार।
अन्तरा: जनक यागवल्क्ष्य जहँ सन्त विद्वान, ''रामरंग'' जय मिथिला नमन तोहे बार-बार॥

स्थाई

रे ग म प म ग रे सा
गं ऽ ग ऽ बा ऽ ग म ऽ ती

प
सा नि ध़ प़ नि नि सा रे सा
को ऽ शी ऽ के ज हं धा ऽ र

सा
म ग रेग रे प ध म पनि सां सां
ए हे नऽ ऽ भू ऽ मि कऽ ऽ य

प
सां नि प ध (ध) म ग रे सा सा
न म न क रुँ बा ऽ र बा र

अन्तरा
प पध म प नि नि सां सां
ज नऽ क ऽ ऽ या ग्य व ऽ ल्क

रें रें गं मं मं गं रें सां
ज हं सं ऽ त वि ऽ द्वा ऽ न
ध प
सां नि प ध म प नि सां सां सां
रा म रं ऽ ग ज य मि थि ला
प
सां नि प ध (ध) म ग रे सा सा
न म न तो हे बा ऽ र बा र

५. श्री शंकर जीक वन्दना

राग भूपाली त्रिताल (मध्य लय)

स्थाई: कतेक कहब दुःख अहाँ कय अपन शिव अहूँ रहब चुप साधि।
अन्तरा: चिंता विथा तरह तरह क अछि, तन लागल अछि व्याधि,
''रामरंग'' कोन कोन गनब सब एक सय एक असाध्य॥

स्थाई
प ग ध प ग रे स रे स ध
सा रे ग रे ग ग
क ते क क ह ब दुः ख अ
हाँ कय अ प न शि व

ग ग रे ग प ध सां पध
सां ध प ग रे सा ___
अ हूँ ऽ र ह ब चु प साऽ
ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ धि ऽ

अन्तरा

प ग प ध सां सां सां सां
ध सां सां सां रें सां सां
चिं ऽ ता ऽ वि था ऽ त र
ह त र ह क अ छि

सां सां ध - सां सां रें रें
सं रे गं रें सां ध प
त न ला ऽ ग ल अ छि व्या
ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ धि ऽ

सां ध प ग रे स रे सा
ध स रे ग रे ग ग
रा ऽ म रं ऽ ग को न को
ऽ न ग न ब स ब

ग ग ग रे ग प ध सां पध
सां ध प ग रे सा ___
ए क स य ए ऽ क अ साऽ
ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ध्य ऽ



श्री रामलोचन ठाकुर

जन्म १८ मार्च १९४९ ई.पलिमोहन, मधुबनीमे। वरिष्ठ कवि, रंगकर्मी, सम्पादक, समीक्षक। भाषाई आन्दोलनमे सक्रिय भागीदारी। प्रकाशित कृति- इतिहासहन्ता, माटिपानिक गीत, देशक नाम छल सोन चिड़ैया, अपूर्वा (कविता संग्रह), बेताल कथा (व्यंग्य), मैथिली लोक कथा (लोककथा), प्रतिध्वनि (अनुदित कविता), जा सकै छी, किन्तु किए जाउ(अनुदित कविता), लाख प्रश्न अनुत्तरित (कविता), जादूगर (अनुवाद), स्मृतिक धोखरल रंग (संस्मरणात्मक निबन्ध), आंखि मुनने: आंखि खोलने (निबन्ध)। ___ सम्पादक

पास करबाक लेल

उत्तर पुस्तिका आपस रखिते
पुछि बैसैत छथि मैम
अर्धवसना बाब्ऽकेशी
वय विलम्वित नवल वेशी
सोनाक वर्ग शिक्षिका-
देखलहुँ, बड़ कमजोर अछि नेना अहाँक
कने नीक जकाँ करिऔक गाइड...
कमजोर त ई नहि अछि मैम
आ जहाँधरि छैक बात करबाक गाइड
से स्कूल त ताही लेल पठाओल जाइत अछि
अंग्रेजीक एक पत्र मे पचासी
आ दोसर मे किएक अबैत छैक पचीस
सोचबाक बात इहो की नहि थिक?
विहुँसैत बजैत छथि मैम
पाश्चात्य शिक्षा-संस्कृतिक सेविका
वैश्वीकरण मेनका-
खाता त देखबे कएल
लिखने अछि मात्र दूटा पेज
तें ने कहल हम
कमजोर ओ नहि अछि
पढ़बैत छिऐक स्वयं हम
लिखबे नहि कएलक
से बात भेल अन्य
परंच एहिठाम नम्बर नहि देल गेलैक
से भेल नहि बोधगम्य...
ओहिना बिहुँसैत पुछैत छियनि हम
देखबैत पुस्तिकाक पंक्ति विशेष
आश्चर्य चकित सन भेल कहै छथि मैम-
गलती लिखने अछि
संयुक्त परिवार सुखी परिवार!
त एहि मे गलती की छैक?
रिक्तस्थान मे ओ लिखि देलक संयुक्त
मैम, संयुक्त परिवार आ
बसुधैव कुटुम्वकम् केर संस्कारमे पालित
हमर पौत्र केना लिखि पाओत
छोट परिवार नीक...
मुदा
पोथी मे सएह छैक
इएह ने कहब अहाँ
आ पास करबाक लेल
उएह सिखए पड़तैक
आर की-की सिखए पड़तैक एकरा
जिनगी मे करबाक लेल पास?
मैम चुपचाप निहारैत रहि जाइत छथि
हमर मुह निर्निमेष
विदा लैत छी हम
कहैत- वेश!!

(२६.१०.२००८)

किछु क्षणिका (हाइकू)

१. भोजक पान
सासुरक सम्मान
पुनिमाक चान

२. हाथीक कान
नटुआक बतान
एक समान

३. दूरक चास
गामक कात बास
कोन विश्वास

४. बाँझीक फूल
महकारीक फल
के कहै भल

५. दादुर-गान
डोकाक अभियान
वेथे गुमान

६. हिजरा-नाच
ओकिल केर साँच
की ६ की पाँच

(२६.१०.२००८)

राम नारायण देव

उठल मधेशी कयल हुँकार
लऽके रहत, अप्पन अधिकार
जन जनकेँ, एके आवाज
सबहक माँग, मिथिला राज्य
अप्पन भाषा, अप्पन सँस्कृति
अप्पन अर्थनीति, अप्पन राजनीति
मधेशी आन्दोलनक इएह सन्देश
अप्पन बात, अप्पन परिवेश
निरकुश राजतन्त्रक भेल अवसान
भेंटल लोकतन्त्रक बरदान
मेची–महाकाली उमडिगेल अछि
राज्यशक्ति मुकिगेल अछि
उठू बन्धू, उठाउ तखआरि
भगाउ सामन्ती राजदरवार
गठन करु गणतन्त्रक सरकार
करु राज्यक पुर्नसँरचना
समावेसी लोकतन्त्र आ
समानुपातिक कल्पना
अप्पन विकार, अप्पन विचार
आव कियो नहि रहत, शिक्षित वेरोजगार
छोडू आपसी मेल, करु विकासक मात्र खेल
उखाडि फेकू, राजाक ताज
तखन भेटत अप्पन स्वराज
जन–जनके एके आवाज
सबहक माँग, मिथिला राज्य।



प्रोफेसर रत्नेश्वर मिश्र (१९४५-)

पूर्व अध्यक्ष, इतिहास विभाग, ल.ना.मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा। अनुवादक, निबन्धकार। प्रकाशन: तमिल साहित्यक इतिहास, भवभूति (दुनू अनुवाद)।

मिथिला विभूति पं मोदानन्द झा-प्रोफेसर रत्नेश्वर मिश्र

पूर्णियाँ जिलाक पंजीकार परिवारमे उत्पन्न पं. मोदानन्द झा आधुनिकताक कसौटीपर अनुदार मुदा पारम्परिकताक कसौटीपर उदार, विद्वान आ विद्वत्ताक सत्संगति लेल आतुर, विलक्षण प्रतिभासँ सम्पन्न व्युत्पन्नमतित्व वाला मिथिलाक अत्यन्त सम्मानित पंजीकार छलाह। पंजीशास्त्र हुनका पूर्णतः अधिगत छलनि आ ओ पंजीसँ जुड़ल ककरहु कोनो जिज्ञासाक समाधान लेल सदैव तत्पर रहैत छलाह। ओ वस्तुतः मिथिलाक विभूति छलाह जनिकर स्मृतिक संरक्षणार्थ जे किछु कयल जायत से थोड़ होयत।

पूर्णियाँ जिलाक रसाढ़ ग्रामक रहनिहार पं मोदानन्द झा पड़वे महेन्द्रपुर मूलक ब्राह्मण छलाह आओर विस्तृत कृषि-भूमिक कारणे बादमे शिवनगर ग्राममे रहय लगलाह। रसाढ़ आ शिवनगर दुनू धर्मपुर परगनान्तर्गत अवस्थित अछि। १९१४ ई.मे उत्पन्न ओ अपन माता-पिताक एक मात्र पुत्र छलाह। परम्परासँ हुनकर परिवार पंजीकारहिक छलनि आ हुनक पिता भिखिया झा ई व्यवसाय करितो रहथिन। ओ मुदा नीक कृषक रहथि आ हुनकर बेसी समय ओहिमे लगनि। हुनका २०० एकड़सँ बेशीक जोत रहनि। ओ अपने प्रायः शिक्षितो नहियें जकाँ रहथि, मुदा अपन पुत्रकेँ नीकसँ नीक शिक्षा दिआयब हुनकर अभीष्ट रहनि। मोदानन्द झा स्वयं बुझबा जोगरक भेलापर अपन कौलिक व्यवसाय आ प्रतिष्ठाक पुनरुद्धार करबा लेल कृतसंकल्प भेलाह।

अपन बाल्यावस्थाक संस्मरण बजबाक क्रममे ओ प्रायः बाजथि जे ओ बड़ए प्रसन्नता आ आह्लादक समय छल। ओ माता-पिताक दुलरुआ त छलाहे, काका-काकी तथा आन सम्बन्धी आ कुटुम्बी जनक स्नेह सेहो हुनका प्रचूर प्राप्त छलनि। ओ दैनिक कृत्य आ विद्यालयसँ बाँचल समयमे माछ मारथि आ ई बहुत दिन धरि हुनकर प्रिय मनोरंजन रहनि। ओ एक बेर बहुत गम्भीर रूपेँ बीमार पड़लाह। वस्तुतः तहिया पूर्णियाँ जिलामे मलेरिया आ कालाजार महामारीक रूपमे पसरल छल। आ कहबी छलैक जे "जहर खाउ ने माहुर खाउ, मरैक होइ तऽ पूर्णियाँ जाउ"। हुनकर माता एक सम्पन्न कुलक महिला रहथिन आ ओ अपन पुत्रक रुग्णताक समाप्ति लेल किछु करबा लेल तत्पर छलीह। हुनकहि जिदपर २०० रुपया फीस दऽ कलकत्तासँ डाक्टर मँगाओल गेल। चारि पंडित अहर्निश हुनकर रुग्णावस्थामे दुर्गा सप्तशती आ गीताक पाठ करैत रहलाह। हुनकर माता स्वयं ताधरि अन्न ग्रहण नहि कयलथिन जा हुनकर पुत्र पथ्य ग्रहण करबा जोगरक नहि भेलनि। कलकत्तासँ आयल डॉक्टरक तऽ अन्य विदाइ कैले गेलनि, पाठ केनिहार ब्राह्मणो लोकनिक आ पुत्रक आरोग्य-लाभक उपलक्ष्यमे गाम-टोलक लोक सभकेँ भोज सेहो खोआओल गेल। मुदा पिताक आकांक्षा छलनि पुत्रकेँ विद्वान् देखबाक आ विद्यार्थीक लेल गण्य करक-चेष्टा, वक ध्यान, श्वान-निद्रा तथा अल्पाहारी आदि लक्षणसँ जन्मतः परिपूर्ण मोदानन्द झा लेल समय अयलनि गृह-त्यागी होयबाक।

दस वर्षक अल्पायुमे हुनका वर्तमान मधुबनी जिलान्तर्गत सौराठ गाम विद्याध्ययन लेल पठाओल गेलनि। ओतय हुनक गुरु आ आश्रयदाता रहथिन ख्यातनाम पंजीकार पं.विश्वनाथ प्रसिद्ध निरसू झा, जनिकर पिता लूटन झा मोदानन्द झाक मौसा रहथिन। पंजीशास्त्रक अध्ययन लेल सामान्यतः पन्द्रह वर्षक कालावधि समुचित मानल गेल छैक मुदा मोदानन्द झा दसे-एगारह वर्षमे गुरु-कृपासँ निष्णात भेलाह। ओना ओऽ पन्द्रह-बीस वर्ष धरि लगातार गुरु सान्निध्यमे सौराठ रहलाह आ बादोमे आजीवन, विशेष रूपसँ वार्षिक वैवाहिक सभाक अवसरपर सौराठ अबैत-जाइत रहलाह आ ताहि क्रममे बाटमे दरभंगा स्थित हमर नरगौना निवासपर ओऽ कनियो देर लेल अवश्य आबथि। हमर पिता डॉ. मदनेश्वर मिश्र लेल हुनका विशेष स्नेह आ सम्मान रहनि आ हमर एक पितृव्य पं. नागेश्वर मिश्रक ओऽ सम्बन्धमे साढ़ू रहथिन। हमर एकटा पीसा स्व. दिगम्बर झा हुनकर पितियौत रहथिन। जे हो, विद्याध्ययन समाप्त भेलापर राज-दरभंगा द्वारा आयोजित धौत परीक्षामे १९४० मे ओऽ सर्वोच्च स्थान प्राप्त कयलनि। हुनका संग उत्तीर्णता प्राप्त केनिहार अन्य दू महत्वपूर्ण

पंजीकार छलाह ककरौरक हरिनन्दन झा आ सौराठक शिवदत्त मिश्र। एहि सफलता लेल महाराज सर कामेश्वर सिंहक हाथे तीनू गोटाकँ धोती देल गेलनि, मुदा सर्वोच्च घोषित भेलाक कारणेँ मोदानन्द झाकँ दोशाला सेहो देल गेलनि। पारम्परिक मिथिलामे धौत परीक्षामे उत्तीर्ण भेनाय बड़का सम्मान होइत छल मुदा ताहूमे सर्वोच्चता पायब तँ अनुपमे छल। तहियासँ अनवरत ओऽ अपन जीवन-पर्यन्त मिथिलाक प्रायः सर्वाधिक समादृत पंजीकार रहलाह।

मोदानन्द झाकँ पाबि पंजीकारक व्यवसाय धन्य भेल। १९६२ मे निरसू झाक दिवंगत भेलापर ओऽ सौराठ प्रतिवर्ष नियमपूर्वक वैवाहिक सभामे मात्र अपन नाम बढ़यबा लेल नहि बल्कि अपन गुरुक ऋण अदाय करबाक विचारसँ सेहो जाथि। ताधरि निरसू बाबूक दुनू बालक छोट रहथिन आ पंजीकारी नहि करथि। हुनकर जेठ बालक प्रोफेसर (डॉ.) कालिकादत्त झा, जे सम्प्रति ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालयक संस्कृत विभागक अध्यक्ष रहथि आ विगत लगभग दस-पन्द्रह वर्षसँ दरभंगामे रहि रहल छथि (पहिने मगध विश्वविद्यालय, गयामे रहथि) आब सक्रिय रूपेँ अधिकार जँचबा आ सिद्धान्त लिखबाक काज करय लागल छथि। ताहिसँ पहिने मोदानन्दे बाबू अपन गुरुक ओहिठाम अयनिहार लोकनि लेल सिद्धान्तादि लिखथिन। ततबे नहि ओऽ निरसू बाबूक पुत्र लोकनिकँ पंजी-ज्ञान ओएह देलथिन आ आइयो कालिकादत्त बाबू गुरु रूपहि हुनका प्रति श्रद्धा रखैत छथि।

मोदानन्द बाबू पंजीकारीक व्यवसायसँ जे धनार्जन करथि ताहिसँ सन्तुष्ट छलाह। सिद्धान्त लिखबासँ तथा विदाइसँ हुनका पर्याप्त कमाइ होइन आओर खेत-पथारसँ सेहो नीक आय होइत छलनि।

कमाइसँ बेसी हुनकर अभिरुचि ज्ञानक विस्तारमे आ पंजीसँ सम्बन्धित विषयपर शोध करबामे छलनि। मैथिलीक महान् विद्वान, आलोचक आ समीक्षक डॉ. रमानाथ झाक संग ओऽ पृथक-पृथक विभिन्न मूलक विख्यात छवि, विद्वान् आ राजा-जमीन्दार सबहक वंश-परिचय तैयार करबा दिस प्रवृत्त भेलाह आ तकरहि परिणाम छल पूर्णियाँक प्रसिद्ध बनेली राजवंशक परिचयात्मक पुस्तक अलयीकुल प्रकाशक प्रकाशन। आन एहन प्रकारक कृत्य नहि तैयार कयल जा सकल तकर हुनका क्षोभ छलनि। हुनकर शोधपरक सोचक अंग छल एक अन्य परियोजना जाहिक अन्तर्गत विशिष्ट गाममे बसनिहार मैथिल ब्राह्मण सभक बीजी पुरुष धरिक परिचयात्मक विवरण तैयार करब अभीष्ट छल। ओऽ सर्वप्रथम कोइलख गामक सम्बन्धमे एहन रचना लिखलनि। ओऽ हमरा तकर कतिपय अंश सुनेबो कयलनि। हुनकर इच्छा रहनि जे उक्त रचनाक प्रकाशन हो मुदा से आइ धरि नहि भऽ सकल अछि। उपर्युक्त दुनू प्रकारक शोध परियोजनाक पंजीकार समाजमे सामान्यतः आलोचना भेलैक कियैक तँ ओऽ अपन रचनामे एहनो विवरणक सन्निवेश करय चाहैत रहथि जे पंजीकारीक व्यवसायमे प्रकाशित करब वर्जित कहल जाइत छैक- वस्तुतः ओऽ विवरण सभ दूषण पञ्जीक अंग होइत छैक जाहिमे व्यक्ति आ परिवार विशेषक सम्बन्धमे ज्ञात अशोभनीय आ अप्रकाश्य बात उल्लिखित रहैत छैक। एहि क्रममे एक तेसर परियोजना, जाहिपर ओऽ उन्नैस सय पचासहिक दशकमे कार्य आरम्भ कयलनि छल, ओहन पञ्जीकार परिवार लग उपलब्ध पाण्डुलिपिक संग्रह करब जाहि परिवारमे आब क्यो पंजीकारीक व्यवसायमे नहि रहि गेल रहथि आ हुनकर पंजी-पोथी सभ नष्ट भऽ रहल छलनि। पिताक मृत्यु भऽ गेलासँ हुनकर दरभंगा सम्पर्क घटि गेलनि आ पूर्णियाँमे पारिवारिक सम्पत्तिक प्रबन्धनमे अपेक्षाकृत बेसी समय लगबय पड़नि। तथापि हुनकर शोध-दृष्टि बनल रहलनि आ ओऽ अपेक्षा करथि जे सामाजिक विज्ञानमे आधुनिक शोध तकनीकसँ परिचित क्यो व्यक्ति हुनका संग रहि उपर्युक्त परियोजना सभ तँ पूर्ण करबे करथि पंजीसँ सम्बन्धित आनोआन विषयपर काज करथि। हुनकर ई अभिलाषा नहि पूर्ण भेलनि मुदा हुनक पुत्र मोहनजी, जे पञ्जीकारीक पैत्रिक व्यवसायमे लागि क्रमिक रूपेँ कौलिक प्रतिष्ठाक विस्तार कय रहल छथि। आ अनुकरणीय रूपसँ पितृभक्त सेहो छथि, एहि दिशामे भविष्यमे क्रियाशील भऽ सकैत छथि।

स्वयं शोधपरक दृष्टि आ रुचि रखनिहार मोदानन्द बाबू जिज्ञासु लोकनिक मदति करबालेल सदति तत्पर रहैत रहथि। हमरा कमसँ कम दू अवसरपर एकर लाभ भेटल। हम १९८७-८८मे बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटनाक अनुरोधपर बिहारक एक पूर्व मुख्यमंत्री पं. विनोदानन्द झाक जीवनी लिखि रहल छलहुँ मुदा हुनकर वंश-परिचय कतहु प्राप्य नहि छल। आधा-छिधा भेटबो कयल तँ प्रामाणिक नहि। हम कैकटा पंजीकारसँ एहि सम्बन्धमे जिज्ञासा कयलहुँ मुदा व्यर्थ। मात्र मोदानन्द बाबू सूचना देलनि जे हुनकर एक परिजन स्व. गिरिजानन्द झा गंगाक दक्षिण बसल मैथिल ब्राह्मण आ पंडा सभक वंशावली तैयार करबाक स्तुत्य प्रयास कयलनि आ अपना संग शिवनगर स्थित हुनकर घरमे जाऽ ओहि संग्रहमे विनोदानन्द झाक वंश परिचय तकबाक चेष्टो कयलनि, मुदा हुनकर पंजी-पोथी सभ व्यवस्थित आ संगठित नहि भेलाक कारणेँ से संभव नहि भेल। जे हो, हमरा ई अवश्य ज्ञात भऽ गेल जे यदि स्व. गिरिजानन्द झाक पोथी-पंजी व्यवस्थित नहि कयल गेलनि तऽ गंगाक दक्षिण बसल मैथिल ब्राह्मण लोकनिक पूर्वजसँ सम्बन्धित महत्वपूर्ण सूचना सभ लुप्त भऽ जेतैक कियैक तँ गिरिजानन्द बाबूक परिवारमे आन किनकहु पंजीकारीक व्यवसायमे रुचि नहि छनि। दोसर अवसर छल जखन भारतीय इतिहास शोध परिषदक अनुरोधपर हमरा पूर्णियाँ जिलाक धमदाहा ग्राममे उत्पन्न सुविज्ञात इतिहासकार प्रोफेसर जगदीश चन्द्र झाक अंग्रेजीमे लिखल विलक्षण पोथी ''माइग्रेशन ऐन्ड एचीवमेन्ट्स ऑफ मैथिल पंडित्स: दि माइग्रैन्ट स्कौलर्स ऑफ मिथिला (८००-१९४७)क १९९० मे समीक्षा लिखबाक छल। ओहि पोथीक परिशिष्टमे कम-सँ-कम तीन पंडित (१) महामहोपाध्याय नेनन प्रसिद्ध दीनबन्धु झा, (२)

म.म.भवनाथ झा आ(३)म.म.गुणाकर झा केर वंश परिचय देल छल किन्तु लेखककेँ हुनका लोकनिक मूल ज्ञात नहि भऽ सकलनि। मोदनन्द बाबू क्षण भरि ध्यानस्थ भेलाह आ कहलनि जे ई लोकनि क्रमशः खौवालय सुखेत, नरौने पूरे आ खौवालय नाहस मूलक छलाह। एतय ई कहब आवश्यक जे मूल आ एक-दू खाढ़िक व्यक्तिक नाम देल रहलापर आन सम्बन्धित सूचना देव संभव छैक मुदा उपर्युक्त उदाहरणमे तँ उनटा बात छैक आ तैयो मोदानन्दे बाबू सन पंजीकार छलाह जे वांछित सूचना तत्काल देबामे समर्थ भेलाह। ओ ओहि पुस्तकमे उल्लिखित पन्द्रह खनाम मूलक प्रसिद्ध विद्वान् गोकुलनाथ, हुनक पिता पीताम्बर आ पुत्र रघुनाथक विषयमे बतौलनि जे ओ तीनू मिथिलाक बारह सडयन्त्री अथवा सर्वज्ञाता विद्वान् मे सँ छलाह। गोकुलनाथक पितामहक नाम रामभद्र छलनि, रामचन्द्र नहि। एतबहि नहि ओ इहो बतौलनि जे मिथिलाक एक घुमक्कड़ विद्वान् ककरौर वासी पड़वे महेन्द्रपुर मूलक गुणाकर झाक एक वंशज धीरेन्द्र झा सेहो छलाह जे आइसँ लगभग चारि सय वर्ष पूर्व बंगाल जाय ओतुक्का ब्राह्मण सभक पंजी-सूचनाक संशोधन-संवर्द्धनक क्रममे अनेक ब्राह्मणेतर व्यक्ति सभकँ ब्राह्मणक रूपमे पंजीमे परिगणित कय देलथिन। अपन पंजी-पोथीमे उक्त धीरेन्द्र झा अपनाकँ आ अपन पिताकँ पंजी पंचानन कहि सम्बोधित कयलनि अछि। एहन कतेको सूचना मोदानन्द बाबू जिज्ञासु व्यक्ति सभकँ दैत रहैत छलथिन।

ओ अपन समाजमे अपन विद्वता, उदारता आ सहज सम्प्रेषणीयताक कारणेँ सर्वत्र समादृत रहथि। हम जखन छोट छलहुँ, आइसँ प्रायः पचास वर्ष पूर्व, ओ हमर गाम विष्णुपुर अथवा पूर्णियाँ शहर स्थित हमर डेरा आबथि तऽ सम्पूर्ण परिवार हुनकर सम्मानमे सन्नद्ध रहैत छल। ओ सभक छुइल भोजन कहियो नहि कयलनि। बेसी काल सभ सामग्री दऽ देल जाइन तऽ ओ अपन पाक अपनहि करथि। हमरा बूझल अछि जे कैक बेर हमर सभसँ जेठ पित्ती, पूर्णियाँक अत्यन्त समादृत ओकील आ भरि बिहारमे सभसँ बेसी अवधि धरि सरकारी ओकील रहनिहार स्व. कपिलेश्वर मिश्र अपन हाथें हुनका लेल पाक करथिन। हमरा परिवारमे तऽ हुनका सदैव सम्मान भेटबे करैत रहनि मुदा अन्यत्रो कम नहि। एक बेरक घटना सुनबैत ओ कहने छलाह जे ओ वर्तमान बांग्ला देशक एक मैथिल ब्राह्मण बहुल गाम बोधगाम गेल छलाह जतय हुनका प्रचुर विदाइ तऽ भेटबे कयलनि ओतुका लोक सभ हुनकर पएर पखारि चरणोदक सेहो लेने रहनि।

मोदानन्द बाबू अपन चिन्तनमे एक तरहँ प्रगतिशील आ सुधारक सेहो रहथि। हुनकर चेष्टा रहनि जे पंजीकार लोकनि मात्र अधिक सँ अधिक धनार्जन मे लागि अपन वृत्तिक प्रतिष्ठार्थ सेहो सोचथि। हुनका ई नीक नहि लगनि जे पंजीकार सभ एक दोसराक प्रति द्वेष भावसँ कार्य करथि। हुनकर इच्छा रहनि जे सभ मिलि पंजी आओर पंजीकारक संस्थाकँ जीवन्त बनाबथि तथा समाजमे हुनका सभकँ जे आदर प्राप्त रहनि तकर लाभ लए समाजकँ दिशा निर्देश देथिन। ओ राजदरभंगाक निर्देशमे चलि रहल पंजी व्यवस्थाक प्रजातंत्रीकरणक पक्षमे रहथि जाहिसँ ब्राह्मण समाजक सभ वर्गक प्रतिनिधि मिलि ओहिना परमानगी दय जातीय स्तरीकरणमे समय-समयपर वांछित परिवर्तन करथि जेना राज दरभंगाक तत्वावधानमे अतीतमे कैक बेर कयल गेल छलैक। जे कोनो ब्राह्मण परिवार पंजी-व्यवस्था विहित रीतिसँ नीक वैवाहिक सम्बन्ध करथि तनिकर स्तरोन्नयन करबाक ओ पक्षमे रहथि। १९६६ मे हमर पित्ती डॉ. रामेश्वर मिश्रक विवाह जखन सोनपुर (उजान) वासी प्रसिद्ध श्रोत्रिय ब्राह्मण स्व. दुर्गेश्वर ठाकुरक कन्यासँ स्थिर भेलनि तँ मोदानन्द बाबू राजसँ परमानगी प्राप्त करबामे तऽ सहयोगी भेबे केलथिन, सौराठमे अधिकांश पंजीकारक बैसक बजाय सभक सहमतिसँ हमर प्रपितामह लाल मिश्रक सभ सन्तति लेल कन्हौली पाँजिक स्थापना सेहो करबौलनि। ओ प्रायः खभगड़ा (अररिया जिला) वासी स्व. बालकृष्ण झाक परिवार आ कतिपय आनो परिवार लेल एहने स्तरोन्नयनक पक्षमे रहथि। हुनकर मन्तव्य रहनि जे जमीन्दारी प्रथाक उन्मूलनसँ आन अनेक संस्थाक संग पंजी व्यवस्थाक सेहो बड़ क्षति भेलैक। जमीन्दार लोकनि परम्परा आ संस्कृतिक सम्पोषक रहथि मुदा आब हुनकर स्थान लेनिहार सरकार अथवा कोनो आन संस्था से काज ताहि रूपेँ नहि कऽ पाबि रहल अछि। पंजीकार लोकनिक दुर्दशाक एक कारण जमीन्दारक समाप्ति सेहो भेल। हुनका सन्तोष रहनि जे पटनाक मैथिली अकादमी सन संस्था हुनक जीवन पर्यन्तक सेवाक मान्यता दय हुनका सम्मानित कयने छलनि, मुदा से संभव भेल छल अकादमीक तत्कालीन अध्यक्ष डॉ. मदनेश्वर मिश्रक व्यक्तिगत प्रयाससँ, अन्यथा आन किछु श्रोत्रिय, योग्य आ कुलीन परिवारकँ छोड़ि अनेकशः मैथिल ब्राह्मण परिवारेकँ जखन पंजीकार अथवा हुनका द्वारा कयल सिद्धान्तक प्रयोजन नहि रहलनि तऽ ब्राह्मणेतर समाज आ प्रायशः तकरहि प्रतिनिधि सरकार पंजीकारक स्थितिमे सुधारक कोनो यत्न कियैक करत।

मिथिला विभूति स्व. मोदानन्द झाक स्मृतिक संरक्षणार्थ ई सर्वतोभावेन वांछनीय अछि जे पूर्णियाँमे हुनका द्वारा सुविचारित शोध परियोजना सभपर काज करबाओल जाय, स्व. गिरिजानन्द झा सन मिथिला भरिमे पसरल पञ्जीकार लोकनिक ओतय उपलब्ध ओ पंजी-पांडुलिपि सभक संग्रह कयल जाय जे आब कतिपय कारणसँ उपयोगमे नहि रहि गेल अछि, मैथिल मूल ग्राम सभक अभिज्ञान प्राप्त कयल जाय तथा ज्ञात अथवा अज्ञात मैथिल ब्राह्मण परिवारक विशिष्टताक प्रचारार्थ परिचयात्मक विवरणिका तैयार करबाओल जाय। पंजी व्यवस्था निश्चयतः पतनोन्मुख अछि मुदा मोदानन्द बाबूक बताओल मार्गपर जौँ शोध कार्य कयल गेल तऽ मिथिलाक सामाजिक-सांस्कृतिक इतिहासक अभूतपूर्व सेवा होयत।



डा. रेवतीरमण लाल

मधुश्रावनी

मधुश्रावनी आएल
मन-मन हर्षए
चहुँदिस साओन
सुन्दर घन वर्षए
काँख फुलडालि
मुस्कथि कामिनी
मलय पवन
सुगन्धित शीतल
दमकए दामिनी
नभ मंडलमे घनघोर
मानू जल नहि वर्षए
ई विरही यक्षक नोर
झिंगुर बेंङ्ग गुञ्जए
जल थल अछि चहुँओर।



रोशन जनकपुरी

डर लगैए

नाचि रहल गिरगिटिया कोना, डर लगैए
साँच झूठमे झिझिरकोना, डर लगैए
कफन पहिरने लोक घुमए एम्हर ओमहर
शहर बनल मरघटके बिछौना, डर लगैए
हमरे बलपर पहुँचल अछि जे संसदमे
हमरे पढ़ाबे डोढ़ा-पौना, डर लगैए
आङनमे अछि गुम्हरि रहल कागजके बाघ
घर घरमे अछि रोहटि-कन्ना, डर लगैए
आँखि खोलि पढ़िसकी तऽ पढ़ियौ आजुक पोथी
घँटकट्टीसँ भरल अछि पन्ना, डर लगैए
चलू मिलाबी डेग बढ़ैत आगूक डेगसँ
आब ने करियौ एहन बहन्ना, डर लगैए



रूपा धीरू

जन्मस्थान-मयनाकडेरी, सप्तरी, श्रीमती पूनम झा आ श्री अरूणकुमार झाक पुत्री।स्थायी पता- अञ्चल- सगरमाथा, जिल्ला-सिरहा। प्रथम प्रकाशित रचना-कोइली कानए, माटिसँ सिनेह (कविता), भगता बेङक देश-भ्रमण (कनक दीक्षितक पुस्तकक धीरेन्द्र प्रेमर्षिसँग मैथिलीमे सहअनुवाद, सङ्गीतसम्बन्धी कृति-राष्ट्रियगान, भोर, नेहक वएन, चेतना, प्रियतम हमर कमौआ (पहिल मैथिली सीडी), प्रेम भेल तरघुस्कीमे, सुरक्षित मातृत्व गीतमाला, सुखक सनेस। सम्पादन-पल्लव, मैथिली साहित्यिक मासिक पत्रिका, सम्पादन-सहयोग, हमर मैथिली पोथी (कक्षा १, २, ३, ४ आ ५ आ कक्षा 9-10 क ऐच्छिक मैथिली विषय पाठ्यपुस्तकक भाषा सम्पादन), पल्लवमिथिला, प्रथम मैथिली इन्टरनेट पत्रिका, वि.सं. २०५९ माघ (साहित्यिक), सम्पादन-सहयोग।–**सम्पादक**

अङ्केजल काँट

नहि जानि बहिना किएक
आइ तोँ बड़ मोन पड़ि रहल छह
आ ताहूसँ बेसी तोहर ओ
छहोछित्त कऽ देबवला
मर्मभेदी वाण।

बहिना तोँ कहने रहऽ हमरा
ऐँ हइ बहिना!
एहन काँट भरल गुलाबकेँ
अपन आँचरमे एना जे सहेजने छह
तोरा गड़ैत नहि छह?
तोँ उत्तर पएबाक लेल उत्सुक छलह
मुदा हम मौन भऽ गेल रही
आ तोँ मोनेमोन गजिरहल छलह।
हँ बहिना, ठीके
हमरो तोरेजकाँ
अपन जिनगीमे फूलेफूल सहेजबाक
सपना रहए
आ अगरएबाक लालसा रहए तोरेजकाँ
अपन जिनगीपर
मुदा की करबहक...!
मोन पाड़ह ने
छोटमे जखन अपनासभ
ती-ती आ पँचगोटिया खेलाइ
बेसी काल हमहीँ जीतैत रही
मुदा जिनगी जीबाक खेलमे
हम हारि गेल छी बहिना।
काँट काँटे होइ छै बहिना
गड़ै कतहु नहि
मुदा हम काँटेकेँ अङेजि लेने छी
मालिन जँ काँटकेँ
नइ अङेजतै बहिना तँ फेर गुलाब महमहएतै कोना?



रूपेश कुमार झा 'त्योंथ'

ग्राम+पत्रालय-त्योंथा, भाया-खिरहर, थाना-बेनीपट्टी, जिला-मधुबनी, सम्प्रति कोलकाता मे स्नातक स्तर मे अध्यनरत, साहित्यिक गतिविधि मे सेहो सक्रिय, दर्जन भरि रचना पत्र-पत्रिकादि मे प्रकाशित। सम्पादक

बूथ कैप्चरिग

कोन पाप लागल से ने जानि
घुरि अयलहुँ मोनक बात मानि
नोकरी सँ ने भेटैत अवकाश
ने करितहुँ हम ई गाम वास
अयलहुँ तऽ लागय सभटा नीक
अछि ने मुदा किछुओ ठीक
आब गामक हवा अछि बिगड़ल
अछि स्वार्त जल सँ सभ भीजल
तथापि रहैत छलहुँ हर्षित
भेल समाजक हेतु समर्पित
मुदा आयल बइमनमा चुनाव
बढ़ल लोक सभक आब भाव
ग्रामीण सभ मिलि कयलक बैसार
भेल ओ जे छल ने आसार
सभ क्यो कयलक आग्रह प्रगाढ़
जे होऊ अहाँ एहि बेर ठाढ़
सोचल दी कोना लोकक बात काटि
सेवाक अवसर देलक आइ माटि
बनि एहि पंचायतक हम मुखिया
रहय देबै ने ककरो दुखिया
सोचि बनल मुखियाक प्रतिनिधि
कल जोड़ि पोस्टर छपओलहुँ सविधि
प्रचार मे जुटलहुँ दिन-राति
विरुद्ध मे ठाढ़ भेल कतेको पछाति
भेल शुरू मारामारी-गड़ागड़ौवल
कएक ठाम भेल लठा-लठौवल
भेटल सभ केँ दू-चारि गोट नोट
खसलहि दोसरेक हक मे वोट
तइयो नहि भेटलै संतोष
छपलक बूथ मिलि सभ दोस
परिणाम सुनि भेलहुँ स्तब्ध
भऽ गेल छल हमर जमानत जब्त
घर सँ निकलैत आब होइछ लाज
किएक कयलहुँ हम एहन काज
बैसब ने मुदा निश्चित आब
हेबे करतै फेरो चुनाव
होयब ठाढ़ हम फेर जा
पोसब गुंडा आब कएकटा
उगि गेलैछ हमरो दू गोट सिंग
करब हमहुँ आब बूथ कैप्चरिग

सच्चिदानन्द यादव

सप्तरी

आई हम ठाढ़ भेल छी-

आई हम ठाढ़ भेल छी
चौबटियापर नइँ,
बाट तऽ एक्केटा छै
मुदा ओकरा रुकय पडतै
जे हमरा एतय अनलकै
हम ठाढ़ भेल छी ठीक ओहिना
जेना कपड़ाक दोकानमे पुतरा
सभदिन नव नव पहिरनमे
ठाढ़ भेल रहै छै
आ, किनयबला देखै छै
उन्टापुन्टाकऽ ।



सन्तोष मिश्र

एना किए ?

एकटा स्त्री,
हमर घरकेँ सबहे काज कऽ दैअ
समय समय पर आबिकऽ
हमर जरुरत पुरा क दैअ
एहिके बाध ओ
परतरि दैअ
मुदा एना किए ?

जहिया हम असगरे रहैछी
तहिया ओ हमरा संग राति बितऽबैय
कखनो तिर त कखनो तार
कहियो राईके बनादै पहाड़
कखनो हमरा लेल आखिमे नोर
आ कखनो हमरासँ दूर
मुदा एना किए ?

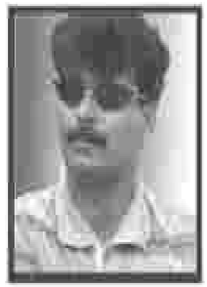
कि ईहे त प्रेम नहि ?
कि ईहो प्रेम छै ?
हमरा कोनो बेगरता होए
ओ सेहो पुरा कऽ दैअ

गलती जौ भऽगेल हमरासँ
त डटबो करैए
मुदा एना किए ?

ओकर आँखिमे,
एकटा भावना रहैछैक
ओकरा विश्वास रहैछैक हमरे पर
तैयो ओ हमरा डटैत रहैए
मुदा एना किए ?

किछु जौं कहि दिऐ त
भऽजाइए टोका चाली बन्द
ओकर मूँह बन्द भइयोक
ओकर आँखि,
अपन प्रेमक गीत कहैए
मुदा एना किए ?

किछु समय बाद
जेना किछु भेले नहि हुए
जेना ओ हमरासँ चिन्तीते नहि हुए
तहिना ब्यवहार करैए
मुदा एना किए ?



सतीश चन्द्र झा

राम जानकी नगर,मधुबनी, एम. ए. दर्शन शास्त्र

समप्रति मिथिला जनता इन्टर कालेन मे व्याख्याता पद पर 10 वर्ष सँ कार्यरत, संगे 15 साल सं अप्पन एकटा एन.जी.ओ. क सेहो संचालन।

चिकड़ि रहल अछि शब्द आबि क'
निन्न पड़ल निश्बद्द राति मे।
अछि उदंड, उत्श्रृखल सबटा
नहि बूझत किछु बात राति मे।
केना करु हम बंद कान के
उतरि जाइत अछि हृदय वेदना।
बैसि जाइत छी तैं किछु लिखय
छीटल शब्द हमर अछि सेना।
कखनो कोरा मे घुसिया क'
बना लैत अछि कविता अपने
जुड़ल जाइत अछि क्लांत हृदय मे
शब्द शब्द के हाथ पकड़ने।

कविता मे किछु हमर शब्द के
नहि व्याकरणक ज्ञान बोध छै।
सबटा नग्न, उघार रौद मे
नेन्ना सन बैसल अबोध छै।
कखनो शब्द आबि क' अपने
जड़ा दैत अछि प्रखर अग्नि मे।
कखनो स्नेह,सुरभि, शीतलता
जगा दैत अछि व्यग्र मोन मे।
क्षमा करब जौ कष्ट हुए त'
पढ़ि क' कविता शब्दक वाणी।
शब्द ब्रह्म अछि नहि अछि दोषी
छी हमही किछु कवि अज्ञानी।



शैलेन्द्र मोहन झा

लेखक उक्ति हुनकर परिचयमे। सम्पादक। सौभाग्यसँ हम ओहि गोनू झाक गाम, भरवारासँ छी, जिनका सम्पूर्ण भारत, हास्यशिरोमणिक नामसँ जनैत अछि। वर्तमानमे हम टाटा मोटर्स फाइनेन्स लिमिटेड, सम्बलपुरमे प्रबन्धकक रूपमे कार्यरत छी।

चलला मुरारी छौरी फ़ँसबय !

एक दिनक गप्प अछि, हमर मित्रगण हमरा कहय लगला -

शैलेन्द्र, अहाँ कँ कोनो गर्ल फ़्रैन्ड नहिं?

हम कहलियनि - दोस, ई भारत अछि, इन्गलैन्ड नहिं!

अखन गर्ल फ़्रैन्डक जरूरत नहिं,

अखन त पढय - लिखय के दिन अछि, प्रेम करय के मुहुर्त नहिं!!

सब मित्र कहय लगला, हम अनाडी छी

जौं कोनो छौरी फ़ँसाबी, तखने हम खिलाडी छी

ई सब हमरा सहल नहिं गेल,

बिना ई दुस्कर्म कयने रहल नहिं गेल

फ़ेर की छ्ल? हम ताकय लगलहुँ एकटा फ़्रैन्ड,

फ़्रैन्ड नहिं, गर्ल फ़्रैन्ड......

मुदा एकटा मुश्किल छ्ल -

हमरा छौरी सब स लगैत छ्ल बड़्ड डर

जौं हुनक सैन्डल गेल पडि, त इज्जत जायत उतरि

तैयो हमरा प्रमाणित करय के छ्ल, कहुना कय एकटा छौडी पटबय के छ्ल

त कुदि पडलौं मैदान मे या ई कहु श्मशान मे,

कियाकि, पिटला के बाद ओत्तहि जायब, फ़ीरि क मुंह नहिं देखायब

बन्हलहुं माथ पर कफन, कय सब डर के करेज में दफन

निकलि पडलहुँ हम बाट मे, एक छौरी के ताक मे

सब सँ पहिने प्रार्थना कयलहुँ -

हे किशन कन्हैया! अहाँ त अहि कर्म में खिलाडी छी

हमरो खिलाडी बना दिअ,

हमरा सोलह हजार गोपी नहिं, केवल एकटा छौडी फ़ँसवा दिअ

अडाँक बड़्ड गुणगान करब,

फ़ँसिते छौरी, सवा रुपैया के प्रसाद चढायब

हम सोचलहुँ, शायद आंखि मारला सं छौरी पटै छैक!

हमरा कि बुझल छल, आँखि मारला सं छौरी पीटै छैक

भागि कय घर अयलहुँ, आर पहिल सप्पत खेलहुँ

फ़ेर कहियो आँखि नहिं मारब.

फ़ेर सोचलहुँ - पहिने बतियायब, फ़ेर घुमायब तहन फ़ँसायब

हँ, ई ठीक रहत!

देखलहुं एकटा छौरी, त आंखि हमर फ़रकल....

फ़ेर की छ्ल? हम कहलौं-

पोखरि सन आँखि तोहर, केश जेना मेघ,

फ़ूल सन ठोढ तोहर, कहियो असगर में त भेट!

कहलहुँ हम एतबे की भय गेली ओ लाल,

ओ मारलीह एहन थप्पड, भेल गाल हमर लाल

कनबोज सुन्न भेल हमर, आंखि भेल अन्हार

सूझय लागल तरेगन, भेल दुपहरिया में अन्हार

सरधुआ, करमघट्टु, बपटुगरा आर अभागल

देखू कपार हम्मर, ई विशेषण हाथ लागल

एतबे नहिं........

ओ करय लगलीह हल्ला, जूटय लागल मोहल्ला

हम कहलहँ - ई कोन काज केलहुँ? कियाक गाम के बजेलहुँ

नहिं पटितौं हमरा सं, ई आफ़त कियक बजेलहुं

फ़ेर की छल?

पिटय लगलहुँ हम आर पीटय लगला गौंआँ

मुँह कान तोडि देलक, अधमरु कय क छोरलक

ई कोन काल घेरलक, मरय में नहिं छल भांगठ,

हम भागि घर एलहुँ, दुबारा सप्पत खेलहुँ -

फ़ेर आंखि नहिं मारब, नै गीत हम गायब,

फ़ेर छौरी नहिं फ़ंसायब, नै जान हम गमायब,

आर भूलि कय अंग्रेजी, हम मैथिल बनि जायब!

आर भूलि कय अंग्रेजी, हम मैथिल बनि जायब!!

सपना

सुतल रही दुपहरियामे तँ देखलौ हम एक सपना

भेल विवाह हमर यै भौजी कनिया चान्द के जेना

हम्मर, टुटि गेल सपना ये भौजी, भरल दुपहरियामे...

जहन भँट भेल हुनकर हम्मर, भेलहुँ हम प्रसन्न

देखि कऽ हुनकर रूप हे भौजी, भय गेलौँ हम दङ

नाम पुछलियनि हुनकर हम तँ कहलनि ओऽ जे रजनी

स्वप्न सुन्दरी ओऽ बनि गेलि हम्मर हृदयक रानी

हमरा पुछली कहु हे साजन केहन हम लगै छी?

हम कहलियनि सुनु हे सजनी अहाँ चान्द लगै छी

चन्दामे तँ दागो छै, हाँ बेदाग लगै छी

आँखि अहाँक ऐश्वर्या जेहन नाक अछि जूही चावला

केश अहाँक अछि नीलम जेहन गाल वैजन्तिमाला

एहि के बाद पुछलियनि हमहू केहन हम लगै छी?

कहय लगलि खराब छी, छी अहूँ ठीक-ठाक

लेकिन एहि यौवनमे साजन भेलहुँ कोन टाक*

कनिक लगै छी सन्नी जेना, किछु-किछु राहुल राय

किछु-किछु गुण गोविन्दा बाला, यैह अछि हम्मर राय

तहन कहलियनि चलु हे सजनि घूमए लेल दरभंगा

अहाँ लेल हम सारी किनब, अपनो लेल हम अंगा

दू टा टिकट अछि उमा टाकीजक, अगले-बगले सीट

दुनू गोटे बैस कऽ देखब "ममता गाबय गीत"**

हुनक हाथ लेल अपन हाथमे उठि विदाय हम भेलहुँ

तखने जगा देलक पिंटूआ, तखने जगा देलक पिंटुआ***, नीन्दसँ हम उठि गेलहुँ

हम्मर टूटि गेल सपना ये भौजी, भरल दुपहरियामे......

*= हमर केश किछु बेशी कम अछि

**= प्रसिद्ध मैथिली सिनेमा

***= हमर छोट भाई



शक्ति शेखर

पिता-श्री शुभनाथ झा, गाम- मोहनपुर, भाया-हरलाखी, जिला-मधुबनी।

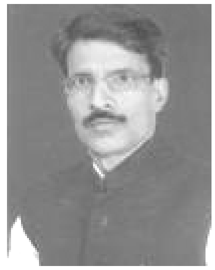
कखन बदलब हम

बहुत तामस होइए भगवानक एहि कृत्यसँ जे ओऽ अपन उपस्थिति मिथिलांचलमे दर्ज केनाय शायदे कोनो साल बिसरै छथि। मुदा हमरा सबकेँ एहि भयावह स्थितिसँ लड़बाक अलावा आओर कोनो रस्तो तँ नहि अछि। जी, हम बात कऽ रहल छी, एखन बिहारमे आयल बाढिक संदर्भमे। अनुमान लगायल जाऽ रहल अछि, जे अहि बाढिक चपेटमे करीब 50 लाख लोक आयल छथि। सभ साल जुलाई-अगस्तक मास अबिते बिहारक लोक आतंकित भऽ जाइत छथि।सबहक मोनमे ई डर रहै छनि, जे एहि बेर केकर घर उजरतौ। लोकसब भरि साल दिन राति मेहनत कऽ एकटा घर बनाबैत छथि, किछु पूंजी जमा करैत छथि,मुदा की होइए एहि सभसँ? ई बाढि तँ कोनो आतंकवादीसँ बेसी भयावह होइत अछि जे हर बेर कतेको गामकेँ, कतेको बिगहा जमीनकेँ अपन अंदर समेट लैत अछि। संबधित विभाग बाढिकेँ लऽ कऽ सब जानकारी राखितो कोनो तरहक कदम नहि उठाबैत अछि। शायद ई बाढि हुनका सभक लेल आमदनीक एकटा स्रोत जे होइ-ए। पछुलका बाढि सभक राहत-अनुदानपर नजर दौड़ाबी तँ निधोक एक बात कहनाइ अनुचित नहि होयत, जे बाढिसँ कतेको लोक करोड़पति सेहो भऽ गेलाह। ईश्वरक लीला देखियौक, जे एक दिस एहि बाढिसँ सभ बेर कतेको लोक (शायद अनुमान लगेनाय असंभव अछि) केर सब चीज **लुइटे** जाय छनि, तँ दोसर दिस बाढि घोटालाक अभियुक्त आओर कतेको लोक करोड़पतिक गिनतीमे आबि गेलाह। ओहि दृश्यक बारेमे सोचल जाय, जे पूर्णियामे बाढिक डरे अपन छत पर बैसल चारि सालक बच्चा भूखसँ अपन दम तोड़ि देलक, ओहि लोकक बारेमे सोचि, जिनका खेनाय तँ दूर पिबऽ के लेल पानि तक नहि भेटि रहल **छनि**। लोकक चापाकल बाढिक पानिमे डुबि गेल छनि। हिनका सभ लग किएक नहि पहुंचि पाबि रहल छनि राहत सामाग्री। कहिं एहन **तँ** नहि जे फ़ेर सँ कतेको **लोक** एहि बाढिमे करोड़पति बनए वला छथि। प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह बिहारक बाढिकेँ राष्ट्रीय आपदा घोषित तँ कऽ देलन्हि मुदा पीड़ितक लेल ई सांत्वना मात्र अछि। केन्द्र सरकार दिससँ बिहारक बाढि पीड़ितक लेल 1000 करोड़ रुपया अनुदानक राशि देल गेल अछि। मुदा एहि अनुदानक राशिक **विषय**मे अखनो कतेको बाढि पीड़ित कँ मालूम नहि चलि सकल अछि। जिनका अहि बारेमे जानकारी भेटबो कैल तँ निश्चित ओऽ सोचने हेताह कि शायदे एहि राशिमे सँ हुनका सभकँ किछु भेटत। केन्द्र सरकार ई राशि तँ दऽ कऽ अपन बाढि पीड़ितसँ तँ अपन पल्ला झाड़ि लेलाह, मुदा बाढि पीड़ित तक ई राशि कोना पहुंचि सकत, एहि बारेमे हुनकर ध्यान नहि गेल अछि। एक बेर फ़ेरसँ कहब जे ई अनुदानक राशि सब विभाग तक बटैत बटैत दस प्रतिशतो बाढि पीड़ित तक नहि पहुंचि सकत। आओर हँ, बाढिक दोगमे जे सभसँ पैघ चीज होइत अछि ओऽ अछि राजनीति। कतेको नेता सभ एहि बाढि पीड़ितक लेल आगिमे घी देनाय जेहेन काज करैत छथि। राज्य सरकार कँ दोषी ठहराबैत नेता सब ओहि जगह अपन

सीट सुनिश्चित करबाक फ़िराकमे रहैत छथि। हेलीकाप्टरसँ बाढि क्षेत्रक सर्वेक्षण करैत बहुतो नेतासभकेँ अतबो जानकारी नहि रहैत छनि जे ओऽ कोन क्षेत्रक दौड़ा कऽ रहल छथि। पता एहि बातसँ लगायल जाऽ सकैत अछि जे नेतासभ ओहि क्षेत्रक कतेक ज्ञान रखने छथि। इमहर राज्य सरकार सेहो कहां चुप रहए वला। ओऽ केन्द्रपर निशाना साधैत छथि तँ केन्द्र राज्य सरकार पर। एहि राजनीतिमे पिसाइत तँ बाढि पीड़ित छथि। कोनो बात नहि, समय आबि गेल अछि एकजुटता देखाबएबाक आऽ मदति करबाक....बाढि पीड़ितक संग, बाढि पीड़ितक लेल। तखने हम स्वतंत्र भारतक कर्तव्यनिष्ठ नागरिक भऽ सकैत छी।

जोगार

'हम आपको दिखा रहे हैं कि कैसे फ़ला आदमी किसी मामले को दबाने के लिए दुसरे को पैसा दे रहे है। यह हमारे चैनल के स्टिंग आपरेशन का नतिजा है जो सिर्फ़ दिखा रही है।' जी,इ पंक्ती अछि आजुक समय के सब घटना स अपना सब के देखा रहल इलेक्ट्रोनिक चैनल के। अपना के सब स ऊपर पहुंचाबय के लेल ओ सब हथकंडा अपना लैत अछि। विडंबना इहो देखु जे सब चैनल वला अपना के राजा हरिश्चंद्र के सत्य नीति पर आधारित बताबैत अछि। बहुतो चैनल वला सब कोनो काज के तह तक पहुचबाक लेल हमेशा एकटा हथकंडा अपनाबैत अछि जाहि के सहि युग मे स्टिंग आपरेशन कहल जाइत अछि। माने इ जे हम इ हम देखा रहल छी जे बस अहाँक लेल अछि आ सत्य अछि। मुदा कहल जाय तँ एकटा सत्य मीडिया खास क इलेक्ट्रोनिक मीडिया मे एहि शब्दक बोलबाला अछि। जी,हम बात क रहल छी 'जोगार' के। आजुक युग मे बहुतो युवा के रुझान पत्रकारिता दिस झुकि रहल छैन। लाखो रुपया ओ सब अहि पत्रकारिता के पढाई पर खर्च क दैत अछि। शायद किछ उम्मीद के संग जे ओहो सब एक दिन अहि क्षेत्र मे अपन नाम रौशन करताह। मुदा कि होइया अतेक पढाई लिखाई कएलासँ? पढाई के संग संग कतेको लोकनि के पत्रकारिता मे काज करबाक लेल जोगार सेहो लगाबअ पड़ै छैन। एक तरह स कहू त डीग्री डिप्लोमा स पहिले कोनो चैनल मे पहुंचबाक लेल हुनका सब के सब स पहिले त जोगार लगाबहे पड़ै छैन। अनुचित नहि हैत जौं कहि त जे पत्रकारीता क्षेत्र मे घुसबाक लेल सब स जरुरी जोगार होयत अछि। आब त कतेको चैनल सब आ अखबार एजेंसी सब अपन-अपन संस्थान सेहो खोलि लेने अछि,इ कहि क जे पढाई समाप्ती के बाद हुनका सब के ओहि चैनल आ अखबार एजेंसी मे काज देल जायत। साधारण वर्ग सब पत्रकारिता के पढाई करलाक बादो ओ सब अहि संस्थान मे नामांकन नहि ल सकैत छथि। चैनल वला सब के अहि कदम स साधारण तबका वला युबासब के अहि चैनल मे काज खोजनाय पहाड़ खोदनाय एहन भ रहल अछि। सोचल जाय जे ओ चैनल वा अखबार एजेंसी वला सब अपन संस्थानक विद्यार्थी केँ छोड़ि क दोसर गाटे के किएक काज देत। बड पैघ पैघ गप्प करैत छथि इ चैनल वा अखबार वला सब जे भारत मे बेरोजगारी अहि हद तक बढि रहल अछि आ दोसर दिस अपने जोगारक मंत्र पर काज दैत अछि। ध्यान दि जे अखन समाचार चैनल वा अखबार एजेंसी मे काज क रहल छथि,ओहि मे स एहन कतेक व्यक्ती छथि जिनकर कोनो नहि कोनो संबंध अहि क्षेत्रक माफ़िया सब स नहि छैन। प्रतिशत मे देखल जाय त जोगार वला सबहक प्रतिशत शायद 80 तक पहुंच जायत। एक तरह स कहि त जे अहि पत्रकारीता क्षेत्र मे ज्यादा स ज्यादा दिन तक टिकबाक लेल जिगार रहनाय आवश्यक अछि। ओना त सब क्षेत्र मे जोगार अपन एक अलग स्थान राखैत अछि मुदा पत्रकारीता क्षेत्र के लेल एकर महत्व विशेष मे भ जायत अछि। पत्रकारीता के देशक चारिम स्तंभ मानल जायत अछि आ इ स्तंभ जोगार पर टिकल अछि। कि जिनका लक जोगार नहि अछि,ओ पत्रकारीता क्षेत्र मे काज नहि क सकैत छथि? फ़ैसला ओहि सब लोकनि के लेबअ पड़तैन जे अहि मे संलिप्त रहै छथि,जिनकर नाम ल क जोगार लगाबअ पड़ैत अछि,ओहि सब युवासब के लेल के काल्हि के भविष्य छथि।



डॉ शंभु कुमार सिंह

जन्म: 18 अप्रील 1965 सहरसा जिलाक महिषी प्रखंडक लहुआर गाममे। आरंभिक शिक्षा, गामहिसँ, आइ.ए., बी.ए. (मैथिली सम्मान) एम.ए. मैथिली (स्वर्णपदक प्राप्त) तिलका माँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर, बिहार सँ। BET [बिहार पात्रता परीक्षा (NET क समतुल्य) व्याख्याता हेतु उत्तीर्ण, 1995] ''मैथिली नाटकक सामाजिक विवर्त्तन'' विषय पर पी-एच.डी. वर्ष 2008, तिलका माँ. भा.विश्वविद्यालय, भागलपुर, बिहार सँ। मैथिलीक कतोक प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिका सभमे कविता, कथा, निबंध आदि समय-समय पर प्रकाशित। वर्तमानमे शैक्षिक सलाहकार (मैथिली) राष्ट्रीय अनुवाद मिशन, केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर-6 मे कार्यरत।–**सम्पादक**

दूभि

09 मई 2008 क बात थिक। गाम गेल रही। साँझ चारि बजे तरकारी किनबा आ घुमबाक लाथे तिरंगा चौक दिस चलि गेलहुँ, घुरैत काल स्कूल लग अबैत-अबैत दीया-बातीक बेर भ' गेलैक। गरमीक दिन छलैक मोन भेल कनी काल स्कूलक ओहि प्रांगणमे सुस्ता ली जतय कहियो बैसि हम अपन पाठ याद करैत रही। जहिना बैसबाक उपक्रम कयलहुँ कि एकटा अप्रत्याशित स्वर सुनबामे आयल... हे बाउ! ओतय नहि एमहर आउ। हम चौंकि गेलहुँ, देखैत छी तँ सरिपहुँ एकटा स्त्री हमरा सोझामे ठाढ़ छलीह आ बैसबाक आग्रह क' रहल छलीह। हम बैसि गेलहुँ, हमरा सम्मुख ओ स्त्री सेहो बैसि गेलीह। हम साश्चर्य ओहि स्त्रीकेँ देखय लागलहुँ जिनक रूप-रंग किछु एना रहनि--- हरितवर्णक शरीर ताहिपर हरियर रंगक मैल,पुरान-सन साड़ी जे कहुना हुनकर स्त्रीयांगकेँ झाँपने रहनि, ताहूमे कतोक ठाम पियन लागल, शेष शरीर उघारे बुझू। सम्पूर्ण शरीरमे छोट-पैघ घाव जाहिसँ पीज बहैत रहनि। एक-दू ठाम मैला सेहो लागल, जे दुर्गन्ध करैत छल। बामा जाँघ पर ढ़ल-ढ़ल करैत फोका, दहिना जाँघ पर गोदना जकाँ कोनो विशिष्ट आकृति, दुनू हाथ नोछड़ल जकाँ, माथक केश गोबरछत्ता जकाँ जाहिमे शिखर, पान-पराग, तुलसी, रजनीगंधा, माणिकचंद गुटखा, आदिक फाटल-चिटल पुड़िया, अखबार, कागदक टुकड़ी, जड़लका सिगरेटक पुत्ती आ टुकड़ी, सुखल गोबर, सूगरक मैला आदि-आदि सभ ओझरायल। एहि नारीक विचित्र ओ दयनीय दशा देखि हमर उत्कंठा बढ़ि गेल।

हम पुछलियनि-- अहाँ के छी?

ओ कहलनि-- हम दूभि थिकहुँ। वैह दूभि जाहि पर अहाँ एखन बैसल छी। वैह दूभि जतय बैसि अहाँ नेनपनमे नीरजक कविता पढ़ैत छलहुँ ''यह जीवन क्या है निर्झर है, मस्ती ही इसका पानी है, सुख-दुख के दोनो तीरों से चल रहा राह मनमानी है...।''

हम फेर पुछलियनि अहाँक एहन दुर्दशा किएक ?

ओ बजलीह--- बाउ, हम देखि रहल छी जे अहाँ तखनसँ हमर अंग-प्रत्यंगकेँ खूब नीक जकाँ निहारि नेने छी। पहिने अहाँ बताउ, हमरा सुनबामे आयल अछि जे अहाँ साहित्यमे उच्च शिक्षा प्राप्त केने छी, ओहुमे मैथिली सन सरस साहित्यमे।

हम कहलियनि–सत्ते कहलहुँ।

तखन संभव भ' सकय त' हमर एहि दयनीय दशाकेँ अहाँ कोनो पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित करबा दिऔक। आ ओ आश्वस्त हैत बाजय लगलीह–बाउ, हमर शरीर स्कूलक एहि हातामे पसरल दूभिक प्रतीक थिक तैँ हरियर। हमरा माथ पर जे अहाँ गुटखा, सिगरेटक टुकड़ी, अखबार आ कागदक टुकड़ी देखैत छी से एहि स्कूलक छौंड़ा-छौंड़ी सभक किरदानी थिक, हम अहाँकेँ कहैत जाइत छी आ अहाँ एमहर-ओमहर नजरि दौड़ा-दौड़ा क' देखने जाउ....। हमर देह जे घावसँ दागल अछि से सिगरेटक जड़लका पुत्तीसँ, हाथ जे नोछड़ल देखैत छी से थिक मोद बाबू (मुखियाजी) क नोकरक किरदानी, ओ सभ दिन एतय आबि छिल्ला छिलैत अछि, दिनमे कैक बेर सूगर, महिस, गाय, बकरी आदि हमरा दूषित करैत रहैत यै, बाम जाँघ पर ई ढ़ल-ढ़ल फोका थिक वैह मंगरूआक लोकक किरदानी, ओ काल्हि राति चूल्हिक अँगोरा हमरा देह पर फेंकि देलक, आ हमरा दहिना जाँघ परक ई चेन्ह जकरा

अहाँ गोदना बुझि रहल छी से वस्तुतः कोन चीजक आकृति थिक से हमरा कहितहुँ लाज लागि रहल ऐ, साँझहिकेँ, माने एखनसँ कनी कालक पश्चाते देखबैक जे एहि गामक गँजेरी छौंड़ा सभ हेज बनाकेँ आओत, सिगरेटमे भरि कए गाँजा पीयत आ हमरा झरका-झरका कए एहन अश्लील आकृति बनबैत अछि, हे! ओहिठाम देखियौक..., ई जे मैला देखि रहल छी, से थिक एहि आस-पड़ोसक स्त्रीगणक काज, कने रतिगर भेलाक बादे एक दिस सँ पथार जकाँ बैसि जाइत छथि। हे! ओमहर देखियौक हत्ताक कछेड़मे... की कहू बाउ, जीयब दूभर भ' गेल अछि।

(एकटा दीर्घस्वास लैत) ओ फेर बाजय लगलीह--बाउ, अहाँकेँ अपन नेनपनक बात स्मरण अछि ने ? ताहि दिन प्रातः 10 बजे (प्रायः) स्कूल पहुँचलाक पश्चाते सभसँ पहिने सरस्वती वन्दना होइत छलैक जाहिमे शिक्षक-छात्र सभ क्यो भाग लैत छलाह। तकरा बाद श्रीवास्तव मास्टर साहेब सभ नेनाकेँ एक पतियानीसँ बैसा दैत छलाह, आ ओसब नेना एकहक टा कागद आ आन-आन सभ प्रकारक गंदगी सभ चुनि-बीछि लैत छल। हमर काया एकदम साफ भ' जाइत छल। कक्षा सभमे जखन हाजरी होइत छलैक तँ नाम पुकारल जाइत छलैक, हरेराम, युगलकिशोर, शंभु, कुमारसंभव, चन्द्रकला, रहीम, कौशल्या, कतेक मधुर आ सार्थक नाम! सुनि कए मोन तृप्त भ' जाइत छल। साँझ के नेना सब कबड्डी आ खो-खो खेलाइत जखन गिर जाइत छल तँ हम ओकरा बेसी चोट नहि लागय दियैक, वात्सल्यक अनुभव करैत छलहुँ तहिया। शनि कँ विशेष आयोजन होइत छलैक। शनिचराक गुर-चाउर बाकुटक-बाकुट नेना सभ खाइत छल, की कहू बाऊ, अहाँ सभक हाथ सँ गिरलाहा गुर-चाउर खयबा लेल हमहुँ शनि दिनक प्रतीक्षा करैत छलहुँ। दोसर पहरमे सांस्कृतिक कार्यक्रम होइत छलैक। "जगदम्ब अहीं अवलम्ब हमर, हे माय अहाँ बिनु आस ककर...। कखन हरब दुःख मोर हे भोला बाबा...। दुनियाँ मे तेरा है बड़ा नाम, आज मुझे भी तुमसे पर गया काम....।" अहाँकेँ तँ स्मरण हेबे करत बाउ रमाकान्त एकबेर गयने छलाह "चल चमेली बाग मे मेवा खिलाऊँगा....." ताहिपर मोलवी मास्टर साहेब हुनका चुत्तर पर ततेक ने छौंकी मारने रहनि जे बेचारेक सभटा मेवा घोसड़ि गेल रहनि। आ अहाँकेँ ओ अन्त्याक्षरी वला बात याद अछि की नहि? तहिया अन्त्याक्षरी मे कविताक पद्य सभ पढ़ल जाइत छलैक, अहाँ एकबेर 'य' पर अटकि गेल रही, गाब' लगलहुँ–"ये मेरा दीवानापन था...." अहाँकेँ मोलवी साहब बजा कए पुछने छलाह "यह कदम्ब का पेड़ अगर माँ......अहाँ काल्हिये ने याद केने छलहुँ, तँ बिसरि कोना गेलहुँ ? " आ तकरा बाद हुनक छड़ी आ अहाँक दुनू हाथ। एकदिन रविशंकरक चुगली एकटा नेना क' देने रहैक जे "मास्टर साहेब ई अपन ककाक जड़लका बीड़ी पीबैत रहय" एहि लेल श्रीवास्तव मास्टर साहेब रविशंकरकेँ रौद मे एक घंटा धरि अहीठाम मुरगा बना देने रहथि। ताहिदिन ककर मजाल रहैक जे एहि स्कूलक हाता मे क्यो गाय, महीस, आ बकड़ी-छकड़ी ल' कए घुसि जायत। यैह मोद बाबू (मुखियाजी) क नोकर एतय एकबेर छिल्ला छिलय बैसल रहय, मुखियाजी हुनका ततेक ने गारि-बात दलकैक, तकर ठेकान ने।

ओ बजने जाइत छलीह आ हम अपन अतीतलोकमे विचरण क' रहल छलहुँ। अचानक हम हुनका टोकि देलियनि-- अच्छा एकटा बात कहू, आइ काल्हि की एहन व्यवस्था नहि छैक एतय? आब तँ देखै छियै जे ताहि दिन सँ बेसी सरकारक ध्यान शिक्षा पर छैक। लोक सेहो जागरूक भेल अछि शिक्षाक प्रति। हम त' देखि रहल छी जे नीक भवन अछि, पानि पीबा लेल कल अछि, मूत्रालय अछि, शौचालय अछि, उचित संख्यामे शिक्षकगण छथि, आब की चाही?

ओ बजलीह-- औ बाउ! अहाँ जे किछु बजलहुँ सेहो साँचे थिक मुदा अहाँ आइ एलहुँ काल्हि चलि जायब। हम तँ कतोक बरखसँ एतहि छी आ प्रत्यक्षदर्शी छी, तँ हमहुँ जे कहल आ जे कहब से फूसि नहि। एतय दूई भवन मे चारि टा कक्ष छैक आ विद्यार्थी 400 सयक करीब, एक तिहाई बच्चा कक्षमे बैसैत छैक आ शेष एहि हातामे आ ओहि बड़क गाछतर घुड़दौड़ करैत रहैत छैक, क्यो गुटखा, क्यो....., क्यो चरैत महिसक सींग पर दय ओकरापर चढ़बाक अभ्यास करैत अछि तँ क्यो........। शौचालय, मूत्रालयकेँ अहाँ एकबेर देखि अबियौक एकोटामे पल्ला नहि लागल छैक, उपरसँ ततेक दुर्गन्ध जे राम कहू! अहाँ काल्हि आबि कए देखि लेब। ई तँ परसू जलघर बाबूक बेटीक बियाह छलनि ताहिलेल ओ अप्पन कल एतए लगौने छलाह, आ शौचालयमे बोराक चट्टी। काल्हिए कलो खुलि जेतैक ? एतय गड़लाहा पाइपे टा स्कूलक छैक। की कहू, कल जहिना लागै छैक पाँचे-दस दिनमे क्यो चोरा लैत छैक। हे लियह! कुकुरक झौहड़ि सुनि रहल छी ने अहाँ ? बराती सभ जे काल्हि भोरमे चूरा-दही खा-खा क' पात सभ स्कूलक पछुआड़ि मे फेकने छल ततहि कुकुर सभ लड़ि रहल अछि।

खैर! छोड़ू ई सब बात। आब पढ़ाईक व्यवस्था सुनू--- अहाँ केँ तँ बुझले हैत जे हमरा सभक दयानिधान मुखमंत्रीजी कॉन्ट्रेक्ट पर कैक लाख लोककेँ बिना कोनो परीक्षे-तरीक्षे नेने मास्टर बना देलथिन, सेहो की जे गामक लोक गामहिमे शिक्षक हेताह। तँ ढ़ोरहाय-मंगडू सब शिक्षक बनि-बनि एतय आबि गेल छथि, जिनकामे सँ कतोक केँ तँ अपन नामो.....। प्रार्थना आब नहि होइत छैक। जँ कहियो काल होइतो छैक तँ चारि सय मे सँ चारिये टा नेनाक मुँहसँ स्पष्ट शब्द बहराइत छैक बाँकी सब आऊँ-आऊँ, ऊँ-ऊँ करैत

रहैत छैक। हाजरी मे नाम पुकारल जाइत छैक- डबलू, बबलू, डेजी, रोजी, स्वीटी.....। शनिचराक प्रथा उठि गेल छैक। सांस्कृतिक कार्यक्रम एखन धरि होइत छैक, एखनो गीत गाओल जाइत छैक–"एक आँख मारूँ तो पर्दा हट जाये, दूजा आँख मारूँ कलेजा फट जाये.........। तनी सा जींस ढीला कर.... आदि।" एक दिनक बात कहैत छी, एकटा विद्यार्थी गाना शुरू कएलक– "चोली के पीछे क्या है......" आकि सबटा मास्टर ठेठिया-ठेठिया क' हँस' लागलाह। मंजय मास्टर साहेब कें नहि रहल गेलनि ओ नेनाकेँ डाँटि कय बैसा देलथिन। ताहिपर, मंतोष मास्टर साहेब आ मंजय मास्टर साहेबमे नीक जकाँ बाझि गेलनि।

मंजय मास्टर साहेब कहलैथ–मेरा मानना है कि इसमें बच्चे का कोई दोष नहीं है, अगर यही गाना गाना उस बच्चे की मजबूरी है, तो हम एक शिक्षक होने के नाते इसी गाने के प्रति उसके दृष्टिकोण को बदल सकते हैं, बस एक वाक्य में समझाकर की, "चोली के पीछे, 'माँ' होती है, जिसका अमृतपान करके हम, आप, सबके शरीर को जीवन मिला है।"

एहि घटनाक बाद सभ शिक्षक मिलि कए मंजय बाबूक नव नामकरण कय देलकनि 'मायराम'। तहिया सँ ओहि कागमंडली मे हंस सदृश्य मंजय बाबूक बुधिये हेरा गेलनि। एकटा आर गप्प सुनू, यैह पिछले शनि दिनक बात छैक, अन्त्याक्षरी चलैत रहैक, एक सँ बढ़िकए एक कटगर फिल्मी गाना सब नेना लोकानि गबैत छल, अचानक 'य' पर एकटा दल अटकि गेलैक...... एकटा बच्चा उठल आ कहलक, "यह लघु सरिता का बहता जल, कितना शीतल, कितना निर्मल.......।"

एकटा मास्टर साहेब ओहि बच्चाकें लगमे बजौलकनि आ कहलथि-- "अहाँ काल्हिये ने अपन मम्मी-पप्पाक संग सिनेमा देख' सहराता गेल रही, ओहि सिनेमाक गाना, ये गोरी गोरी बाँहे, ये तिरछी तिरछी.......,बिसरि गेलहुँ ? बड़ भोदू छी अहाँ।"

दुभि रानीक कथा चलितहि रहनि की एहि बीचमे हमरा एकटा आर नारीक कर्कश स्वर सुनाए पड़ल... "गै माय के छियै ई मुनसा! ऐतेक कालसँ एतय की क' रहल छैक? बुझैत नहि छैक जे ई लोक-बेदक, बाहर-भीतर करबाक बेर छैक?"

हमर ध्यान ओमहर गेल, अन्हारमे बुझा पड़ल जे तीन-चारिटा स्त्रीगण एम्हरे बढ़लि चलि आबि रहल छलीह। हम जा एमहर ताकी ताधरि दूभिरानी निपत्ता ! हमहुँ उठि कए घर दिस चलि देलहुँ।

ओहि भरि राति हमरा निन्न नहि भेल। कारण छल जे हम ई निर्णय नहि क' सकलहुँ जे ओ सरिपहुँ दुभिए छलीह आ कि हमरा मोनक भ्रम ? जतेक सोचैत गेलहुँ ओतेक ओझराइते गेलहुँ, मुदा एकटा बात हमरा मोनमे घर क' लेलक जे ई घटना एकटा कथाक रूप अवश्य ल' सकैत अछि। काल्हिए हमरा मैसूर जेबाक रहय। सोचलहुँ एकर पांडुलिपि बना कए कोनो पत्रिकाक संपादक लग प्रेषित क' देबैक, जँ ई कथा छपि गेल तँ हमहुँ अपन सीना तानि कए कहब जे "हम मैथिलीक कथाकार छी" सोझे-सोझ मैथिलीक एम.ए., पी-एच.डी. कहयलासँ कोनो प्रतिष्ठा नहि। मैथिली पढ़ि जँ मैथिलीक कथाकार, साहित्यकार नहि कहयलहुँ, तँ मैथिली पढ़बे किएक कएलहुँ ? हँ एकटा समस्या तँ रहिये गेल, एहि कथाक शीर्षक की दिऐक ? चलू जेहने कथा तेहने शीर्षक, 'दूभि'।

जा ग' जाग' महादेव !

मिथिला, अनादिकालसँ धर्म, शिक्षा, साहित्य संस्कृति आदिक विशिष्टताक लेल अद्वितीय रहल अछि। एतय एक-सँ बढ़ि कए एक मुनि, मनीषी, तपस्वी भेल छथि, जिनका सभक उपदेश आ आचरण आइयहुँ ओतबे प्रासंगिक अछि। मुदा अनेकानेक कारणसँ आइ बड़ तीव्र गतिएँ सामाजिक विवर्तन भ' रहल छैक। एहि बदलैत सामाजिक परिस्थितिमे कोन वस्तु आ संस्कार ग्राह्य छैक आ कोन अग्राह्य ताहि विषयकेँ ल' क' लोकमे भयंकर द्वन्द्व आ संघर्षक स्थिति उत्पन्न भ' गेल छैक। मूल रूपसँ पाश्चात्यवादी सभ्यताक अन्धानुकरण ओ आन-आन कारणेँ, लोक अपन सभ्यता, संस्कृति, सँ विमुख भेल जा रहल अछि, परिणामस्वरूप, समाजमे भूख, भय, भ्रष्टाचार, राजनीतिक अपराध, बेरोजगारी आदिक समस्या दिनानुदिन गंभीर भेल जा रहल छैक। लोक एहि सभ समस्यासँ मुक्तिक लेल अपस्यांत अछि, बैचैन अछि। ओकरा कोनो रस्ता नहि भेटि रहल छैक। मानसिक अशांतिक शांतिक लेल लोक भगवानक शरण मे आबि रहल अछि (ओकरा लागै छैक आब यैह टा रस्ता बचि गेल अछि)। यैह कारण अछि आइ जतय देखू ततहि थोकमे धर्मक दोकान खुजि गेल छैक। हमरो संग सैह भेल, विभिन्न प्रकारक विसंगति आ झंझावात तेना ने हमरा नचार क' देलक जे हमहुँ अंततः धर्महिक शरण मे गेलहुँ।

ई संयोगे छल जे ताहिदिन हमरा सभक दिस धर्मक एकटा टटका दोकान खुजल छलैक- जाग' जाग' महादेव! मिथिलाक लेल ई कोनो नव धर्म आ नव संप्रदाय नहि छलैक, हँ, एकटा बात नव अवश्य कहि सकैत छी जे एहिमे बस अहाँ देवाधिदेव महादेवकेँ 'गुरू' बना लिअ, आ कि सभ समस्या छू मंतर। हम अपन अनुभव कहि रहल छी, जहिया सँ हम महादेवकेँ गुरू बनैलियन्हि हमर सभटा समस्या सरिपहुँ छू-मंतर भेल जा रहल अछि। महादेवमे दम छनि, से हमर धारणा दिनानुदिन दृढ़ भेल जा रहल अछि। यैह कारण थिक

जे कतहुँ अबैत-जाइत, माने जतय कतहुँ महादेवक मंदिर, फोटो देखैत छी, मोने-मोन जाग' जाग' महादेव! कह' लागैत छी।

यैह परसूका बात थिक हमरा एक आवश्यक काजे गामसँ सहरसा जयबाक रहय, ने जानि कोन कारणेँ ओहिदिन गाड़ी-घोड़ा बन्न छलैक, हम पयरे चलि देलहुँ। हमरा गामसँ लगभग 10 कि.मी. क दूरी पर महादेवक एकटा मंदिर छैक, बड़ भव्य, प्राचीन आ सिद्ध। गरमीक दिन रहैक, रौद कपारे पर लागैक। सोचलहुँ मंदिरमे जाग' जाग' महादेव ! क' लैत छी, आ कने काल प्रांगणक एहि विशाल बरक गाछतर चबूतरा पर सुस्ता लेब। मंदिरमे माथ टेकि चबूतरा लग आबि बैसि गेलहुँ। हमर मोन कने अशांत रहय तैँ ओतय ध्यानक मुद्रामे बैसि महादेवक स्मरण कर' लागलहुँ, आकि एहन आभास भेल जे सरिपहुँ साक्षात् महादेव हमरा समक्ष आबि गेलाह।

आबितहि पुछलैथ__की यौ शिष्य! की हाल-चाल ?

हम कहलियनि-- हे गुरू! से तँ अहाँ जनिते छी ?

ओ कहलनि-- चिन्ता जुनि करू शिष्य! सभ समाधान भ' जेतैक।

हम कहलियनि-- हे महादेव! जखन अहाँ लग सभ समस्याक एतेक त्वरित उपचार अछि तखन अपनेक एहि संसारमे एतेक प्रकारक रोग-शोक, व्यभिचार, अनाचार, अत्याचार आदि किएक ?

ओ कहलनि-- शिष्य, ''मोन चंगा तँ कठौत मे गंगा'' अहाँ पहिने हमर अस्तित्वकेँ स्वीकार करैत छलहुँ ? नहि ने? मुदा आइ जखन अहाँक मोनक श्रद्धा जागृत भेल तँ देखिये रहल छी जे हम साक्षात् अहाँक समक्ष उपस्थित छी।

हम कहलियनि-- एकर माने भेल जे अहाँ अपन शिष्ये टा पर कृपा करैत छी, वैह टा अहाँक संतान थिक, आ आर सभ ? की ई प्रश्न अहाँक 'जगतपिता' उपाधि पर प्रश्न चिह्न नहि अछि?

ओ कहलिन-- कथमपि नहि शिष्य हमरा लेल सभक मान बरोबरि अछि। जाधरि धर्म आ कर्मक गणितकेँ लोक नहि बूझत ताधरि ई समस्या, ई भेद रहबे करतैक। एहिमे हमर कोन दोख। अहीं जे अपन सभ काज-धन्धा छोड़ि कय एतय दिन-राति जाग'जाग' महादेव! करैत रहब तँ अहाँकेँ की बुझाइत अछि जे महादेव....।

हे महादेव! हमरा सन मन्द-बुद्धि, धर्म आ कर्मक तत्त्वकेँ कोना बुझत? हम तँ बस एक्कहिटा चीज बुझैत छी, महादेव! आर किछु नहि।

बस! बस! बस! अहाँक श्रद्धा, विश्वास आ सत्कर्म सैह थिकाह महादेव, सत्यं शिवं सुन्दरम्।

हे महादेव! ई बूझब तँ हमरालेल आर जटिल भ' गेल, सत्य, सुंदर आ शिव केँ बुझ'क सामार्थ्य हमरा कतय?

अपन संस्कार, संस्कृति, लोकाचार, भाषा-साहित्य, धार्मिक आचरण, आदिकेँ बुझू, यैह सत्य थिक, यैह सुंदर थिक, यैह शिव थिक।

बेस, आब कने-कने बुझलहुँ। हे महादेव! आर सभ छोड़ू एकटा बात बताऊ,

एहि गामक अधिकांश लोकनि पढ़ल-लिखल छथि, ज्ञानी छथि, अपन परंपरा, अपन संस्कारादिक प्रति जागरूक छथि तकर पश्चातो हमरा बुझने कतहुँ ने कतहुँ........।

औ शिष्य! आइ-काल्हि जे जतेक बेसी पढ़ल-लिखल लोक छथि से ततबे बेसी मूर्ख।

ई अहाँ की कहि रहल छी, एहन भ' सकैत अछि जे कखनहुँ-कखनहुँ पढ़लो-लिखलो लोकसँ गलती भ' जाइत छैक, मुदा तकर जतेक परिमाण अहाँ बता रहल छी से बात हमरा नहि पचि रहल अछि।

औ शिष्य! कहब तँ छक द' लागत। ई कोनो गुटका (पान-मसाला) छियैक जे पचि जायत। अहीं कहू, अहाँ जे भरि दिनमे 10 पुड़िया गुटखा खा जाइत छी से कोना? ओहि पुड़िया पर नहि लिखल छैक जे ''तम्बाकू चबाना स्वास्थ के लिए हानिकारक है''। हे ओहि महाशयकेँ देखियौक, ओ राजधानीक जानल-मानल डॉक्टर छथि, घंटे-घंटे पर सिगरेट (ओहो किंग साइज) पीबैत छैक, जखन की सभटा सिगरेटक पैकेट पर लिखल रहैत छैक, ''धुम्रपान स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है'' एतबे किएक, हे ओमहर ओहि होर्डिंग पर पढ़ियौक- ''सिगरेट पीने से कैंसर होता है, जनहित मे जारी, कैप्सटन फिल्टर, आखिरी कश तक मजेदार।''

(हमर माथ शरम सँ झुकि गेल) से जे हो मुदा एहिठामक लोक धर्माचारी आ........।

महादेव–हँ, हँ, से त' अवश्ये, तहिया सँ ठीके आइ काल्हि हमर पूजा पाठ करयबलाक संख्या बढ़ि गेल अछि। मुदा ....।

मुदा की ?

आब लोकमे ओ भाव नहि रहलैक।

आब लोक हमर पूजा कर' नहि अबैयै, हमरासँ 'डील' कर' अबैये।

बुझलहुँ नहि, कने स्पष्ट करू।

की-की सभ स्पष्ट करी शिष्य! सम्पूर्ण सामाजिक व्यवस्थामे घून लागि गेल छैक। एकहकटा जँ फरिछा-फरिछा अहाँकेँ कह' लागी तँ कैक दिन धरि एहिना अहाँ केँ ध्यानमग्न रह' पड़त। जिज्ञासा कएलहुँ अछि तँ लिअ हम किछु 'डील' केर बानगी अहाँकेँ सुना दैत छी.....

एकटा (बालक)--- हे महादेव! बाप कहैत छलाह पढ़'क लेल तँ हम गुल्ली-डंडा खैलयबामे भरि साल मस्त रहलहुँ, एहिबेर कहुना पास करा दिय' तँ ......

एकटा नवयुवक - हे महादेव! एहिबेर देवघर जयबाकाल हमरा जाहि 'मालबम' सँ परिचय भेल छल तकरहिसँ हमर बियाह करा दिअ तँ.....

एकटा नवयुवती– हे महादेव! अहाँ हमरा कोनो नीक निर्देशकक सिनेमामे माधुरी दीक्षितक 'धक-धक' वला रोल दिआ देब तँ......

दोसर नवयुवती--- हे महादेव! अहाँक देल गेल रूप गुण सँ संपन्न रहितहुँ हमर बियाह नहि भ' रहल अछि, हमर माय-बाप विक्षिप्त भ' गेल छथि। एहि दुनियाँ सँ सबटा दहेजक दानव कँ एक्कहि दिन उठा लिअ तँ....

एकटा प्रौढ़– हे महादेव! जानैत-बुझैत 'मनीगाछी'क कोठा पर बेर-बेर जाइत रहलहुँ तँ आइ 'एडस' सन लाईलाज बीमारीसँ ग्रस्त छी–जँ अहाँ हमरा एहि सँ मुक्ति दिया दी तँ....

एकटा बेरोजगार– हे महादेव! पढ़ि-लिखि कए झाम गुड़ैत छी, जँ अहाँ हमरा एकबेर लादेनसँ भेंट करा दी तँ........

एकटा वृद्ध दम्पति- हे महादेव! अपनेक दयासँ हमरा बेटा-पुतोहुकँ कोनो कमी नहि, मुदा हमरा दुनू परानीक पेट ओकरा सभक लेल पहाड़ सदृश छैक। जँ अहाँ हमरा एहि जन्मसँ मुक्ति दिया दी तँ अगिला जनममे ....

एकटा राजनेता– हे महादेव! हमरा पार्टीक सरकार बन'मे एक्केटा सीट घटैत छैक। हम निर्दलीय महाप्रलय सिंह कँ तीन करोड़ टका देब' लेल तैयार छी अहाँ ओकर मति फेरि दिऔक, जँ हमर सरकार बनि गेल तँ.............

एकटा व्याख्याता– हे महादेव! भरि जिनगी चोरि आ जोगाड़क बलेँ नीक अंक सँ पास होइत रहलहुँ आब व्याख्याता छी। छौंडा सभकँ ततेक ने नेतागिरीक चस्का लगा दिऔक जे साल भरि महाविद्यालय आ विश्वविद्यालयमे ताला लटकले रहय। जँ एहन संभव भ' जाय तँ.....

एकटा अछूत- हे महादेव! एक्के हार-मांस, एक्के खून, तकरा पश्चातो लोक हमरा अछूत बुझैये। हमरा संग जे भेल से भेल हमरा बेटाकँ एहन दंश नहि झेलय पड़य। जँ एहन भ' गेल तँ....

एकटा शराबी --- हे महादेव! पीबैत-पीबैत, सभटा धन-सम्पति स्वाहा भ' गेल। तीन दिनसँ एक्को ठोप नहि भेटल अछि, हम अपन बेटी सुगियाकँ ओहि दारूवाला लग.....जँ एक्को बोतल दिआ दी तँ....

मैथिली (भाषा) हे महादेव! अहाँ तँ जानिते छी जे हमर गौरव, मान, मर्यादा, कहियो मिथालाकँ के कहए जगत्ख्याति प्राप्त कएने छल, मुदा आइ अपनहि घरमे हम उपेक्षित छी। ओना आइ काल्हि मैथिलीक लेल तथाकथित संघर्षकर्ता लोकानि एतयसँ दिल्ली धरि धरना-प्रदर्शन कर' चलि जाइत छथि, मुदा सबटा फुसि थिक, सबटा मिथ्याडंबर, तँ जाधरि हमरा अप्पन घरमे सम्मान नहि भेटत ताधरि हम अपन गौरवकँ पुनः प्राप्त नहि क' सकैत छी। जँ एहने स्थिति रहलैक तँ भ' सकैछ जे हम कहियो निर्वस्त्र भ' जाएब। हे जगतपति! अहाँ मैथिल लोकनिमे मैथिलीक प्रति नवजागृति आनि दिऔक। एहिसँ अहाँकँ सेहो लाभ हैत-- फेर कवि विद्यापतिक श्रुतिमाधुर्य नचारीसँ अहाँक मंदिरक वातावरण आप्लावित भ' जाएत। हम कंगालिन छी, हमरा अहाँकँ देबाक लेल किछु अछिए नहि, तँ हम की 'डील' करी ! हे महादेव सुतल किएक छी, जागू ! एहि अबलाक व्यथा सूनू-जाग' जाग' महादेव.....

मैथिली ततेक जोरसँ चीकरलीह जे हमर ध्यान दुटि गेल। ने जानि आब कहिया महादेव दर्शन देताह।

आह्वान

भारत भूमिक नवतुरिया
हमर कविताक आह्वान सनू
भ' तन्मय अपन कान खोलि
छथि बाजि रहल भारती से सुनू
हे भारत ! ई भारती थिक
अति विवश भाव भंगिमा नेने
हिल रहल ठोर किछु कहबा लेल
प्रेरित क' रहल किछु करबा लेल
कखनहुँ अहाँक कखनहुँ हमर
एहि लेल बाट निहारैत छथि
बस त्राहि-माम पुकारैत छथि
छथि कहथि देखू हमर ई दशा
शोणित सँ रंजित श्वेत वसन
नखसँ शिख धरि अछि जख्म भरल
लूटि रहल हमर अछि अमन-चैन
पंजाब,असम,गुजरात,आँध्र
कश्मीर सहित अन्यान्य प्रान्त
अछि सिसकि रहल भ' भयाक्रान्त
छल कहियो
उत्तुंग गर्वसँ हम्मर सिर
प्रकृति प्रदत्त पावन कश्मीर
केसरिया सेब क' रहल श्रृंगार
लहलह-हरियर बाग निशात
उज्जर बर्फशिला बाँटि रहल छल
शांतिकेर संदेश उधार
छल बहैत जतय शीतल समीर
चहुँदिस आब बरसैत अछि गोली
नहि खेलू, नहि खेलू रोकू ई खूनक होली
जाति-धर्मक उन्माद भड़का
जे उन्मादी अहाँकँ लड़ाबैत छथि
हुनकर तँ कुरसीक प्रश्न छैक
मुदा की यैह अहाँक मानवता थिक ?
(18-08-2008,मैसूर)

शीला सुभद्रा देवी (१९४९-)

कैकटा तेलुगु पद्य संग्रह प्रकाशित। १९९७ ई. मे तेलुगु विश्वविद्यालयसँ उत्तम लेखकक पुरस्कार प्राप्त।

तेलुगुसँ अंग्रेजी अनुवाद जयलक्ष्मी पोपुरी द्वारा जे निजाम कॉलेज, ओस्मानिया विश्वविद्यालयमे अध्यापन करैत छथि।

गजेन्द्र ठाकुर (अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद)।

पसीझक काँट

बाड़ीमे लगाओल पसीझक काँट गहना लेल
केना ओऽ सभ पसरैत अछि सोहड़ैत!
चुपचाप बुनैत रस्ता आच्छादित करैत स्थान।

भीड़-भाड़ सभठाम
सभ कोणमे काँटबला पसीझक झाड़
सभ, सभ रोकैत स्नेहक अनवरुद्ध प्रवाह
चिन्तन विखण्डित पड़ि काँटक मध्य
वाणी अवरुद्ध फँसि कोनो झाड़
मस्तिष्क उर्ध्वपतित चुपचाप
हृदय बनैछ मात्र एकटा अंग
आ मौन करैत राज यांत्रिक रूपे॥
मुनैत, बहत नहि बसाल एकताक
तेनाकँ ठुसैत
सभक आश कोनहुना निकसी आकाश।

मुदा की अछि विस्तृत खेत मध्य?
कतए गेल फूलक क्यारी फुनगैत मित्रताक
हिलबैत अपन माथ आमंत्रणमे?

कतए गेल ओ चाली सभ अपन तन्तुसँ बढ़ैत?
सभकेँ समेटैत ओ लता-कुञ्जक मंडप कतए गेल
छोड़ि मात्र अशोक आ साखुक वृक्ष
जे पसारि रहल आकाश मध्य अपन हाथ
नीचाँ देखैत विश्वकेँ
घासक पात सन तुच्छ?
यदि हम मोड़ी आ घुमी घोरैत अपनाकँ नोरमे
वेधए बला मोथा नहि भोकैत अछि मात्र पएर वरन् आँखि सेहो।
सभठाम लोक उन्मुक्त ठाममे
मानवीय सम्पर्कसँ घृणा करैत
परिवर्तित कएलक नगरकेँ सेहो बोनमे।
पसारैत काँट सभ ठाम
परिवर्तित भेल पसीझक झाड़मे
साँसक फुलब पसरैत चारू दिश
दोसराक संवेदना नहि आबए दैछ विचार
जिनगी भेल उसनाइत खेत सन।
इच्छा भागबाक पएर केने आगाँ।
आश्चर्य, मथि नहि सकैत छी, औँठा धरि।
देखि सकी जौँ अपनेकेँ मात्र
भीतरसँ बाहर पसीझक काँट मात्र।



शीतल झा

जनकपुर, नेपाल

विधानसभा, संघीय संरचना आ मिथिला राज्यक औचित्य

हिमालय पर्वत श्रृडखला करिब मध्य भागमे चीनक तिब्बतसँ दक्षिण, भारतक बिहार आ उत्तर प्रदेशसँ उत्तर आ पूर्व तथा पश्चिम बंगालसँ पश्चिम एकटा आयताकार देश नेपाल अछि। २४० वर्षपूर्व गोराखक एकटा लडाकू राजा पृथ्वीनारायण शाह हिंसक बलसँ दक्षिण पूर्व आ पश्चिमक देशसभपर आक्रमण करैत गेल आ सुन्दर उपत्यका काठमाण्डूसहित एकटा नमहर देश बनौलक। एकर सीमा दक्षिणमे कतऽ धरि रहैक, तकर आधिकारिक रुपसँ कतहु उल्लेख नहि अछि। खस शासकद्वारा शासित गोरखा राज्यक दमनपूर्ण विस्ताकरक वाद एकर नाम कहिया नेपाल रहल से निर्णायक प्रमाण नहि भेटैछ। दक्षिणमे मिथिला आ अवधसन ऐतिहासिक गणराज्यपर सेहो ई हिंसापूर्ण ढंगसँ षडयन्त्रपूर्वक आक्रमण कएलक। एहि क्रममे व्रिटिशकालीन भारतकद्वारा प्रतिरोध आ युद्ध कएल गेलाक वाद १८१६ क सुगौली सन्धिसँ ई वर्तमान सीमाङ्कित देश, बनल जाहिमे १८६० क सन्धिसँ दानस्वरुप प्राप्त पश्चिमक ४ जिलासँ एकर वर्तमान स्वरुप निर्धारित भेल।

ड़ड देशक राजनीतिक शासन व्यवस्था राजतन्त्रात्मक छैक आ एकर राज्य संरचना एकात्मक। एकर शासकीय प्रवृति निरंकुशात्मक छैक आ सामाजिक आर्थिक व्यवस्था सामन्ती छैक।

ड़ड एकर सामाजिक मानवशास्त्रीय संरचना ९क्यअष्य(बलतजचयउययिनष्अब क्तिचगअतगचभ० मंगोलाइड केकेशियन प्रजातिसँ बनल अछि, जाहिमे निग्रोवाइड आ एस्टोल्वाइड प्रजाति सेहो अल्प संख्यामे बसल अछि। कैकेरियनक आर्य शाखा तँ मुख्य रहैत अछि।

ड़ड हिमालय क्षेत्र आ पहाड क्षेत्रमे लिम्बु, राई, तामाङ, नेवार, मगर, गुरुङ, शेर्पा जाति तथा जनजातिक वास छैक तँ दक्षिणक समतल मैदानी भूभाग तराइमे आर्यमूलक जाति जनजातिसभक वास छैक। दुनू क्षेत्रमे पिछड़ल जनजाति, आदिवासीसभक वास सेहो छैक, जाहिमे मिश्रित मूलक संख्या उल्लेखनीय छैक।

मूख्यतः कर्णाली प्रदेशक आर्य मूलक खस जातिक गोरखा राज्य वर्तमान सम्पूर्ण नेपालपर शासन करैत अछि। तँ ई राजनीतिक, प्रशासनिक, न्यायिक प्रभाव विस्तारक क्रमे प्रत्येक जातीय क्षेत्रमे प्रवेश कऽ सामाजिक, भाषिक, जातीय संरचनाकँ तोड मडोर कऽ देने छैक आ नेपालकँ कथित रुपँ राष्ट्र कहि प्रस्तुत करैत छैक। वस्तुतः सामाजिक विकासक अध्ययनमे देखल जाए तँ नेपाल एकटा नहि, विभिन्न राष्ट्रसँ बनल एक देश अछि, जतऽ एक्कहिटा खस जातिक एकल राज्यशासन छैक।

२. मिथिला

नेपालक दक्षिणी समतल भूभागकेँ तराई अथवा मधेश कहल जाइत छैक। एतऽ अवध आ मिथिलासन पौराणिक महिमामण्डित ऐतिहासिक समृद्धताप्राप्त गणराज्य छल, जकरा मुगल व्रिटिश शासन दमन करैत गेल आ अन्ततः शाहवंशीय राजाक सङ्ग बाँटि लेलक। १८१६ क सन्धि मिथिलाकेँ खण्डित कएलक। जाहि मिथिलाक सीमा कोशीसँ पश्चिम, गण्डकसँ पूर्व, गंगासँ उत्तर आ हिमालसँ दक्षिण छलैक, तकर आइ इतिहास छैक, भूगोल नहि छैक। जेँ कि एकर भाषा, संस्कृति, जीवित छैक तँ बाटल बाँटल शरीरक आधारपर कहि सकैत छी सिमरौनगढ़सँ पूर्व, झापासँ पश्चिम आ महाभारत महाड़सँ उत्तर मिथिला जीवित अछि अहिल्याजकाँ जीर्णोद्धारक प्रतीक्षामे अछि, उद्धारक बाट जोहि रहल अछि।

३. संविधान

देशमे शासन व्यवस्था कायम करबाक लेल बनाओल गेल मूल कानूनकँ संविधान कहल जाइत छैक। सभ कानून, ऐन, नियम एकरे सीमाक भीतर रहि बनाओल जाइत छैक।

लोकतन्त्रक मुख्य आधार आ एकटा प्रमाण संविधान होइत छैक।

नेपालमे २००४ सालमे पहिलबेर कोनो संविधान नामक चीज प्रस्तुत भेल रहैक। ओना ताहिसँ पूर्व १९१० मे एकटा ऐन सेहो बनल रहैक। तत्पश्चात २००७ सालमे अन्तरिम शासन विधान आ २०१५ सालमे नेपाल अधिराज्यक संविधान आएल। २०१५ सालक संविधान एकदलीय पञ्चायती व्यवस्था देलक आ तकर अन्त्य २०४६ सालक आन्दोलन कएलक। २०४७ सालमे एकटा अन्तरिम सरकार बनाकऽ तकराद्वारा नेपाल अधिराज्यक संविधान २०४७ लागू कएल गेल। ई सभ संविधान राजतन्त्रात्मक एकात्मक, एकात्मक अछि आ राज्य सत्तापर, राज्यपर, प्रशासनपर एक धर्म, एक भाषा, एक जातिकँ प्रमुखता आ अधिकारक मान्यता देने छल। राजाद्वारा प्रदत्त ओ संविधानसभ राजाक अधिकारकँ सर्वोपरि मानैत आएल छल। मुदा ०६२÷०६३ मे भेल जनआन्दोलन भाग २ सँ ई मान्यता ढहैत गेल आ एखन देश संविधानसभाद्वारा अर्थात जनताक प्रतिनिधिद्वारा निर्मित संविधानक निर्माण करत।

४. संविधानसभा

संविधान बनएबाक लेल जनताद्वारा चुनल प्रतिनिधिसभक समूह एवं सभाकँ संविधानसभा कहल जाइत छैक। सार्वभौमसत्ता सम्पन्न जनता अपनाकँ अनुशासित आ शासित रहबाक लेल जाहि तरहक शासन व्यवस्थाकँ चलएबाक लेल अपने पठाओल प्रतिनिधि द्वारा कानूनक ग्रन्थ तैयार करबाबैक आ घोषणा करबबैक, ताहि जनप्रतिनिधिमूलक सभाकँ संविधानसभा कहैत छैक।

५. संविधानसभाक अनुभव

(क) उत्तर अमेरिका : ब्रिटेनद्वारा शासित अमेरिकाक १३ राज्य स्वतन्त्र भेलापर ५५ सदस्यीय संविधानसभा निर्माण कऽ तकर अनुमोदन अमेरिकी जनतासँ करबाकऽ अप्रिल ३०, १९८९ मे घोषणा कएलक।

(ख) फ्रान्स : अपनहि देशक सामन्ती नायक सम्राट सोलहम लुइक विरुद्ध संविधानसभा वना १७९१ मे लागू कएलक।

(ग) रुस : १९१८ मे संविधानसभा तँ बनल मुदा संविधान लागू नहि भऽ सकल।

(घ) भारत : ब्रिटिस शासनसँ मुक्तिक लेल ३८९ सदस्यीय संविधानसभा बनल मुदा पाकिस्तानक विभाजनक बाद रहल २९९ सदस्यीय सभाद्वारा आ डा.राजेन्द्र प्रसादद्वारा ई घोषित भेल।

(ङ) दक्षिण अफ्रिका : गोर आ कारीक बीच भेल संघर्ष संविधानसभाक मार्फत अन्त्य भेल। सर्वपक्षीय सम्मेलनमार्फत ४९० सदस्यीय संविधानसभाक निर्माण भेल आ संविधान बना जनअनुमोदन कराओल गेल आ घोषणा कएल गेल।

विभिन्न देशक अनुभवक आधारपर नेपालमे बननिहार संविधानसभामे निम्न तरहक विशेषता होएब वाञ्छनीय रहितैक —

(क) जनसंख्याक अनुपातमे निर्वाचन क्षेत्र निर्धारण कएल जाइक आ प्रत्येक जाति, जनजाति, अल्पसंख्यक, दलित, महिला, मधेशीक ओहि अनुपातमे क्षेत्र आरक्षित कऽ प्रत्यक्ष निर्वाचनसँ जनप्रतिनिधिक पठा संविधानसभाक निर्माण कएल जइतैक।

(ख) अन्तरिम संसदसँ संविधान मसौदा तैयार कऽकऽ ओकरा जनमतसंग्रहद्वारा निर्माण कएल जइतैक, मुदा प्रत्यक्ष मतादान वा समानुपातिक प्रणाली दुनू कायम कएल गेलैक। एहिसँ अल्पविकसित देशक जनतामे भ्रम आ अनावश्यक गड़बड़ी उत्पन्न मऽ सकैत छैक।

आब पूर्ण समानुपातिक प्रणाली बहुतो राष्ट्रिय दलक संगहि प्रत्येक जातीय, जनजातीय, क्षेत्रीय समूहकसभक सेहो मांग रहलाक कारण ओकरे लागू कएनाइ सार्थक संविधानसभाक आधार तैयार कऽ सकैत अछि।

६. समावेशीकरण तथा समानुपातिक समावेशीकरण

सत्ताक स्वरुप, शासन, प्रशासनमे देशक प्रत्येंक जाति, जनजाति, अःल्पसंखयक जाति, विभिन्न भाषिक समूह, सांस्कृतिक समूह, आदिवासी, महिला, क्षेत्र आदि सभक प्रवेश नहि भेल तँ शासन पद्धति जनासँ दूर रहि जाइत अछि आ ताहूमे लोकतन्त्र तें मात्र कथित सभ्रान्त वर्गक खास जातिक हाथक दमनक माध्यम बनि जाइत अछि। तँ जातीय, भाषिक संख्याक समानुपातिक समावेशीकरणसँ मात्र लोकतान्त्रिक शासन पद्धति मजबूत आ दीर्घजीवी भऽ सकैत अछि।

(क) जनसंख्याक समानुपातिक निर्वाचन क्षेत्र निर्धारण कऽ ओहि क्षेत्रसँ ओहि ठामक मूल जाति, भाषाभाषीक मात्र प्रतिनिधित्व कराओल जाए।

(ख) जनसंख्याक समानुपातिक रुपमे सरकारक प्रत्येक अंगमे अथवा न्यूनाधिक रुपमें सभ क्षेत्र, वर्ग, जाति, लिगंक उपस्थित कराओल जाए।

(ग) सुरक्षा, प्रहरी, प्रशासन, राजनीति, राजनीतिक संस्था प्रत्येकमे समानुपातिक रूपमे प्रवेश कराओल जाए वा न्यूनाधिक रुपमे प्रारम्भ कराओल जाए आ किछु जातिक लेल प्रारम्भमे आरक्षित कएल जाए।

एहि तरहँ देखलापर आगामी शासन पद्धति समानुपातिक होएबाक लेल संविधानसभा समानुपातिक भेनाइ आवश्यक अछि आ तकरा लेल अन्तरिम संसद आ अन्तरिम सरकार, निर्वाचन आयोगकँ सेहो समानुपातिक भेनाई आवश्यक अछि आ एहि तरहक सुरक्षाक व्यवस्था कएनाइ सेहो आवश्यक अछि।

७. एहि तरहँ वनल संविधानसभा नेपालक नव राज्य संरचना कऽ सकैत अछि आ संघीय संरचनादिस लऽ जा सकैत अछि —

(क) राज्य (प्रान्त, प्रदेश) : भाषा, संस्कृति, जाति, धर्म आदिक आधारपर बनल अथवा बनाओल राजनीतिक,

आर्थिक, प्रशासनिक अधिकारसम्पन्न राजनीतिक भूक्षेत्रकँ राज्य कहैत छैक।

(ख) संघ ــ एहन, राज्य सभस वनल राजनीतिक शक्ति सम्पन्न केन्द्रीय सत्ता के संध कहै छ। आंशिक सार्वभौमिकता, स्वतन्त्रता, आत्म निर्णयक अधिकार प्राप्त सभ मिल क सार्वभौम सत्ता केन्द्रके प्रदान करैछ आ एहि राज्य संरचना के संघीय संरचना कहल जाइत अछि।

८. नेपाल संघीय होएबाक आवश्यक अछि ــ कारण :ــ

(क) नेपाल विभिन्न प्रजाति, जाति, जनजाति, धर्म, भाषा, संस्कृति के देश छै। एहि सभ के देशक मूलधारमे लएवाक लेल।

(ख) लोकतान्त्रिक व्यवस्थाके समानुपातिक समावेशीकृत करबाक लेल।

(ग) संघीय सरकार आ राज्य सरकार भेला स प्रत्येक नागरिक अपन योग्यता व्यवस्था अनुकूल उपयोग करबाक लेल।

(घ) राज्य भीतर अनेक प्रशासनिक न्यायिक निकाय विकेन्द्रित विकाश राज्य क्षेत्रक कार्य सम्पादन ओहि राज्यक जनताके निर्णय अनुसार हौइछै।

(ङ) ओहि राज्यक भीतरक प्राकृतिक सम्पदा जल, जमीन, जंगल खनिज पदार्थ पर ओहि राज्यक जनताक अधिकार होइछ, ओकर अधिकतम प्रयोग ओतहिक जनता करैछ।

(च) उदयोग आदि विकास कार्य पर राज्यक नियन्त्रण रहैछ आ ताहि के लेल अन्य राज्य स, विदेश स सम्बन्ध स्थापित क सकैअ।

(छ) ओहि राज्यक प्रमुख भाषा प्रशासन, न्यायिक क्षेत्र आदि मे निर्वाध रुपमैँ प्रयोग क सकैत अछि जहि स राज्यक जनता सामाजिक न्याय, मानवीय विकास स वंचित नहि भ सकैत अछि।

(ज) अपन मातृभाषा, स्वत : कायम भेल सम्पर्क भाषा, ग्रहित शिक्षाक भाषाक सुविधा भेला सँ प्रशासनिक, शैक्षिक वैदशिक सुरक्षा सेवा आदि मे नीक संख्या मे राज्यक युवा, शिक्षित वर्ग प्रवेश होएत।

(झ) कोनो खास प्रजातिक, राष्ट्रक, जातिक, जनजातिक, भाषाभाषिक, धार्मिक, सांस्कृतिक समुदायक इतिहास, संस्कृति, भाषा, भेष, कला , साहित्य, परम्परा कैँ सरक्षण आ सम्बर्धन कए पहिचान के सुनिश्चत आ सुरक्षित करबाक लेल।

(ञ) कोनो प्रजातीय, जातीय, धार्मिक, भाषिक समुदाय के दोसर वर्ग स शोषण दमन स मुक्ति के लेल।

(ट) पृथकवादी आन्दोलन के रोकवाक लेल।

(ठ) एकात्मक राज्य व्यवस्था परुर्ण रुप स असफल भगेल अछि। तै संघीय संरचना आवश्यक अछि।

९. संघीय संरचनाक आधार :ــ

संघक भीतर राज्यक संरचना क आधार निम्न होइछ

(क) ऐतिहासिक रुप स निर्मित राष्ट्र (..... जाति) के आधारपर

(ख) प्रकृतिक रुपसँ निर्मित भूखण्डकैँ आधार पर।

(ग) जातीय वाहुल्यता के आधारपर

(घ) धर्म अथवा धार्मिक सम्प्रदायक आधार पर

(ङ) संस्कृतिके आधार पर अथवा सांस्कृतिक सामीप्यताक के आधार पर।

(च) भाषा क आधार पर

(छ) प्रकृतिक सम्पदाक आवण्टनके आधार पर।

(ज) विकसित नया अवस्था, सोचक, आधारपर।

१०. एहि आधारसभ के देखैत आ नेपालमैँ चलैत जातीय आन्दोलन सभ कैँदेखैत आ ओकर मांग सभ कैँ देखैत नेपालकैँ निम्न संघीय राज्यमे विभाजित कएनाई आवश्यक छै :ــ

(क) लिम्बुवान किरांत राज्य
(ख) खुम्बुवान
(ग) नेवा राज्य नेवार राज्य
(घ) तामाङ साम्बलिंग
(ङ) तमुवान गुरुङ राज्य
(च) मगरात मगर राज्य
(छ) खसान खस राज्य
(ज) थरुहट थारु राज्य
(झ) अवध अवधी राज्य
(ञ) भोजपुरी भोजपुरी
(ट) मिथिला मिथिला (विदेह)

संघीय विधाजनक लेल नया, तथ्यपूर्ण जनगणना आवश्यक अछि, आ ऐतिहासिक रुप स वसल जाति के सामूहिक निर्णय के आधारपर राज्यक नामकरण कएनाई आवश्यक अछि।

सम्पूर्ण नेपाल मे खस जातिक मिश्रित अवस्था भेलो स कोनो जातीय क्षेत्रक इतिहास आ ओकर भावना नहिं मेटाएल अछि।

११. मिथिला ــ संघीय संरचनामे मिथिला राज्य किएक चाही :ــ

(क) मिथिला प्रागऐतिहासिक भूमि अछि आ पुराणवर्णित देश अछि।

(ख) मिथिला आर्यजातिक आधार क्षेत्र आ आर्य संस्कृतिक निर्माण भूमि अछि।

(ग) कोशी गण्डक, गंगा, हिमालय के विचमैँ स्थित ई भूमि निश्चित भूखण्ड प्राप्त कएने अछि।

(घ) ऐतिहासिक कालखण्डमे एकरापर अनेक आक्रमण होइतोमे ई आर्य जातिक वाहुल्यताक क्षेत्र छै।

(ङ) एकर अपन वहुत समृद्ध संस्कृति छै।

(च) एकर भाषा हजारौं वर्ष पूर्वक इतिहास देखवैत अछि आ वहुत समृद्ध अछि।

(छ) मिथिला गणराज्यक इतिहासक साक्ष्य अछि।

(ज) एकर खास आर्थिक जीवन प्रणाली छैक।

(झ) सामुहिक, देवी देवता स ल ''क'' पारिवारिक देवता प्रति आस्थाक संस्कार छै।

(ञ) मिथिलामे अखनो लोक निर्मित, नियम कानून छै समग्रमैँ मिथिला के एकटा सझिया मनोभावना छैक जाहिस ई एकटा राष्ट्र छै आ एकरा संघीय संरचनामे राज्य होएबाक पूर्ण नैसर्गिक अधिकार छै।

(क) मिथिलाक सम जातीके,

राजनीतिमे, प्रशासनमे समानुपातिक उपस्थिति के लेल।

(ख) उद्योग, कृषि, पर्यटन, जंगल, जल सभ स अधिकतम् लाभ, लेबाक लेल।

(ग) नदी नियन्त्रण, सिंचाई सडक वाँध, विद्युत आदि के लेल संघीय सरकार स आ विदेश स सम्बन्ध स्थापित कए मिथिला वासी के उत्थान लेल।

(घ) मिथिला स उठाओल कर ... के उचित व्यवस्थापन कए राज्यक द्रुत विकाश लेल।

(ङ) मिथिलामे प्रयोग होइत सभ भाषा मे सरकारी तथा गैर सरकारी कार्यालय सभमे कामकाज करवाक लेल।

(च) सरकारी सेवामे कामकाज करबाक अवसर के लेल। अर्थात वेरोजगारी समस्या समाधानमे सहयोग करवाक लेल।

(छ) मिथिलाक पावनि तिहार मे छुट्टी पएवाक लेल।

(ज) मिथिलाक दलित, उत्पीडित, पिछडल वर्ग, जनजाति आदिवासी, महिला, अल्प संख्यक कँ लेल विशेष अवसर के लेल।

(झ) मिथिलाक लोकगाथा (सहलेश, लोरिक) लोकनृत्य लोकधुन लोककला, लोकगीत, लोकनाट्य आदि के रक्षा आ प्रचार प्रसारक लेल।

(ञ) पौराणिक मिथिलाक राजधानी जनकपुर सहित मिथिलाक एक खण्ड, एकर लिपि, साहित्य भाषा, संस्कृति जीवन शैली सभ जीवित अछि तै रक्षाक लेल आ विश्वस्तर मे एकर सभ्यताके, विशेषताके फैलावक लेल।

(ट) नेपाल मे भेल कोनो लोकतान्त्रिक आन्दोलन, जातीय मुक्ति के आन्दोलनमे मिथिलाके अग्र, उग्र भूमिका रहलैक, सपूत वलिदान देल कै तै संघीयता के लेल अधिक रक्त श्राव रोकवाक लेल।

१२. मिथिला राज्यक सीमा :___

(क) प्राचीन, मिथिलाक सीमा छलैक उत्तरमे हिमालय, दक्षिणमे गंगा, पूर्वमे कोशी, पश्चिम मे गंडक। ई मिथिला १८१६ क सुगौली सन्धि पश्चात् खंडित भेल। अखन एकर जीवित भूगोल पर जीवित इतिहास छै, जीवित लिपि भाषा, जीवित संस्कृति जीवन्त जिवन शैली, जीवन्त मनोभावनाक अधिकार अनुसार सीम्रौन गढ स पूर्व, झापा स पश्चिम महाभारत पर्वत श्रृंखला स दक्षिण आ नेपाल भारत वीचक सीमा स उत्तर मिथिला छैक, आ मिथिला राज्य होएबाक चाहि।

(ख) झापा मधेश मे रहितो मे एत सतार, राजवंशी जनजातिक बसोवास छैक, आ ओकर अपन इतिहास, संस्कृति, मांग आ संघर्ष छै तै ओतए, नव आगन्तुक खस भाषी के छोडि ओकर सभके आत्म निर्णयके अधिकार अनुसार मिथिलामेँ समाहित कएल जाए अथवा स्वायत्तता देल जाए।

(ग) वारा, पर्सा भोजपुरी भाषाक क्षेत्र छै। मैथिली भाषा स फरक छै परन्तु एकर संस्कृति, आर्थिक जीवन मिथिला के समान छै। खसवादी सत्ताके दृष्टिकोण व्यवहार एकरो प्रति ओहने छै तै एकरो आत्मनिर्णय के आधारपर मिथिला मे समाहित कएल जाए अथवा स्वायत्तता देल जाए।

१३. मधेश आ मिथिला :___

(क) मेची स महाकाली तकके सम्पूर्ण समतल मूमि __मधेश एकहि सत्तास दमित अछि, दलित अछि, उत्पीडित अछि, प्रताडित अछि, उपेक्षित अछि। सम्पूर्ण मधेशी एकहि मनोविज्ञान एकहि मनोदशा लक जीवित अछि। एकरा प्रतिक शोषणक स्वरुप समान छैक तै तकर संघर्षक निशाना एकहिटा भाषीक वर्ग छै।

(ख) खस प्रभुत्ववादी सत्ता, मैथिली, भोजपुरी अविधि कहिक उपेक्षा, अवहेलना नहि करे छै समष्टिमे मात्र मधेशी कहै छै।

(ग) थारु जातिके खस शासक पहाडी नहि बुझै छै आ थारु अपना के मधेशी बुझ स भय महसुस करै छै। तथापी ओ संघीयता के संघर्षमे प्रमुख शक्ति भए सकैतधै छै। आ इएह सोच स मधेशमे वसल प्रत्येक जनजाति, द्रोणवार, सतार राजवंशी, झागड सभके देखनाइ आवश्यक छै आ ओकरा सबके एहि संघर्षमे स्थापित कएनाई आवश्यक छै।

(घ) मधेशक आन्दोलन खस सत्ता के विरुद्ध राजनीतिक आन्दोलन छै आ मिथिलाक आन्दोलन माथिक, सांस्कृतिक, जातीय आन्दोलन निहित राजनीतिक आन्दोलन छै तै संघीयता के आन्दोलन के अन्तरवस्तु लेने छै।

(ङ) मधेश आन्दोलन केन्द्र स्थल मिथिला क्षेत्र रहैत अछि आ मानव अधिकार राजनीतिक अधिकार प्राप्तिके आन्दोलन के केन्द्र सेहो मिथिला क्षेत्र रहैत अछि। तै मधेश आन्दोलन के मिथिला आन्दोलन स जोडनाई आ मिथिला आन्दोलन के मधेश आन्दोलन के रुपमेँ विकसित कएनाई रणनीतिक सोच राखव आवश्यक छै।

१४. मिथिला आ गणतन्त्र :___

मिथिला राज्यक लेल अथवा मिथिलाक मुक्तिके लेल नेपालमे संघीय शासन आवश्यक शर्त छै। संघीय शासन के लेल गणतन्त्र आ लोकतन्त्र आवश्यक शर्त छै आ अन्ततः लोकतन्त्र के स्थापनाके लेल, एकर सशक्तता के लेल, एकर दीर्घायु के लेल गणतन्त्र आवश्यक छै।

१. गणतन्त्र __जन्मक आधारपर विशेषाधिकार सहित शासक विना के शासन पद्धति सत्ताक स्वरुप के गणतन्त्र कहैत छै। सार्वभौमिक जनता जनप्रतिनिधि द्वारा राष्ट्र प्रमुख निर्माणक पद्धति के गणतन्त्र कहैत छैक अर्थात् राजा विना के शासन पद्धति।

२. नेपाल गणतन्त्रात्मक देश होएबाक चाही __कारण ?

(क) कथित एकिकरण वलातु सैनिक वल स हिंसा द्वारा भेल छै।

(ख) राजतन्त्रक मूल चरित्र निरंकुश, निर्मम, अत्याचारी होइत आएल छै।

(ग) सत्तामे, सेनामे, प्रशासनमे, न्यायालय दमनकारी नीति स पकड वना

क आम वर्ग कँ निर्मम शोषण दमन करैत छै।

(घ) कोनो प्रकारक, नया सोच, वैज्ञानिक चिन्तन जनअधिकार आ प्रगति विरोधि भेनाई राजतन्त्रक मूल ऐतिहासिक चिन्तन आ चरित्र छै।

(ङ) एक देश एक राज्य, एक राज्य एक राष्ट्र, एक राष्ट्र एक जाति, एक जाति एक धर्म, एक धर्म एक संस्कृति, एक संस्कृति एक भाषा, एक भाषा एक भेष आदि प्रकारक निरंकुश एकात्मक नीति लैत आएक छै।

(च) लोकतन्त्रके स्थायीत्व, मानवअधिकारक वहाली, कानूनी राज्यक स्थापना स्वतन्त्र, न्यायपालिका के लेले राजतन्त्र उच्छेदन आवश्यक छै।

(छ) जनताके बलीदानी संघर्ष स आएल लोकतन्त्र के साथ सदा घोर षडयन्त्र करैत आएल छै।

(ज) निम्न जाति आ वर्ग के सत्तासँ दुर राखि दानवीय व्यवहार कएनाई के दैविक अधिकार बुझै छै।

(झ) कोनो प्रजाति जाति , जनजाति, भाषाभाषी के पहिचान के दमन करैत आएल छै आ दमन मे सेना, प्रशासन, अदालत, मातृहन्त कँ प्रयोग करैत आएल छै।

(ञ) मधेशी के सदा विदेशी सावित करै मे व्यस्थ रहै त आएल छै।

(ट) मिथिला के साथ वहुत वडका धोखा, षडयन्त्र, गद्दारी करैत आएल छै, जहन मिथिलाक सेना स सहयोग ल क भंग कए देने छै।

(ठ) जातीय अधिकार के सुनिश्चित, सुरक्षित रखवाक लेल आवश्यक संघीय संरचनाके स्थापनाक लेल गणतन्त्र आवश्यक छै।

१५. सघीयता आ वर्गीय आन्दोलन :

किछु राजनीतिक आ बौधिक वर्गमे भ्रम रहैंछ आ भ्रम श्रृजना करैछ जे संघीय आन्दोलन वर्गीय आन्दोलनकँ कमजोर करैत छै आ संघीय आन्दोलन जातीय सम्प्रदायिक सद्भाव के दूषित छै। मुदा ई भ्रम मात्र अछि। शोषण के स्वरुप आ गति जतेक स्पष्ट आ तीब्र होइछ आ वर्गीय आन्दोलन के गुण लैत जाइत अछि आ सम्पन्न वर्ग आ ''सभ्य'' जाति के भितर निर्मित शोषण आ शोषितक चरित्र लबैत अछि त ओ मात्र अधिकार आन्दोलन नहिं, जाति, क्षेत्र हितक आन्दोलन मात्र नहिं मानव विकाशके क्रम मे भेल वर्गीय आन्दोलन अछि। (आ कोनो वर्गीय आन्दोलनकारी के संघीय आन्दोलनके समर्थन करबाक चाही) मिथिला आन्दोलन सेहो वर्गीय आन्दोलन अछि जतए एकटा राष्ट्र, समृद्ध संस्कृति, भाषा, साहित्य, शोषण आ दमनके शिकार अछि।

१६. मिथिला आ जातीय आन्दोलन :

जाति स्वरुप, चरित्र, इतिहास, आ ओहि जातिपर होइत शोषण दमके मात्रा, जातीय आन्दोलनके दिशा र स्वरुप निर्धारण करैछ। (सामाजिक संरचनाके भित्रके विभिन्न जातिकै तह, हिन्दु धर्माबलम्बीके विभिन्न जातपर होइत भेदभाव, आ शोषण सेहो आन्दोलन के समय आ स्वरुप निर्धारण करैछ। तथापि छोट आ सामयिक अन्तर विरोध एकर मुख्य आन्दोलन के असर नहिं क सकैछ आ प्रधान अन्तर विरोध के समाधान मात्र ओहि अन्तर विरोध के समाधान क सकैछ। मिथिलाके भित्तरकँ विभिन्न द्वन्द्व मुख्य द्वन्द्व के समाधान कर में आएल वाधा राजनीतिक वैचारिक आन्दोलन के मार्फत मात्र अन्त्य कएल जाए सकैछ।

१७. मिथिला आ जनजातीय आन्दोलनः

जनजाति स्वतः शोषित दमित आ अविकसित होइत अछि। ओकरा पर सदियौं स शोषण भ रहल अछि। मुदा आब ओहो अपना अधिकार के लेल अनवरत संघर्ष क रहल अछि। नेपालमँ जनजाति कोनो विकसित आ कोनो अविकसित अछि। दुनु के स्वायत्तता चाही। किछु जनजाति सैनिक प्रहरी सेना स जुडल अछि। मुदा अधिकारस वंचित। ओ पहाड मे आ मे आ मधेश मे सेहो अछि। मधेशक आन्दोलन दुनु के अधिकारके लेल कएल संघर्ष मे सहयोग कएलक अछि। मिथिला क्षेत्र मे जे जनजाति अछि तकरा मिथिला राज्य समानुपाति अधिकारस वंचित नहिं करत से ओकरा विश्वास नहिं भैरहल छै आ पहाडके जनजाति स मिथिला तथा मधेश आन्दोलन के निक जकाँ नहिं जोडल जा रहल अछि। दुनु ठामक जनजाति के विश्वास मे लेनाई आवश्यक अछि।

१८. मधेश, मिथिला आ थारु आन्दोलनः

जनजाति में थारु क संख्या वेसी छै आ मात्र मधेश में लगभग पूर्व स पश्चिम तक अधिकांश जिल्लामें। ई जाति अलग पहिचानक जाति छै क एकर अपन भाषा आ किछु संस्कृति अलग छै। जाहि क्षेत्र में स्थित छै ताहि ठामक भाषा स जुडल छै। शारिरिक बनौट मंगलाइड सन छै मुदा सांस्कृतिक सम्बन्ध मधेश के साथ जुडल छै। ई स्वतन्त्र आन्दोलन नहिं क सकैअ आ मधेशी आन्दोलन स जुड स डराइछै। मधेशी आन्दोलन के अंगा खस सत्ता एकरा प्रयोग करै छै। कहिओ आ कोनो आन्दोलन के विरुद्ध में उतारि दैत छै। वहुत सज्जन जनजाति भेला के कारण ई आसानी स ओहि षडयन्त्र में फंसि जायत छै आ मधेश आ मधेशी कें विरुद्धमे ठाढ भ जाइत छै। एकरा जनजाति आन्दोलन स नीक जकाँ जोडनाई वहुत जरुरी छै, तहन एकरा मिथिला आन्दोलन में समानुपाति अधिकार आ समानुपाति अधिकार क्षेत्र के लेल विश्वास में ल एकर विश्वास प्राप्त केनाई आवश्यक छै।

१९. नेपालक मिथिला आ भारतक मिथिला :

सुगौली सन्धि मिथिला के दु खण्डमें त वांटि देलक, मुदा राजनीतिक सीमा स मिथिलाक भाषा, संस्कृति साहित्यक सम्बन्ध नहि तोडि सकल। आई दुनु देशमें मिथिला राज्यक मांग उठि रहन छै। अइस हुनु देशक शासक

वर्ग के किछु भय भरहल छै। दुनु देशक मिथिला आन्दोलन के भावनात्मक सम्बन्ध छै आ दुनु के नैतिक समर्थन छै जे नैसर्गिक छै। दुनु राजनीतिक स्वतन्त्रता कायम राखए चाहैछै, दुनु अखण्डता के सम्मान करै छै। ई वात दुनु देशक सत्ता के वुझक चाही आ हमरा सभ के कर्तव्य जे दुनु सत्ताके बुझा देवक चाही। संघीय संरचनामें दुनु मिथिला अलग अलग राज्याधिकार चाहेछै, जेना वंगाल, पंजाव इत्यादि वंगला देशकें आ पाकिस्तान में सेहो छै।

२०. आत्म निर्णय के अधिकार आ मिथिला :____

व्यक्तिगत, जातिगत क्षेत्रगत, राष्ट्रगत रुपमें स्वतन्त्र पहिचानकें साथ राजनीतिक प्रशासनिक निर्णय के अधिकार आत्मनिर्णय के अधिकार अछि। आर्थिक जीवन अपने शैली में संचालन केनाई आत्मनिर्णय के अधिकार क्षेत्र छै, अनुशासित स्वतन्त्रता के अधिकार आत्मनिर्णय के अधिकारके मूल मर्म छै। कोनो व्यक्ति दोसर व्यक्ति पर, कोनो जाति दोसर जाति पर कोनो राष्ट्र दोसर राष्ट्र पर अनाधिकार के प्रयोग कएनाई के पूर्ण नियन्त्रण आत्मनिर्णयक अधिकार कै। क्षेत्रीय, जातीय, राष्ट्रिय दमन, शोषण, शासन, प्रशासन स मुक्ति के अधिकार मात्र आत्म निर्णय के आत्म निर्णायक अधिकार छै।

मिथिला एकटा स्वतन्त्र ऐतिहासिक राष्ट्र छलै तै एकरा आत्मनिर्णय के अधिकार छै, जे राजनीतिक सीमा मे प्रशासनिक शासकीय दमन स मुक्त होएक।

२१. मिथिला आ जातीय स्वायत्तता :____

सीमित राजनीतिक आर्थिक अधिकार सहित के खास क्षेत्र में खास जाति अर्थात राष्ट्र के प्रादेशिक शासन के जातीय स्वायत्तता कहल जाइछै। ई आत्म निर्णय के अधिकार के अर्ध तथा नियन्त्रित प्रयोग छै। आत्म निर्णय के अधिकार के स्वायत्तता में घेर देनाई आ स्वायत्तताके जातिगत रुपमें प्रयोग केनाई अव्यवहारिक छै खासक मिश्रित सामाजिक संरचनाके देशमें आ क्षेत्रमें। मिथिला संघीय संरचनामे पूर्ण राज्यधिकार प्रयोग करए चाहैत अछि कोनो केन्द्रीय सत्ता स निर्धारण कएल सीमित अधिकार सहित कें कथित स्वायत्तता नहिं।

२२. मिथिला आ दलित आन्दोलन :____

ई हरेक दमन आ उत्पीडन स मूक्ति के युग छै। राजनीतिक आर्थिक शोषण मात्र नहिं, सामाजिक उत्पीडन स मुक्ति के लेल प्रत्येक देश में, प्रत्येक राष्ट्र मे, प्रत्येक समाज में आन्दोलन तीव्र भगेल छै। एकरा समयमे स्वीकार कएनाई प्रत्येक लोकतन्त्रवादीके कर्तव्य छै। सामाजिक न्याय उपलब्ध करबैत राजनीतिक रुपमे प्रत्येक अंग में सम्मानपूर्वक उपस्थित कएनाई राज्य के कर्तव्य छै। मिथिला स्वयं उपेक्षित उत्पीडित अछि। तैं एकरा कतहु के दलित आन्दोलनके हार्दिक समर्थन सहयोग करैत मिथिलाक दलित मुक्तिके आन्दोलन में सामेल होइत, ओकर अगुवाई करैत मिथिला राज्य के स्थापना में गति स आगाँ बढत।

२३. मिथिला आ राजनीतिक दल :____

देशमें वर्तमान में सक्रिय राजनीतिक दल सभ मे संघीय संरचना के विषयमे स्पष्ट धारणा वाहर नदि आएल अछि। संविधानत : स्वीकार कएले पर एहि विषय मे पार्टीक संघ विरोधी धारणा बाहर अवैत अछि। संघीय संरचना बनाएब, ताहिमे कपटपूर्ण अभिव्यक्ति अबैत अछि। किछु दल के नीति इ रहि आएल अछि जे सम्पूर्ण मधेश के एकटा राज्यके रुपमे आवक चाही। ई संघीय मान्यता नेपाल मे कतेक व्यवहारिक हेतै? पौराणिक मिथिला के संशोधनसहित के एकटा राज्य बना कए मधेश में अन्य राज्य सेहो उपयुक्त होएत। हरेक क्षेत्र के आन्दोलित कए समग्र मे मधेश के खसवादी प्रभुत्व स मुक्त कएल जा प्रत्येक दल आ कथित वुद्धिजिवी संघीय संरचना के स्वीकार करैत, मुक्त मधेश के मान्यता दैत मिथिला राज्यके स्थापना मे सहयोग करैक, ईहए संघीय मान्यता अनुकुल हेतै।

२४. मिथिला आ महिला आन्दोलन :____

मिथिला सदा नारी के सम्मान करैत आएल अछि। तै नारी अधिकार के कुण्डित नहिं कए सकैअ। महिला अधिकार, महिला सशक्तिकरण द्वारा महिला आन्दोलन के मिथिला आन्दोलन स जोडिक ल जेनाई जरुरी छै। किछ दशक स मिथिलाके महिला के अनावश्यक अन्तरमुखी वनावल गेल छै आ एहि मे नेपालक जडिआएल सामन्ती सामाजिक राजनीतिक व्यवस्थाक खास भूमिका छै। तैं मिथिला के लोकतान्त्रिक राज्य निर्माण मे अधिकार सम्पन्न महिलाके भूमिका अति आवश्यक छै।

२५. मिथिला आ कथित पिछडल आ आगा बढल वर्ग ९ द्यबअपधबचम यिच धबचम :____

मिथिलाक डोम सेहो सम्पत्तिशाली छल। एकरा साथ अछुत क व्यवहार नहिं छलै। गणराज्यक नायक जनकक कालमे समतामूलक समाजक प्रमाण भेटछ। तथापि मिथिला एकटा देश छल जतए सब जाति जातक बसोबास स्वभाविक छल आ अछि। अखन लोकतान्त्रिक व्यवस्था मे सभ जाति जातके समानुपातिक समावेशीकृत उपस्थिति मिथिला राज्यके प्रत्येक अंग आ निकाय में रहत से घोषित नीति अछि। मिथिला कोनो एकटा जाति के नहिं, कथित उच्च जाति के कथमपि नहिं। योग्यता क्षमता अनुसार समानुपातिक रुपमें सहभागी केनाई आवश्यक अछि। इएह मिथिला निर्माण के आधार रहत।

२६. मिथिला आ मानक मैथिली : ____

मानव शास्त्री आ भाषा शास्त्रीक अनुसार केव भाषा नहिं बजैअ, सब बोली ९मष्बभिअतक० बजैअ। समरुप बोली के समग्र रुप भाषा होइछ। मुदा जाहि बोलीक बेसी संचार होइछ जाहि बोली मे विशेष रचना प्रकाशित होइछ, जाहि बोली के बेसी पाठक होइछ जाहि बोलीक व्यक्ति सत्ता पर नियन्त्रण करैछ जाहि बोली द्वारा प्रकाशन, न्याय सम्पादन होइछ, जाहि बोलीके विद्धान व्याकरणक रचना करैछ, ओहए बोली भाषा बनिक समाजपर प्रभाव पारैत अछि। तै कोनो बोली कथित उच्च वर्गके भए सकैछ, तै ओकरा मानक भाषा बुझनाई ओतेक उचित नहिं आ अइस कोनो जाति के राज्ययन्त्रपर नियन्त्रण के शंका केनाई उचित नहि। तै मिथिला में वर्तमान में वाजए जाए बाला प्रत्येक बोली के सम्मान करत, सभ भाषाके सम्मानकरत आ वहु भाषिक नीति राखि राज्य संचालन करत।

२७. मिथिला राज्य स्थापना के लेल नीतिगत कार्यक्रम :____

(क) जनता, लोकतन्त्र, मानवअधिकार के विरोधी, जाति, भाषाक अधिकार के प्रधान शत्रु राजतन्त्र अछि। तै जनताके मित्र शक्ति लोकतन्त्रवादी, मानव अधिकारवादी, कानूनी राज्यक पक्षधर आदि शक्ति आ संगठन स मिलक गणतन्त्र लएवाक लेल अथक संघर्ष आवश्यक छै।

(ख) प्रत्येक जाति, जनजाति, आदिवासी, दलित उत्पीडित वर्ग पिछडल वर्ग, अल्प संख्यक जाति, मानव अधिकरावादी सबस मिलक, संघीय संरचना केल कठोर संघर्ष आवश्यक अछि।

(ग) मधेशक प्रत्येक जाति, जनजाति, भाषा भाषीक समुह, महिला मुस्लिम सभके साथ कार्यगत एकता करैत खस सत्ता स सम्पूर्ण मधेश के मुक्त कएनाई बेसी आवश्यक छै।

(घ) संघीय संरचनाक मर्म, भावना अनुसार मधेशमे आत्म निर्णायक आधार पर मिथिला क्षेत्रक प्रत्येक वर्ग के आन्दोलित कए मिथिला राज्यके लेल सहमति जुटएनाय आवश्यक अछि।

२८. कार्यदिशा :____

१. संघीय संरचना विना मुक्त मधेशक कल्पना तथा मुक्त मधेश विना मिथिला राज्यक कल्पना असम्भव होएत से बुझि चेतना मूलक कार्यक्रम सम्पूर्ण मधेशमे आवश्यक अछि।

२. खस सत्ता वर्गिय समुदाय के दिमाग स ई भय हटैनाई जरुरी छै आ चेतना देनाई जरुरी छै जे कोनो जाति, भाषा के संरक्षण, सम्मान संघीय संरचनामे मात्र संभव छै। जन अधिकार सम्पन्न लोकतन्त्र संघीय संरचनामे मात्र संभव छै।

३. कोनो सत्ता, दलीय सरकारक निरंकुशता के न्यून करवाक लेल संघीय संरचना मात्र आधार छै।

४. संघीय शासन प्रणाली सं देश खण्डित नहिं होइछ। अर्थात संघीय शासन देश के विखण्डन स बचवैत अछि। अर्थात् संघीय संरचना विखण्डनवाद के स्थायी समाधान अछि।

२९. मिथिला राज्य निर्माण वाधक चिन्तन :____

अन्तरिक

१(क) मिथिला के लेल कोनो राजनीतिक संगठन नहि अछि। आ एहके लेल कोनो संघर्ष नहिं अछि।

(ख) भाषा संस्कृति करे लेल कोनो एकिकृत संगठन नहि अछि।

(ग) कोनो स्थापित नेतृत्व नहिं अछि।

(घ) भाषा, संस्कृति के आन्दोलन के लोकतान्त्रिक आन्दोलन, मानव अधिकार वादी आन्दोलन स जोडक, लएजवाक चिन्तन या प्रयास नहिं अछि।

(ङ) एहिके लेल किछ भ रहल आन्दोलन, वौद्धिक व्यक्तित्व सभक मात्र अछि, जिनकामे स्वाभिमान कम, अहंकार वेसी, संयोजन करवाक क्षमता कम फुट करवाक क्षमता वेसी छन्हि।

वाह्य

(क) खस जाति समग्र संघ के विरोधी चिन्तन रखैत अछि अपना के सदा केन्द्रीय सत्ताके भागी बुझैछथि आ नेपाल के अपन पुर्खा के अर्जन सम्पत्ति बुझै छथि।

(ख) समग्र मधेश एकराज्यक नारामे सत्ताधारी वर्ग विखण्डन के गंध देखैत अछि आ मिथिला तथा संघीय संरचना के विरुद्ध सोचेत अछि।

(ग) संघीय आन्दोलन के नेतृत्व कएनिहार, दल या व्यक्ति के हिन्दी भाषा प्रति आसक्ति स मातृभाषा प्रेमी विचकैत छथि आ खसवादी सेहो एहिमे किछु रहस्मय दुर्गन्ध सुंधवाक प्रयास करैत अछि।

निश्कर्ष :____

नेपाल के सत्ताधारी, वर्ग संकट के घड़ी सँ गुजरि रहल अछि। देश अखन अधिकार प्राप्तिकँ नयाँ मोडपर ठाढ अछि। अधिकार सँ वंचित उत्पीडित वर्ग, जाति आन्दोलनमे कुदि पडल अछि। संघीय लोकतान्त्रिक गणतन्त्र माग एकर अचूक औषधि छेक। प्रत्येक प्रभुसत्तावादी सामन्ती चिन्तन एहि आन्दोलन के पाछा धकेल चाहैत अछि आ आन्दोलन ओकरा किनार पर खसवैत आगा बढि रहल अछि। आउ, समाजक स भ वर्ग, आन्दोलन मे भाग लिअ आ नैसर्गिक अधिकार स्थापित करु।

सन्दर्भ सामाग्री :____

(क) संविधानसभा, संघीय संरचना, मिथिला राज ___अवधारण १___शीतल झा

ख) संघीय स्वशासन तिर ……………वृषेश चन्द्र लाल

(ग) संघीय शासन व्यवस्थाको आधारमा राज्यको पुन : संरचना ____ अमरेश नारायण झा

(घ) मूल्यांकन मासिक।



शेख मोहम्मद शरीफ

प्रसिद्ध वेमपल्ली शरीफक जन्म आन्ध्र प्रदेशक कडापा जिलामे भेल छल।



जयलक्ष्मी पोपुरी

निजाम कॉलेज, ओस्मानिया विश्वविद्यालयमे अध्यापन।

जुम्मा-शेख मोहम्मद शरीफ

प्रसिद्ध वेमपल्ली शरीफ
लिखित तेलुगु कथा।
तेलुगुसँ अंग्रेजी अनुवाद जयलक्ष्मी पोपुरी
गजेन्द्र ठाकुर
(अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद)।

हमर अम्मीक निर्दोष मुखमंडल अबैत अछि हमर आँखिक सोझाँ, चाहे आँखि बन्द रहए वा खुजल रहए। ओहि मुखक डर हमर विचलित करैत अछि। एखनो हुनकर डराएल कहल बोल हमर कानमे बजैत रहए-ए। ई दिन रहए जुम्माक जाहि दिन मक्का मस्जिदक बीचमे बम विस्फोट भेल रहए। सभ दिस कोलाहल, टी.वी. चैनल सभपर घबराहटिक संग हल्ला, पाथरक बरखा, आदंक आ खुनाहनि।

हम काजमे व्यस्त छलहुँ जखन फोन बाजल। फोन उठेलहुँ तँ दोसर दिस अम्मी छलीह..हुनकर फोन ओहि समय नीक आ सहज लागल।

एहिसँ पहिने कि हम "अम्मी.." कहितहुँ ओ चिन्तित स्वरेँ "हमर बाउ...!" कहलन्हि।

"की अहाँकेँ ई बुझल छल...?" हम पुछलियन्हि।

"हँ एखन तुरत्ते हमरा ई पता चलल..अहाँ सतर्क रहब! ...लागै-ए अहाँ आइ मस्जिद नहि गेल रही हमर बाउ।" हम हुनका डरसँ सर्द अवाजमे बजैत सुनलहुँ।

जिनगीमे पहिल बेर हमर मस्जिद नहि जएबासँ ओ प्रसन्न भेल छलीह। ई विचार हमरा दुख पहुँचेलक। की हमर अम्मी ई गप बाजि रहल छलीह? ई ओ छथि जे हमरासँ ई पूछि रहल छथि? ई हमर अम्मी छथि जे एहि तरहँ डरलि छथि? हमर मस्तिष्क विचारक विस्फोटसँ भरि गेल आ स्मृतिक बाढ़िमे बहए लागल।

हमर अम्मीकेँ जुम्माक नवाज आस्थाक दृष्टिसँ नीक लगैत छलन्हि। ओ कोनो चीजक अवहेलना कऽ सकैत रहथि मुदा जुम्माक दिन नमाजक नहि, से ओ हमरा सभकेँ ओहि दिन घरमे नहि रहए दैत रहथि। अब्बा सेहो हुनकर दामससँ नहि बचि पाबथि जे ओ घरपर रहबाक प्रयास करथि। हुनकर सन डीलडौल बलाकेँ सेहो हाथमे टोपी लए मस्जिद चुपचाप जाए पड़न्हि।

हमरा सभक घरमे काजसँ दूर भागए बला, आलसी बच्चा, शिकारी हम आ हमर अब्बा हरदम मस्जिद नहि जएबा लेल बहन्नाक ताकिमे रहैत छल। हमर अब्बा भोरेसँ छाती तनैत कहैत रहैत छलाह जे आइ जुम्मा अछि से कोनो हालतिमे मस्जिद जएबाके अछि। मुदा जखने समय लग अबैत रहए हुनकर बहन्ना शुरू- " अरे! अखने कादोमे हम खसि पड़लहुँ..." हमर अम्मी लग कोनो रस्ता नहि बचन्हि। जे से, तखन ओ हमरा सेहो मस्जिद नहि पठा सकैत छलीह...हमरा नहबैत, हमर कपड़ा धोबैत, ओ कोना कऽ सकितथि? तैयो ओ हाथमे छड़ी लेने आँगन आबथि, हमरापर गुम्हरैत, हमर पुष्ट पिटान करैत आ हमरा अँगनामे कपड़ा जकाँ टँगैत। से हम ई चोट खएबासँ नीक बुझैत रही नमाजे पढ़ब। हमर आलसपना मस्जिद पहुँचिते अकाशमे उड़ि जाइत रहए।

एक बेर ओतए पहुँचिते हम दोसर बच्चा सभ संग मिझरा जाइत रही आ सभटा नीक वरदानक लेल प्रार्थना करैत रही- जेना हमर अब्बा लग खूब पाइ होन्हि, हमर अम्मीक स्वास्थ्य नीक भऽ जान्हि, हमर पढ़ाईमे मोन लागए आ की की।

हमर अम्मा बुझाबथि- "हमरा सभकेँ मस्जिद मात्र वरदान प्राप्त करबाक लेल नहि जएबाक चाही, हमर बाउ..हमरा सभकेँ नमाज पढ़बाक चाही...अल्लामे आस्था हेबाक चाही। ओएह छथि जे हमर सभ कल्याण देखैत छथि"।

जखन दोसर हुनका हमर उपराग देन्हि जे हम नमाज काल आस्ते-आस्ते गप करैत रहै छी तँ ओ हमरा आस्तेसँ दबाड़ि बाजथि- "हमर बाउ, प्रार्थनाक काल बजबासँ अपनाकेँ रोकू...कमसँ कम मस्तिष्कमे दोसर तरहक विचारकेँ अएबासँ रोकू। बगलमे बम किएक ने फाटय तैयो सर्वदा अपन मस्तिष्ककेँ अल्लापर केन्द्रित राखू..."। हुनका ओहि दिन एहि गपक अन्देशा नहि रहन्हि जे

एक दिन ठीकेमे मस्जिदमे बम फाटत। से आश्चर्य नहि जे ओ एतेक आत्मविश्वाससँ बाजि रहल छलीह। आब जखन ठीकेमे बम विस्फोट भेल अछि, हुनका ई अनुभव भऽ रहल छन्हि जे कतेक भयावह ई भऽ सकैत अछि।

हम हुनकर वेदनाकेँ नहि देखि पाबि रहल छी। ओ डरायलि छलीह। ओ नमाजसँ डरायल छलीह। ओ अल्लासँ सेहो डरायल छलीह।

"अम्मी..."। हम उद्यत भऽ कहलहुँ।

"हमर बेटा..."। ओ दोसर कातसँ बजलीह। "अहाँ आइ मस्जिद नहि गेलहुँ, नहि ने, हमर बाउ"? ओ फेरसँ कहलीह।

हमर हृदय डूमि रहल रहए। शब्द हमर संग छोड़ि रहल रहए। हमर कंठ सूखि रहल रहए। हम घुटनक अनुभव कएलहुँ। विचार ज्वारि जकाँ हमरा भीतर उठि रहल छल। हमरा लागल जे क्यो हमरा ठेलि कए सोखिं कए भूतमे लऽ जाऽ रहल अछि।

२

जुम्माक दिन मस्जिदसँ घुरलाक बाद हम सभटा घटनाक आवृत्ति अम्मी लग करैत छलहुँ। हम नमाजक एकटा छोट संस्करण हुनका लगमे करैत छलहुँ। हमरा प्रार्थना पढ़ैत देखि ओ हमरा आलिंगन मे लऽ चुम्मा लैत छलीह, "अल्ला हरदम अहाँक रक्षा करताह, हमर बाउ..."। ओ हमरा आशीर्वाद दैत रहथि। तखन हम निर्णय कएलहुँ जे जआँ हमरा कोनो ज्ञानप्राण अछि तँ हमरा कोनो नमाज नहि छोड़बाक चाही। सभ जुम्माकेँ ओ नमाजक महत्वपर बाजथि आ मस्जिद जएबापर जोड़ देथि। आन चीजक अतिरिक्त ओ एहि गपक विषयमे बाजथि जे कुरान अही दिन बनाओल गेल रहए, कि मनुक्ख अपन कर्मक लेल अही दिन उत्तर दैत अछि आ जे विश्व जीवन रहित जे कहियो होएत तँ सेहो अही दिन होएत।

हमर माथ, छोट रहितो, ई गप बुझि गेल जे जुम्मा किएक मुसलमान लेल पवित्र अछि।

सभ बच्चा जुम्मा दिन साँझ धरि स्कूलमे रहैत छलाह, मात्र हम दुपहरियाक बादे स्कूल छोड़ि दैत छलहुँ, मस्जिद जएबाक बहन्ने झोरा झुलबैत घर घुरैत छलहुँ। हमर अम्मी शिक्षकसँ परामर्श कए केने छलीह।

दोसर छात्र सभ हमरा एतेक शीघ्र घर जाइत देखि ईर्ष्या करैत छलाह। ओ हमरा भाग्यशाली बुझैत छलाह आ अपनो मुस्लिम होएबाक मनोरथ करैत छलाह।

हुनकर ईर्ष्यालु मुख देखि हम भीतरे-भीतर हँसैत रही। हम खुशी-खुशी घर घुरैत रही जेना हाथीक सवारी कएने होइ।

हमर अम्मी ओहि महत्वपूर्ण उपस्थितिक लेल हमरा तैयार करैत रहथि-गरम पानिसँ नहबैत रहथि, हमर आँखिमे काजर लगबैत रहथि, हमर केशक लटकेँ टोपीक नीचाँ समेटि कए राखथि। हम सभ दिन तँ हाफ पैंटमे रहैत छलहुँ मुदा ओहि दिन उजरा कुरता पैजामामे चमकैत छलहुँ।

दोसर स्त्रीगण हमरा देखि अपन हाथ हमर मुखक चारू दिस जोरसँ घुमाबथि आ कोनो दुष्टात्माकेँ भगाबथि आ कहथि, "जखन जुम्मा अबैत अछि अहाँ जुम्माक सभटा चक लए अबिते ने छी"!!

अहाँ जुम्माक साँझमे ई खुशी सभ घरमे देखि सकैत छी, दरगाह केर फ्रेम कएल चित्रक सोझाँमे जड़ैत लैम्प, अगरबतीक सुगन्धी वायुमे हेलैत; अपन माथ झँपने स्त्रीगण घरक भीतर-बाहर होइत; आ नारिकेलक दाम दोकानक खिड़कीपर बढ़ैत। दरगाह केर फ्रेम कएल चित्र पर नारिकेल चढ़ेबाक विधक वर्णन एतए अहाँ नहि छोड़ि सकैत छियैक।

किएक तँ हमर अब्बाकेँ अर्पण विधक ज्ञान नहि छलन्हि से ओ हजरतकेँ छओटका रस्तासँ घर अनैत रहथि। हमर अम्मी ई सिखबाक लेल हुनकर पछोर धेने अबैत रहथि।

"अहाँकेँ ई अन्तरो नहि बुझल अछि कलमा..आकि गुसुल...हमरा अहाँसँ निकाह करेबाक लेल अपन अम्मी-अब्बाकेँ दोषी बनाबए पड़त...कियो अहाँसँ नीक हुनका सभकेँ नहि भेटलन्हि, अहाँसँ हमर बियाह (निकाह) करेलथि। आब बच्चो सभ अहींक रस्ता पकड़लथि ..." ओ हुनकासँ एहि तरहेँ विवादपर उतरि जाथि।

"अहाँ ..घरक...ई उत्पीड़न हमरा लेल असह्य भऽ गेल अछि.."। पजरैत, ओ मस्जिद जाइत रहथि लाल-पीयर होइत हजरतकेँ घर अनबा लए।

हजरत नारिकेलक अर्पण विध पूरा करबाक बाद अपन मुँह आ पएर धोकए आ अपन दाढ़ीमे ककबा फेरि बाहरमे खाटपर बैसैत रहथि। एहि बीच हमर अम्मी फोड़ल नारिकेलक गुद्दा निकालि ओकर कैक भाग कए ओहिमे चिन्नी मिलाबथि। ओ तखन एहि मिश्रणकेँ बाहर हातामे जमा भेल सभ गोटेमे बाँटथि। ओ अन्तमे हमरा लेल राखल दू-तीन टा टुकड़ी लेने हमरा लग आबथि।

हम शिकाइत करियन्हि, " इएह हमरा लेल बचल अछि? "हमरा सभकेँ अल्लाकेँ अर्पित कएल वस्तु नहि खएबाक चाही, हमर बेटा..हम दोसरामे एकरा बाँटी तैयो जआँ हमरा सभ लेल किछु नहि बचए"। ओ हमरा शान्त करथि।

हुनकर मीठ बोल हमरा मोनसँ नारिकेलक पर्याप्त हिस्सा नहि भेटबाक निराशाकेँ खतम कए दैत छल। बादमे हमर पिता आ हजरत साँझमे अबेर धरि बैसि गप करैत रहथि। अपन वस्त्र बदलि सामान्य वस्त्रमे हम, अपना संगी सभक संग पड़ोसक एकटा निर्माण स्थलपर बालूक ढेरपर खेलाय लेल चलि जाइत रही।

ई सभ सोचि हमर आँखिमे नोरक इनार बनि गेल...

"हमर पुत्र, अहाँ किएक नहि बाजि रहल छी? की भेल? हम डरक अनुभव कऽ रहल छी...बाजू..." हमर अम्मी पुछैत रहलीह। ओना तँ हैदराबाद एनाइ तीन बरख भऽ गेल मुदा एको दिन हम नमाज नहि पढ़लहुँ। असमयक पारीमे काज करबा अनन्तर हम ईहो बिसरि

गेलहुँ जे नमाज पढ़नाइ की छियैक। "अम्मी.." हम उत्तर लेल शब्द तकैत बजलहुँ। "अम्मी, हम कहिया हैदराबादमे नमाज पढ़बाक लेल मस्जिद जाइत छी जे अहाँ एतेक चिन्तित भऽ रहल छी"? हम पुछलहुँ।

हम मोन पाड़लहुँ ओहि दिनकेँ जखन ओ हैदराबाद आएल रहथि कारण हम कहैत रहियन्हि जे हम हुनका हैदराबाद नगर देखेबन्हि। मुदा हैदराबाद आबि अपन विरोध देखबैत ओ बजलथि, "हम कतहु जाए नहि चाहैत छी...हमरापर किएक पाइ खर्च कऽ रहल छी"? हम हुनकर मोनक गप बुझैत रही। ओ हमरापर बोझ नहि बनए चाहथि, मुदा हम हुनकर विरोधपर ध्यान नहि देलहुँ। हमर जोर देलापर ओ एक बेर अएलीह। हम हुनकर हाथ पकड़ि रस्ता पार करबामे मदति करियन्हि। एक बेर खैरताबादक लग सड़क पार करबा काल हुनकर आँखि नोरसँ आर्द्र भऽ गेलन्हि।

"अहाँ कतए जन्म लेलहुँ...कतए अहाँ बढ़लहुँ...अहाँ कतेक टा भऽ गेलहुँ? अहाँ एहि पैघ नगरमे कोना रहैत छी? अहाँ बहुत पैघ भऽ गेलहुँ... ओ बड़ाई करैत कानए लगलीह।

अहाँ जखन बच्चा रही तखन हम अहाँकेँ नानीगाम बससँ लऽ गेल रही। हम अहाँक हाथ कसि कऽ पकड़ने रही कि अहाँ कतहु हेराऽ ने जाइ। आब अहाँ एतेक पैघ भऽ गेलहुँ जे हमर हाथ पकड़ि बसपर चढ़बामे मदति करी"। ई कहैत ओ नोरक द्वारे ठहरि गेलीह। ओ खखसलीह, "खुस...खुस..." परिश्रमसँ अपन श्वास वापस अनलन्हि।

ओ जखन भूतकेँ मोन पाड़ि रहल छलीह हम हुनका सान्त्वना देलियन्हि आ हुनकर नोर पोछलियन्हि।

"अम्मी...हम एतए जीबाक इच्छासँ अएलहुँ। हम साहस केलहुँ आ कतेक रास कठिन क्षणकेँ सहन कएलहुँ। जखन दुखित रही, हम अपनेसँ दबाइ लए ले जाइ आ संगमे तखनो प्रयत्न करी।, ई सभ अम्मी...ई सभ अहाँक आशीर्वादसँ भेल, आकि नहि? एहि नगरमे अपना कहि कऽ संबोधित करए बला हमर क्यो नहि अछि, तखनो हम एतए बिना असगर रहबाक अनुभूतिक रहैत छी"। अपन आँखिक नोर पोछि कऽ ओ हमरा आशीर्वाद दैत कहलन्हि, "दीर्घायु रहू हमर पुत्र"।

समस्याक आरम्भ तकर बाद भेल।

"सभ जुम्मा..जुम्मा...अहाँ नमाज पढ़ए छी हमर बाउ"? ओ पुछलन्हि।

"नहि माँ। कहू ने, कखन हमरा पलखति भेटैत अछि"?

"अहाँकेँ कहियो समय नहि भेटत, मुदा अहाँकेँ करए पड़त, एकरा छोड़बाक कोनो गुन्जाइश नहि अछि। मुस्लिमक रूपमे जन्म लेबाक कारण अहाँकेँ, कमसँ कम सप्ताहमे एक दिन समय निकालए पड़त", ओ कहलन्हि।

आगाँ कहलन्हि, "धनिक आ गरीब नमाजक काल संग अबैत अछि। ओ सभ कान्हमे कान्ह मिलाए नमाज पढ़ैत छथि। ओहि दिन ई बेशी गुणक संग अबैत अछि। एक बेर हरेलापर अहाँ ओ आशीष कहि घुरा नहि सकैत छी। ताहि द्वारे धनिक आ एहनो जो लाखमे रुपैयाक लेनदेन करैत छथि, अपन व्यवसायकेँ एक कात राखि नमाज पढ़ैत छथि। दोकानदार सभ सेहो अपन व्यवसाय बन्न कऽ दैत छथि बिना ई सोचने जे कतेक घाटा हुनका एहिसँ हेतन्हि। संगहि ओ गरीब सभ जे प्रतिदिनक खेनाइक जोगार नहि कऽ पबैत छथि, सेहो नमाज पढ़ैत छथि"।

हमरा डर छल जे हमर माँ ओएह पुरान खिस्सा फेरसँ तँ नहि शुरू कऽ देतीह। विषय बदलि कऽ हम कहलियन्हि, "की अहाँकेँ बुझल अछि जे एतए निजाम नवाब द्वारा निर्मित एकटा पैघ मक्का मस्जिद अछि..."?

"एहन अछि की? हमरा अहाँ ओतए नहि लऽ चलब"? ओ उत्साहसँ बजलीह।

"जखन अहाँ ओतए पहुँचब तँ हमरा नमाज पढ़बा ले अहाँ नहि ने कहब"। हम विनयपूर्वक प्रार्थना कएलियन्हि।

"हमर बाउ...अहाँ ई की कहैत छी...हम अहाँकेँ ई सुझाव अहाँक अपन भलाइ लेल दैत छी"।

"ठीक छैक..चलू चली"! हम सभ ओतएसँ बस द्वारा सोझे मस्जिद गेलहुँ। ओ चारमीनार दिस देखलन्हि जे मस्जिदक मीनारसँ बेशी पैघ रहए।

"अम्मी ओ छी चारमीनार। हम पहिने ओतए चली..आकि मस्जिद"? हम पुछलियन्हि।

"ओतए चारमीनारमे की अछि हमर बाउ"?

"ओतए किछु नहि अछि...कोनो दिशामे देखू एके रंग लागत। मुदा अहाँ ऊपर चढ़ि सकैत छी। ओतएसँ अहाँ मक्का मस्जिद स्पष्ट रूपमे देखि सकैत छी...आब देरी भऽ गेल अछि। हम चारमीनार बादमे देखि सकैत छी...अखन तँ हमरा सभ मस्जिद देखी"। ओ स्वीकृति देलन्हि।

मस्जिदक भीतरमे शान्ति रहए। शान्तिक साम्राज्य छल। ई शीतल, सुखकारी आ विस्तृत रहए। आगन्तुकक आबाजाही बेशी रहए। अम्मी भीतर जएबामे संकोच कऽ रहल छलीह कारण स्त्रीगण सामान्यतः मस्जिदमे नहि प्रवेश करैत छथि। मुदा ओ किछु बुरकाधारी स्त्रीगणकेँ ओतए देखि ओम्हर बढ़ि गेलीह।

अपन साड़ी (नूआ) ओरकेँ माथपर लैत ओ बजलीह, "हमहूँ अपन बुरका आनि लैतहुँ नें"? घरसँ चलैत काल ओ एहि लेल कहने रहथि मुदा ई हम रही जे हुनका एकरा पहिरएसँ रोकने रही। अपन काजपर हुनका लेल एकरा छोड़नाइ सम्भव नहि छलन्हि मुदा हम एहि नव स्थानपर हुनका एहि झंझटसँ मुक्ति देमए चाहैत रही। मुदा अपन सम्प्रदायक स्त्रीगण बीचमे बिना बुरका पहिरने ओ अपनाकेँ बिना चामक अनुभव कऽ रहल छलीह। जखन हम हुनका स्तंभित आ थरथराइत चलैत देखलियन्हि तखन हम हुनका बुरका नहि पहिरए देबाक लेल लज्जित अनुभव कएलहुँ। तैयो अपन रक्षा करैत हम कहलियन्हि, "हम कोना ई बुझितहुँ अम्मी जे हमर सभकेँ मस्जिद घुमबाक ब्योँत लागत"।

ओ किछु नहि बजलीह।

"एहिसँ कोनो अन्तर नहि पड़ैत अछि...आऊ"। हम बादमे ई कहि हुनका भीतर लऽ गेलहुँ। ओ हमर संग अएलीह। हम सभ अपन चप्पल कातमे रखलहुँ जाहिसँ बादमे ओकरा लेबामे आसानी होअए। कतेक गोटे मस्जिदक सीढ़ीयेपर आलती-पालथी मारि कए बैसल रहथि। परबाक संग खेलाइत किछु गोटे ओकरा दाना खुआ रहल रहथि। किछु परबा उड़ि गेल आ किछु आन घुरि कए उतरल। किचु परबा पानिक चभच्चाक कातमे बैसि कऽ एम्हर-ओम्हर ताकि रहल रहए, एकटा आह्लादकारी दृश्य। अम्मी हुनकाँ आश्चर्यित भऽ देखलन्हि। बादमे ओ हमर पाछाँ अएलीह जखन हम सीढ़ीक ऊपर प्लेटफॉर्मपर पहुँचलहुँ।

प्लेटफॉर्मकँ चारू दिस देखैत ओ चिकरि कए बजलीह, "हमर बाउ, एक बेरमे कतेक गोटे एतए बैसि कऽ नमाज पढ़ि सकैत छथि"?

"हमरा नहि बुझल अछि अम्मी...कैक हजार हमरा लागए-ए। रमजानक दिनमे लोक चारमीनार धरि बैसि कऽ नमाज पढ़ैत छथि"। हम उत्तर देलियन्हि। "हँ, ई टी.वी. मे देखबैत अछि" अम्मी प्रत्युत्तर देलन्हि। ओ एकरा नीकसँ चीन्हि गेल रहथि, हम अपनामे सोचलहुँ। चारू कात देखाऽ कऽ अन्तिममे हम हुनका मस्जिदक पाछाँ लऽ गेलहुँ। पथारक फलक चिड़ैक मलसँ मैल भेल रहए। परबा सभ देबालक छिद्रमे खोप बनेने रहए।

ओ मीनारक देबालकँ छूबि आ आँखिसँ श्रद्धापूर्वक सटा कऽ अति प्रसन्न भऽ गेलीह।

"एतए नमाज पढ़ब पवित्र गप अछि, हमर बाउ", ओ कहलन्हि। हमराएहि बेर कोनो अति सम्वेदना नहि भेल।

"हँ। ठीके, हम एतए कमसँ कम एक बेर नमाज अवश्य पढ़ब"। हम अपनाकँ कहलहुँ।

हम जतए रहैत छी मक्का मस्जिद ओतएसँ बड़ड दूर अछि। जुम्मा आ छुट्टीक दिन बससँ एतए अएनाइ बड़ड दुर्गम अछि। तैयो, अगिला बेर हम एतहि नमाज पढ़बाक प्रण कएलहुँ।

"हम अगिला सप्ताह् एतए आबि नमाज पढ़ब अम्मी", हम कहलियन्हि। ओ प्रफुल्लित अनुभव कएलन्हि आ हमरा दिस आवेशसँ देखलन्हि।

"एहि सभ ठाम नमाज पढ़बामे अपनाकँ धन्य बुझबाक चाही", ओ कहलन्हि।

"अहाँक अब्बा ओतेक दूर रहैत छथि, ओ की नमाज पढ़बाक लेल एतए आबि सकैत छथि? अहाँ अही नगरमे छी..एतए नमाज पढ़ू", ओ कहलन्हि। "नहि मात्र एतए, जतए कतहु पुरान मस्जिद होए ततए नमाज पढ़ू। कतेक प्रसिद्ध लोक एतए नमाज पढ़ने होएताह। एहि सभ ठाम नमाज पढ़लाक बाद कोनो घुरए केर गप नहि अबैछ। अल्ला अहाँकँ निकेना रखताह"।

हम मस्जिदमे एना ठाढ़ रही जेना जादूक असरि होए। हम हुनकर गप सुनलहुँ, कान पाथि कऽ। बादमे, बाहर निकललाक बाद हम सभ किछु बिसरि गेलहुँ। अपन मस्जिद जएबाक प्रतिज्ञाकँ सेहो हम कात राखि देलहुँ। ओही संध्यामे हम अम्मीकँ बस-स्टैण्डपर छोड़लहुँ। तकर बादा दू टा जुम्मा बीतल, मुदा से एना बीतल जेना ओ कोनो जुम्मा नहि छल। आब बम विस्फोटक एहि समाचारक बाद हम जुम्मासँ भयभीत छी।

"अम्मी...अहाँकँ ईहो बुझल अछि जे कोन मस्जिदमे बम फूटल छल"? हम फोनपर पुछलियन्हि।

"कोनमे हमर बाउ"? ओ उत्सुक भऽ पुछलन्हि।

"अहाँ एक बेर हैदराबाद आएल रही, मोन पाडू? हम नञि अहाँकँ एकटा मस्जिदमे लऽ गेल रही...मक्का मस्जिद...पैघ सन? ओतहि, ओही मस्जिदमे...खुनाहनि ओही मस्जिदमे अम्मी...खसैत लहाश.. अहाँ कहने रही जे कियो जे ओतए नमाज पढ़त, धन्य होएत...ओही मस्जिदमे अम्मी"। हम कहलियन्हि। "छोट बच्चा सभ...ओकर सभक देह खोनमे लेपटाएल...खून सँ भीजल परबा सभ सेहो मरल..."।

नोर अनियन्त्रित दुखमे बहए लागल। हम बाथरूम लग नोर पोछबाक लेल गेलहुँ। हुनक हृदय हमर काननि देखि फाटए लगलन्हि। ओ सेहो कानए लगलीह। हम आगाँ कहलहुँ, "अम्मी, नहि कानू...अब्बाकँ होएतन्हि जे हमरा किछु भऽ गेल अछि...हुनका कहियन्हि जे हम नीकेना छी"।

कनैत ओ हमरा पुछलन्हि, "फोन नहि राखब हमर बाउ"।

"जल्दी अम्मी, कहू"।

"अहाँ चलि आउ...गाम चलि आउ...हमर गप सुनू"।

"हमरा किछु नहि भेल अछि अम्मी"।

"बाहर नहि जाएब..हमर बाउ"।

"ठीक छैक अम्मी"।

"ओहि मस्जिदमे नहि जाएब, हमर बाउ"।

हमर हृदय फटबा लेल फेर तैयार अछि। हम हुनका ई आश्वासन दैत जे ओहि मस्जिदक लगो कोनोठाम हम नहि जाएब, फोन रखलहुँ।

मुदा विचारक आगम बढ़ैत रहल। कतेक विभिन्नता! कतेक परिवर्तन काल्हिसँ! ई हमर अम्मी छथि जे एना बाजि रहल छथि? ई ओ छथि जे हमरा ई बाजि रहल छथि जे मस्जिदक लगो कोनोठाम नहि जाऊ? अल्ला कोनो आन भऽ गेल छथि अपन बच्चाक प्रेमक आगाँ? अपन खूनक आगाँ अल्ला अस्वादु भऽ गेलथि? नमाज विरोधक योग्य भऽ गेल? अल्ला माफी दिअ! क्षमा करू! आन जुम्माकँ कोनो खुनाहनि नहि हो..औज बिल्लाही..मिनाशैतान...निर्राजीम.. बिस्मिल्लाह इर्रहमा निर्रहीम...!

(ओहि सभ अम्मीजानकँ समर्पित जिनका मक्का मस्जिदक बाद अपनाकँ हमर अम्मी जकाँ परिवर्तित होमए पड़लन्हि...लेखक)



सुशांत झा

ग्राम+पत्रालय-खोजपुर

सम्प्रति सुशांत जी इंडिया न्यूजमे कॉपी राईटर छथि,-मिथिला विश्वविद्यालयसँ स्नातक (इतिहास), तकर बाद आईआईएमसी (भारतीय जनसंचार संस्थान) जेएनयू कैम्पससँ टेलिविजन पत्रकारितामे डिप्लोमा (2004-05) ओकरबाद किछु पत्र-पत्रिका आ न्यूज वेबसाईटमे काज, दूरदर्शनमे लगभग साल भरि काज। इंडिया न्यूज फेर प्रेसब्रिफ डॉट इन मे चाकरी।–सम्पादक

की बलिराज गढ़ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?

हमर गाम खोजपुरसँ करीब एक किलोमीटर दक्षिण दिस बलिराजपुर नामक एकटा गाम छैक। ई गाम मुधुबनी जिला मुख्यालयसँ करीब 34 किलोमीटर उत्तर-पूब दिसामे छैक। एतय एक टा प्राचीन किला छैक जे 365 बिगहामे पसरल छैक आ एकर देखभाल भारत सरकारक पुरातत्व विभाग क रहल अछि। किलाक खुदाई भेलापर एहिमे सँ मृदभांड आ विभिन्न तरहक बस्तु निकलल आ सोनाक सिक्का सेहो भेटलैक। किलाक बाहर जे बोर्ड लागल छैक ताहि के मुताबिक ई किला मौर्यकालीन हुअक चाही। किला के कात करोटमे जे गाम छैक ओहिमे भाँति-भाँतिक किंवदन्ति पसरल छैक, किलाक विषयमे। जतेक लोक, ततेक तरहक बात। किछु लोकक कथन छन्हि जे ई किला राक्षस राज बलिक राजधानी छलै -आ किछु गोटा तँ राजा बलिकेँ देखबाक सेहो दावा केलन्हि अछि। साँझ भेलाक बाद लोक सभ किला दिस जाइसँ बचए चाहैत छथि। भऽ सकैत अछि जे ई अफवाह सरकारी कर्मचारी लोकन्हि फैलेने हुएआए-कारण जे ओकरा सभकेँ ड्यूटी करएमे कनी आराम भऽ जाइत छैक। लोक सभ राजा बलिक डरे किछु चोरबऽ नञि चाहए छैक।

किला अद्भुत छैक। किलाक देबार भग्नावस्थामे रहितहु अपन यौवनक याद दिआ रहल अछि। किलाक देबार एतेक चाकर छैक जे ओदृपर तँ आसानी सँ एकटा रथ निकलिये जाइत हेतैक। देबारमे लागल ईंटा दू-दू फीट नमहर आ लगभग गोटेक फुट चाकर छैक। चीनक देबारसँ कम मोट नहि हेतैक ई अपन यौवन कालमे। किलामे एकटा पोखरि छैक, ककरो नहि बूझल छैक, जे कहिया खुनाऐ ई पोखरि। बूढ़-पुरानक कहब छन्हि जे ई पोखरि राक्षसक कोरल अछि। किछु लोकनिक तँ ई मत छन्हि जे एहिमे एकटा सुरंग सेहो छैक-जकर रस्ता कतओ आर निकलैत छैक। सुनैत छियैक जे घ्राज-परिवारक सदस्यकेँ आपातकालमे बाहर निकालैक लेल एहन सुरंग बनायल जाइत छलैक। किलाक कात-करोटमे जे गाम छैक तकर नाम सेहो ऐतिहासिक। किलाक पूब दिस छैक फुलबरिया नामक गाम आ ओकर बगलमे सटल छैक गढ़ी गाम..जे आब अप्रभ्रंश भऽ कऽ गरही भऽ गेलैए। किलाक पच्छीम दिस छैक रमणी पट्टी नामक गाम आ ओहिसँ सटल छैक भुपट्टी। किलाक दक्षिणमे छैक बिक्रमशेर, जतय प्राचीन सूर्य मंदिरक अवशेष भेटलैए। ई बात ध्यान देबाक जोग जे सूर्य मंदिर देशमे बड़ड कम जगह छैक। बलिराज गढ़क खुदाई पहिल बेर 1976 मे भेलैक, जखन केन्द्रमे साइत डॉ0 कर्ण सिंह एहि बिभागक मंत्री छलाह। गढ़क उद्धारक लेल मधुबनीक पूर्व सांसद भोगेन्द्र झा आ कुदाल सेनाक अध्यक्ष सीताराम झाक बड़ड योगदान छन्हि। किछु इतिहासकार लोकनिक कहब छन्हि, जे ई किला बंगालक पालवंशीय राजा लोकनिक किला भ सकैत अछि वा फेर मौर्य सम्राटक उत्तरी सुरक्षा किला भऽ सकैत अछि। ओना किछु गोटेक कहब छन्हि जे एकर बड़ड संभावना- जे ई किला मिथिलाक प्राचीन राजधानी सेहो भऽ सकैत अछि।

एकर पाछू ओ ई तर्क दैत छथिन्ह, जे एखुनका जे जनकपुर अछि, ओ नव जगह अछि आ ओतुक्का मंदिर १८हम शताव्दीमे इंदौरक महाराणी दुर्गावतीक द्वारा बनबाएल गेल अछि। विद्वान लोकनि जनकपुरक ऐतिहासिकताक संदिग्ध मानैत छथि। हमरा एहि संबंधमे एकटा घटना मोन पड़ि रहल अछि। १० साल पहिने पटनामे वैशालीक एकटा सज्जन हमरा भेटलाह आ कहलन्हि जे बलिराज गढ़ वास्तबमे मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि। हुनकर कहब छलन्हि जे ह्वेनसांगक एकटा विवरणक मुताबिक पाटलिपुत्रँस एकटा खास दूरी पर वैशाली अछि, वैशालीसँ एतेक दूरीपर काठमांडू (काष्ठमंडप) अछि आ काठमांडूक दच्छिन आ पूब दिशामे मिथिलाक प्राचीन राजधानी छैक। एखुनका जनकपुर ओहि मापदंडपर सही नञि उतरि रहल अछि। पता नञि एहि बातमे कतेक सत्यता छैक। एकर अलावा, रामायणमे सेहो मिथिलाक प्राचीन राजधानीक संदर्भमे किछु संकेत छैक। रामायणक संकेत सेहो बलिराजपुरकेँ मिथिलाक राजधानी होएबाक संकेत कय रहल अछि।

सांसद भोगेन्द्र झाक मुताबिक, राजा बलिक राजधानी महाबलीपुरम भर सकैत अछि, जे दच्छिन भारतमे छैक। सभसँ पैघ बात ई जे पूरा मिथिलामे बलिराजपुरसँ पुरान कोनो किला नहि अछि, जे मिथिलाक प्राचीन राजधानी होएबाक दावा कय सकए। किलाक भीतर उबड़-खाबड़ मैदान छैक, जे राजमहलक जमीनक भीतर धँसि जएबाक प्रमाण अछि। एतय एकाध जगह खुदाई भेलैए आ ओहीमे काफी कीमती धातु आ समान भेटलैक अछि। अगर एकर ढ़ंगसँ खुदाई कएल जाय तँ नञि जानि कतेक रहस्य परसँ आवरण उठि जायत। एखन धरि सरकारक तरफसँ कोनो ठोस प्रयास नहि भऽ पाओल अछि, जञिसँ बलिराज गढ़क प्राचीनताकेँ दुनियाक सोझाँ रखबाक कोसीस कएल जाय। बस एकटा कामचलाऊ सड़कसँ एकरा बगलक गाम खोजपुरसँ जोड़ि देल गेलैक आ इतिश्री कय देल गेलैक।

यदि बलिराज गढ़क खुदाई ढ़ंगसँ कएल जाय आ एतय एकटा नीक संग्रहालय बना देल जाय तँ बढ़िया काज होयत। मिथिलांचलक हृदयस्थलीमे रहबाक कारणेँ एतय मिथिला पेंटिंगक कोनो संस्थान वा आर्ट गैलरी सेहो खोलल जा सकैत अछि। एकटा नीक(चाकर आ चिक्कन हाईवे) क संग नीक विज्ञापन बलिराजगढ़क पर्यटक सभकेँ निगाहमे आनि सकैत अछि। एहिसँ इलाकाक गरीबी दूर करबामे सेहो मदद भेटत। यदि एकरा बुद्धा सर्किट वा रामायण सर्किटक अंग बना लेल जाय तँ आर उत्तम।

मिथिला मंथन

१.

मिथिलांचल क्षेत्र बिहार मे सबसँ पिछड़ल मानल जाइत अछि, अगर प्रतिव्यक्ति आय, साक्षरता और प्रसवकाल मे जच्चा-बच्चा के मृत्यु के मापदंड बनायल जाय तोएँ मिथिलांचल देश के सबस गरीब आ पिछड़ल इलाका अछि। एकर किछु कारण त अहि इलाका के भौगोलिक बनावट अछि लेकिन ओहियो सँ पैघ कारण एहि इलाका मे कोनो नीक नेतृत्व के आगू नै एनाई अछि। आजादी लगभग 60 वर्ष बीत गेलाक बाद देश में जहि हिसाब स आर्थिक असमानता बढ़ि गेलैक अछि ओहि में बिहार आ खासकए मिथिला सामने एकटा बड्ड पैघ संकट छैक जे ई आआंर पाछू नै फेका जाय। उदाहरण के लेल ई आंकड़ा आंखि खोलि दै बला अछि जे एकटा गोआ मे रहय बला औसत आदमी के प्रतिव्यक्ति आमदमी एकटा औसत बिहारी सं सात गुना बेसी छैक आ एकटा पंजाबी के आमदनी पांच गुना बेसी छैक। बिहारो मे अगर क्षेत्रबार आंकड़ा निकालल जाय त बिहार के दक्षिणी(एखुनका गंगा पार मगध आ अंग) एवम पश्चिमी ईलाका बेसी सुखी अछि, आ ओकर जीवनशैली सेहो दू पाई नीक छैक। त एहन में सवाल ई जे फेर रस्ता की छैक। की मिथिलांचल के लोक एहिना दर-दर के ठोकर खाईके लेल दुनियां में बौआईत रहता अथवा हुनको एक दिनि विकास के दर्शन हेतन्हि।

मिथिलांचलक ई दुर्भाग्य छैक जे एकर एकटा पैघ हमरा हिसाब सँ आधा सँ बेसी इलाका बाढ़ि में डूबल रहैत छैक। बाढ़ि के समस्या निदान सिर्फ राज्य सरकार के मर्जी सँ नहि भ सकैत बल्कि अहि में केंद्रसरकार के सहयोग चाही। पिछला साठि साल मे बिहार क नेतागण अहिपर कोनो गंभीर ध्यान नहि देलन्हि जकर नतीजा अछि जे बाढ़ एखन तक काबू मे नहि आबि रहल अछि। पछिला कोसी के आपदा एकर पैघ उदाहरण अछि, आब नेतासब के आँखि कनी खुललन्हि अछि, लेकिन एखन सँ मेहनत केल जायत त अहि मे कमस कम 20 साल लागत।

बाढ़ि सिर्फ संपत्ति के नाश नहि करैत छैक, बल्कि आधारभूत ढ़ांचा जेना सड़क, रक्षेवे आ पुल के खत्म क दैत छैक। एहन हालत मे कोनो उद्योग के लगनाई सिर्फ दिन मे सपना देखैक बराबर अछि।

किछु गोटाके कहब छनि जे बिहार मे उद्योग धंधा कएल जाल बिछाकएकर विकास केल जा सकैछ। लेकिन जखन सड़क आ विजलिये नहि अछि त केना उद्योग आओत। दोसर बात ई जे पिछला अविकासक चक्रक फलस्वरुप आबादीक बोझ एतेक बढ़िगेल अछि जे पूरा इलाका मे कोनो खाली जमीन नहि अछि जतय पैघ उद्योग लगायल जा सकय। सिंगूर के उदाहरण सामने अछि। महाशक्तिशाली वाममोर्चा के सरकार के जखन बंगाल मे 1000 एकड़ जमीन नै ताकल भेलैक त एकर कल्पना व्यर्थ जे दरभंगा आ मधुबनी मे सरकार कोनो पैघ उद्योग के जमीन दै। दोसर बात इहो जे पूरा मिथिला के पट्टी मे, मुजफ्फरपुर सँ ल क कटिहार तक कोनो पैघ संस्था-चाहे ओ शैक्षणिक होई या औद्योगिक- नै छै जे एकमुश्त 3-4 हजार लोक के रोजगार द सकै। हमरा इलाका मे शहरीकरण के घनघोर अभाव अछि। जतेक शहर अछि ओ एकटा पैघ चौक या एकटा विकसित गाँव स बेसी नहि।एकटा ढंग के इंजिनियरिंग या मेडिकल कालेज नहि, एकटा यूनिवर्सिटी नहि। कालेज सब केहन जे 4 साल में डिग्री द रहल अछि। एक जमाना मे प्रसिद्ध दरभंगा मेडिकल कालेज मे टीचर के अभाव छैक आ कालेज जंग खा रहल अछि। हम सब एहन अकर्मण्य समाज छी जे कोसी पर एकटा पुल बनबैक मांग तक नै केलहुँ,हमर नेता हमरा ठेंगा देखबैत रहला। आब जा क रेलवे आ रोड पुल के बात भ रहल अछि।कुल मिलाकरइलाका मे सिर्फ 8-10 प्रतिशत लोक शहर में रहैत छथि, ई ओ लोक छथि जिनका सरकारी नौकरी छन्हि। ई शहर कोनो उद्योग के बल पर नहि विकसित भेल। बाकी आबादी-लगभग 40 प्रतिशत दिल्ली आ पंजाब मे अपन कीमती श्रम औने-पौने दाम मे बेच रहल अछि। मिथिला के श्रम पंजाब मे फ्लाईओवर आ शार्पिंग माल बनाब मे खर्च भ रहल अछि, कारण कि हमसब एहेन माहौल नहि बनौलिएकि जे ओ श्रम अपन घर मे नहर या सड़क बनब मे खर्च होअए।

तखन सवाल ई जे फेर उपाय की अछि। हमरा ओतय पैघ उद्योग नहि लागि सकैछ, रोड नहि अछि बाढ़ि के समस्या विकराल अछि, त हमसब की करी। लेकिन नहि, मिथिला के विकास एतेक पाछू भ गेलाक बाद एखनों कयल जा सकैछ। आ अहि विषय मे कय टा विचार छैक।

किछु गोटा के कहब छन्हि जे एखुनका बिहारक सरकार मगध आ भोजपुर के विकास पर बेसी ध्यान द रहल छैक। एकर वजह जे सत्ता मे

पैघ नेता ओही इलाका के छथि, लेकिन दोसर कारण इहो जे ओ इलाका बाढ़िग्रस्त नहि छैक। पैघ प्रोजेक्ट के लेल ओ इलाका उपयुक्त छैक। उदाहरणस्वरुप-एनटीपीसी, नालंदा यूनिवर्सिटी आ आयुध फैक्ट्री-ई तमाम चीज मगध मे अछि। दोसर बात ई जे नीक कनेक्टिविटी भेला के कारणे भविष्य मे जे कोनो निवेश बिहार मे हेतैक ओ सीधे एही इलाका मे जेतैक। कुलमिलाक आबै बला समय मे बिहार मे क्षेत्रीय असमानता बढ़य बला अछि। एहि हालत मे किछु गोटा अलग मिथिला राज्यक मांग क रहल छथि, आ हमरा जनैत संस्कृति स बेसी-अपन आर्थिक विकास के लेल ई मांग उचित अछि।

मिथिला विकास माडेल की हुअके चाही।मिथिला के जमीन दुनिया के सबस बेसी उपजाऊ जमीन अछि। हमसब पूरा भारत के सागसब्जी आ अनाज सप्लाई क सकैत छी। लेकिन ओ सब्जी दरभंगा सं दिल्ली कोना जायत। एहिलेल फोरलेन हाईवे आ रेलवे के रेफ्रजेरेटर डिब्बा चाही। दोसर गप्प हमर इलाका के एकटा पैघ रकम दोसर राज्य मे इंजिनियरिंग आ मेडिकल कालेज चल जाईत अछि। हमरा इलाका मे 50 टा इंजिनीयरिंग कालेज आ 10 टा मेडिकल कालेज चाही। ई कालेज भविष्य में विकास के रीढ़ साबित होयत। हमरा इलाका मे छोट-छोट उद्योग जेना साफ्टवेयर डेवलपमेंट या पार्टपुर्जा बनबै बला फैक्ट्री चाही जहि मे 100-200 आदमी के रोजगार भेटि जाय। लेकिन एहिलेल 24 घंटा विजली चाही। ई कतेक दुर्भाग्य के बात जे बगल के झारखंडक कोयला के उपयोग त पंजाब में बिजली बनबैक लेल भ जाय छैक लेकिन हमसब एकर कोनो उपयोग नहि क रहल छी। आई अगर हमरा अपन इलाका मे 24 घंटा बिजली भेटि जाय त पंजाब जाय बला मजदूर के संख्या में कम सं कम आधा कमी त पहिले साल भ जायत। भारत के दोसर राज्य सिर्फ आ सिर्फ अही इलाका के सस्ता श्रम के बले तरक्की क रहल अछि। हमसब ई जनितो किछु नहि क रहल छी, ई दुर्भाग्य के गप्प।

मिथिला मे पढ़ाई लिखाई के प्राचीन परंपरा रहलैक अछि लेकिन सुविधा के अभाव मे ई धारा हाल मे कमजोर भेल अछि। खासकए महिला शिक्षा के दशा-दिशा त आर खराब अछि। एकटा लड़की कतेको तेज कियेक ने रहेए ओ 10 सं बेसी नहि पढ़ि सकैत अछि कारण घरक क्षेत्र कालेज नहि छैक। हमरा अगर तरक्की करय के अछि त इलाका मे एकटा महिला यूनिवर्सिटी त अवश्ये हुअके चाही, संगहि सरकार के ईहो दायित्व छैक जे हरेक ब्लाक में कमस कम एकटा डिग्री कालेज के स्थापना होअए। देश के विकास मे अहि इलाका के संग कतेक भेदभाव कएल गेलैक आ हमर नेतागण कतेक निकम्मा छथि-एकर पैघ उदाहरण त ई जे इलाका मे एकहुटा केंद्रीय संस्थान नहि छैक। एकटा यूनिवर्सिटी नहि, एकटा कारखाना नहि। आब जा क कटिहार मे अलीगढ यूनिवर्सिटी, दरभंगा में आईआईटी आ बरौनी मे फेर सं खाद कारखाना के पुनर्जीवित करैक बात कयल जा रहल अछि। हमरा याद अछि जे साल 1996 तक दरभंगा तक मे बड़ी लाईन नहि छलैक। हमसब कुलमिलाकर, कोनो तरहक संपत्ति के निर्माण नहि करैत छी। हमसब अपन आमदनी दोसर राज्य भेज दै छियैक-बेटा के बंगलोर मे इंजिनीयरिंग करबै सँ ल क दियासलाई तक खरीदै मे। हमर पूंजी अपन राज्य, अपन इलाका के विकास में नहि लागि रहल अछि। एहि स्थिति के जाबत काल तक नहि बदलल जायत हम किछु नहि क सकैत छी।

२.

प्रवीण आई अमेरिका चलि गेल। ओकरा एल एंड टी के प्रोजेक्ट पर शिकागो पठा देल गेलै। लेकिन ओकरा संग पढ़ैवाली पूनम के भाग्य ओहन नहि छलैक। ओ दू बच्चा के मां बनि अपन स्वामी के सेवा में अपन जिंदगी बिता रहल अछि। बितला समय याद करैत छी त लगैत अछि जे पूनम के संग बड्ड अन्याय भेलैक। बात सन् 95 के हतैक, हमर बोर्ड के रिजल्ट आबि गेल छल। ओहि समय पूनम आ प्रवीण छट्ठा भे पढैत छल। जाहि स्कूल में पढ़ैत छल ओहि में चारि टा मास्टर छलैक जे बेसीकाल खेतिए बारी भे लागल रहैत छलैक।

पूनम क्लास में फर्स्ट अबैत छल आ प्रवीण सेकेंड...लेकिन छट्ठा के बाद प्रवीण के बाबू जी ओकरा ल क कटक चलि गेलखिन्ह जतय ओ एकटा दुकान में काज करैत छलखिन्ह। पूनम कँ घरक हालत अपेक्षाकृत ठीक छलैक, ओकर बाबूजी सरकारी सेवा में छलखिन्ह, लेकिन पूनम दसवीं से आगू नहि पढि सकल। ओकरा इंटर में मधुबनी के झुमकलाल महिला कालेज में नामो लिखा देल गेलैक लेकिन बाद में ओ आगू नै पढ़ि सकल। लेकिन प्रवीण राउरकेला सं इंजीनरिंग केलाक बाद एल एंड टी में प्लेस्ड भ गेल आ कंपनी ओकरा शिकागो पठा देलकै।

एक दिन हमर दीदी पूनम के पूछवो केलकैक जे ओ कियेक ने बीए में नाम लिखेलक, त पनमक जवाब छलैक जे ओकर मां-पप्पा के बीच ओकर पढ़ाई के ल क नित दिन घोंघाउज होइक। ओकर बेसी पढ़नाई पूनम के विवाह में बाधा बनि रहल छलैक। तीन बहिन में सबस पैघ पूनम के दहेज एकटा बड्ड पैघ समस्या छलैक। दू साल के बाद पूनमक विवाह भ गैलैक आ जे पूनम क्लास भे फर्स्ट अबैत छल ओ जीवन के दौड़ भे सदा के लेल सेकेंड भ गेल। पूनम के तमाम टैलेंट आब सिलाई-कढ़ाई आ स्वेटर के नब डिजाइन सीख में खप मे लगलैक।

आई हमरा गाम में प्रवीण के टैलेंट के धूम मचल छैक। मिथिला के तमाम दहेजदाता ओकर दरवाजा पर आबि चुकल छथि, लेकिन सवाल ई जे कि पूनम के आगू नै पढ़ि पबै में कि सिर्फ दहेज टा एकटा कारण छलैक या किछू आउर...? मानि लिय जे दहेज नहियों रहितैक त की पूनम के अपन घर लग नीक कालेज भेटि जयतैक ? हम सोचैत छी जे यदि पूनम के जन्म कर्नाटक या केरल में भेल रहितैक त भ सकैछ ओ इंजिनीयर बनि जाईत आ एल एंड टी ओकरो शिकागो भेजि दैतैक। लेकिन ई सवाल एखनो नीतीश कुमार अथवा अर्जुन सिंह के एजेंडा में नहि छन्हि। नै जानि कतेको लाख पूनम

आई चिचिया-चिचिया क ई सवाल अहि व्यवस्था सं पूछि रहल अछि।

हमर ई पोस्ट हिंदी के हमर ब्लाग आम्रपाली(amrapaali.blogspot.com)... ओहि पर एकटा टिप्पणी अछि जे सब साधन सबके नहि देल जा सकैत छैक, आगू बढ़य बला के खुदे के जिजीविषा हुअके चाही। लेकिन हमर कथन ई अछि जे प्रवीण के संग कोनो जीजिविषा नहि छलैक-ई पुरुष प्रधान समाज के एकटा दुखद अध्याय छैक जे हजारो प्रवीण के त कोटा स ल क बंगलोर तक डोनेशन पर भेज देल जाइत छैक लेकिन लाखों पूनम एखनों आशाके बाट जोहि रहल अछि। की ई सरकार के कर्तव्य नहि छैक जे ओ पूनम सब के उचित पढ़ाई के व्यवस्था करैक..?.

ई कतेक दुर्भाग्य केर बात अछि जे बिहार में एखन हाईस्कूल खोलै पर प्रतिबंध लागल छैक। एखन 5 किलोमीटर के दायरा में बिहार में एकटा हाईस्कूल छैक। कोनो लड़की के लेल ई कोना संभव छैक जे ओ पांच किलोमीटर पढ़य लेल हाईस्कूल जाय। आब बिहार सरकार हाईस्कूल में लड़की सबके साइकिल द रहल छैक लेकिन की सिर्फ हाईस्कूल तक के पढ़ाई उपयुक्त छैक..? दोसर बात ई जे बिहार सनहक राज्य में जतेक सामान्य ग्रेजुएशन के सीट नै छैक, कर्नाटक आ महाराष्ट्र में ओहि स बेसी इंजिनीयरिंग के सीट छैक।

एखन तक राज्य में एकोटा महिला विश्वविद्यालय आ तकनीकी विश्वविद्यालय नै छैक। हुअके तँ ई चाही छल जे बिहार में 20-25 साल पहिनहि हर जिला- आ ब्लाक में एकटा कॉलेज खोलि देबाक चाही छलैक। आब के जमाना त इंजिनीयरिंग आ एमबीए कॉलेज खोलक छैक। एहन हालत में ओहि खाई के के भरत जे बिहार आ दोसर राज्य के बीच में बनि गेलैक अछि। फेर ओएह सवाल सामने अछि- की अबैयो बला समय में पूनम इंजिनियरिंग कालेज में जेती....?



श्यामल किशोर झा

लेखकीय नाम श्यामल सुमन, जन्म १०।०१।१९६० चैनपुर जिला सहरसा बिहार, स्नातक। शिक्षा:अर्थशास्त्र राजनीति शास्त्र एवं अंग्रेजी, विद्युत अभियंत्रणमे डिपलोमा, प्रशासनिक पदाधिकारी,टाटा स्टील, जमशेदपुर,स्थानीय समाचार पत्र सहित देशक अनेक पत्रिकामे समसामयिक आलेख, कविता, गीत, गजल, हास्य-व्यंग्य आदि प्रकाशित, स्थानीय टी वी चैनल एवं रेडियो स्टेशनमे गीत गजल प्रसारण, कैकटा कवि सम्मेलनमे सहभागिता ओ मंच संचालन।–**सम्पादक**

प्यास

हमर गाम छूटि गेल, पेट भरवाक लेल!

भूख लागल अछि एखनहुँ, उमरि बीत गेल!!

हमर गाम छूटि गेल, पेट भरवाक लेल!

नौकरी की भेटल, अपनापन छूटल!

नेह डूबल वचन केर आश टूटल!!

दोस्त यार कतऽ गेल, नव-लोक अपन भेल!

गाम केर हम बुधियार, एतऽ बलेल!!

हमर गाम छूटि गेल, पेट भरवाक लेल!

आयल पावनि-त्योहार, गाम जाय केर विचार!

घर मे चर्चा केलहुँ तऽ, भेटल फटकार!!

नहि नीक कुनु रेल, रहय लोक ठेलम ठेल!

कनियाँ कहली जाऊ असगर, आ बन्द करू खेल!!

हमर गाम छूटि गेल, पेट भरवाक लेल!

की कहू मन के बात, छी पड़ल काते कात!

लागय छाती पर आबि कियो राखि देलक लात!!

घर लागय अछि जेल, मुदा करब नहि फेल!

नवका रस्ता निकालत, सुमन ढ़हलेल!!

हमर गाम छूटि गेल, पेट भरवाक लेल!



श्याम सुन्दर शशि

जनकपुरधाम, नेपाल। पेशा-पत्रकारिता। शिक्षा: त्रिभुवन विश्वविद्यालयसँ, एम.ए. मैथिली, प्रथम श्रेणीमे प्रथम स्थान। मैथिलीक प्रायः सभ विधामे रचनारत। बहुत रास रचना विभिन्न पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित। हिन्दी, नेपाली आ अंग्रेजी भाषामे सेहो रचनारत आ बहुतरास रचना प्रकाशित। सम्प्रति- कान्तिपुर प्रवासक अरब ब्यूरोमे कार्यरत। सम्पादक

मरदे कि बरदे

भगवान भाष्करक प्रचण्ड प्रतापकेँ सम्हारि सकब धरती मैआक वास्ते कठिन भऽ रहल छलनि। मैया अपरतीव छलीह। चण्डलवाक प्रलयंकारी रौद्र अवतारसँ अपने बाचथु कि अपन सखा सन्तानकेँ बचाबथु? ''अपन मथा साहुर, साहुर'' करबाक अवस्था सेहो नहि छल। मिथिलाक धरती थोरै छैक जे यत्र तत्र सर्वत्र हरियरी रहतै। लोक अपनो जुराएत आ लोकोकेँ जुरौतैक? ई कतार छै भाई। कतार। एत्त गाछ वृक्ष कत पावि? धनीमानीलोक ऐजुवा (वगैचा) लगबैत छथि। जेना लोक धीया पूताकेँ दूध पियाकऽ पोसैत अछि। तहिना पोसैत अछि एतुका सेखसभ गाछ-वृक्ष। ककरो मजाल छै जे ओहि गाछक नीचाँ सुस्ता लेत..। तुरन्त वन-विनाश कानूनक अन्तर्गत शख्त कार्यवाही भऽ जएतैक। आ ओऽ गाछ वृक्ष होईतो नहि अछि सुस्तैवा योग्य। एक कविक कवित जकाँ ''वड़ा हुआ तो क्या हुआ लम्बे पेड़ खजुर। पंछीको छाया नही फल लागे अति दूर..'' डाराँ मोरवाक योग्य छाहरि नहि। बूझि परैत छल, दोहाक समुद्र वाष्प भऽ कऽ उड़ि जाएत। सड़क उपरके अलकरा पघलि रहल छल। सरकार एहि गरमीक महिनामे दुपहरमे काज करबापर पाबन्दी लगौने छैक। तथापि देश विदेशक मजुरसभ अपन-अपन ओभर टाईम पका रहल छल। भगवान भाष्करसंगक महासमरमे लागल छल। धरती पुत्रलोकनि। धरती तँ आखिर धरती छैक ने। अपन जनम धरती हो कि करम धरती...।

एहि रौदसँ बेपरवाह लक्ष्मण पैघ-पैघ डेग मारैत आगाँ बढ़ि रहल छल। कोनो अभेद्य लक्ष्यकेँ भेदन करबाक योजनामे आगू बढ़ि रहल चोटाएल, हारल योद्धा जेकाँ। एहि बेरक समरमे विजयश्री प्राप्त करबाक दृढ़ सन्कल्पित छल ओऽ। ओकरा ठेकान नहि छलै जे ओकर समग्र देह घामे पसिने भिजी गेल छैक। ओऽ कारी झामर भऽ गेल अछि। ओऽ बस आगू बढ़ि रहल छल, अपन गंतव्य दिस। ओकर गन्तव्य छलै, दोहाक अतिव्यस्त इलाकामे अवस्थित नेपाली दूतावास। जतए ओकर प्रेयसी गत एक सप्ताहसँ शरणागत छैक। मुदा किछुए किलोमीटरक दूरीपर अवस्थित रहलाक बावजूदो ओऽ हुनकासँ भेटि नहि सकल अछि। ओऽ सीधा दूतावासमे प्रवेश कएकऽ मुदा तुरन्ते पाछाँ घुमि गेल। चार दिवालीक ओटमे ठाढ़ भऽ जिन्सपेन्टक पछिला जेबीसँ कंघी निकाललक। केस सीटलक। कपड़ा मिलौलक। आ कनेक सतर्क कदमसँ दूतावासक मेन गेटकेँ पार कएलक। दूतावास परिसरमे रहल नेबोक गाछक ओटमे बैसि ओकर प्रेयसी केस झारि रहल छलै। ओएह घुरमल-घुरमल केस। सुराही सन कमर आ सुडौल शरीर। पीठपर करिकवा तिलसँ ओऽ आओर निधोख भऽ गेल। ओऽ ओकरे रेशमा छैक। आगूसँ देखू कि पाछोसँ। ईस्स। ओकरा मोनमे टिस जेकाँ उठलै। मोन भेलै जे पाछेसँ जाऽ भरि पाजकेँ पकड़ि ली आ गत ९ महिनाक हिसाब-किताब माँगी। ओऽ आगू सेहो बढ़ल मुदा रेशमाक केश जखनसँ खुजल रहैक तखनेसँ दूतावासक चौकीदार सेहो ओकरे दिस ताकि रहल छलै। लक्ष्मणकेँ हिम्मति नहि भेलै अपने प्रेयसीक हाथ धरि पकड़बाक। जहन दुनूक आँखि मिललैक तँ दुनूक नयनसँ अनन्त अश्रुधारा बहि गेलै। एक दिस लक्ष्मण छल, दोसर दिस रेशमा आ बीचमे रहैक गाछ। जकरा साक्षी राखि दुनू ९ महिनाक हिसाब किताब फरियौलक। लक्ष्मण एतबे बाजल ''हम तँ बरद जेकाँ बहिए रहल छी, एहि मरुभूमिमे, अहाँ दुधपिया बौवाकेँ छोड़िकऽ किएक आबि गेलौ?''

कतारक मैथिल भेड़ा चरवाह-

कतारक सदरमुकाम दोहासँ लगभग एक सय किलोमीटर दूर जमालिया स्थित मरुभूमिक छातीपर बनाओल गेल भेड़ाक गोहियाक आगू ठाढ़ भऽ एक गोट युवक सिटी बजा रहल छल। महाभारतकालीन कृष्ण जकाँ। जनु अपन गोप आ गोपीकेँ लग बजेबाक उपक्रम कऽ रहल हो। मुदा एहि मरुभूमिमे ने गाई अएबाक कोनो सम्भावना छलै आ ने

गोपी। मुदा बकरी आ भेड़ा धरि अवश्य आबि गेल ओकर सिसकारी सुनिकए। दिनभरि ५० डिग्रीक ताप छोड़ि स्वयं थकित सुरुज भगवान संध्या रानीसँ रसकेलि करबाक धुनमे पश्चिमाचलगामी वाट पकड़ि लेने छलाह। पश्चिमसँ आवएवला सेनुताएल प्रकाश मरुभूमिक वालुपर पड़ि मलिछाह आकृति बना रहल छल। मरुभूमि पिलिया ग्रस्त रोगी जकाँ बेजान देखना जाऽ रहल छल। पछिया हवा सांय सांय कऽ रहल छल। हावाक गतिसंग वालुक छोट-छोट कण उड़ि-उड़ि राहगीरकेँ घायल बना रहल छल। बूझि पड़ैत छल जे प्रलयकेर पूर्व संकेत हो। चारुकात वियावान मरुभूमि आ एहिमे उगल एक आध बबूरक पौध। हम बेर-बेर सोचैत रहैत छी जे धन्य बबूर, ऊँट आ सार्कदेशक दुखिया मजुरसभ जे एहि भूमिकेँ धरती होएबाक ओहदा प्रदान करैत छैक। अन्यथा...??



मुदा ओऽ युवक शान्त छल। एक क्षणक बाद सुरुज अस्त भऽ जएतै, सगर सन्सार अन्हार भऽ जएतै आ सयौ विगहामे पसरल मरुभूमिपर कारी रंगक चादर ओछा जाएत। ओऽ अन्हार होएबासँ पहिनहि अपना अधकि भेड़ा आ बकरी गोहियामे घुसियावए चाहैत छल। कर्तव्य परायण मनुपुत्रक रूपमे अपन दायित्व निर्वाह करए चाहैत छल।

एहि तरहेँ अपन ईसारापर कृष्ण जकाँ भेड़ा-बकड़ीकेँ नचावएवला युवक के नाम छल महेन्द्र कापर। नेपालक सिरहा जिल्लाक कमलाकात भेड़िया गामक ई मैथिल युवक, विजुली, पिवाक पानि, सड़क आ स्वास्थ्यादि सुविधासँ विहीन एहि मरुभूमिमे गत एक वर्षसँ एहिना भेड़ा वकरी चड़वैत अछि। महेन्द्र कापर मात्र नहि, एहि मरुभूमिक विभिन्न भागमे बनाओल गेल विभिन्न भेड़ा, बकड़ी आ ऊट बथान तथा लगाओल गेल वगैचामे हजारौं नेपाली, भारतीय, वंगलादेशी, श्रीलंकन आ सुडियन मजुरसभ काज करैत अछि। अपना सभ दिस एक गोट कहबी नहि छैक जे, ''जएवह नेपाल, संगहि जएतह कपार''। तहिना ई युवक सभ अपन करम भोगि रहल अछि। ओऽ सभ अबैत काल जे दोहा देखने छल, चकमक विजुलीवत्ती देखने छल आ चिक्कन चुनमुन फोरलेन सड़क देखने छल से घुरैत काल फेर देखत। ओकरा सभक वास्ते दोहा सहर दिल्ली दूर छैक।



महेन्द्र जमालियाक एहि अन्कन्टार मरुभूमिमे गत एक वर्षसँ काज करैत अछि। ओकरा जिम्मामे दू सय भेड़ा आ बकड़ी छैक। हमरा सभकेँ देखिते ओकर आँखिमे विशेष प्रकारक चमक व्याप्त भऽ गेलै, मुखमण्डलपर खुशीक रेखा नाचए लगलैक। साँझ पड़ि रहल छैक ओकरा लालटेम नेसवाक छैक, रातुक खाना बनेवाक छैक आ खुला आकाशक नीचाँ तरेगन गनैत राति बितेवाक छैक। गत एक वर्षसँ महेन्द्रक ई दैनिकी बनि गेल छैक। ईजोरिया रातिक चानकेँ देखि ओऽ अतिशय प्रसन्न होइत अछि, ''ई चान हमरो बाऊ आ माय आउर सेहो देखैत होतै नञि''? ओकर निश्चल प्रश्न हमरा भावुक बना देने छल।

ओऽ भेड़ा आ बकरीकेँ गोहियामे गोतैत अछि। पठरूसभकेँ दूध पियबैत अछि। चारा रखैत अछि आ चैन भऽ हमरा सभसँ गप्प करवा वास्ते बैसि जाइत अछि। ओऽ एक वर्ष पूर्व कतार आएल छल। मानव तस्करसभ ओकरा कहने रहैक जे वगैचाक काज छैक। ओऽ सोचने रहय जे फलफूलमे पानि पटाएव, रोपव उखारव आ रियाल कमाएव मुदा से भेलै नहि। ओऽ भेड़ा चरवाह बनि कऽ रहि गेल। असलमे महेन्द्र अपने निरक्षर अछि। ओकर कतार आगमनके उद्देश्य छलै गाममे घर बनाएव आ बेटा-बेटीकेँ बोर्डिंग स्कूलमे पढ़ाएव। मुदा ओकर एक वर्षक श्रमसँ ई संभव नहि भऽ पाओल छैक। एक वर्षमे तँ महाजनकेँ ऋणो नहि फरिछाओल छैक। एहि वास्ते ओकरा आओर दू वर्ष एहि मरुभूमिक वालुकेँ फाकय परतैक। अवैत काल दलाल ओकरासँ ७५ हजार रुपैया लेने रहैक। जे ओऽ महाजनसँ ऋण लऽ कऽ चुकता कएने छल।

जहन महेन्द्रक गप्पक बखारी खुजलै तँ फेर बन्द होएवाक नामे नहि लैक। ओकरा तँ ओहि गोहियामे राति बितैवाक छलै मुदा हमरा सभकेँ सय किलोमीटर दूर दोहा अएवाक छल। हमरा सभक धरफड़ीकेँ ओऽ अकानि गेल छल। कहलक सर, कहियोकाल अवैत जाइत रहब। भेड़ा बकड़ी संगे रहैत-रहैत ओहने भऽ गेल छी, देखियौ चाहो पानिक लेल नहि पुछलहुँ। आ कपड़ा लपेटल एकगोट पानिक बोतल आगाँ बढ़ा देलक। ''हमरा सभक फ्रिज बुझू कि एयर कन्डीशन ईहे अछि''।



गर्मीसँ सुखाएल कण्डकेँ पानिसँ भिजाओल आ अपन गन्तव्य दिस आगाँ बढ़ि चललहुँ। लगभग दश किलोमीटर वाट तय कएलाक बाद हमरा लोकनि जमालिया नगरमे पहुँचलहुँ। मुसलमान धर्मावलम्बी सभक रोजा खोलवाक समय भऽ गेल रहै। सड़क कातमे बनाओल गेल चबुतरापर नाना प्रकारक व्यंजन साँठल जाऽ रहल छल। लोक विस्मील्लाह करवालेल तैयार छलाह। हमरा मोन पड़ल महेन्द्रके गोहियामे राखल खवुज (कतार सरकारक सस्ता दरक रोटी) आ प्याउजक धेसर। एसगर महेन्द्र एखन नून, मिरचाई आ तेल प्याउजक संग खवुज दकरि रहल हएत। एतए ओकरेद्वारा पोसल गेल खस्सीक विरयानीक स्वाद लऽ रहल अछि मालिक आउर।

दोहा, कतार, जमलिया।



श्रीधरम (1974-)

युवा कथाकार समालोचक, जन्म चनौरागंज, मधुबनी। हिन्दी साहित्यमे एम.ए.पी.एच.डी।

फानी

पंच सभ एकाएकी कारी मड़रक दुअरा पर जमा हुअ' लागल छल। दलान पर चटाइ बिछा देल गेल रहै। देबालक खोधली मे राखल डिबिया धुआँ बोकरि रहल छल। मात्र रामअधीन नेताक अयबाक देरी रहै।

बिना रामअधीन नेताक पंचैती कोना शुरु भ' सकैए? डोमन पाँच दिन पहिनहि सँ पंच सभक घूर-धुआँ मे लागल छल। डोमन चाहैत रहए जे सभ जातिक पंच आबय, मुदा रामअधीन नेता मना क' देने रहै, "बाभन-ताभन कें बजेबैं तँ हम नइँ पँचैती मे रहबौ। जातिनामा पँचैती जातिए मे होना चाही।" डोमन कें नेताजीक बात काटबाक साहस नइँ भेलै। रामअधीन आब कोनो एम्हर-ओम्हर वला नेता नइँ रहलै, दलित पाटीक प्रखंड अध्यक्ष छिऐ। थानाक बड़ाबाबू, सीओ, बीडीओ, इसडीओ सभ टा चिन्है छै। कुर्सी पर बैसाक' कनफुसकी करै छै। मुसहरी टोलक बिरधापेंशनवला कागज-पत्तर सेहो आब नेतेजी पास करबै छै। कोन हाकिम कतेक घूस लै छै, से सभ टा रामअधीन नेता कें बूझल छै। कारी मड़र तँ नामे टाक माइनजन, असली माइनजन तँ आब रामअधीने नेता किने?

डोमन पँच सभ कें चटाइ पर बैसा रहल छल आ सोमन माथा-हाथ देने खाम्ह मे ओङठल, जेना किछु हरा गेल होइ। टोल भरिक मौगी सभ कारी मड़रक अँगना मे घोदिया गेल रहै–सोमन आ डोमनक भैयारी-बँटवारा देख' लेल। ओना दुनू भाइक झगड़ा आब पुरना गेल रहै। मौगी सभक कुकुर-कटाउझ सँ टोल भरिक लोक आजिज भ' गेल रहय तँ रामअधीन नेता डोमन कें तार द'क' दिल्ली सँ बजबौलकै। सभ दिनक हर-हर खट-खट सँ नीक बाँट-बखरा भइए जाय।

झगड़ाक जड़ि सीलिंग मे भेटलाहा वैह दसकठबा खेत छिऐ जे सोमनक बापे कें भेटल रहै। रामअधीन नेताक खेतक आरिये लागल दसकठबा खेत। कैक बेर रामअधीन नेता, सोमनक बाप पँचू सदाय कें कहने रहै जे हमरे हाथेँ खेत बेचि लैह, मुदा पँचू सदाय नठि गेल रहै। रामअधीन नेता आशा लगौने रहए जे बेटीक बियाह मे खेत भरना राखहि पड़तनि, मुदा पँचू सदाय आशा पर पानि फेर देने छलै। एकहक टा पाइ जोगाक' बेटीक बियाह सम्हारि लेलक तँ खेत नइँ भरना लगेलक। मरै सँ चारि दिन पहिनहि पँचू सदाय सोमन आ डोमन कें खेतक पर्ची दैत कहने रहै- "ई पर्ची सरकारक देल छिऐ, जोगाक' रखिहेँ बौआ, जोगबिहेँ। नइँ। दस कट्ठा कें बिगहा बनबिहेँ, भरि पेट खाइत देखिक' सभकें फट्टै छनि। बगुला जकाँ टकध्यान लगेने रहैए"।

डोमन बापक मुइलाक बाद परदेश मे कमाय लागल रहय आ सोमन गामे मे अपन खेतीक संग-संग मजूरी। फसिलक अधहा डोमनक बहु रेवाड़ीवाली कें बाँटि दैक। मुदा, जेठकी दियादिनी महरैलवाली कें ई बड़ड अनसोहाँत लागै, "मर्र, ई कोन बात भेलै, पसेना चुवाबै हमर साँय, चास लगाब' बेर मे सभ निपत्ता आ बखरा लेब' बेर गिरथाइन बनि जायत। लोकक साँय बलू गमकौआ तेल-साबुन डिल्ली से भेजै हय त' हम कि हमर धीया-पुत्ता आरु सुङहैयो ले' जाइ हय्।"

सभ दिन कने-मने टोना-टनी दुनू दियादिनी मे होइते रहै। मुदा, ओहि दिन जे भेलै...

सोमन गहूँम दौन क' क' दू टा कूडी लगा देलक आ नहाय ले' चलि गेल। गहूमक सूँग देह मे गड़ैत रहै। रेवाड़ीवाली अपन हिस्सा गहूम पथिया मे उठाब' लागल रहए कि देखते जेना महरैलवाली कें सौंसे देह मे फोँका दड़रि देलकै, "रोइयाँ नइँ सिहरै हय जेना अपने मरदबाक उपजायल होइ।" रेवाड़ीवाली कोना चुप रहितय ? कोनो कि खेराअँत लै छै? झट द' जवाब देलकै, "कोनो रंडियाक जिरात नइँ बाँटै हय कोइ अधहाक मालिक छिऐ छाती पर चढ़िक' बाँटि लेबै।" "रंडिया" शब्द महरैलवालीक छाती मे दुकैम जकाँ धँसि गेलै-"बरबनाचो...के लाज होइ हय बजैत साँय मुट्ठा भेजै हय आइँठ-कुइठ धोइ क' आ एत' ई मौगी थिराएल महिंस जकाँ टोले-टोल डिरियायल फिरै हय, से बपचो...हमरा लग गाल बजाओत।" सुनिते रेवाड़ीवालोक देह मे जेना जुरपित्ती उठि गेलै ओ हाथ चमकबैत महरैलवालीक मुँह लग चलि गेल, "ऐ गै धोँछिया निरासी! तूँ बड़ सतबरती गै! हे गै उखैल क' राखि देबौ गै। भरि-भरि राति सुरजा कम्पोटर पानि चढ़ा-चढ़ा क' बेटीक ढीढ़ खसेलकौ से ककरा स' नुकायल हौ गै? कोना बलू फटा-फटि बेटी दीन क' ससुरा भेज देलही।"

बेटीक नाम सुनिते महरैलवालीक तामस जवाब द' देलकै झोँटा पकड़िक' रेवाड़ीवाली कें खसा देलक। दुनू

एकदोसराक झोँट पकड़ने गुत्थम-गुत्थी भेल। ओम्हर सँ सोमनक बेटा गँगवा हहासल-फुहासल आयल आ मुक्के-मुक्की रेवड़ीवाली कें पेटे ताके मार' लागल। रेवाड़ीवाली एसगर आ एमहर दू माइ-पूत। कतेक काल धरि ठठितय, ओ बपहारि काट' लागल। टोल पड़ोसक लोक सभ जमा भ' गेल रहै, दुनू कें डाँटि-दबाड़ि क' कात कयलक। दुनू दियादिनीक माथक अधहा केस हाथ मे आबि गेल रहै।

ओहि राति रेवाड़ीवालीक पेट मे तेहन ने दरद उखड़लै जे सुरज कम्पोटर पानि चढ़ा क' थाकि गेलै, मुदा नइँ सम्हरलै। चारिये मासक तँ भेल रहै, नोकसान भ' गेलै। बेहोसियो मे रेवाड़वाली गरियबिते रहलै, "ई डनियाही हमरा बच्चा कें खा गेल। सोचै हय कहुना निर्वंश भ' जाय जे सभ टा सम्पैत हड़पि ली। डनियाहीक बेटा मरतै। धतिंगबाक हाथ मे लुल्ही-करौआ धरतै। काटल गाछ जकाँ अर्रा जेतै..."।

दोसरे दिन रेवाड़ईवाली थाना दौगल जाइत रहे, रिपोट लिखाव'। रस्ता सँ रामअधीन नेता घुरेने रहै, "समाजे मे पँचैती भ' जैतौ" आ नेताजी सोमन कें मार'-मारक' छूटल रहै, "रौ बहि सोमना। मौगी कें पाँज मे राखबें से नै। आइए सरबे सब परानी जहल मे चक्की पिसैत रहित'। मडर केस भ' जइतौ। सरबे हाइकोट तक जमानति नहि होइत।" सोमन भीतर धरि काँपि उठल रहय। नहि जानि पँचैती मे की सभ हेतै। एक मोन भेलै, जाय आ पटुआ जकाँ महरैलवाली कें डंगा दैक। 'ई, छिनरी के हरदम फसादे वेसाहैत रहैए।' रामअधीन नेताक अबिते पँचैतीक करबाइ शुरु भ' गेलै। फौदारक चीलम सँ निकलैत धुँआक टुकड़ी किछु दूर उपर उठि बिला जाइत रहे गंधक माध्यम सँ अपन उपस्थितिक आभास दैत रहय।

"हँ त' डोमन किऐ बैसेलही हें पँचैती, से पँच कें कहबिही किने" रामअधीन नेता बाजल। डोमन ठाढ़ होइत बाजल, "हम परदेस कमाइ छिऐ। रेवाड़ीवाले एत' एसगर रहै हय। पँचू सदाय बलू भैयाक बाप रहै त' हमरो बाप रहै। हमहुँ पँचूए सदायक बुन्न स' जनमल छिऐ आ बोए कें सरकार जमीन देने रहै महंथ स' छीनिक। अइ जमीन पर जतने अधिकार एकर हइ ओतने हमरो हय। तहन जे स'ब मिलि क' रेवाड़ीवालीक गँजन केलकै, तकर निसाफ पँच आरु क' दइ जाउ। हमरा आर कुछो नइँ कहनाइ हय।" सब चुप...फेर नेतेजी सोमन कें टोकलकै, "की रौ। तोहर की कहनाम छौ?"

"आब हम बलू की कहबै ? जे भ' गेलै से त' घुरिक नइँ एतै ग'। समाज आरूक बीच मे छिऐ। जते जुत्ता मारै कें हइ, मारि लौ। दुनू मौगी रोसाएल रहै, तहन त' बलू ओकर नोकसान भ' गेलै तँ ओकर दिख त लोक नइँ देतै। तहन जे भ' गेलै से भ' गेलै। पंच आरू मिलिक' बाँट-बखरा क' दौ। खेतो कें आ घरो कें। झगड़े समाप्त भ' जेतै।"

"रौ बहिं सिमना, बात कें लसियबही नइँ। तहन त' अहिना ककरो कियो खून क' देतै आ समाज मुँह देखैत रहतै। कोना बभना आरू पुक्की मारै जाइ हइ से तूँ सभ की जान' गेलही। परसू बेलौक पर सार मुखिया हमरा देखि-देखिक' हँसैत रहय, चुटकी लैत रहय, "की हौ रामअधीन! जहन टोले नइँ सम्हरै छ' त' बिधायक बनलाक बाद पूरा एलाका कोना सम्हरतह? सुनै छिय' एहि बेर टिकट तोरे भेटत'। चल' अइहबा मे पार लागिऐ जेत'।..." नेताजी गुम्हरल, "टिकटेक नाम सुनिक' सार सब कें झरकै छनि, आगू की सभ जरतनि?" रामअधीन नेता एक बेर मोँछ कें चुटकी सँ मीड़ि उपर उठेक फेर आक्रामक मुद्रा बनबैत बाजल, "सुनि ले बहिं, से सभ नइँ हेतौ। गलती दुनू के छौ। पाँच-पाँच हजार दुनू कें जुर्बाना देम' पड़तौ, जातिनाम खाता मे।" नेताजीस्वाभाविक गति सँ पुन: एक बेर मोंछक लोली कें चुटकी पर चढ़बैत मड़र कका दिस देखलनि, "की हौ मरड़ कका बजैत किऐ ने छहक?" मड़र कका बदहा जकाँ मूड़ी डोला देलकै।

डोमन भाइ सँ बदला लैक धुन मे एखन धरि गुम्हरि रहल छल, मुदा नेताजीक बात सुनिते झमान भ' खसल। एक मोन भेलै, कहि दै–जे भेलै से भेलै भैयारी मे। नइँ करेबाक य' पंचैती। ई किन बात भेलै ! हमरे बहु मारियो खेलक आ जुर्बान सेहो हमहीं दियौ, मुदा चुप रहल। डरें बाजल नइँ भेलै। डोमन कें देखल छै जे रामअधीन नेता पंचैती नइँ माननिहार कें कोना ताड़क गाछ मे बान्हिक' पीटै छै। एखन धरि जुर्बाना वला पचासो हजार टाका जातिनाम खाता मे गेल हेतै, मुदा हिसाब? ककर बेटी बियेलैहँ जे रामअधीन नेता सँ हिसाब माँगत!

रामअधीन नेताक पी.ए. जकाँ हरदम संग रहनिहार मोहन सदाय बाजि उठल, "की रौ सोमना, हम दुनू भाइ स' पुछै छियो; कहिया तक पाइ जमा क' देमही ? एक सप्ताह स' बेसीक टेम नइँ देल जेतौ। अहि पाइ स' कोनो छिनरपन नइँ हतै, सारबजनिक काम हेतै। दीना-भदरीक गहबर बनतै।"

"कतौ स' चोरी कए क' त' नइँ आनबै हमर हालति बलू ककरो स' नुकाएल त' नइँ हय।" सोमन कलपल।

मोहन सदाय कें रामअधीनक कृपा सँ जवाहर-रोजगार वला ठिकेदारी सभ भेट' लागल छै। सीओ, बीडीओ कें चेम्बरे मे बंद क' दैत अछि आ मनमाना दस्तखत करा लैत अछि तँ ओकरा सभटा भजियायल छै जे घी किना निकालल जाइत छै। ओ सभक चुप्पी कें तौलैत मड़रककाक नाड़ी पकड़लक "की हौ मड़र कका! तोरा आरूक की बिचार छह? दीना भदरीक गहबर मे ओ पाइ लागि जाए त' नीके किने ?"

मरड़ कका आइ दस साल सँ हरेक पंचैती मे अहिना दीना-भदरीक गहबर बनैत देखि रहलछै' मुदा एखनो दीना-भदरीक पीड़ी पर ओहिना टाँग अलगा क' कुकूर मुतिते छै। मड़रकका मने-मन कुकूर कें गरियेलक, "सार, कुकूरो कें कतौ जगह नइँ भेटै हय, देबते-पितरक पीड़ी कें घिनायत।" खैनीक थूक कंठ धरि ठेकि गेल रहै, पिच्चा द' फेकैत बाजल' "जे तूँ सभ उचित बुझही !"

पंचैती मे रामधीन नेता आ मोहन सदाय बजैत जा रहल छल। बाकी सभ पमरियाक तेसर जकाँ हँ मे हँ मिलबैत। सोमन पंच सभक मुँह ताकि रहल अछि,

मुदा दिन भरिक हट्टाक थाकल-ठेहियायल पंच सभक मुँह स्पष्ट कहै छै जे कतेक जल्दी रामअधीन नेता निर्णय दै आ ओ सभ निद्राक कोरा मे बैसि रहय। मड़र ककाक हुँहकारी सँ मोहन सदायक मनोबल एक इँच आरो उपर उठलै। ओ बाजल, "नगदी ई दुनू भाइ जमा क' सकत से उपाय त' नइँ छै तहन पाइ कोना एकरा सभ कँ हेतै, तकरो इन्तिजाम त' आइए भ" जेबाक चाही। आब अहि ले' दोसर दिन त' बैसार नइँ हेतै। हमर एक टा प्रस्ताब छै जे दुनू भाइक सझिया दसकठबा खेत ताबत केओ दस हजार मे भरना ल' लौ। जहिया दुनू भाइ पाइ जमा क' देतै तहिया खेत घुरि जेतै।" बिना ककरो विचार लेनहि मोहन सदाय डाक शुरु क' देलक, "बाज'के लेबहक! जमीन अपने टोला मे रहतै बभनटोली मे नइँ जेनाय छै खपटा ल'क"।

सभ चुप्प!

फेर मोहन सहाय बाजल, "जँ नइँ कियो लेबहक त' नेताजी सोचतै, टोलक इज्जति त' बलू बचाब' पड़तै ओकरे किने।" अंतिम श्ब्द बजैत मोहन सदायक आँखि नेताजीक आँखि सँ टकरा गेलै। मड़र कका आँखि मुनने भरिसक कुकूरे कँ खिहारि रहल छलाह। खैनीक सेप मुँह मे एतेक भरि गेल रहनि जे कने घोँटाइयो गेलनि। खूब जोर सँ खखसैत बजलाह, :सुनि ले' बहिं पिछला बेर जकाँ एहू बेर नइँ पजेबा खसि क' उठि जाइ।" मड़र ककाक शंका मे आरो एक-दू गोटा अपन हामी भरलक। मोहन सदाय पहिनहि सँ तैयार रहय, झट द' बाजि उठल, "नइँ हौ। दसक हहास बलू अपना कपार पर के लेत? जुर्बानाक पाइ देबते-पितर मे जेतै। दीना-भदरी संगे जे सार गद्दारी करत, तकरा घर पर खढ़ो बचतै ? घटतै त' एक-दू हजार नेताजी अपन जेबियो स' लगा देतै। कोनो अंत' जेतै? धरम-खाता मे जमा रहतै। बभना आरू जेहन डीहबारक गहबर बनेलकै, ओहू स' निम्मन दीना-भदरीक गहबर बनतै।"

महरैलवाली बड़ी काल सँ मुँह दबने रहय। आब ओकर धैर्य जबाव द' देलक, "हइ के हमर जमीन लेतै? दीना-भदरीक गहबर बनै ले' हमरे जमीन हइ। मोँछवला सभ बेहरी द'क' बनेतै से नइँ।" रेवाड़ीवालीक हृदय सेहो आब बर्फ भ' गेल रहय। दियादनीक बात मे ओकरो मौन समर्थन रहै।

रामअधीन नेता कँ कहियो-कहिओ दिन तका क' तामस उठै छै जहन ओकरा मोनक विपरीत कोनो काज होइत छै। एहन परिस्थिति मे नेताजी टोल भरिक छौड़ी-मौगी सँ गारिक माध्यम सँ लैंगिक संबंध स्थापित क' लैत छथि। "छिनरी कँ तूँ बीच मे बजनाहार के? हम सोमना नइँ छी, ततारि देब।" नेताजी मारैक लेल हाथ उठेलनि। महरैलबाली नेताजीक लग मे आरो सटैत बाजल, "माय दूध पियेने हइ त' मारि क' देख लौ।" नेताजीक हाथ थरथरा गेलनि मुदा मुँह चालू "मुँह सम्हारि क' बाज मौगी नइँ त' चरसा घीचि लेबौ। आगि-पानि बारि देबौ, देखै छी कोना गाम मे तूँ रहि जाइत छें।"

"है केहन-केहन गेलै त' मोछवला एलै। बहरा गाम मे रहि जेबै तें जमीन पर नइँ ककरो चड़ह' देबै। ई नेतबा आरू गुरमिटी क'क जमीन हड़प चाहै हय। जमीन भरना लेनिहार कँ त' खपड़ी स' चानि फोड़ि देबै। दीना-भदरी गरीबेक जमीन लेतै। अइ नेतबा आरूक कपार पर हरहरी बज्जर खसतै। घुसहा पंच सभ कँ मुँह मे जाबी लागि गेल हय। निसाफ बात बजैत लकबा नारने हइ।"

महरैवालीक ई हस्तक्षेप सोमनक पक्ष कँ आरो कमजोर क' देलकै। पंच सभ सोमन कँ धुरछी-धुरछी कर' लगलै। फौदार कहलकै, "त' रौ बहिं सोमना, ई मौगी ठिके झँझटिक जड़ि छियौ। एकरा अँगना क' बइलेबँ से नइँ? गाइरे सुनबै ले' पंच आरू कँ बजेलही हें।" सोमन कँ भरल सभा मे ई बेइज्जती बड़ अखड़लै "जहन मरदा-मरदी बात होइ हय त' ई मौगी किऐ बीच मे टपकै हय।" सोमन, महरैलवालीक ठौठ पकड़ि क' अँगना मे जा क' धकेलि देलक। महरैवाली आँगने सँ गरियाबैत रहल, "अइ मुनसा कँ त' जे नइँ ठकि लइ।]

बोहा दौ सभ टा। नेतबा सभ त' तौला मे कुश द'क' रखनै हय।"

आब नेताजीक तामस मगजो सँ उपर चढ़ि गेल, "ई सार सभ ओना नइँ सुधरत। एखने बभना आरू दस टा गारि दैतनि आ चारि डंटा पोन पर मारितन्हि त' तुरते पंचैती मानितय। कोन सार पंचैती नइँ मानत से हमरा देखनाइ यए।" नेताजीक ठोरक लय पर मोँछो थरथरा रहल छल ! "सरबे सभ कँ हाथ-पयर तोड़िक' राखि देबनि। घर मे आगि लगा क' भक्सी झोंका झौकि देबनि। देखै छी कोन छिनरी भाइ दरोगा हमरा खिलाफ एन्ट्री लैयए।" चारू भर श्मशानक नीरवता पसरि गेल छल। पंच सभ आगाँक बात कँ रोकबाक लेल डोमन आ सोमन दिस याचक दृष्टएँ ताकि रहल छल। मोहन सदाय कागत-कजरौटी निकालैत सोमनक कान मे बाजल, "की विचार छौ, फसाद ठाढ़ करबें?" आ फेर सोमनक थरथराइत औंठा पकड़िक' कजरौटी मे धँसा देलक। अही बीच महरैलवाली वसात जकाँ हहाइत आयल आ दुनू हाथ सँ कागत आ कजरौटी कँ पकड़ि क' ओहि पर सूति रहल! ओ बाजय चाहैत रहय, मुदा मुँह सँ आवाज नहि निकलि रहल छलै। रामअधीन नेता कागत आ कजरौटी महरैलवालीक हाथ सँ छीन' चाहैत छल, मुदा महरैलवाली पाथर भ' गेल रहय। जेना ओ कागत नहि, ओ दसकठवा खेत हो जकरा ओ अपना छाती सँ अलग नहि कर' चाहैत रहय।

"छिनरी कँ तू एना नहि मानवें।" महरैलवालीक मुँह पर घुस्सा मारैत ओकर मुट्ठी कँ हल्लुक कर' चाहलक।

एम्हर रेवाड़ीवालीक चेहरा तामसे लाल भ' गैल रहै। ओकर सभ टा विद्रोह नेता सभक कूटनीति कँ बुझिते पिघलि गेल रहै। ओ डोमनक देह झकझौरैत बाजल, "बकर-बकर की ताकै छ'। मार' ने पूतखौका नेतबा आरू कँ। जब खेते नहि बचत' त' बाँटब' की?" रेवाड़ीवालीक ई रूप देखि नेताजीक हाथ ढील हुअ' लागल। पंच सभ हतप्रभ रेवाड़ीवाली दिस ताक' लागल।



सुभाष साह

गाम-अरनाहा, जिला सरलाही, नेपाल। वर्तमानमे लंदन मेट्रोपोलिटन विश्वविद्यालयसँ बी.बी.ए.कए रहल छथि। सामाजिक कार्य, मैथिलक जुटान, सांस्क़तिक कार्यक्रम संचालनमे विशेष रुचि। यू.के. केर मधेसीक संगठन ANMUK केर सक्रिय सदस्य आ सम्प्रति सचिव। नेतृत्व क्षमताक गुण संगहि प्रखर वक्ता।**–सम्पादक**

लन्दनमे नेपाल मेला २००८
(लन्दनसँ श्री सुभाष शाहक रिपोर्ट)





लन्दन शहरमे पिकाडिली सर्कस नामक स्थान पर नेपाल एमबैशीक सहायता सऽ २१ आऽ २२ सितम्बर २००८ कऽ अहि मेलाक आयोजन कैल गेल छल जाहिमे नेपाल के पर्यटन मंत्री आदरणीया सुश्री हिशिला यामी नेपालक राजदूत श्री मुरारी राज शर्मा खैतान ग्रुपके चेयरमैन एवम् मैनेजिंग प्रेसिडेंट श्री राजेन्द्र खैतान आदि सहित अन्य दिग्गज सब उपस्थित छलैथ।अतऽ इहो घोषणा कैल गेल जे साल २०११ के पर्यटन वर्षक रूपमे मनाओल जायत। सुश्री यामी सऽ हम सब अहू बात पर विचारविमर्श केलहुं जे 'लुम्बिनी' के पर्यटक सबलेल बेसी आकर्षक बनाबऽ लेल की कैल जा सकैत अछि।यामीजी अहि बात लेल प्रतिबद्ध भेली जे ओ सीता मैया एवम् बुद्धदेवक इतिहास सऽ सम्बन्धित स्थानके विकासमे यथाशक्ति योगदान देती।





श्री नवीन कुमार एवम् सुश्री सुनीता शाह द्वारा प्रस्तुत सांस्कृतिक परिधानक फैशन शो अत्यन्त सफल रहल।हमरा सब अन्मुक (ANMUK- Association of Nepali Madheshis in UK) के सदस्य सबलेल अहि आयोजनक सफलता बहुत पैघ





प्रोत्साहन अछि।

(आभार- अन्मुक के वेबसाएट जाहि सऽ फोटो प्राप्त भेल)



सुभाष चन्द्र यादव

कथाकार, समीक्षक एवं अनुवादक, जन्म ०५ मार्च १९४८, मातृक दीवानगंज, सुपौलमे। पैतृक स्थान: बलबा-मेनाही, सुपौल। आरम्भिक शिक्षा दीवानगंज एवं सुपौलमे। पटना कॉलेज, पटनासँ बी.ए.। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्लीसँ हिन्दीमे एम.ए. तथा पी.एह.डी.। १९८२ सँ अध्यापन। सम्प्रति: अध्यक्ष, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, भूपेन्द्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय, पश्चिमी परिसर, सहरसा, बिहार। मैथिली, हिन्दी, बंगला, संस्कृत, उर्दू, अंग्रेजी, स्पेनिश एवं फ्रेंच भाषाक ज्ञान।

प्रकाशन: घरदेखिया (मैथिली कथा-संग्रह), मैथिली अकादमी, पटना, १९८३, हाली (अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद), साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, १९८८, बीछल कथा (हरिमोहन झाक कथाक चयन एवं भूमिका), साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, १९९९, बिहाड़ि आउ (बंगला सँ मैथिली अनुवाद), किसुन संकल्प लोक, सुपौल, १९९५, भारत-विभाजन और हिन्दी उपन्यास (हिन्दी आलोचना), बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, २००१, राजकमल चौधरी का सफर (हिन्दी जीवनी) सारांश प्रकाशन, नई दिल्ली, २००१, मैथिलीमे करीब सत्तरि टा कथा, तीस टा समीक्षा आ हिन्दी, बंगला तथा अंग्रेजी मे अनेक अनुवाद प्रकाशित।

भूतपूर्व सदस्य: साहित्य अकादमी परामर्श मंडल, मैथिली अकादमी कार्य-समिति, बिहार सरकारक सांस्कृतिक नीति-निर्धारण समिति। <u>सम्पादक</u>

कनियाँ-पुतरा

जेना टांग छानै छै, तहिना ऊ लड़की हमर पएर पाँज मे धऽ लेलक आ बादुर जकाँ लटैक गेल। ओकर हालत देख ममता लागल। ट्रेनक ओइ डिब्बा मे ठाढ़ भेल-भेल लड़की थाइक कय चूर भऽ गेल रहै। कनियें काल पहिने नीचे मे कहुना बैठल आ बैठलो नै गेलै तऽ लटैक गेल।

डिब्बा मे पएर रोपै के जगह नै छै। लोग रेड़ कय चढ़ै-ए, रेड़ कय उतरै-ए। धीया-पूता हवा लय औनाइ छै, पाइन लय कानै छै। सबहक जी व्याकुल छै। लोग छटपटा रहल-अय।

हम अपने घंटो दू घंटा सऽ ठाढ़ रही। ठाढ़ भेल-भेल पएर मे दरद हुअय लागल। मन करय लुद सिन बैठ जाइ। तखैनिये दूटा सीट खाली भेलै, जइ पर तीन गोटय बैठल। तेसर हम रही जे बैठब की, बस कनेटा पोन रोपलौं। ऊ लड़की ससैर कय हमरा लग चैल आयल। पहिने ठाढ़ रहल, फेर बैठ गेल। फेर बैठले-बैठल हमर टांगमे लटैक गेल। जखैन ऊ ठाढ़ रहय तऽ बापक बाँहि मे लटकल रहय। ओकरा हम बड़ी काल लटकल देखने रहिऐ। ओकर बाप अखैनियों ठाढ़े छै। छोट बहीन आ भाय ओकरे बगल मे नीचे मे बैठल औंघा रहल छै।

ऊ जे टांग छानने ऐछ, से हमरा बिदागरी जकाँ लाइग रहल-अय। जाइ काल बेटी जेना बापक टांग छाइन लै छै, तेहने सन। ने ऊ कानै-अय, ने हम कानै छी। लेकिन ओकर कष्ट, ओकर असहाय अवस्था उदास कऽ रहल-अय। हम निश्चल-निस्पंद बैठल छी। होइए हमर सुगबुगी सऽ ओकर बिसबास, ओकर असरा कतौ छिना नै जाय। हाथ ससैर जाइ छै तऽ ऊ फेर ठीक सँ टांग पकैड़ लै अय।

लड़की दुबर-पातर आ पोरगर छै। हाथ मे घड़ी। प्लास्टिकक झोरा मे राखल मोबाइल। लागै छै नौ-दस सालक रहय। मगर कहलक जे बारह साल के ऐछ। सतमा मे पढ़ै-अय आ ममिऔत भाइक बियाह मे जा रहल-अय।

बेर-बेर जे हाथ ससैर जाइत रहै से आब ऊ हमर ठेंगहुन पर मूड़ी राइख देलक-अय। जेना हम ओकर माय होइ अइ। ओकर माय संग मे नै छै। कतय छै ओकर माय? जकर कनहा पर, पीठ पर, जाँघ पर कतौ ऊ मूड़ी राइख सकैत रहय। हम ओकर माथ पर हाथ देलिऐ। ऊ और निचेन भऽ गेल जेना।

एक बेर गाड़ीक धक्का सऽ ऊ ससैर गेल; सोझ भेल आ आँइख खोललक। एक गोटय कहलकै- दादा कय कसि कय पकड़ने रह।

अंतिम टीशन आइब रहल छै। सब उतरै लय सुरफुरा लागल-अय। अपन-अपन जुत्ता-चप्पल, कच्चा-बच्चा आ सामान कय लोग ओरियाबय लागल-अय। राइत बहुत भऽ गेल छै। सब कय अपन-अपन जगह पर जायके चिन्ता छै। बहुत गोटय ठाढ़ भऽ गेल ऐछ। ऊ लड़कियो। हमहूँ ठाढ़ भऽ कऽ

अपन झोरा उतारै छी। तखनियें नेबो सन कोनो कड़गर चीज बाँहि सऽ टकरायल। बुझा गेल ई लड़कीक छाती छिऐ। हमर बाँहि कने काल ओइ लड़कीक छाती सऽ सटल रहल। ओइ स्पर्श सऽ लड़की निर्विकार छल; जेना ऊ ककरो आन संगे नै, बाप-दादा या भाय-बहीन सऽ सटल हो।

ओकर जोबन फूइट रहल छै। ओकरा दिस ताकैत हम कल्पना कऽ रहल छी। अइ लड़कीक अनमोल जोबनक की हेतै ? सीता बनत की दरोपदी ? ओकरा के बचेतै ? हमरा राबन आ दुरजोधनक आशंका घेरने जा रहल ऐछ।

टीशन आइब गेलै। गाड़ी ठमैक रहल छै। लड़की हमरा देख बिहुँसै– अय; जेना रुखसत माइंग रहल हो। ई केहन रोकसदी ऐछ! ने ऊ कानै छै, ने हम कानै छी। ऊ हँसै-अय, हमहँ हँसै छी।लेकिन हमर हँसी मे उदासी अय।

डाक्टर सूर्यनाथ गोप

दिघवा, सप्तरी

आत्मा

मैथिलीकेँ बेचिकऽ

पैन्ट सर्टपर टाईकोट कसिकऽ

माथपर ढाका टोपी चढाकऽ

बगलमे भारतीय दुतावासक झोरा लटकाकऽ

एहि युगक सभसँ बडका विसंगति____

डाक्टर सूर्यनाथ गोप

एक हाथमे पासपोर्ट भिसा मुठियबैत

दोसर हाथमे हिन्दीक झण्डा फहरबैत

हिनहिनाईत

गिनगिनाईत

जारहल छथि

मौरिसस

अन्तर्राष्ट्रिय हिन्दी सम्मेलनमे



तूलिका

गाम रुद्रपुर, जिला मधुबनी।





उमेश कुमार महतो

उमेश कुमार- पुत्र श्री केशव महतो, बहादुरगंज

तीन मूरी बला....

एकटा राजा रहए। ओकरा एकटा बेटा रहए। ओकर राजपाट खूब शांति सँ चलैत रहए। राजा जखन बीमार भेलए तँ बेटाकँ कहलकए।

१. फी कओरमे सीरा खाइले।

२. द्वारपर हाथी बन्हबा कऽ राखय ले।

३. वैर भाव नहीं राखएले।

४. बाहर निकलैपर छाँहमे रहबा ले।

राजकुमार एकर अर्थ नहि बुझि पओलक। राजा मरि गेलैक।

राजकुमार राजा बनि गेल।

पिताजीक गपपर ओ अमल करए लागल।

१. फी कोरमे सीरा खेबाक मतलब ओ बुझलकै जे सभ दिन खस्सी कटबा कए सीरा खेनाइ आ बचल मासु नोकर सभ कँ देनाइ आ ओ सएह करए लागल।

२. द्वारपर ओ एकटा हाथी कीन कए रखबा देलक आ चारि टा नोकर ओकर देखभाल लेल राखि देलक।

३. ओ सभटा बैरक गाछ काटि कए हटा देलक।

४. ओ दू टा नोकर राखलक जे गाछ काटि कए जतए जतए राजा जाइत रहए ओतए-ओतए लए जाइत रहए।

एना किछु दिन ओ राजपाट चलेलक। एना करिते-करिते राजपाट खतम भए रहल छलैक, कारण खर्चा बेसी भए गेलै आ आमदनी कम, सभ गाछ कटि गेलैक।

गामक एक बुजुर्ग सँ ओ पुछलक जे हमर राजपाट किएक खतम भए रहल अछि। तँ ओ बुजुर्ग ओकरा बुझेलक जे जाऊ आ तीन मूरी बला आदमी सँ पुछू।

चारू तरफ राजा खोजलक मुदा तीन मूरी बला आदमी ओकरा नहि भेटलैक। फेर ओही बुजुर्ग आदमी सँ पुछलक जे हमरा तँ तीन मूरी बला आदमी नहि भेटल।

बुजुर्ग कहलकै जे ७० बरख सँ ८० बरखक आदमी कँ तीन मूरी बला कहल जाइत छैक कारण जे जखन ओ बैसैत अछि तँ ओकर मूरी झुकि जाइ छैक आ ठेहुन ऊपर उठि जाइत छैक आ से ओ तीन मूरी जकाँ भए जाइत छैक।

राजा एहेने एकटा मनुक्खकँ ताकि क' पुछलक।

"पिताजी मरए से पहिने की की बतेने रहथि"। ओ तीन मूरी बला मनुख पुछलक।

राजा कहलक।

"ओ बतेलथि-

१. फी कओरमे सीरा खाइले।

२. द्वारपर हाथी बन्हबा कए राखए ले।

३. वैर भाव नहीं राखए ले।

४. बाहर निकलैपर छाँहमे रहबा ले"।

"पहिलाक मतलब छी- एक पाव डेढ़का मांछ लए कए बनबा कए खाउ ओकर सभ कओरमे सीरा भेटत।

दोसराक मतलब घरक आगाँ घूर लगा देबा लए जाहिसँ द्वारपर हरदम १० गोटे बैसल रहत।

तेसरक मतलब झगड़ा-झाँटि सँ दूर रहि दोस्ती मिलान सँ रहू।

चारिमक मतलब दू रुपैयाक छाता लऽ छाहमे चलू"। तीन मूरी बला मनुक्ख बतेलक।

एकरापर अमल केलापर राजाक राजपाट वापस आबए लगलैक।



श्री उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'

जन्म-1951 ई. कलकत्तामे।1966 मे 15 वर्षक उम्रमे पहिल काव्य संग्रह 'कवयो वदन्ति'| 1971 'अमृतस्य पुत्राः'(कविता संकलन) आ' 'नायकक नाम जीवन'(नाटक)| 1974 मे 'एक छल राजा'/'नाटकक लेल'(नाटक)। 1976-77 'प्रत्यावर्त्तन'/ 'रामलीला' (नाटक)। 1978मे जनक आ' अन्य एकांकी। 1981 'अनुत्तरण' (कविता-संकलन)। 1988 'प्रियंवदा' (नाटिका)। 1997-'रवीन्द्रनाथक बाल-साहित्य' (अनुवाद)। 1998 'अनुकृति'- आधुनिक मैथिली कविताक बंगलामे अनुवाद, संगहि बंगलामे दूटा कविता संकलन। 1999 'अश्रु ओ परिहास'। 2002 'खाम खेयाली'। 2006मे 'मध्यमपुरुष एकवचन' (कविता संग्रह)। भाषा-विज्ञानक क्षेत्रमे दसटा पोथी आ' दू सयसँ बेशी शोध-पत्र प्रकाशित। 14 टा पी.एच.डी. आ' 29 टा एम.फिल. शोध-कर्मक दिशा निर्देश। बड़ौदा, सूरत, दिल्ली आ' हैदराबाद वि.वि.मे अध्यापन। संप्रति निदेशक, भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर।--**सम्पादक**

नो एंट्री: मा प्रविश

(चारि-अंकीय मैथिली नाटक)

नाटककार

उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'

निदेशक, भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर

(मैथिली साहित्यक सुप्रसिद्ध प्रयोगधर्मी नाटककार श्री नचिकेताजीक टटका नाटक, जे विगत 25 वर्षक मौनभंगक पश्चात् पाठकक सम्मुख प्रस्तुत भ' रहल अछि।)

पहिल अंक जारी....विदेहक एहि आठम अंक 15 अप्रैल 2008 सँ|

नो एंट्री: मा प्रविश

(चारि-अंकीय मैथिली नाटक)

पात्र परिचय

पर्दा उठितहि

ढोल पिपही, बाजा गाजा बजौनिहार सब
दूटा चोर, जाहि मे सँ एक गोटे पॉकिट मार आ
एकटा उचक्का
दू गोट भद्र व्यक्ति
प्रेमी
प्रेमिका
बाजार सँ घुरैत प्रौढ़ व्यक्ति
बीमा कंपनीक एजेंट
रद्दी किनै बेचैबला
भिख-मंगनी
रमणी-मोहन
नंदी भृंगी
कैकटा मृत सैनिक

बाद मे

नेता आ नेताक एक-दूटा चमचा/ अनुयायी
अभिनेता
वाम-पंथी युवा
उच्च वंशीय महिला

अंत मे

यम
चित्रगुप्त

प्रथम कल्लोल

[एकटा बड़का टा दरबज्जा मंचक बीच मे देखल जाइछ। दरबज्जाक दुनू दिसि एकटा अदृश्य मुदा सक्कत देवार छैक, जे बुझि लेबाक अछि कखनहु अभिनेता लोकनिक अभिनय कुशलता सँ तथा कतेको वार्तालाप सँ से स्पष्ट भ' जाइछ। मंच परक प्रकाश व्यवस्था सँ ई पता नहि चलैत अछि जे दिन थिक अथवा राति, आलीक कनेक मद्धिम, सुर संगत होइत सेहो कने मरियल सन।

एकटा कतार मे दस बारह गोटे ठाढ़ छथि जाहि मे कैकटा चोर उचक्का, एक-दू गोटे भद्र व्यक्तित मुदा ई स्पष्ट जे हुनका लोकनिक निधन भ' चुकल छन्हि। एकटा प्रेमी युगल जे विष-पान क' कए आत्म-हत्या कैल अछि, मुदा एत' स्वर्गक (चाही त' नरकक सेहो कहि सकै छी) द्वार लग आबि कए कने विह्वल भ' गेल छथि जे आब की कैल जाइक। एकटा प्रौढ व्यक्तित जे बजारक झोरा ल' कए आबि गेल छथि बुझाइछ कोनो पथ दुर्घटनाक शिकार भेल छथि बाजार सँ घुरैत काल। एकटा बीमा कंपनीक एजेंट सेहो छथि, किछु परेशानी छनि सेहो स्पष्ट। एकटा रद्दीबला जे रद्दी कागजक खरीद बिक्री करैत छल, एकटा भिखमंगनी एकटा पुतलाकेँ अपन बौआ (भरिसक ई कहै चाहैत छल जे वैह छल ओकर मुइल बालक अथवा तकर प्रतिरूप) जकाँ काँख तर नेने, एक गोट अत्यंत बूढ़ व्यक्ति सेहो, जनिक रमणी प्रीति एखनहु

कम नहि भेल छनि, हुनका हमसब रमणी मोहने कहबनि।

सब गोटे कतार मे त' छथि, मुदा धीरजक अभाव स्पष्ट भ' जाइछ। क्यो-क्यो अनकाकेँ लाँघि आगाँ जैबाक प्रयास करैत छथि, त' क्यो से देखि कए शोर करय लागैत छथि। मात्र तीन चारिटा मृत सैनिक जे कि सब सँ पाछाँ ठाढ़ छथि, हुनका सबमे ने कोनो विकृति लखा दैछ आ ने कोनो हड़बड़ी।

बजार-बला वृद्ध: हे हे हे देखै जाउ... देखि रहलछी कि नहि सबटा तमाशा... कोना कोना क' रहल छइ ई सब!

की ? त' कनीटा त' आगाँ बढ़ि जाई!

[एकटा चोर आ एकटा उचक्का कँ देखा कए बाजि रहल छथि, जे सब ओना त' चारिम तथा पाँचम स्थान पर ढ़ाढ छैक, मुदा कतेको काल सँ अथक प्रयास क' रहल अछि जे कोना दुनू भद्र व्यक्ति आ प्रेमी प्रेमिका युगलकेँ पार क' कए कतारक आगाँ पहुँचि जाई!]

बीमा एजेंट: [नहि बूझि पबैत छथि जे ओ वृद्ध व्यक्ति हुनके सँ

किछु कहि रहल छथि कि आन ककरहु सँ। बजार-

बला वृद्ध सँ आगाँ छल रद्दी बेचैबला आ तकरहु

सँ आगाँ छलाह बीमा बाबू।] हमरा किछु कहलहुँ ?

बाजारी: अहाँ ओम्हर देखब त' बूझि जायब हम की कहि

रहल छी आ ककरा दय...! *[अकस्मात् अत्यंत*

क्रोधक आवेश मे आबि] हे रौ! की बुझै छहीं...

क्यो नहि देखि रहल छौ ? [*बीमा बाबू केँ बजारक झोरा थम्हबैत* -] हे ई धरू त'! हम देखै छी।

[कहैत शोर करैत आगाँ बढ़ि कए एकटा चोर आ उचक्का केँ कॉलर पकड़ि कए घसीटैत पुनः पाछाँ चारिम-पाँचम स्थान पर ल' अबैत छथि, ओसब वाद प्रतिवाद कर' लगैत अछि -]

चोर: हमर कॉलर किये धरै छी ?

उचक्का: हे बूढ़ौ! हमर कमीज, फाड़ि देबैं की ?

बाजारी: कमीजे कियैक ? तोहर आँखि सेहो देबौ हम फोड़ि!

की बूझै छँ ? क्यो किछु कहै बाला नहि छौ एत'?

उचक्का: के छै हमरा टोकै बला एत'? देखा त' दिय' ?

चोर: आहि रे बा! हम की कैल जे हमर टीक धैने छी?

दोसर चोर: (जे कि असल मे पॉकिट मार छल) हे हे,

टीक छोड़ि दी, नंगड़ी पकड़ि लियह सरबा क!

चोर: (गोस्सा सँ) तोँ चुप रह! बदमाश नहितन!

पॉकिटमार: (अकड़ि कए) कियै ? हम कियै नहि बाजब ?

उचक्का: (वृद्ध व्यक्तिक हाथ सँ अपना कँ छोड़बैत) ओय खुदरा!

बेसी बड़बड़ैलें त'... (हाथ सँ इशारा करैत अछि गरा काटि देबाक)

पॉकिटमार: त' की करबें ?

उचक्का: *(भयंकर मुद्रामे आगाँ बढ़ैत)* त' देब धड़ सँ गरा कँ

अलगाय... रामपुरी देखने छह ? रामपुरी *? (कहैत एकटा चाकू बहार करैत अछि।)*

चोर: हे, की क' रहल छी... भाइजी, छोड़ि दियौक ने!

बच्चा छै... कखनहु कखनहु जोश मे आबि जाइ छै!

भद्र व्यक्ति 1: *(पंक्तिक आगाँ सँ)* हँ, हँ... छोड़ि ने देल जाय!

उचक्का: *[भयंकर मुद्रा आ नाटकीयता कँ बरकरार रखैत पंक्तिक आगाँ दिसि जा कए... अपन रामपुरी* चाकू केँ दोसर हाथ मे उस्तरा जकाँ घसैत] छोड़ि दियह की मजा चखा देल जाय ? *[एहन भाव* भंगिमा देखि दुनू भद्र व्यक्ति डरै छथि प्रेमी युगल अपनहिमे मगन छथि; हुनका दुनू कँ दुनियाक आर किछु सँ कोनो लेन-देन नहि...] की ?

[घुरि कए पॉकिट मार दिसि अबैत... तावत् ई

सब देखि बाजारी वृद्धक होश उड़ि जाइत छनि...

ओ चोरक टीक/कॉलर जे कही... छोड़ि दैत छथि

घबड़ा कए] की रौ ? दियौ भोंकि? आ कि... ?

चोर: उचकू भाइजी! बच्चा छै... अपने बिरादरीक

बुझू...! [आँखि सँ इशारा करै छथि।]

उचक्का: *[अट्टहास् करैत]* ऐं ? अपने बिरादरीक थिकै ?

[हँसब बंद कए- पूछैत] की रौ ? कोन काज करै

छँ?

[पॉकिट-मार डरैँ किछु बाजि नहि पबैत अछि मात्र दाहिना हाथक दूटा आङुर केँ कैंची जकाँ चला कए देखबैत छैक।]

उचक्का: पॉकिट-मार थिकैँ रौ ? [पुनः हँस' लागै छथि-छूरी कँ तह लगबैत']

चोर: कहलहुँ नहि भाईजी ? ने ई हमरा सन माँजल चोर

बनि सकल आ ने कहियो सपनहु मे सोचि सकल

जे अहाँ सन गुंडा आ बदमाशो बनि सकत!

उचक्का: बदमाश ? ककरा कहलैं बदमाश ? आँय!

पॉकिट-मार: हमरा, हुजूर! ओकर बात जाय दियह! गेल छल

गिरहथक घर मे सेंध देब'... जे आइ ने जानि कत्ते टका-पैसा-गहना भेटत! त' पहिले बेरि मे

जागि गेल गिरहथ, आ तकर चारि चारिटा

जवान-जहान बालक आ सँगहि आठ आठटा

कुकुर... तेहन ने हल्ला मचा देलक जे पकड़ि कए

पीटैत पीटैत एत' पठा देलक! *[हँसैत... उचक्का सेहो हँसि दैत अछि]* आब बुझु! ई केहन चोर थिक!

(मुँह दूसैत) हमरा कहैत छथि!

[कतारक आनो-आन लोक आ अंततः सब गोटे हँसय लागैत छथि]

भद्र-व्यक्तित 1: आँय यौ,चोर थिकौं? लागै त' नहि छी चोर

जकाँ...

चोर: किएक ? चोर देख' मे केहन होइत छैक ?

पॉकिट-मार: हमरा जकाँ...! (कहैत, हँसैत अछि, आरो एक-दू

गोटे हँसि दैत छथि।) चललाह भिखारी बौआ बन'... ?

की ? त' हम तस्कर-राज छी! *[कतहु सँ एकटा*

टूल आनि ताहि पर ठाढ़ होइत... मंचक आन

दिसिसँ भाषणक भंगिमा मे] सुनू, सुनू, सुनू, भाई भगिनी! सुनू सब गोटे! श्रीमान्, श्रील 108

श्री श्री बुद्धि-शंकर महाराज तस्कर सम्राट आबि

रहल छथि! सावधान, होशियार! *[एतबा कहैत टूल*

पर सँ उतरि अपन हाथ-मुँहक मूकाभिनयसँ

एहन भंगिमा करैत छथि जेना कि भोंपू बजा

रहल होथि... पाछाँ सँ भोंपू —— पिपहीक शब्द

कनिये काल सुनल जाइछ, जाबत ओ 'मार्च' करैत

चोर लग अबैत अछि...]

चोर: *[कनेक लजबैत]* नहि तोरा हम साथ लितहुँ ओहि

रातिकेँ, आ ने हमर पिटाइ देखबाक मौके तोरा

भैटतिहौक! [कहैत आँखि मे एक-दूइ बुन्न पानि

आबि जाइत छैक।]

पॉकिट-मार: आ-हा-हा! एहि मे लजबैक आ मोन दुखैक कोन

गप्प?

[थम्हैत, लग आबि कए] देखह! आइ ने त'

काल्हि-चोरि त' पकड़ले जाइछ। आ एकबेर जँ भंडा-

फोड़ भ' जाइत अछि त' बज्जर त' माथ पर खसबे

करत! सैह भेल... एहि मे दुख कोन बातक ?

उचक्का: *(हँसैत)* हँ, दुखी किये होइ छहक?

बाजारी: *[एतबा काल आश्चर्य भए सबटा सुनि रहल छलाह।*

आब रहल नहि गेलनि —अगुआ कए बाजय लगलाह]

हे भगवान! हमर भाग मे छल स्वस्थहि शरीर मे बिना कोनो रोग-शोक भेनहि स्वर्ग मे जायब... तैँ हम एत' ऐलहुँ, आ स्वर्गक द्वार पर ठाढ छी क्यू मे...! मुदा ई सब चोर उचक्का जँ स्वर्ग मे जायत, तखन केहन हैत ओ स्वर्ग रहबाक लेल ?

पॉकिट-मार: से किये बाबा ? अहाँ की बूझै छी, स्वर्ग त' सभक

लेल होइत अछि! एहि मे ककरहु बपौती त' नञि।

बाजारी: [बीमा एजेंट केँ] आब बूझू! आब....

चोर सिखाबय गुण केर महिमा,

पॉकिट मारो करै बयान!

मार उचक्का झाड़ि लेलक अछि,

पाट कपाट त' जय सियाराम!

[चोर-उचक्का-पॉकिट-मार ताली दैत अछि, सुनि कए चौंकैत भिख-मंगनी आ प्रेमी-युगल बिनु किछु बुझनहि ताली बजाब' लागैत अछि।]

चोर: ई त' नीक फकरा बनि गेल यौ!

पॉकिट-मार: एम्हर तस्कर-राज त' ओम्हर कवि-राज!

बाजारी: *(खौंझैत')* किये ? कोन गुण छह तोहर, जकर

बखान करै अयलह एत'?

पॉकिट-मार: *(इंगित करैत आ हँसैत)* हाथक सफाई... अपन

जेब मे त' देखू , किछुओ बाकी अछि वा नञि...

बाजारी: [बाजारी तुरंत अपन जेब टटोलैत छथि त' हाथ

पॉकिटक भूर देने बाहर आबि जाइत छनि। आश्चर्य

चकित भ' कए मुँह सँ मात्र विस्मयक आभास होइत छनि।] जा!

[बीमा बाबूकेँ आब रहल नञि गेलनि। ओ ठहक्का पाड़ि कए हँस' लगलाह, हुनकर देखा देखी कैक गोटे बाजारी दिसि हाथ सँ इशारा करैत हँसि रहल छलाह।]

चोर: [हाथ उठा कए सबकेँ थम्हबाक इशारा करैत] हँसि त'

रहल छी खूब!

उचक्का: ई बात त' स्पष्ट जे मनोरंजनो खूब भेल हैतनि।

पॉकिट-मार: मुदा अपन-अपन पॉकिट मे त' हाथ ध' कए देखू!

[भिखमंगनी आ प्रेमी-युगल केँ छोड़ि सब क्यो पॉकिट टेब' लागैत' छथि आ बैगक भीतर ताकि-झाँकि कए देख' लागैत छथि त' पता चलैत छनि जे सभक पाइ, आ नहि त' बटुआ गायब भ' गेल छनि। हुनका सबकेँ ई बात बुझिते देरी चोर, उचक्का, पॉकिट-मार आ भिख-मंगनी हँस' लागैत छथि। बाकी सब गोटे हतबुद्धि भए टुकुर- टुकुर ताकिते रहि जाइत छथि]

भिखमंगनी: नंगटाक कोन डर चोर की उचक्का ?

जेम्हरहि तकै छी लागै अछि धक्का!

धक्का खा कए नाचब त' नाचू ने!

खेल खेल हारि कए बाँचब त' बाँचू ने!

[चोर-उचक्का पॉकिट-मार, समवेत स्वर मे जेना धुन गाबि रहल होथि]

नंगटाक कोन डर चोर कि उचक्का!

आँखिएक सामने पलटल छक्का!

भिख-मंगनी: खेल खेल हारि कए सबटा फक्का!

समवेत-स्वर: नंगटाक कोन डर चोर कि उचक्का ?

[कहैत चारू गोटे गोल-गोल घुर' लागै छथि आ नाचि नाचि कए कहै छथि।]

सब गोटे: आब जायब, तब जायब, कत' ओ कक्का ?

पॉकिट मे हाथ दी त' सब किछु लक्खा!

नंगटाक कोन डर चोर कि उचक्का!

बीमा-बाबू: *(चीत्कार करैत)* हे थम्ह'! बंद कर' ई तमाशा...

चोर: (जेना बीमा-बाबूक चारू दिसि सपना मे भासि रहल

होथि एहन भंगिमा मे) तमाशा नञि... हताशा....!

उचक्का: *(ताहिना चलैत)* हताशा नञि... निराशा!

पॉकिट-मार: [पॉकिट सँ छह-सातटा बटुआ बाहर क' कए देखा ___

देखा कए] ने हताशा आ ने निराशा, मात्र तमाशा...

ल' लैह बाबू छह आना, हरेक बटुआ छह आना!

[कहैत एक एकटा बटुआ बॉल जकाँ तकर मालिकक

दिसि फेंकैत छथि आ हुनका लोकनि मे तकरा

सबटाकेँ बटौर' लेल हड़बड़ी मचि जाइत छनि। एहि

मौकाक फायदा उठबैत चोर उचक्का-पॉकिटमार

आ भिख-मंगनी कतारक सब सँ आगाँ जा' कए ठाढ

भ' जाइत छथि।]

रद्दी-बला: *[जकर कोनो नुकसान नहि भेल छल-ओ मात्र मस्ती क' रहल छल आ घटनासँ भरपूर आनन्द ल' रहल छल।]* हे बाबू भैया लोकनि! एकर आनन्द नञि अछि कोनो जे ''भूलल-भटकल कहुना क' कए घुरि आयल अछि हमर बटुआ''। *[कहैत दू डेग बढा' कए नाचिओ लैत' छथि।]* ई जे बुझै छी जे अहाँक धन अहीं कैं घुरि आयल... से सबटा फूसि थिक!

बीमा-बाबू: *(आश्चर्य होइत)* आँय ? से की ?

बाजारी: *(गरा सँ गरा मिला कए)* सबटा फूसि ?

भद्र-व्यक्ति 1: की कहै छी ?

भद्र-व्यक्ति 2: माने बटुआ त' भेटल, मुदा भीतर ढन ढन!

रद्दी-बला: से हम कत' कहलहुँ ? बटुओ अहींक आ पाइयो

छैहे! मुदा एखन ने बटुआक कोनो काज रहत' आ ने पाइयेक!

बीमा-बाबू: माने ?

रद्दी-बला: माने नञि बुझलियैक ? औ बाबू! आयल छी सब

गोटे यमालय... ठाढ़ छी बन्द दरबज्जाक सामने...

कतार सँ... एक दोसरा सँ जूझि रहल छी जे के

पहिल ठाम मे रहत आ के रहत तकर बाद...?

तखन ई पाइ आ बटुआक कोन काज ?

भद्र-व्यक्ति 1: सत्ये त'! भीतर गेलहुँ तखन त' ई पाइ कोनो काज

मे नहि लागत!

बाजारी: आँय ?

भद्र-व्यक्ति2: नहि बुझिलियैक ? दोसर देस मे जाइ छी त' थोड़े

चलैत छैक अपन रुपैया ? *(आन लोग सँ* सहमतिक अपेक्षा मे-) छै कि नञि?

रमणी-मोहन: (जेना दीर्घ मौनता के तोड़ैत पहिल बेरि किछु ढंग

केर बात बाजि रहल छथि एहन भंगिमा मे... एहि

सँ पहिने ओ कखनहु प्रेमी-युगलक लग जाय

प्रेमिका कैं पियासल नजरि द' रहल छलाह त'

कखनहु भिख-मंगनिये लग आबि आँखि सँ तकर

शरीर कैं जेना पीबि रहल छलाह...) अपन प्रेमिका

जखन अनकर बियाहल पत्नी बनि जाइत छथि

तखन तकरा सँ कोन लाभ ? *(कहैत दीर्घ-श्वास* त्याग करैत छथि।)

बीमा-बाबू: *(डाँटैत)* हे...अहाँ चुप्प रहू! क' रहल छी बात

रुपैयाक, आ ई कहै छथि रूप दय...!

रमणी-मोहन: हाय! हम त' कहै छलहुँ रूपा दय! *(भिख-मंगनी*

रमणी-मोहन लग सटल चलि आबै छैक।)

भिख-मंगनी: हाय! के थिकी रूपा?

रमणी-मोहन: ''कानि-कानि प्रवक्ष्यामि रूपक्यानि रमणी च...!

बाजारी: माने ?

रमणी-मोहन: एकर अर्थ अनेक गंभीर होइत छैक... अहाँ सन

बाजारी नहि बूझत!

भिख-मंगनी: *[लास्य करैत]* हमरा बुझाउ ने!

[तावत भिख-मंगनीक भंगिमा देखि कने-कने बिहुँसैत' पॉकिट मार लग आबि जाइत अछि।]

भिख-मंगनी: *[कपट क्रोधेँ]* हँसै कियै छें ? हे... *(कोरा सँ पुतलाकेँ*

पॉकिट-मारकेँ थम्हबैत) हे पकडू त' एकरा... (कहैत

रमणी-मोहन लग जा कए) औ मोहन जी! अहाँ की

ने कहलहुँ, एखनहु धरि भीतर मे एकटा छटपटी

मचल यै'! रमणी-धमनी कोन बात' कहलहुँ ?

रमणी-मोहन: धूर मूर्ख! हम त' करै छलहुँ शकुन्तलाक गप्प,

मन्दोदरीक व्यथा... तोँ की बुझबैं?

भिख-मंगनी: सबटा व्यथा केर गप बुझै छी हम... भीख मांगि-

मांगि खाइ छी, तकर माने ई थोड़े, जे ने हमर शरीर

अछि आ ने कोनो व्यथा... ?

रमणी-मोहन: धुत् तोरी! अपन व्यथा तथा छोड़, आ भीतर की

छैक, ताहि दय सोच! (कहैत बंद दरबज्जा दिसि देखबैत छथि-)

पॉकिट-मार: (अवाक् भ' कए दरबज्जा दिसि देखैत) भीतर ? की

छइ भीतरमे... ?

रमणी-मोहन: (नृत्यक भंगिमा करैत ताल ठोकि- ठोकि कए) भीतर?

"धा धिन धिन्ना... भरल तमन्ना!

तेरे-केरे-धिन-ता... आब नञि चिन्ता!"

भिख-मंगनी: *(आश्चर्य भए)* माने ? की छैक ई ?

रमणी-मोहन: *(गर्व सँ)* 'की' नञि... 'की' नञि... 'के' बोल!

बोल- भीतर 'के' छथि ? के, के छथि?

पॉकिट-मार: के, के छथि?

रमणी-मोहन: एक बेरि अहि द्वारकेँ पार कयलेँ त' भीतर भेटती

एक सँ एक सुर नारी,उर्वशी ___ मेनका रम्भा... *(बाजैत- बाजैत जेना मुँहमे पानि आबि जाइत छनि--)*

भिख-मंगनी: ईः! रंभा...मेनका...! *(मुँह दूसैत)* मुँह-झरकी

सब... बज्जर खसौ सबटा पर!

रमणी-मोहन: *(हँसैत)* कोना खसतैक बज्जर ? बज्र त' छनि देवराज

इन्द्र लग! आ अप्सरा त' सबटा छथि हुनकहि नृत्यांगना।

[भिख-मंगनीक प्रतिक्रिया देखि कैक गोटे हँस' लगैत छथि]

पॉकिट-मार: हे....एकटा बात हम कहि दैत छी _ई_ नहि बूझू जे

दरबज्जा खोलितहि आनंदे आनंद!

बाजारी: तखन ?

बीमा-बाबू: अहू ठाम छै अशांति, तोड़-फोड़, बाढ़ि आ सूखार ?

आ कि चारू दिसि छइ हरियर, अकाससँ झहरैत

खुशी केर लहर आ माटिसँ उगलैत सोना ?

पॉकिट-मार: किएक ? जँ अशांति, तोड़-फोड़ होइत त' नीक... की

बूझै छी, एत्तहु अहाँ जीवन बीमा चलाब' चाहै छी की ?

चोर: (एतबा काल उचक्का सँ फुसुर-फुसुर क' रहल

छल आ ओत्तहि, दरबज्जा लग ठाढ़ छल _एहि

बात पर हँसैत आगाँ आबि जाइत अछि) स्वर्गमे

जीवन-बीमा ? वाह! ई त' बड्ड नीक गप्प!

पॉकिट-मार: देवराज इंद्रक बज्र.. बोलू कतेक बोली लगबै छी?

उचक्का: पन्द्रह करोड़!

चोर: सोलह!

पॉकिट-मार: साढे-बाईस!

बीमा-बाबू: पच्चीस करोड़!

रमणी-मोहन: हे हौ! तोँ सब बताह भेलह ? स्वर्गक राजा केर बज्र,

तकर बीमा हेतैक एक सय करोड़ सँ कम मे ? *[कतहु सँ एकटा स्टूलक जोगाड़ क' कए ताहि पर चट दय ठाढ़ भ' कए-]*

पॉकिट-मार: बोलू, बोलू भाई-सब! सौ करोड़!

बीमा-बाबू: सौ करोड़ एक!

चोर: सौ करोड़ दू ___

रमणी-मोहन: एक सौ दस!

भिख-मंगनी: सवा सौ करोड़!

चोर: डेढ़सौ करोड़...

भिख-मंगनी: पचपन ___

चोर: साठि ___

भिख-मंगनी: एकसठि ___

[दूनूक आँखि मुँह पर 'टेनशन' क छाप स्पष्ट भ' जाइत छैक।]

चोर: *(खौंझैत)* एक सौ नब्बै...

[एतेक बड़का बोली पर भिख-मंगनी चुप भ' जाइत अछि।]

पॉकिट-मार: त' भाई-सब! आब अंतिम घड़ी आबि गेल अछि ___

190 एक, 190 दू, 190...

[ठहक्का पाड़ि कए हँस' लगलाह बाजारी, दूनू भद्र व्यक्ति आ रद्दी-बला-]

पॉकिट-मार: की भेल ?

चोर: हँस्सीक मतलब ?

बाजारी: *(हँसैते कहैत छथि)* हौ बाबू! एहन मजेदार मोल-

नीलामी हम कतहु नञि देखने छी!

भद्र-व्यक्ति 1: एकटा चोर...

भद्र-व्यक्ति 2: त' दोसर भिख-मंगनी...

बाजारी: आ चलबै बला पॉकिट-मार...

[कहैत तीनू गोटे हँस' लागै छथि]

बीमा-बाबू: त' एहि मे कोन अचरज?

भद्र-व्यक्ति 1: आ कोन चीजक बीमाक मोल लागि रहल अछि ___

त' बज्र केर!

भद्र-व्यक्ति 2: बज्जर खसौ एहन नीलामी पर!

बाजारी: *(गीत गाब' लागै' छथि)*

चोर सिखाबय बीमा महिमा,

पॉकिट-मारो करै बयान!

मार उचक्का झाड़ि लेलक अछि,

पाट कपाट त' जय सियाराम!

दुनू भद्र-व्यक्ति: *(एक्कहि संगे)* जय सियाराम!

[पहिल खेप मे तीनू गोटे नाच'-गाब' लागै छथि। तकर बाद धीरे-धीरे बीमा बाबू आ रद्दी-बला सेहो संग दैत छथि।]

बाजारी: कौआ बजबै हंसक बाजा

भद्र-व्यक्ति 1: हंस गबै अछि मोरक गीत

भद्र-व्यक्ति 2: गीत की गाओत ? छल बदनाम!

बाजारी: नाट-विराटल जय सियाराम!

समवेत: मार उचक्का झाड़ि लेलक अछि।

पाट-कपाटक जय सियाराम!

[चोर-उचक्का-पॉकिट-मार ताली दैत अछि, सुनि कए चौंकैत भिख-मंगनी आ प्रेमी-युगल बिनु किछु बुझनहि ताली बजाब' लागैत अछि।]

(क्रमशः)



श्री बैकुण्ठ झा

पिता-स्वर्गीय रामचन्द्र झा, जन्म-२४-०७-१९५४ (ग्राम-भरवाड़ा, जिला-दरभंगा), शिक्षा-स्नातकोत्तर (अर्थशास्त्र),पेशा-शिक्षक। मैथिली, हिन्दी तथा अंग्रेजी भाषा मे लगभग २०० गीत कऽ रचना। गोनू झा पर आधारित नाटक ''हास्यशिरोमणि गोनू झा तथा अन्य कहानी कऽ लेखन। अहि के अलावा हिन्दी मे लगभग १५ उपन्यास तथा कहानीक लेखन।–**सम्पादक**

दुनियाँ तँ ई धोखा अछि

उत्तर दक्षिण पूरब पश्चिम
ऊगि रहल पनिसोखा अछि। दुनियाँ...
कौआ कर्र-कर्र करकराय रहल,
आँगनमे धान सुखाय रहल।
पेपर रेडियो टी.वी.पर
नेतहुँ तँ शोर मचाय रहल।
हो जिन्दा मुर्दा गाय-महीश
वृद्धा-पेंशन हो या खरात-
हर ठाम कमीशन खाय रहल,
हँसि-हँसि कय गाल बजाय रहल।
आजुक युग के ई शोभा अछि,
ई मान बराईक नोभा अछि। दुनियाँ..
दुनियाँमे अछि सब चोर-चोर,
जकरा हिस्सा नईं भेंटि रहल-
मचबै सगरो तऽ वैह शोर।
काटय केउ सेन्ह अन्हरियामे,
लूटय तऽ केउ इजोरियामे
केउ ठूसय हीरा वोरियामे
बन्दूक बनैत अछि गोहियामे
अछि सबहक सरदार सिपाही
ऊठय निश्चिन्त ओढ़ढ़ियामे
ईमान जतय घर टाटक अछि
ई महल अटारी पापक अछि
दुनियाँ तँ ई धोखा अछि
पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण
ऊगि रहल पनिसोखा।

(१६.०९.९१)

लिखलौं कतेक पत्र कर जोरि जोरि कऽ

बूझब ओ छल नोरक जगहकँ छोड़ि-छोड़ि कऽ
लिखलौं...
झहरै तऽ बूँद सावनमे, खुब झूमि-झूमि कऽ
बरसै तऽ नोर नित, कपोल चूमि-चूमि कऽ
लिखलौं...
मुरझाय बन तराग बाग तऽ ओ गृष्ममे,
पावस उमंग घोरि रहल, आईपवनमे,
लिखईत छी पाँति हम, ई कलम बोरि-बोरि कऽ।
लिखलौं कतेक...
भेटत नम बूँद फेर, जखन हिम जे पिघलि जैत,
आओत कोना ओ बाढ़ि औ! सरिता सेहो सुखैत
ई लिखि रहल छी आई, आँखि फोड़ि-फोड़ि कऽ।
लिखलौं कतेक...
तोरि-गेरि-तोरि कऽ

मुहब्बतमे तऽ तरपब भाग्यमे लिखला प्रभुसबके

रही जौं दूर प्रियतमसँ सजाये मौत त ओ थिक। रही...२

यक्षक विरह छल वर्षकें जनलक जगत सगरो-

जहाँ वर्षो विरह के बात छै-

वनवास त ओ थिक। जहाँ...२

ई उपवन ओ शिखा पर्वत आ कल-कल बहि रहल सरिता

अगर अली अछि नज उपवनमे त सुन्दरता कतय ओ थिक। मुहब्बत...

चितवन हो यदि चंचल आ तन

यौवनसँ हो भारी

मगर पावसमे पहु परदेश हो

यौवन कहाँ ओ थिक।

मुहब्बत...

परदेश

रुन-झुन बाजय पायल हमर फूजल बान्हल केश

औ मोर पाहुन धेलहुँ योगिन वेश।

डाढ़ि-डाढ़िपर फुद-फुद्दी सभ फुदकि रहल,

खढ़-खढ़कँ समटि बनौने केहन महल

करै परिश्रम मिल कय दुनू नईं छन्हि कोनो क्लेश।औ..

बिजुलीसँ चमकै घर, मुदा अन्हरिया यौ।

टिम-टिम दीप करै छै ओतय अन्हरिया औ

दिन गनैत छी बीति रहल अछि राति कहाँ अछि शेष औ...

सीता शक्ति राम सौम्य जग-प्राण बनल।

पौलनि जगमे नाम घूमि जंगल-जंगल॥

महल त्यागि वनवाश गेलन्हि बना तपस्विन वेश!

औ मोर...

जतबय दुःख हम कहब अहाँ ततबै बुझबै

नहिं पहुँचत जौं पत्र अहाँ नहिंये जनबै

जड़तै तेल कोना नईं घरमे पहु जकर परदेश।

औ मोर...

(२०.१०.९१)

रहि-रहि आँचर उड़ि जाय किया

अहाँ आँचर समटि लजई किया। रहि-रहि..

देखि बागमे सुमन व्यवहार करू,

उठा निज नयनकँ चारि करू,

अली हर कलीसँ फुस-फुसाय किया। रहि रहि..

चमन छी अहाँ खिलि रहल अय सुमन।

लटसँ लिपटि घूमि चूमन पवन

पड़य जतय नजरि लिपटि जाय किया! रहि रहि...

भार सहय कोना करि केहरि अहाँक

राग माधुरी सुनाबय पायल के झनक

देखि अहाँ के हिरदय जुराय किया।

रहि रहि आँचर..

परदेश गेलहुँ

हमरो छोड़लहुँ, छोड़लहुँ माय के छोड़ि देलहुँ घरद्वार

परदेश गेलहुँ...

सोनू-मोनू झगड़ा कय-कय हमरो माथ भुकाय रहल

बहिकिरनी तऽ नईं अछि घरमे, कहू करत के हमर टहल?

बौआ सब बौआय रहल अछि, पढ़तै कथी कपार!

परदेश गेलहुँ..

जन-वन किल्लौल करै छै, कोना जेबै हम दरबज्जा

बौआ दौड़ल छल सड़कपर, गेलहुँ रोटी भेल भुज्जा

माय छथि बूढ़, छी एसगर घरमे कोना उठत ई भार!

परदेश गेलउँ। हमरो...

अहाँ जनै छी लोक केहन अछि, के कऽ देतै हाट-बजार,

साल-साल त बाढ़ि अबै छै,उजरै छै सबके संसार,

हेतै समुद्र आँगन-घर सगरो,के कउ देतै पार!

परदेश गेलउँ। हमरो छोड़लौ...



वासुदेव सुनानी,

ओड़िया कवि

ओड़ियासँ अंग्रेजी अनुवाद शैलेन राउत्रॉय आ अंग्रेजीसँ मैथिली गजेन्द्र ठाकुर द्वारा

अनुमति

हमरा अनुमति अछि श्रीमान!

हम कए ली विश्राम कनेक काल?

अहाँक आदेशानुसार
छाह कँ देने अछि बहारि,
बत्तू कँ देने छी खोआए,
अहाँक नालाकँ कए देने छी साफ,
नहि रहत कोनो दुर्गन्ध आब।

हमर अछि ढोल बजबए बला मधुमाछी
युगसँ अहाँक मनोरंजनार्थ
आ हमर आँगुर स्थिरताक राखए आश
हम करी विश्राम थोड़बे काल?

हम करैत छी अनुभव पुरखाक स्वेद
हमर देव, हमर मृतात्मा।

ताहि लेल प्रिय श्रीमान्
घंटा भरिक विश्राम मात्र अभिवादन जकाँ
किएक तँ हमर दुर्गन्ध, स्वेदक आ किछु आन वस्तुक।
हम करए छी प्रतीक्षा अहाँक नीक समय तृप्तिक
संगहि अपन कीट-संक्रमित जिनगीक समाप्तिक संकेतक।

प्रतीक्षा सेहि भरि दैत अछि थकान, श्रीमान् प्रियवर
विशेषकए लाख बरखक जहुँ ई होए।

से हम करए छी विश्राम थोड़ेक काल, श्रीमान्?
कारण हमरो सन् तुच्छकँ बुझल छैक छोट-मोट विद्रोहक कला।



विभा रानी

(लेखक- एक्टर- सामाजिक कार्यकर्ता)

बहुआयामी प्रतिभाक धनी विभा रानी राष्ट्रीय स्तरक हिन्दी व मैथिलीक लेखिका, अनुवादक, थिएटर एक्टर, पत्रकार छथि, जिनक दर्ज़न भरि से बेसी किताब प्रकाशित छन्हि आ कएकटा रचना हिन्दी आ मैंथिलीक कएकटा किताबमे संकलित छन्हि। मैथिली के 3 साहित्य अकादमी पुरस्कार विजेता लेखकक 4 गोट किताब "कन्यादान" (हरिमोहन झा), "राजा पोखरे में कितनी मछलियां" (प्रभास कुमार चाऊधरी), "बिल टेलर की डायरी" व "पटाक्षेप" (लिली रे) हिन्दीमे अनूदित छन्हि। समकालीन विषय, फ़िल्म, महिला व बाल विषय पर गंभीर लेखन हिनक प्रकृति छन्हि। रेडियोक स्वीकृत आवाज़क संग ई फ़िल्म्स डिविजन लेल डॉक्यूमेंटरी फ़िल्म, टीवी चैनल्स लेल सीरियल्स लिखल व वॉयस ओवरक काज केलन्हि। मिथिलाक 'लोक' पर गहराई स काज करैत 2 गोट लोककथाक पुस्तक "मिथिला की लोक कथाएं" व "गोनू झा के किस्से" के प्रकाशनक संगहि संग मिथिलाक रीति-रिवाज, लोक गीत, खान-पान आदिक वृहत खज़ाना हिनका लग अछि। हिन्दीमे हिनक 2 गोट कथा संग्रह "बन्द कमरे का कोरस" व "चल खुसरो घर आपने" तथा मैथिली में एक गोट कथा संग्रह "खोह स' निकसइत" छन्हि। हिनक लिखल नाटक 'दूसरा आदमी, दूसरी औरत' राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली के अन्तर्राष्ट्रीय नाट्य समारोह भारंगममे प्रस्तुत कएल जा चुकल अछि। नाटक 'पीर पराई'क मंचन, 'विवेचना', जबलपुर द्वारा देश भरमे भ रहल अछि। अन्य नाटक 'ऐ प्रिये तेरे लिए' के मंचन मुंबई व 'लाइफ़ इज नॉट अ ड्रीम' के मंचन फ़िनलैंडमे भेलाक बाद मुंबई, रायपुरमे कएल गेल अछि। 'आओ तनिक प्रेम करें' के 'मोहन राकेश सम्मान' से सम्मानित तथा मंचन श्रीराम सेंटर, नई दिल्लीमे कएल गेल। "अगले जनम मोहे बिटिया ना कीजो" सेहो 'मोहन राकेश सम्मान' से सम्मानित अछि। दुनु नाटक पुस्तक रूप में प्रकाशित सेहो अछि। मैथिलीमे लिखल नाटक "भाग रौ" आ "मदद करू संतोषी माता" अछि। हिनक नव मैथिली नाटक अछि बलचन्दा।

विभा 'दुलारीबाई', 'सावधान पुरुरवा', 'पोस्टर', 'कसाईबाड़ा', सनक नाटक के संग-संग फ़िल्म 'धधक' व टेली -फ़िल्म 'चिट्ठी'मे अभिनय केलन्हि अछि। नाटक 'मि. जिन्ना' व 'लाइफ़ इज नॉट अ ड्रीम' (एकपात्रीय नाटक) हिनक टटका प्रस्तुति छन्हि।

'एक बेहतर विश्र्व-- कल के लिए' के परिकल्पनाक संगे विभा 'अवितोको' नामक बहुउद्देश्यीय संस्था संग जुड़ल छथि, जिनक अटूट विश्र्वास 'थिएटर व आर्ट-- सभी के लिए' पर अछि। 'रंग जीवन' के दर्शनक साथ कला, रंगमंच, साहित्य व संस्कृति के माध्यम से समाज के 'विशेष' वर्ग, यथा, जेल- बन्दी, वृद्धाश्रम, अनाथालय, 'विशेष' बच्चा सभके बालगृहक संगहि संग समाजक मुख्य धाराल लोकक बीच सार्थक हस्तक्षेप करैत छथि। एतय हिनकर नियमित रूप से थिएटर व आर्ट वर्कशॉप चलति छन्हि। अहि सभक अतिरिक्त कॉर्पोरेट जगत सहित आम जीवनक सभटा लोक आओर लेल कला व रंगमंचक माध्यम से विविध विकासात्मक प्रशिक्षण कार्यक्रम सेहो आयोजित करैत छथि। <u>सम्पादक</u>

भाग_रौ

(संपूर्ण मैथिली नाटक)

लेखिका - विभा_रानी

पात्र - परिचय

मंगतू
भिखारी बच्चा 1
भिखारी बच्चा 2
भिखारी बच्चा 3
पुलिस
यात्री 1
यात्री 2
यात्री 3
छात्र 1
छात्र 2
छात्र 3
पत्रकार युवक
पत्रकार युवती
गणपत क्क़ा
राजू - गणपतक बेटा
गणपतक बेटी
गुंडा 1
गुंडा 2

गुंडा 3
हिज़ड़ा 1
हिज़ड़ा 2
किसुनदेव
रामआसरे
दर्शक 1
दर्शक 2

आदमी
तांबे
स्त्री - मंगतूक माय
पुरुष - मंगतूक पिता

''भाग_रौ''

(संपूर्ण मैथिली नाटक)

विभा रानी

दृश्य: 1

(ट्रेनक दृश्य। (ट्रेन नञि भ' क' ई कोनो हाट- बजार अथवा मेला-ठेला सेहो भ' सकैत अछि।) ट्रेन मे महिला आ पुरूष यात्री। भीख माँग' बला तीन टा बच्चा चढ़ैत अछि। एक के गरदनि मे हारमोनियम, दोसराक हाथ मे पाथरक दू टा खपटा। तेसरक हाथ मे खँजुड़ी। तेसर बच्चा उमिर में सभ सँ छोट। तीनू क तीनू फाटल, चीकट कपड़ा मे अछि। बच्चा नं. 1 हारमोनियम पर सभ' स' नवीन फिल्मी गीतक धुन बजाक गाबि रहल अछि। दोसर बच्चा खपटा बजा-बजाक' ओकरा संगे गएबाक प्रयास क' रहल अछि। छोटका बच्चा खंजड़ी बजा रहल अछि आ गीतक पंक्ति पकड़बाक प्रयास मे आधा-छिया पंक्ति गबैत अछि। तीनूक स्वर; सुर-ताल में कोनो एकरूपता नञि अछि। सभस' छोटका; बच्चा नं. 3 सभ स' पाई मँगैत अछि। किओ देइत अछि, किओ डपटैत अछि, किओ कोनो दोसर दिस तकैत अछि, किओ ऑखि मूनि लेइत अछि।)

(ट्रेन रूकैत अछि। तीनू बच्चा उतरि जाइत अछि। मंचक एकटा कोन्टी मे तीनू ठाढ़ भ' क' दिनु भरका कमाई गिनैत अछि।)

बच्चा 1: कतेक?

बच्चा 2: साढ़े एगारह।

बच्चा 1: बस? भरि दिन ट्रेने-ट्रेने घूमल आ तइयो साढ़े एगारहे? अकरा मे त' अपना सभक लेल चाहो-मूढ़ी नञि। (सभस' छोटका बच्चा स') आँए रौ, खाए लेल भरि थारी आ माँग' मे सभ स' पिछारी! ठीक स' माँगै कियै नै छें रे?

(बच्चा 3 बिटिर-बिटिर तकैत रहैत अछि।) मुँह की निहारि रहल छें? हम कोनो की गोविंदा छी कि रितिक रोशन। आ तोहों आमिर खान नञि छें। जतेक गरीब छें, तकरो स' बेसी गरीब बनल रह। तखने दू टा पाइ भेटतौ।

बच्चा 3: (सहमैत) ई पटना छै कि दानापुर?

(दुनू बच्चा ई सुनि हठात ठठा पड़ैत अछि। छोटका फेर बिटिर-बिटिर मुंह तकैत रहैत अछि।)

बच्चा 3: रौ बूड़ि। ई पटना नञि छै, जकरा ककरो स' नञि पटै छै। दानापुर माने दाना स' पूरम पूरा। हमर आओरक पेट मे त' मरल सनकिरबो नञि अछि। की करबहीं रौ जानि क' की हम कत' छी?

बच्चा 1: भूख लागलए।

बच्चा 2: तकरा लेल पटना-दानापुर मे रहब जरूरी छै? भूख त' कखनो आ कतहु लागि जाइ छै। दम धर।

बच्चा 3: पटना सिटी?

बच्चा 2: ऊँ हूँ। पटना साहेब। सिटी त' कहिया ने बदलि गेलै।

बच्चा 1: रौ बता, सिटी स' साहेब भ' गेला सें की भ' गेलै? की बदलि गेलै?

बच्चा 2: बदलि गेलै ने? जनाना स' मर्दाना भ' गेलै।

बच्चा 1: माने? (गंभीर भ' क')

बच्चा 2: माने.. सिटी जनाना आ साहेब मर्दाना (दुनू हँसैत अछि। बच्चा 3 ओहिना बिटिर-बिटिर मुंह तकैत रहैत अछि)

बच्चा 1: नाम बदल' स' तकदीर सेहो बदलै छै की? सिटी स' साहेब भ' गेलै त' हमरा आओरक भूख-पियासक रंग बदलि गेलै की? अपना आओर के काज भेटलौ? पाइ भेटलौ? तहन कियैक एतेक मगजमारी? पटना कि दानापुर कि साहेब की फारबिसगंज.. हूँह!

बच्चा 3: (उसाँस भरिक') भूख लागल अछि।

बच्चा 1: रौ सार! जो, कोनो हाथी पकड़ि ला आ घोंटि जो। सार.. भूख लागलए, भूख लागलए.. नकिया देलक ईत'..

बच्चा 2: आजुक समाचार?

बच्चा 2: बच्चा बेमार। हजारो नेन्ना मरि गेलै, खाएक अभाव मे..

बच्चा 3: हमरा खाए ला दे। नञि त' हमहू मरि जाएब।

बच्चा 1: त' मरि जो। प्रधानमंत्री छें जे मरि जेबें त' देसक काज-धंधा थम्हि जेतै।

बच्चा 3: परधानमंत्री कोनो खायबला चीज होइ छै। केहेन होइ छै? कत' भेटै छै?

बच्चा 2: (ओकर बात पर धेयान देने बेगर) तों कोना बुझलही? तों त' अखबार नञि पढ़ै छैं।

बच्चा 1: टेसन मे टीबी छै ने। ओकरा मे देखलियै। बढ़िया स' बूझाब' लेल मँगतुआ त' अछिए।

बच्चा 2: ओकरा कोना बूझल छै?

बच्चा 1: ओ पढुआ छै। अखबार पढ़ै छै।

बच्चा 2: भिखमंगो सभ अखबार पढ़ै छै? बाप रौ!

बच्चा 1: ओ कीनै नञि छै। प्रेसक बाहर बैसै छै। चौकीदार ओकरा द' दै छै अखबार।

बच्चा 3: भीख मे अखबार! भीख मे चाह-मूढ़ी.. (बजैत-बजैत थम्हि जाइ छै: दुनू बच्चा ओकरा घूरै छै।)

बच्चा 2: मंगतू सभटा पढ़ि लेइत छै?

बच्चा 1: हँ, रौ। पूरा अखबार चाटि जाइत छै। पूरा दुनियाक हाल ओकरा बूझल रहै छै। ओ पढ़ल छै।

बच्चा 3: पढ़ल की होइ छै? पटना-दानापुर जकाँ कोनो टेसन छै की?

बच्चा 2: (स्नेह स') तो नञि बुझबे अखन।

बच्चा 1: पढ़ल बहुत पैघ चीज होइत छै। पढ़ि-लिखि क' लोक बहुत पैध-पैध लोक बनि जाइत अछि। मुदा अपना आओरक तकदीर मे ई नञि अछि।

बच्चा 2: (भरोस दियबैत) नञि छै त' नञि छै। मंगतुआ छै नें पढ़ल-लिखल। अपने बिरादरीवाला। अपना आओर स' गप्प-सप्प सेहो करै छै। दुनिया जहानक समाचार त' दइते छै।

(अई बेर तेसरका बच्चा कएक बेर हाथ मुँह स' भूख लगबाक संकेत द' चुकल अछि। सभ बेर दुनू बच्चा ओकरा घूरैत अछि। तेसरका सभ बेर डेराक शांत भ' जाइत अछि।)

बच्चा 1: हे.. देख ओम्हर! अपन गोबिन्दा।

बच्चा 3: ई कोनो नव भिखमंगा ऐलै की? आब त' आओरो भीख नञि भेटत। .. भूख..

बच्चा 2: मंगतुआ छै।

बच्चा 3: ई एतेक पैघ घर ओकर छै? आ तइयो भीख..

बच्चा 1: धुरि बुडि.बक। ई अखबारक ओफीस छियै। अई ठाँ क सभस' पैध अखबारक ओफीस।

बच्चा 2: ऍं मारल! ओ गुड्डी बकाट्टा। बुझा गेल जे ओकरा पढ़ब-लिखब कोना एलै।

बच्चा 1: अखबारक बगल में रहला स' किओ पढ़ि जाइ छै। मू.ढ़ीक दुकान लग रहला स' मूढ़ी भेटि जाइत छै?

बच्चा 3: मूढ़ी.. भूख..

दुनू: चोप!

बच्चा 2: कोनाक' ऊ पढ़ि गेलै तहन?

बच्चा 3: हमहू पढ़ब।

बच्चा 1: रौ, कुकुरक नांगरि। पढ़िक' की बनबही? सोनिया गांधी कि मनमोहन सिंह?

बच्चा 2: राबड़ी देवी। पढ़क जरूरते नञि।

बच्चा 3: (खिसिया क') पढ़ा नञि देबें, खाए लेल नञि देबें, त' करब की? मूति!

बच्चा 2: पढ़ाईक गेरंटी नञि । खाएक गेरंटी त' आओरो नञि।

बच्चा 1: कोना पढ़बही रे? मंगतुआ गप्प दोसर छै। ओकरा लग टेम छै। ओकरा भीखो खूब भेटै छै?

बच्चा 3: पढ़ले सन्ते ने! हमहू पढ़ि लेब त' हमरो बेसी भीख भेटत।

बच्चा 1: चल, चल ..

बच्चा 3: कोम्हर? हमरा भूख लागलए।

बच्चा 2: मंगतुआ लग चल। ओकरा खेनाइयो-पिनाई बहुत रास भेटै छै?

बच्चा 3: पढ़िक' भीख मांगला स' खेनाइयो फ्री.. हमरा पढ़ए दे।

बच्चा 1: (दुनू क हाथ पकड़िक एक दिस ल' जाइत) चल, चल पानि सेहो बरस' बला छै। चल ओम्हर (दुनू रास्ता क्रॉस करबाक अभिनय करैत अछि। तेसरका पाछा रहि जइत अछि। दोसरका ओकरा पार करबाक इशारा करैत अछि। तेसरका डेराइत अछि। दोसरका फेर एम्हर अछि। ओकरा एक धौल लगाबैत अछि। फेर खींचिक' रोड पार करैत अछि। पार क' क' तीनू मंगतू लग पहुंचइत अछि। एक गोट मोटरी, एक गोट कटोरा, किछु पाइ ओकरा लग पड़ल अछि। प्रकाश तीनू बच्चाक संगे-संगे आब मंगतू पर।)

बच्चा 1: की रौ मंगतुआ। की भ' रहल छौ।

मंगतू: के? ओह! चनरा, गोबरा, झुनमा रौ! आ बइस, केहेन चलि रहल छौ धंधा-पानी?

बच्चा 2: भीख माँगब धंधा पानी होइ छै? आ सेहो अई अंधड़ पानि में!

बच्चा 1: हमरा त' फूटलो आँखि नञि सोहाइये ई बरखा- बुन्नी। लोक आओर घर मे, आफिस में बन्न। दुकान दौरी सेहो ठप्प। लोक आओरक धंधा-पानी नञि त' हमरा आओर के भीख के देत?

मंगतू: हमरा त' बड़ड नीक लगैय' ई बरिसात। चारू दिस हरियाली, मोन के बड़ड सोहाओन लगैत अछि।

बच्चा 1: पेट भरल रहला पर बनरनियो रानी मुखर्जी लागै छै।

बच्चा 2: अपना घर मे बइसक' चाह पकौड़ी उड़ाब' मे केकरा मजा नञि एतै?

(चाह पकौड़ीक नाम स' बच्चा 3 फेर हाथ स' भूख बतबइत अछि।)

बच्चा 1: हमरा आओरक कोनो ठेकाने नञि! देखै छियै नें जे जहन पानि बरसै छै, तहन भिजैत माय कोरा मे भीजैत बच्चा के ल' क' बिल्डिंगे-बिल्डिंग, घरे-घर बउआ अबैत छै। मुदा कतहु-कोनो चौकीदार ओकरा अपना बिल्डिंग के नीचा आसरा नञि देई छै।

मंगतू: छै। तइयो पानि बरसै छै त' नीक लागै छै। देह मे जिनगी सुरसुराय लागै छै। पानि छै तैं। जिनगी छै नै रौ..! (स्वर बदलिक') आ, तों सभ भिंगमे कियै। तोरा-आओर के त' घर छौ। हमरा जकाँ नञि छौ ने।

बच्चा 1: हँ, सहीए । तोरा नाहित नञि छियै रौ। रहितियैक त' भरि दिन ई टरेन, ऊ बस, नञि करैत रहितहुँ। लोकक लात-बात नञि सुनतहुँ। ई गर्दनि देख.. चिकरि-चिकरि के बाँस जतेक पैध भूर भ' गेल अछि।

बच्चा 2: आ जे दू टा पाइ भेटै छै, ओहू में पुलिस, दादा सभक..

(ओ बाजिए रहल अछि कि एकटा पुलिस डंडा घुमबैत ओम्हर अबैत अछि। तीनू के देखिते तीनू पर ताबड़तोप. डंडा बरसाब' लगैत अछि। तीनू एम्हर-ओम्हर बचबाक प्रयास करैत अछि। ओही मे देह छीपि-छीपि के पुलिस से नञि मारबक नेहोरा करैत अछि। मंगतूक सेहो प्रयास। अई क्रम मे एक -दू डंडा ओकरो लागि जाइत अछि।)

पुलिस: सार सभ! फेर एम्हर आबि गेलँ। चढ़बे बस ट्रेन में माँग' लेल भीख, आ करबैं पाकिटमारी।

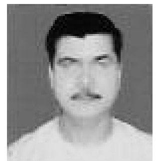
बच्चा 1: नञि साब! हम सभ त'..

पुलिस: चोप.. भोसड़ी के.. सार, बहिनक इयार! ई डंडा एम्हर स' घुसतौ त' मुँह दने निकलतौ। चल भाग, जो ओई गल्ली मे।

(तीनू पुलिसक बताओल गल्ली मे भागि जाइत अछि। पुलिसबाला विजयी भाव स' बस स्टैंड पर ठाढ़ लोक आओर के देखैत अछि आ फेर मंगतू दिस।)

मौज कर रो बाउ, मौज कर। तोहरे भाग मे मौज लिखल छौ। ऐहेन ने देह बना के आएल छें जे मौजे-मौज छौ।

(कहैत ओ गल्ली दिस बढ़ैत अछि।) क्रमश



श्री विद्यानन्द झा

पञ्जीकार प्रसिद्ध मोहनजी

जन्म-09.04.1957, पण्डुआ, ततैल, ककरौड़ (मधुबनी), रशाढ़य (पूर्णिया), शिवनगर (अररिया) आ' सम्प्रति पूर्णिया। पिता लब्ध धौत पञ्जीशास्त्र मार्त्तण्ड पञ्जीकार मोदानन्द झा, शिवनगर, अररिया, पूर्णिया|पितामह-स्व. श्री भिखिया झा। पञ्जीशास्त्रक दस वर्ष धरि 1970 ई.सँ 1979 ई. धरि अध्ययन,32 वर्षक वयससँ पञ्जी-प्रबंधक संवर्द्धन आ संरक्षणमे संलग्न। सम्पादक

ॐ
॥श्री गणेशाय नमः॥

"सृष्टि चक्र"

आदिमे शून्य छल शून्यसँ शान्ति छल।
शून्य केर सत्ता दिग-दिगन्त व्याप्त छल।
शून्यक विधाता शून्यसँ आक्रान्त छल।
शून्यसँ प्रारम्भ भए शून्यहिसँ विराम छल।

विधिना विधान कएल रचना संसार कएल।
खेत पथार पोखरि ओ जीवक संचार कएल।
दिति ओ अदितिसँ सृष्टिक विस्तार कएल।
कर्म सभक बान्हि बान्हि धरतीपर आनि धएल।

शून्यक विखंडनसँ वृत्तक विस्तार भेल।
पोखरि ओ झांखड़ि पर्वत पहाड़ भेल।
नदी-नद तालाब ओ वनस्पति हजार भेल।
जीव जङ्गम स्थावर ओ गतिमान संसार भेल।

चन्द्र सूर्य नक्षत्र ओ वायु वारिद नीर।
धरा-गगन धरि व्याप्त भेल विद्युत ओ समीर।
सभतरि पसरल तेज पुञ्ज चकाचौंध गम्भीर।
तम-तम करइत दिन दुपहरिया नयन भरल ओ नीर।

जल चर- थलचर- नभचर नाना।
अप्पन-अप्पन धएलक बाना।
विविध भेष ओ भाषा नाना।
कएलक निज-निज गोत्र बखाना।

विष ओ अमृत संग जनमि गेल।
स्नेह-प्रेम-आघात प्रगट भेल।
दोस्त-महिम कुटुम्ब अमरबेल।
चतरि-चतरि चहुँओर पसरि गेल।

एक दिशि जनमल चोर-उचक्का।
दोसर दिशि भलमानुष सुच्चा।
सृष्टि हेतु- समधानल सभटा।
प्रभु सभ करथि हुनक ई छिच्छा।

गोङ बधिर बजबैका नाङ्गर।
श्वेत-श्याम सत्वर ओ अजगर।
दीर्घकाय ओ दुव्वर पातर।
सभटा रचलैन्हि ओ विश्वम्भर।

भूख रचल प्यास रचल।
श्रम ओ संधान रचल।
रोग रचल व्याधि रचल।
औषध अपार रचल।

काम भूख दाम भूख वासनाक उग्रभूख।
शान-मान-दान भूख भूखक हजार रूप।
ई भूख ओ भूख भूखक विद्रूप रूप।
भूख मुदा बढ़िते गेल धधकैत विकराल रूप।

शाम-दाम-दण्ड भेद शासन कुशासन।
काम-क्रोध-लोभ-मोह विरचल "महाशन"।
राग-द्वेष-प्रेम-वैर पसरल हुताशन।
सृष्टि चक्र चलैत रहल वैदिक ऋचा सन।....।

घर बनल गाम बनल नगर ओ धाम बनल।
जनता जरल सन नेता भगवान बनल।
देशक खेवैया झुठ्ठा बेइमान बनल।
भक्तिक भभटपन पण्डा शैतान बनल।
सृष्टि चक्र चलैत रहल वैदिक ऋचा सन।...

पाद-टिप्पणी:

१. वारिद-मेघ
२. समधानल-ओरियाकऽ
३. छिच्छा-स्वभाव
४. संधान-अन्वेषण,खोज
५. महाशन-विष्णु
६. हुताशन-अग्नि.



विनीत उत्पल (१९७८-)।

आनंदपुरा, मधेपुरा। प्रारंभिक शिक्षासँ इंटर धरि मुंगेर जिला अंतर्गत रणगांव आऽ तारापुरमे। तिलकामांझी भागलपुर, विश्वविद्यालयसँ गणितमे बीएससी (आनर्स)। गुरू जम्भेश्वर विश्वविद्यालयसँ जनसंचारमे मास्टर डिग्री। भारतीय विद्या भवन, नई दिल्लीसँ अंगरेजी पत्रकारितामे स्नातकोत्तर डिप्लोमा। जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्लीसँ जनसंचार आऽ रचनात्मक लेखनमे स्नातकोत्तर डिप्लोमा। नेल्सन मंडेला सेंटर फॉर पीस एंड कनफ्लिक्ट रिजोल्यूशन, जामिया मिलिया इस्लामियाक पहिल बैचक छात्र भऽ सर्टिफिकेट प्राप्त। भारतीय विद्या भवनक फ्रेंच कोर्सक छात्र।

आकाशवाणी भागलपुरसँ कविता पाठ, परिचर्चा आदि प्रसारित। देशक प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिका सभमे विभिन्न विषयपर स्वतंत्र लेखन। पत्रकारिता कैरियर- दैनिक भास्कर, इंदौर, रायपुर, दिल्ली प्रेस, दैनिक हिंदुस्तान, नई दिल्ली, फरीदाबाद, अकिंचन भारत, आगरा, देशबंधु, दिल्ली मे। एखन राष्ट्रीय सहारा, नोएडा मे वरिष्ट उपसंपादक।–सम्पादक

ककर गलती

कतेक दिवससँ
सोचैत रही
जे
गाम जाएब
परञ्च
दिल्लीक उथल-धक्कासँ
मुक्त होएब तखन नञि।

पिछला दशहरामे
जखन गाम पहुँचलहुँ
तऽ आड़ि पकड़ि टोल
घुसैत रही।

ओहि ब्रह्मबाबाक ठामपर
एकटा स्त्रिगन बैसल रहथि
की कहू, धक्कसँ रहि गेलहुँ
कंठक थूक कंठहिमे सूखि गेल

स्त्रिगन कोनो भूत नहि छलीह
ओऽ कोनो डायन-जोगिन नहि
रहथि
ओऽ गौरी दाई छलीह
बियाहक ठामे साल
विधवा भऽ गेलीह

ताहि दिनसँ ओऽ नवयुवती
उजरा नुआ पहिरैत छथि
सीथमे चुटकी भरि सेनूर नहि
गुमसुम रहैत समय काटि रहल
छथि।

तऽ हुनका देखि कऽ
हरदम सोचैत छी
की यैह मिथिला थिक

यैह हमर संस्कृति थिक
जे मन कैँ मारि कए एकटा
नवयुवती जीवन काटि रहल अछि
ओकरा कियो देखनिहार नहि छैक

ओ नवयुवतीक मांग
जुआनीमे उजड़ि गेल
ताहि दिनसँ हुनकापर

की बितैत होयत
पति बीमारीसँ मरि गेलखिन

एकरामे गौरी दायक की दोष
दोष तऽ हुनक पिताक छनि
जिनका वरक बीमारीक जानकारी
नहि छल
मुदा ओहो की करताह
घटक बनि कऽ गेल रहथि
द्वितीकार जे बतोलथि
सैह ने सत्य मानितथि

ई गप सच छल
जे गौरी दाय
अपन पिताक गलतीक
सजा भोगि रहल छथि
भाग्यकेँ कोसि रहल छथि

आब की कही
देश-परदेशमे तऽ
वर- कनिया बदलि जाइत अछि
जेना हर छः मास पर
बदलैत छी हम अपन अंगा

मुदा, ई गौरी दाय
बीसेक साल बादो
नहि बदललीह
ओहि दिनसँ
पतिक वियोगमे
दिन-राति घुटैत छथि

कियो कतहुसँ खुशियोमे
हुनका नोत नहि दैत छथि
कियो अपन नवजातकेँ
खेलाबए ले
नहि दैत छथि

की करती गौरी दाय
कियो हुनका देवी कहैत अछि
तऽ डायन-जोगिन कहबासँ
लोक-वेद पाछुओ नहि रहैत
छथि।

समर्पण

(कथक नृत्यांगना पुनीता शर्माक लेल)

जीवनक जीवंतता कि
मनुष्यक मनुष्यता कि
जेहन मोन, जेहन भाव
तहिने होइत समर्पण भाव

नर्तकी जखन राग मालकौस मे
स्टेज पर रोशनीक चकाचौंध मे
अपन संपूर्ण प्रतिभाक प्रदर्शन
करैत छथि
देरवू तखन की होइत अछिराग,
की होइत अछि भाव देखू तखैन
कि हैत छथि राग, कि हैत छथि
भाव

लागत जेना हुनकर देह मे
नर्तकीक आत्मा नहि
देवता बैस गेल
जे जेना नचाबि रहल छैक
तहिना नर्तकी नाचैत छथि

कि कि ठाठ
कि करि ओइ चक्करक वर्णन
शब्दो तँ ओतेक नहि अछि
त कोना करी
समर्पण भावक वर्णन

अहां जकर बेटी होएब
अहाँ जकर बहिन होएब
मुदा, अहाँ जकरा सँ
प्रेम करैत होएब
ई सब कतेक खुशनसीब होइत

जे नर्तकी
अपन संपूर्ण अस्तित्व
नृत्य मे झोंइक दैत छथि
हुनकर प्रेम वा पुरुष
वा समर्पन जरूर संपूर्ण होइत.



देवांशु वत्स

मैथिली चित्र-श्रृंखला (कॉमिक्स)

जन्म- तुलापट्टी, सुपौल। मास कम्युनिकेशनमे एम.ए। हिन्दी, अंग्रेजी आ मैथिलीक विभिन्न पत्र-पत्रिकामे कथा, लघुकथा, विज्ञान-कथा, चित्र-कथा, कार्टून, चित्र-प्रहेलिका इत्यादिक प्रकाशन। विशेष: गुजरात राज्य शाला पाठ्य-पुस्तक मंडल द्वारा आठम कक्षाक लेल विज्ञान कथा ''जंग'' प्रकाशित (2004 ई.)-सम्पादक




नताशा
© देवांशु वत्स
एक दिन नताशाक ओहिठाम चोइर भ' गेलै.....
तोहर पापा कहैत रहो जे डेढ लाखक समान चोइर भ' गेले.....
मुदा माय कहैत रहो पौने दू लाखक....... से किया ???
कका, नै बुझलिय, वैह सदमा स' ददा क' हर्ट अटैक भ' गेले.......
...माय हुनकर इलाजो केर खर्चा....
.........जोड़ि दैत छथिन !!!


नताशा
© देवांशु वत्स
आ ऽ ऽ ऽ करू त बुची !
आऽ ऽ ऽ
गै मा...हो बाप
कन' कालक बाद
डाक्टर सेहाब कतेक पाइ भ' गेल ?
visit : www.devanshuvatsa.com
E-mail - devanshuvatsa@gmail.com
दू सौ टका मात्र !
दू सौ ? मुदा बोर्ड पर त' पचासे टका लिखल य'...
हां, मुदा अहॉक बचियाक बपरहैर सुनि हमर....
....तीन टा पेसैंट परा गेले ?



नवीन नाथ झा (नवनीत)

जन्म २०.०१.१९४०, बी.ए.ऑनर्स सह एल.एल.बी., पिता- श्री बैद्यनाथ झा, गाम- भटोत्तर (चकला), जिला पूर्णिया

दया करू माँ

अहाँक शरणमे आएल छी माँ, दया कऽ कँ अपनाबू माँ।

अहीँके चरण-कमलमे रमल छी माँ,

दुःखी मन दोसर राह नै, सुझै अछि माँ

चोट बहुत खायल छी माँ, दुनियासँ ठुकराईल माँ

दया करु माँ, दया कऽ कँ अपनावू माँ॥१॥ अहाँ...

माँ अपन आँचरक शीतल, सुरभित,

हवासँ ताप एवम् कष्ट हरु माँ,

परञ्च, मिलल नहि प्रतिदान कनेको,

हर पगपर स्वार्थक लीला,

चलन जगतक निराले माँ

अहाँक शरणमे आएल छी माँ, दया कऽकँ अपनाबू माँ॥२॥

(जगत) संसार माया जालमे फँसल अछि माँ,

दुनियां आतंकसँ आक्रान्त अछि माँ,

अज्ञानताक-अंधकारसँ भरल अछि माँ

अनुशासनक कमी खलै अछि माँ॥

अहाँक शरणमे आएल छी माँ, दया कऽकँ अपनाबू माँ...॥३॥

अपन परायाक ज्ञान घटल अछि,

अधर्मक, अकर्मक बाजार गर्म अछि

एहि जगसँ अज्ञानताक-अंधकार दूर करू माँ-

अहींक शरणमे आएल छी माँ, ताप रहहों...॥४॥

दुखी जनक दुःख दूर करू माँ

सत्कर्मक भाव जन-जनमे

अविलम्ब आबिकेँ अहीं भरू माँ।

अहींक शरणमे आएल छी माँ, दया कऽकँ अपनावू माँ॥५॥

विश्व कल्याणक भाव सभमे जगा दियो माँ,

सत्यम् शिवम् सुन्दरम् क ज्ञान सभमे भरि दियो माँ

वसुधैव कुटुम्बक विचार सन्चारित कऽ दियो माँ

अहींक शरणमे आएल छी माँ, दया कऽकँ अपनावू माँ

"अस्तु"

विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (1878-1952)

भजन भैरवी

आब मन हरि चरनन अनुराग।
त्यागि हृदयके विविध वासना दम्भ कपट सब त्याग॥
सुत बनिता परिजन पुरवासी अन्त न आबे काज।
जे पद ध्यान करत सुर नर मुनि तुहुं निशा आब जाग॥
भज रघुपति कृपाल पति तारों पतित हजार
बिनु हरि भजन बृथा जातदिन सपना सम संसार
रामजी सन्त भरोस छारि अब सीता पति लौ लाग॥

॥ राग विहाग ॥

को होत दोसर आन रम बिनु॥ जे प्रभु जाय तारि अहिल्या जे बनि रहत परवान॥ जल बिच जाइ गजेन्द्र उबारो सुनत बात एक कान॥ दौपति चीर बढ़ाई सभा बिच जानत सकल जहान॥ रामजी सीता-पति भज निशदिन जौ सुख चाहत नादान॥

चैत के ठुमरी

चैत पिया नहि आयेल हो रामा चित घबरायेल।।
भवनो न भावे मदन सताबे नैन नीन्द नहि लागल॥
निसिवासर कोइल कित कुहुकत बाग बाग फूल फूलल॥
रामजी वृथा जात ऋतुराजहि जौंन कन्त भरि मिललरामा॥
चित घबरायेल चैत पिया नहि आयल॥

मानक मैथिली

1. नेपालक मैथिली भाषा वैज्ञानिक लोकनि द्वारा बनाओल मानक उच्चारण आ लेखन शैली आ 2. मैथिली अकादमी, पटना द्वारा निर्धारित मैथिली लेखन-शैली

1. नेपालक मैथिली भाषा वैज्ञानिक लोकनि द्वारा बनाओल मानक उच्चारण आ लेखन शैली

मैथिलीमे उच्चारण तथा लेखन

१. **पञ्चमाक्षर आ अनुस्वार:** पञ्चमाक्षरान्तर्गत ङ, ञ, ण, न एवं म अबैत अछि। संस्कृत भाषाक अनुसार शब्दक अन्तमे जाहि वर्गक अक्षर रहैत अछि ओही वर्गक पञ्चमाक्षर अबैत अछि। जेना-

अङ्क (क वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे ङ् आएल अछि।)

पञ्च (च वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे ञ् आएल अछि।)

खण्ड (ट वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे ण् आएल अछि।)

सन्धि (त वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे न् आएल अछि।)

खम्भ (प वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे म् आएल अछि।)

उपर्युक्त बात मैथिलीमे कम देखल जाइत अछि। पञ्चमाक्षरक बदलामे अधिकांश जगहपर अनुस्वारक प्रयोग देखल जाइछ। जेना- अंक, पंच, खंड, संधि, खंभ आदि। व्याकरणविद पण्डित गोविन्द झाक कहब छनि जे कवर्ग, चवर्ग आ टवर्गसँ पूर्व अनुस्वार लिखल जाए तथा तवर्ग आ पवर्गसँ पूर्व पञ्चमाक्षरे लिखल जाए। जेना- अंक, चंचल, अंडा, अन्त तथा कम्पन। मुदा हिन्दीक निकट रहल आधुनिक लेखक एहि बातकेँ नहि मानैत छथि। ओलोकनि अन्त आ कम्पनक जगहपर सेहो अंत आ कंपन लिखैत देखल जाइत छथि।

नवीन पद्धति किछु सुविधाजनक अवश्य छैक। किएक तँ एहिमे समय आ स्थानक बचत होइत छैक। मुदा कतोकबेर हस्तलेखन वा मुद्रणमे अनुस्वारक छोटसन बिन्दु स्पष्ट नहि भेलासँ अर्थक अनर्थ होइत सेहो देखल जाइत अछि। अनुस्वारक प्रयोगमे उच्चारण-दोषक सम्भावना सेहो ततबए देखल जाइत अछि। एतदर्थ कसँ लऽकऽ पवर्गधरि पञ्चमाक्षरेक प्रयोग करब उचित अछि। यसँ लऽकऽ ज्ञधरिक अक्षरक सङ्ग अनुस्वारक प्रयोग करबामे कतहु कोनो विवाद नहि देखल जाइछ।

२. **ढ आ ढ़ :** ढ़क उच्चारण ''र् ह''जकाँ होइत अछि। अतः जतऽ ''र् ह''क उच्चारण हो ओतऽ मात्र ढ़ लिखल जाए। आनठाम खालि ढ लिखल जएबाक चाही। जेना-

ढ = ढाकी, ढेकी, ढीठ, ढेउआ, ढङ्ग, ढेरी, ढाकनि, ढाठ आदि।

ढ़ = पढ़ाइ, बढ़ब, गढ़ब, मढ़ब, बुढ़बा, साँढ़, गाढ़, रीढ़, चाँढ़, सीढ़ी, पीढ़ी आदि।

उपर्युक्त शब्दसभकेँ देखलासँ ई स्पष्ट होइत अछि जे साधारणतया शब्दक शुरूमे ढ आ मध्य तथा अन्तमे ढ़ अबैत अछि। इएह नियम ड आ ड़क सन्दर्भ सेहो लागू होइत अछि।

३. **व आ ब :** मैथिलीमे ''व''क उच्चारण ब कएल जाइत अछि, मुदा ओकरा ब रूपमे नहि लिखल जएबाक चाही। जेना- उच्चारण : बैद्यनाथ, बिद्या, नब, देबता, बिष्णु, बंश, बन्दना आदि। एहिसभक स्थानपर क्रमशः वैद्यनाथ, विद्या, नव, देवता, विष्णु, वंश, वन्दना लिखबाक चाही। सामान्यतया व उच्चारणक लेल ओ प्रयोग कएल जाइत अछि। जेना- ओकील, ओजह आदि।

४. **य आ ज :** कतहु-कतहु ''य''क उच्चारण ''ज''जकाँ करैत देखल जाइत अछि, मुदा ओकरा ज नहि लिखबाक चाही। उच्चारणमे यज्ञ, जदि, जमुना, जुग, जाबत, जोगी, जदु, जम आदि कहल जाएवला शब्दसभकेँ क्रमशः यज्ञ, यदि, यमुना, युग, याबत, योगी, यदु, यम लिखबाक चाही।

५. **ए आ य :** मैथिलीक वर्तनीमे ए आ य दुनू लिखल जाइत अछि।

प्राचीन वर्तनी- कएल, जाए, होएत, माए, भाए, गाए आदि।

नवीन वर्तनी- कयल, जाय, होयत, माय, भाय, गाय आदि।

सामान्यतया शब्दक शुरूमे ए मात्र अबैत अछि। जेना एहि, एना, एकर, एहन आदि। एहि शब्दसभक स्थानपर यहि, यना, यकर, यहन आदिक प्रयोग नहि करबाक चाही। यद्यपि मैथिलीभाषी थारूसहित किछु जातिमे शब्दक आरम्भोमे ''ए''केँ य कहि उच्चारण कएल जाइत अछि।

ए आ ''य''क प्रयोगक प्रयोगक सन्दर्भमे प्राचीने पद्धतिक अनुसरण करब उपयुक्त मानि एहि पुस्तकमे ओकरे प्रयोग कएल गेल अछि। किएक तँ दुनूक लेखनमे कोनो सहजता आ दुरूहताक बात नहि अछि। आ मैथिलीक सर्वसाधारणक उच्चारण-शैली यक अपेक्षा एसँ बेसी निकट छैक। खास कऽ कएल, हएब आदि कतिपय शब्दकेँ कैल, हैब आदि रूपमे कतहु-

कतहु लिखल जाएब सेहो ''ए''क प्रयोगकेँ बेसी समीचीन प्रमाणित करैत अछि।

६. **हि, हु तथा एकार, ओकार :** मैथिलीक प्राचीन लेखन-परम्परामे कोनो बातपर बल दैत काल शब्दक पाछाँ हि, हु लगाओल जाइत छैक। जेना- हुनकहि, अपनहु, ओकरहु, तत्कालहि, चोट्टहि, आनहु आदि। मुदा आधुनिक लेखनमे हिक स्थानपर एकार एवं हुक स्थानपर ओकारक प्रयोग करैत देखल जाइत अछि। जेना- हुनके, अपनो, तत्काले, चोट्टे, आनो आदि।

७. **ष तथा ख :** मैथिली भाषामे अधिकांशतः षक उच्चारण ख होइत अछि। जेना- षड्यन्त्र (खड़यन्त्र), षोडशी (खोड़शी), षट्कोण (खटकोण), वृषेश (वृखेश), सन्तोष (सन्तोख) आदि।

८. **ध्वनि-लोप :** निम्नलिखित अवस्थामे शब्दसँ ध्वनि-लोप भऽ जाइत अछि:

(क) क्रियान्वयी प्रत्यय अयमे य वा ए लुप्त भऽ जाइत अछि। ओहिमेसँ पहिने अक उच्चारण दीर्घ भऽ जाइत अछि। ओकर आगाँ लोप-सूचक चिह्न वा विकारी (' / ऽ) लगाओल जाइछ। जेना-

पूर्ण रूप : पढ़ए (पढ़य) गेलाह, कए (कय) लेल, उठए (उठय) पड़तौक।

अपूर्ण रूप : पढ़' गेलाह, क' लेल, उठ' पड़तौक।

पढ़ऽ गेलाह, कऽ लेल, उठऽ पड़तौक।

(ख) पूर्वकालिक कृत आय (आए) प्रत्ययमे य (ए) लुप्त भऽ जाइछ, मुदा लोप-सूचक विकारी नहि लगाओल जाइछ। जेना-

पूर्ण रूप : खाए (य) गेल, पठाय (ए) देब, नहाए (य) अएलाह।

अपूर्ण रूप : खा गेल, पठा देब, नहा अएलाह।

(ग) स्त्री प्रत्यय इक उच्चारण क्रियापद, संज्ञा, ओ विशेषण तीनूमे लुप्त भऽ जाइत अछि। जेना-

पूर्ण रूप : दोसरि मालिनि चलि गेलि।

अपूर्ण रूप : दोसर मालिन चलि गेल।

(घ) वर्तमान कृदन्तक अन्तिम त लुप्त भऽ जाइत अछि। जेना-

पूर्ण रूप : पढ़ैत अछि, बजैत अछि, गबैत अछि।

अपूर्ण रूप : पढ़ै अछि, बजै अछि, गबै अछि।

(ङ) क्रियापदक अवसान इक, उक, ऐक तथा हीकमे लुप्त भऽ जाइत अछि। जेना-

पूर्ण रूप : छियौक, छियैक, छहीक, छौक, छैक, अबितैक, होइक।

अपूर्ण रूप : छियौ, छियै, छही, छौ, छै, अबितै, होइ।

(च) क्रियापदीय प्रत्यय न्ह, हु तथा हकारक लोप भऽ जाइछ। जेना-

पूर्ण रूप : छन्हि, कहलन्हि, कहलहुँ, गेलह, नहि।

अपूर्ण रूप : छनि, कहलनि, कहलौँ, गेलऽ, नइ, नञि, नै।

९. **ध्वनि स्थानान्तरण :** कोनो-कोनो स्वर-ध्वनि अपना जगहसँ हटिकऽ दोसरठाम चलि जाइत अछि। खास कऽ ह्रस्व इ आ उक सम्बन्धमे ई बात लागू होइत अछि। मैथिलीकरण भऽ गेल शब्दक मध्य वा अन्तमे जँ ह्रस्व इ वा उ आबए तँ ओकर ध्वनि स्थानान्तरित भऽ एक अक्षर आगाँ आबि जाइत अछि। जेना- शनि (शइन), पानि (पाइन), दालि (दाइल), माटि (माइट), काछु (काउछ), मासु(माउस) आदि। मुदा तत्सम शब्दसभमे ई नियम लागू नहि होइत अछि। जेना- रश्मिकेँ रइश्म आ सुधांशुकेँ सुधाउंस नहि कहल जा सकैत अछि।

१०. **हलन्त()क प्रयोग :** मैथिली भाषामे सामान्यतया हलन्त ()क आवश्यकता नहि होइत अछि। कारण जे शब्दक अन्तमे अ उच्चारण नहि होइत अछि। मुदा संस्कृत भाषासँ जहिनाक तहिना मैथिलीमे आएल (तत्सम) शब्दसभमे हलन्त प्रयोग कएल जाइत अछि। एहि पोथीमे सामान्यतया सम्पूर्ण शब्दकेँ मैथिली भाषासम्बन्धी नियमअनुसार हलन्तविहीन राखल गेल अछि। मुदा व्याकरणसम्बन्धी प्रयोजनक लेल अत्यावश्यक स्थानपर कतहु-कतहु हलन्त देल गेल अछि। प्रस्तुत पोथीमे मथिली लेखनक प्राचीन आ नवीन दुनू शैलीक सरल आ समीचीन पक्षसभकेँ समेटिकऽ वर्ण-विन्यास कएल गेल अछि। स्थान आ समयमे बचतक सङ्गहि हस्त-लेखन तथा तकनिकी दृष्टिसँ सेहो सरल होबऽवला हिसाबसँ वर्ण-विन्यास मिलाओल गेल अछि। वर्तमान समयमे मैथिली मातृभाषीपर्यन्तकेँ आन भाषाक माध्यमसँ मैथिलीक ज्ञान लेबऽ पड़िरहल परिप्रेक्ष्यमे लेखनमे सहजता तथा एकरूपतापर ध्यान देल गेल अछि। तखन मैथिली भाषाक मूल विशेषतासभ कुण्ठित नहि होइक, ताहूदिस लेखक-मण्डल सचेत अछि। प्रसिद्ध भाषाशास्त्री डा. रामावतार यादवक कहब छनि जे सरलताक अनुसन्धानमे एहन अवस्था किन्नहु ने आबऽ देबाक चाही जे भाषाक विशेषता छाँहमे पडि जाए। हमसभ हुनक धारणाकेँ पूर्ण रूपसँ सङ्ग लऽ चलबाक प्रयास कएलहुँ अछि।

पोथीक वर्णविन्यास कक्षा ९ क पोथीसँ किछु मात्रामे भिन्न अछि। निरन्तर अध्ययन, अनुसन्धान आ विश्लेषणक कारणे ई सुधारात्मक भिन्नता आएल अछि। भविष्यमे आनहु पोथीकेँ परिमार्जित करैत मैथिली पाठ्यपुस्तकक वर्णविन्यासमे पूर्णरूपेण एकरूपता अनबाक हमरासभक प्रयत्न रहत।

कक्षा १० मैथिली लेखन तथा परिमार्जन महेन्द्र मलंगिया/ धीरेन्द्र प्रेमर्षि संयोजन- गणेशप्रसाद भट्टराई

प्रकाशक शिक्षा तथा खेलकूद मन्त्रालय, पाठ्यक्रम विकास केन्द्र,सानोठिमी, भक्तपुर

सर्वाधिकार पाठ्यक्रम विकास केन्द्र एवं जनक शिक्षा सामग्री केन्द्र, सानोठिमी, भक्तपुर।

पहिल संस्करण २०५८ बैशाख (२००२ ई.)

योगदान: शिवप्रसाद सत्याल, जगन्नाथ अवा, गोरखबहादुर सिंह, गणेशप्रसाद भट्टराई, डा. रामावतार यादव, डा. राजेन्द्र विमल, डा. रामदयाल राकेश, धर्मेन्द्र विह्वल, रूपा धीरू, नीरज कर्ण, रमेश रञ्जन

भाषा सम्पादन- नीरज कर्ण, रूपा झा

2. मैथिली अकादमी, पटना द्वारा निर्धारित मैथिली लेखन-शैली

1. जे शब्द मैथिली-साहित्यक प्राचीन कालसँ आइ धरि जाहि वर्त्तनीमे प्रचलित अछि, से सामान्यतः ताहि वर्त्तनीमे लिखल जाय- उदाहरणार्थ-

ग्राह्य
एखन
ठाम
जकर, तकर
तनिकर
अछि

अग्राह्य
अखन, अखनि, एखेन, अखनी
ठिमा, ठिना, ठमा
जेकर, तेकर
तिनकर।(वैकल्पिक रूपेँ ग्राह्य)
ऐछ, अहि, ए।

2. निम्नलिखित तीन प्रकारक रूप वैक्लपिकतया अपनाओल जाय:भ गेल, भय गेल वा भए गेल। जा रहल अछि, जाय रहल अछि, जाए रहल अछि। कर' गेलाह, वा करय गेलाह वा करए गेलाह।

3. प्राचीन मैथिलीक 'न्ह' ध्वनिक स्थानमे 'न' लिखल जाय सकैत अछि यथा कहलनि वा कहलन्हि।

4. 'ऐ' तथा 'औ' ततय लिखल जाय जत' स्पष्टतः 'अइ' तथा 'अउ' सदृश उच्चारण इष्ट हो। यथा- देखैत, छलैक, बौआ, छौक इत्यादि।

5. मैथिलीक निम्नलिखित शब्द एहि रूपे प्रयुक्त होयत:जैह,सैह,इएह,ओऐह,लैह तथा दैह।

6. ह्रस्व इकारांत शब्दमे 'इ' के लुप्त करब सामान्यतः अग्राह्य थिक। यथा- ग्राह्य देखि आबह, मालिनि गेलि (मनुष्य मात्रमे)।

7. स्वतंत्र ह्रस्व 'ए' वा 'य' प्राचीन मैथिलीक उद्धरण आदिमे तँ यथावत राखल जाय, किंतु आधुनिक प्रयोगमे वैकल्पिक रूपेँ 'ए' वा 'य' लिखल जाय। यथा:- कयल वा कएल, अयलाह वा अएलाह, जाय वा जाए इत्यादि।

8. उच्चारणमे दू स्वरक बीच जे 'य' ध्वनि स्वतः आबि जाइत अछि तकरा लेखमे स्थान वैकल्पिक रूपेँ देल जाय। यथा- धीआ, अढ़ैआ, विआह, वा धीया, अढ़ैया, बियाह।

9. सानुनासिक स्वतंत्र स्वरक स्थान यथासंभव 'ञ' लिखल जाय वा सानुनासिक स्वर। यथा:- मैञा, कनिञा, किरतनिञा वा मैआँ, कनिआँ, किरतनिआँ।

10. कारकक विभक्तिक निम्नलिखित रूप ग्राह्य:-हाथकेँ, हाथसँ, हाथेँ, हाथक, हाथमे। 'मे' मे अनुस्वार सर्वथा त्याज्य थिक। 'क' क वैकल्पिक रूप 'केर' राखल जा सकैत अछि।

11. पूर्वकालिक क्रियापदक बाद 'कय' वा 'कए' अव्यय वैकल्पिक रूपेँ लगाओल जा सकैत अछि। यथा:- देखि कय वा देखि कए।

12. माँग, भाँग आदिक स्थानमे माङ, भाङ इत्यादि लिखल जाय।

13. अर्द्ध 'न' ओ अर्द्ध 'म' क बदला अनुसार नहि लिखल जाय, किंतु छापाक सुविधार्थ अर्द्ध 'ङ' , 'ञ', तथा 'ण' क बदला अनुस्वारो लिखल जा सकैत अछि। यथा:- अङ्क, वा अंक, अञ्चल वा अंचल, कण्ठ वा कंठ।

14. हलंत चिह्न नियमतः लगाओल जाय, किंतु विभक्तिक संग अकारांत प्रयोग कएल जाय। यथा:- श्रीमान्, किंतु श्रीमानक।

15. सभ एकल कारक चिह्न शब्दमे सटा क' लिखल जाय, हटा क' नहि, संयुक्त विभक्तिक हेतु फराक लिखल जाय, यथा घर परक।

16. अनुनासिककेँ चन्द्रबिन्दु द्वारा व्यक्त कयल जाय। परंतु मुद्रणक सुविधार्थ हि समान जटिल मात्रा पर अनुस्वारक प्रयोग चन्द्रबिन्दुक बदला कयल जा सकैत अछि। यथा- हिँ केर बदला हिं।

17. पूर्ण विराम पासीसँ (।) सूचित कयल जाय।

18. समस्त पद सटा क' लिखल जाय, वा हाइफेनसँ जोड़ि क' , हटा क' नहि।

19. लिअ तथा दिअ शब्दमे बिकारी (ऽ) नहि लगाओल जाय।

20. अंक देवनागरी रूपमे राखल जाय।

21.किछु ध्वनिक लेल नवीन चिन्ह बनबाओल जाय। जा' ई नहि बनल अछि ताबत एहि दुनू ध्वनिक बदला पूर्ववत् अय/ आय/ अए/ आए/ आओ/ अओ लिखल जाय। आकि ऎ वा ऒ सँ व्यक्त कएल जाय।

ह./- गोविन्द झा ११/८/७६ श्रीकान्त ठाकुर ११/८/७६ सुरेन्द्र झा "सुमन" ११/०८/७६

अंतिका प्रकाशन की नवीनतम पुस्तकें

सजिल्द

मीडिया, समाज, राजनीति और इतिहास

डिज़ास्टर : मीडिया एण्ड पॉलिटिक्स: पुण्य प्रसून वाजपेयी 2008 मूल्य रु. 200.00

राजनीति मेरी जान : पुण्य प्रसून वाजपेयी प्रकाशन वर्ष 2008 मूल्य रु. 300.00

पालकालीन संस्कृति : मंजु कुमारी प्रकाशन वर्ष 2008 मूल्य रु. 225.00

स्त्री : संघर्ष और सृजन : श्रीधरम प्रकाशन वर्ष 2008 मूल्य रु. 200.00

अथ निषाद कथा : भवदेव पाण्डेय प्रकाशन वर्ष 2007 मूल्य रु. 180.00

उपन्यास

मोनालीसा हँस रही थी : अशोक भौमिक प्रकाशन वर्ष 2008 मूल्य रु. 200.00

कहानी-संग्रह

रेल की बात : हरिमोहन झा प्रकाशन वर्ष 2008 मूल्य रु. 125.00

छछिया भर छाछ : महेश कटारे प्रकाशन वर्ष 2008 मूल्य रु. 200.00

कोहरे में कंदील : अवधेश प्रीत प्रकाशन वर्ष 2008 मूल्य रु. 200.00

शहर की आखिरी चिड़िया : प्रकाश कान्त प्रकाशन वर्ष 2008 मूल्य रु. 200.00

पीले कागज की उजली इबारत : कैलाश बनवासी प्रकाशन वर्ष 2008 मूल्य रु. 200.00

नाच के बाहर : गौरीनाथ प्रकाशन वर्ष 2008 मूल्य रु. 200.00

आइस-पाइस : अशोक भौमिक प्रकाशन वर्ष 2008 मूल्य रु. 180.00

कुछ भी तो रूमानी नहीं : मनीषा कुलश्रेष्ठ प्रकाशन वर्ष 2008 मूल्य रु. 200.00

बड़कू चाचा : सुनीता जैन प्रकाशन वर्ष 2008 मूल्य रु. 195.00

भेम का भेरू माँगता कुल्हाड़ी ईमान : सत्यनारायण पटेल प्रकाशन वर्ष 2008 मूल्य रु. 200.00

कविता-संग्रह

या : शैलेय प्रकाशन वर्ष 2008 मूल्य रु. 160.00

जीना चाहता हूँ : भोलानाथ कुशवाहा प्रकाशन वर्ष 2008 मूल्य रु. 300.00

कब लौटेगा नदी के उस पार गया आदमी : भोलानाथ कुशवाहा प्रकाशन वर्ष 2007 मूल्य रु. 225.00

लाल रिब्बन का फुलबा : सुनीता जैन प्रकाशन वर्ष 2007 मूल्य रु. 190.00

लूओं के बेहाल दिनों में : सुनीता जैन प्रकाशन वर्ष 2008 मूल्य रु. 195.00

फँटेसी : सुनीता जैन प्रकाशन वर्ष 2008 मूल्य रु. 190.00

दुःखमय अराकचक्र : श्याम चैतन्य प्रकाशन वर्ष 2008 मूल्य रु. 190.00

कुर्आन कविताएं : मनोज कुमार श्रीवास्तव प्रकाशन वर्ष 2008 मूल्य रु. 150.00

पेपरबैक संस्करण

उपन्यास

मोनालीसा हँस रही थी : अशोक भौमिक प्रकाशन वर्ष 2008 मूल्य रु. 100.00

कहानी-संग्रह

रेल की बात : हरिमोहन झा प्रकाशन वर्ष 2007 मूल्य रु. 70.00

छछिया भर छाछ : महेश कटारे प्रकाशन वर्ष 2008 मूल्य रु. 100.00

कोहरे में कंदील : अवधेश प्रीत प्रकाशन वर्ष 2008 मूल्य रु 100.00

शहर की आखिरी चिड़िया : प्रकाश कान्त प्रकाशन वर्ष 2008 मूल्य रु. 100.00

पीले कागज़ की उजली इबारत : कैलाश बनवासी प्रकाशन वर्ष 2008 मूल्य रु. 100.00

नाच के बाहर : गौरीनाथ प्रकाशन वर्ष 2007 मूल्य रु. 100.00

आइस-पाइस : अशोक भौमिक प्रकाशन वर्ष 2008 मूल्य रु. 90.00

कुछ भी तो रूमानी नहीं : मनीषा कुल श्रेष्ठ प्रकाशन वर्ष 2008 मूल्य रु. 100.00

भेम का भेरु माँगता कुल्हाड़ी ईमान : सत्यनारायण पटेल प्रकाशन वर्ष 2007 मूल्य रु. 90.00

मैथिली पोथी

विकास ओ अर्थतंत्र (विचार) : नरेन्द्र झा प्रकाशन वर्ष 2008 मूल्य रु. 250.00

संग समय के (कविता-संग्रह) : महाप्रकाश प्रकाशन वर्ष 2007 मूल्य रु. 100.00

एक टा हेरायल दुनिया (कविता-संग्रह) : कृष्णमोहन झा प्रकाशन वर्ष 2008 मूल्य रु. 60.00

बकचल देवाल (कथा-संग्रह) : बलराम प्रकाशन वर्ष 2000 मूल्य रु. 40.00

सम्बन्ध (कथा-संग्रह) : मानेश्वर मनुज प्रकाशन वर्ष 2007 मूल्य रु. 165.00

शीघ्र प्रकाश्य

आलोचना

इतिहास : संयोग और सार्थकता : सुरेन्द्र चौधरी

संपादक : उदयशंकर

हिंदी कहानी : रचना और परिस्थिति : सुरेन्द्र चौधरी

संपादक : उदयशंकर

साधारण की प्रतिज्ञा : अंधेरे से साक्षात्कार : सुरेन्द्र चौधरी

संपादक : उदयशंकर

बादल सरकार : जीवन और रंगमंच : अशोक भौमिक

बालकृष्ण भट्ट और आधुनिक हिंदी आलोचना का आरंभ : अभिषेक रौशन

सामाजिक चिंतन

किसान और किसानी : अनिल चमडिया

शिक्षक की डायरी : योगेन्द्र

उपन्यास

माइक्रोस्कोप : राजेन्द्र कुमार कनौजिया

पृथ्वीपुत्र : ललित अनुवाद : महाप्रकाश

मोड़ पर : धूमकेतु अनुवाद : स्वर्णा

मोलारूज : पियैर ला मूर अनुवाद : सुनीता जैन

कहानी-संग्रह

धूँधली यादें और सिसकते जख्म : निसार अहमद

जगधर की प्रेम कथा : हरिओम

पुस्तक मंगवाने के लिए मनीआर्डर/चेक/ड्राफ्ट अंतिका प्रकाशन के नाम से भेजें। दिल्ली से बाहर के एट पार बैंकिंग (ज चंत इंदापदह) चेक के अलावा अन्य चेक एक हजार से कम का न भेजें। रु. 200/- से ज्यादा की पुस्तकों पर डाक खर्च हम वहन करेंगे। रु. 300/- तक की पुस्तकों पर 10: की छूट, रु. 500/- से ऊपर रु. 1000/- तक 15: और उससे ज्यादा की किताबों पर 20: की छूट व्यक्तिगत खरीद पर दी जाएगी।

अंतिका, मैथिली त्रैमासिक, सम्पादक - अनलकांत

आजीवन सदस्यता शुल्क भ. रु. 2100/- चेक/ ड्राफ्ट द्वारा "अंतिका प्रकाशन" क नाम सँ पठाऊ। दिल्लीक बाहरक चेक मे भा. रु. 30/- अतिरिक्त जोड़।

बया, हिन्दी छमाही पत्रिका, सम्पादक - गौरीनाथ

आजीवन सदस्यता शुल्क रु. 5000/- चेक/ ड्राफ्ट/ मनीआर्डर द्वारा "अंतिका प्रकाशन" के नाम भेजें। दिल्ली से बाहर के चेक में 30 रुपया अतिरिक्त जोड़ें।

एक साथ हिन्दी, मैथिली में सक्रिय आपका प्रकाशन

अंतिका प्रकाशन

सी-56/यूजीएफ-4, शालीमार गार्डन, एकसटेंशन-II, गाजियाबाद-201005 (उ.प्र.)

फोन : 0120-6475212, मोबाइल नं. 9868380797, 9891245023

ई-मेल: antika1999@yahoo.co.in ; antika.prakashan@antika-prakashan.com

वेबसाइट: http://www.antika-prakashan.com



श्रुति प्रकाशनसँ

1.	पंचदेवोपासना-भूमि मिथिला	- मौन
2.	मैथिली भाषा-साहित्य (20म शताब्दी)	- प्रेमशंकर सिंह
3.	गुंजन जीक राधा (गद्य-पद्य-मिश्रित)	- गंगेश गुंजन
4.	बनैत-बिगड़ैत (कथा-गल्प संग्रह)	- सुभाषचन्द्र यादव
5.	कुरुक्षेत्रम्-अन्तर्मनक, खण्ड-1 सँ 7 (लेखकक छिड़िआयल पद्य, उपन्यास, गल्प-कथा, नाटक-एकाङ्की, बालानां कृते, महाकाव्य, शोध-निबन्ध आदिक समग्र संकलन)	- गजेन्द्र ठाकुर
6.	विलम्बित कइक युगमे निबद्ध (पद्य-संग्रह)	- पंकज पराशर
7.	हम पुछैत छी (पद्य-संग्रह)	- विनीत उत्पल
8.	नो एंट्री : मा प्रविश (चारि कल्लोलक मैथिली नाटक)	- उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'
9.	विभारानीक दूटा नाटक (भाग रौ आ बलचन्दा)	
10.	मैथिली अंग्रेजी शब्दकोश	गजेन्द्र ठाकुर
11.	English Maithili Dictionary	नागेन्द्र कुमार झा
12.	पञ्जी प्रबंध	पञ्जीकार विद्यानन्द झा